लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–19

सूरज की कहानियाँ

या दक्षिण भारत की लोक कथाऐं

जियोर्जियाना किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री

1890

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-19
Book Title: Sooraj Ki Lok Kathayen (Tales of the Sun)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of India

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र करके 2000 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

---

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

सूरज की कहानियाँ

हमने अपनी इस प्रौजैक्ट में भारत की लोक कथाओं की सब पुस्तकों को जो केवल अंग्रेजी में उपलब्ध हैं हिन्दी में अनुवाद करने का सोचा है। सो इस प्रौजैक्ट के अनतर्गत हम अब तक सात पुस्तकें हिन्दी में अनुवाद कर चुके हैं। अब यह एक और पुस्तक आपकी सेवा में प्रस्तुत है "सूरज की कहानियाँ ः या दक्षिण भारत की लोक कथाऐं"। इसे मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री ने **1890** में संग्रह कर के लिखा था।[2] इस संग्रह में इन्होंने **26** कहानियाँ दी हैं। हम उनकी दी गयी सभी कहानियों का हिन्दी अनुवाद अपने इस संग्रह में दे रहे हैं। दक्षिणी भारत की कई कहावतों के जन्म की कहानियाँ भी इस संग्रह में दी गयी हैं।

अपनी पुस्तक के प्रीफ़ेस में मिसेज़ किंग्सकोटे ने लिखा है कि उन्होंने ये लोक कथाऐं अपने नौकरों की सहायता से संग्रह की थीं जिन्होंने इन्हें बाजार में से सुन सुन कर उन्हें बताया था। सास्त्री जी ने न केवल उनकी कहानियाँ ठीक की थीं बल्कि उनमें कुछ अपनी एकत्र की हुई कहानियाँ भी जोड़ी थीं जो उन्होंने "इन्डियन ऐन्टीक्वैरी"[3] में से इकट्ठी की थीं।

यह इस अंग्रेजी पुस्तक का पहला हिन्दी अनुवाद है।

---

[2] Tales of the Sun OR Folklore of South India. By Mrs Howard (Georgiana) Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. 1890. 308 p. This book is available at the Web Site : https://books.google.ca/books?id=aipnD65H8JcC&pg=PR3&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false

[3] Indian Antiquary. A journal publishing research article on Indian history, anthropology, sociology etc. It started in 1872. Some of its folktales have been translated in Hindi and are given under the title of "The Indian Antiquary : selected folktales"
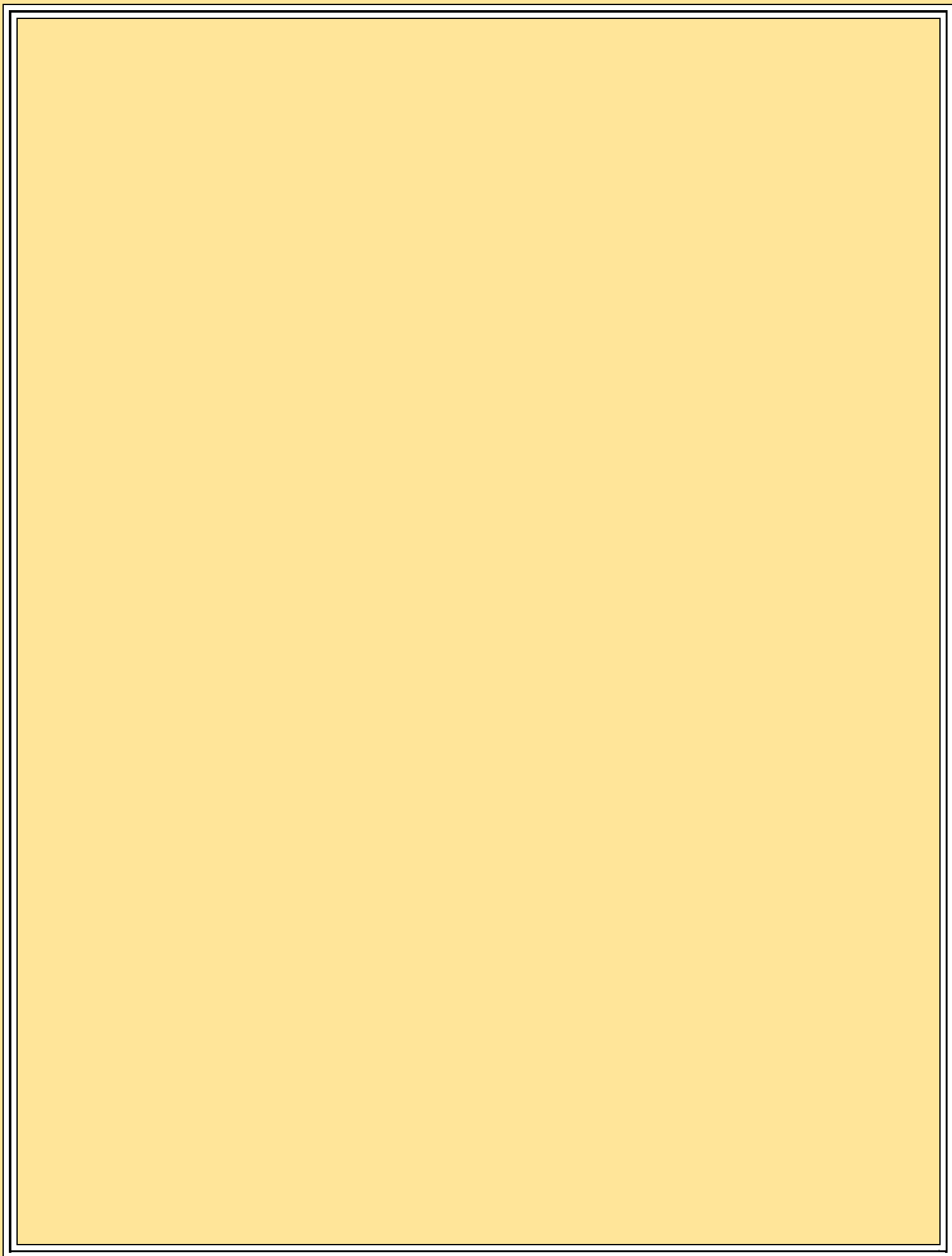
1 तीन बहरों की कहानी[4]

जब कभी किसी से गलती से कोई बहुत ही गड़बड़ गलती हो जाती है तो उसको तमिल भाषा में कुछ ऐसे कहते हैं कि "यह मामला तो तीन बहरों की कहानी जैसा हो गया"। इस कहावत के पीछे यह कहानी कही जाती है। लो इसे तुम भी सुनो।

एक दूर के गॉव में एक पति पत्नी रहते थे। दोनों को सुनायी नहीं पड़ता था। सो उन्होंने अपने घर में कुछ ऐसा इन्तजाम कर रखा था कि पत्नी एक दिन इमली की बन्द गोभी और बिना इमली का सूप[5] बनाती थी और दूसरे दिन बिना इमली की बन्द गोभी और इमली का सूप बनाती थी। इस तरह हर दूसरे दिन घर में खाना बनता रहता था।

एक दिन जब पति खाना खा रहा था तो उसको इमली की बन्द गोभी इतनी अच्छी लगी कि वह चाहता था कि वह उसे अगले दिन भी खाये सो उसने अगले दिन भी अपनी पत्नी से वैसा ही खाना बनाने के लिये कहा।

बहरी पत्नी को पति की बात समझ में नहीं आयी सो जैसा कि घर में तय हुआ था उसने वैसे ही अगले दिन बिना इमली की बन्द गोभी और इमली वाला सूप बना दिया।

---

[4] The Story of the Three Deaf Men. Tale No 1.

[5] Here soup may mean "Sambhar" or "Rasam" as these two dishes are common in Tamil Nadu for lunch and dinner.

अब जब पति खाना खाने बैठा तो उसने देखा कि उसके हुक्म का तो पालन ही नहीं किया गया है। वह बहुत गुस्सा हुआ। गुस्से में भर कर उसने वह बन्द गोभी दीवार पर फेंक दी और उठ कर बाहर चला गया। पत्नी ने पेट भर कर अपना खाना खाया और फिर अपने पति के लिये इमली वाली बन्द गोभी बनायी।

उधर पति अपना गुस्सा शान्त करने के लिये बाहर जा कर एक ऐसी जगह बैठ गया जहाँ तीन सड़कें मिलती थीं। उसी समय वहाँ से एक गड़रिया गुजरा जिसकी अभी अभी एक बहुत अच्छी गाय और बछड़ा खो गये थे। वह उन्हें ढूँढ रहा था।

जब उसने बहरे आदमी को सड़क के किनारे पर बैठे देखा तो उसने सोचा कि शायद यह कोई ज्योतिषी है सो उसे उसकी ज्योतिषी की जानकारी का इस्तेमाल करते हुए उससे यह पूछा कि वह यह बताये जहाँ इसकी गाय इसे मिल जाये।

अब यह गड़रिया भी बिल्कुल ही बेवकूफ था। यह बिना सुने हुए कि वह क्या कह रहा था उसने कहा कि वह बस उसे अकेला छोड़ दे। जब वह उससे बात कर रहा था तो उसने अपना हाथ गड़रिये के चेहरे की तरफ किया।

गड़रिये ने सोचा कि वह उसे गाय और उसके बछड़े के मिलने की दिशा बता रहा था सो वह उसी दिशा में चल दिया। उसने यह पक्का इरादा कर लिया था कि अगर उसे उसकी गाय और बछड़ा उस दिशा में मिल गये तो वह बछड़ा उस ज्योतिषी को दे देगा।

अब इत्तफाक की बात कि उस दिशा में उसकी गाय और बछड़ा दोनों मिल गये। गड़रिये की खुशी की तो हद ही नहीं रही। “यह तो बड़ा अच्छा ज्योतिषी है। मुझे इसे बछड़ा दे ही देना चाहिये।”

वह बछड़ा ले कर आदमी के पास गया और उससे उसे लेने की प्रार्थना करने लगा। अब बदकिस्मती से बछड़े की पूँछ थोड़ी सी टूट गयी थी और टेढ़ी भी हो गयी थी।

तो आदमी ने सोचा कि गड़रिया उसे इस बात का दोषी ठहराने आ गया कि उसीने बछड़े की पूँछ को काटा और टेढ़ा किया है जबकि उसे तो इस बात का कोई पता ही नहीं था सो हाथ हिला कर उसने मना करने की कोशिश की “यह मैंने नहीं किया।”

गड़रिये ने सोचा कि यह आदमी इसे लेने से मना कर रहा है तो उसने कहा “ओह तुम कितने लालची हो। मैंने तुम्हें केवल बछड़ा देने का वायदा किया था गाय नहीं।”

पति बोला — “मुझे तुम्हारी गाय या तुम्हारे बछड़े के बारे में कुछ नहीं मालूम। मैंने तुम्हारे बछड़े की पूँछ नहीं तोड़ी। किसी और ने किया होगा यह।” इस तरह बिना एक दूसरे को समझे हुए वे काफी देर तक लड़ते रहे।

तब वहाँ पर एक तीसरा आदमी आया। उसने झगड़े के मसले को समझा तो निश्चय किया कि वह उनकी बेवकूफी का फायदा उठायेगा।

वह बड़ी तेज़ आवाज में बीच में गड़रिये से बोला जिसे वह बहरा आदमी बहरा होने की वजह होने से न सुन सका — "तुम गाय को ले कर घर जाओ। ये भविष्य बताने वाले हमेशा लालची होते हैं। यह बछड़ा तुम मेरे पास छोड़ दो मैं इसको इसे लेने पर मना लूँगा।"

गड़रिये की गाय की रक्षा हो गयी थी सो वह गाय को ले कर खुशी खुशी घर चला गया और बछड़ा उस तीसरे आदमी के पास छोड़ गया।

जब गड़रिया चला गया तो तीसरे आदमी ने बहरे आदमी से कहा — "तुमने देखा कि गड़रिये के लिये यह कितना गैर कानूनी था कि वह तुमसे उस अपराध के लिये सजा दे रहा था जो तुमने किया ही नहीं। ये गड़रिये ऐसा ही करते हैं। ये दुनियाँ के सबसे बड़े बेवकूफ होते हैं।

पर तुम चिन्ता मत करो जब तक तुम्हारा यह दोस्त यहाँ है मैं तुम्हारी बात उसे समझा दूँगा और उसका बछड़ा उसे दे दूँगा।"

बहरा पति बहुत खुश हुआ। वह इस खुशी से घर भाग गया कि कम से कम उसकी इस लांछन से जान बची। दोनों के बहरेपन और बेवकूफी का फायदा उठा कर तीसरा आदमी बछड़े को ले कर अपने घर चला गया।

घर लौटने पर पति खाना खाने बैठा। उसकी पत्नी ने उसे इमली वाली बन्द गोभी परसी। पर उसने उस जगह पर अपने हाथ

रखा जहाँ उसकी पत्नी ने पहले बिना इमली की बन्द गोभी रखी थी। जब उसने उसे खा कर देखा तो वह उसे इतनी मीठी लगी कि उसने उसे दोबारा माँगा।

पत्नी ने कहा कि उसने उस बन्द गोभी का तो बर्तन ही खाली कर दिया है। तो उसने कहा कि वह कम से कम उसकी तली में लगी हुई सब्जी ही ला दे। सो उसकी पत्नी बर्तन में लगी हुई सब्जी उसे ला दी।

यह कहानी यहाँ खत्म होती है। इसका बाद वाला हिस्सा एक तमिल कहावत से मिलता जुलता है।

2 ब्राह्मण अँधेरे में खाना क्यों नहीं खा सकते[6]

हिन्दुओं में, खास कर के मद्रास में और अब मैंने देखा कि बम्बई में भी ब्राह्मण लोग जब खाना खा रहे होते हैं और अगर रोशनी बुझा दी जाये या फिर अपने आप बुझ जाये तो वे खाना खाना छोड़ देते हैं।

ऐसा केवल रात के समय ही होता है क्योंकि उस समय अँधेरा रहता है और ऐसी घटनाऐं आजकल केवल गरीब घरों में ही होती हैं। लोग खाना खाने के लिये केवल एक रोशनी का इस्तेमाल करते हैं।

यह परम्परा कैसे शुरू हुई इसकी भी एक कहानी है जिसे लोग भूलते जा रहे हैं। वह कहानी कुछ ऐसे है —

एक गाँव में एक ब्राह्मण रहता था जिसके एक अकेली बेटी थी। उसे संस्कृत बहुत अच्छी आती थी और वह सुन्दर भी बहुत थी। उसकी शादी तो पहले ही पक्की हो गयी थी पर उसकी शादी का शुभ मुहूर्त उस रात की 10वीं घटिका[7] का निकला था।

उसी शाम दुलहा एक तालाब पर अपना संध्या वन्दन करने गया। उस तालाब में बहुत सारे मगर थे सो लोग उस तालाब के पास जाते नहीं थे।

---

[6] Why Brahman Cannot Eat in the Dark. Tale No 2.

[7] One Ghatika is equal to 24 minutes.

अब दुलहा तो गॉव में नया था सो वह बिना किसी चिन्ता के उस तालाब में घुस गया। बदकिस्मती से वहॉ पास में कोई था भी नहीं जो कोई उसे चेतावनी भी दे सकता।

जैसे ही उसने पानी में पैर रखा कि एक मगर ने उसका पैर पकड़ लिया। अब वह रात तो उसकी शादी की रात थी और मगर उसे अपनी दावत बना कर लिये जा रहा था। यह देख कर वह बहुत डर गया।

उसने अपने दुश्मन से नम्र शब्दों का इस्तेमाल करते हुए कहा — "मेरे प्यारे दोस्त मगर। पहले तुम मेरी बात सुनो तब तुम कुछ निश्चय करो। एक ब्राह्मण की एक लड़की आज की रात मेरा इन्तजार कर रही है।

अगर तुम मुझे अभी खा लोगे तो तुम मुझे उसे मेरे ससुर को और मेरी सास को बिना देखे ही दूर ले जाओगे। मेरी शादी के दिन मेरी मौत की मरने की खबर पा कर उनकी आत्मा को बहुत दुख होगा। वे लोग तुम्हें शाप दे देंगे।

और अगर तुम मुझे छोड़ दोगे तो मैं घर चला जाऊॅगा। जा कर अपनी पत्नी और दूसरे लोगों से अपने ऊपर आये इस संकट के बारे में उनसे बात करूॅगा। और उसे अपने गले से लगा कर तुम्हारे खाने के लिये **15**वीं घटिका में तुम्हारे पास आ जाऊॅगा।"

बेरहम मगर जो आदमी के मॉस का बहुत शौकीन था और उस समय बहुत भूखा भी था उसने उसकी इस विनम्र पार्थना पर उसको

कुछ घटिकाओं के लिये छोड़ दिया। उससे उसने कई बार कसमें खिलवा कर कि अपने वायदे के अनुसार वह कुछ देर में वहाँ लौट आयेगा मगर पानी में चला गया।

दुलहा भी अपने घर चला गया पर उसकी सारी ख़ुशी चली गयी थी। मगर को अपने किये गये वायदों के बाद में वह ख़ुश कैसे रह सकता था। फिर भी उसने अपनी पत्नी के बूढ़े माता पिता को तकलीफ न देने के लिये बड़ी शान्ति से अपनी शादी की सारी रस्में पूरी कीं।

जैसा कि वह सोचता था अब उसके जीवन की केवल पाँच घटिकाऐं ही बाकी बची थीं। कुछ ही शब्दों में उसने अपनी पत्नी को सब समझा दिया और उससे जाने की इजाज़त माँगी। उसकी पत्नी बिल्कुल भी दुखी नहीं हुई बल्कि उससे कहा कि यह सब भाग्य की बात है। जो उसकी किस्मत में लिखा हुआ है वह तो उसे भोगना ही पड़ेगा।

उसने बड़े आराम से उसे जाने की इजाज़त दे दी और वह एक घटिका पहले ही तालाब पर लौट आया।

उसी समय मगर की आँखों के सामने एक रोशनी चमकी और गायब हो गयी। वह एक स्त्री की थी। पत्नी ने पति को समझाने के बाद और उसे भेजने के बाद उसने एक दिया जलाया और उसे एक बर्तन में छिपा कर पति के पीछे पीछे छिप कर चल दी।

जैसे ही मगर ने उसके पति का पैर पकड़ा उसने बर्तन में से दिया निकाला और उसे मगर की आँखों के सामने चमका कर बुझा दिया। इससे इसका वही असर हुआ जो वह चाहती थी।

मगर ने उसके पति का पैर छोड़ दिया और कहा "तुम यहाँ से चले जाओ। आज के बाद मैं तुम्हें दिया बुझने के बाद कभी नहीं पकड़ूँगा और न ही मैं अपना खाना खाऊँगा।"

पति अपनी पत्नी की इस आश्चर्यजनक तरकीब से बहुत खुश हुआ और इससे भी ज़्यादा खुशी उसे उस जंगली जानवर के नियम पालन से हुई। उस दिन के बाद से उन आदमियों में जो ज़्यादा होशियार थे तो यह तय हो गया कि जब भी दिया बुझ जायेगा तो वे खाना नहीं खायेंगे।

इसी सिलसिले में एक और कहानी भी कही जाती है कि एक दूर के गाँव में एक स्त्री रहती थी जो सारा दिन सुबह से रात तक घर घर काम कर के गुजारा करती थी। इतने काम के बाद वह केवल दो माप चावल ले कर घर लौटती थी। वह दस साधारण लोगों के लिये काफी खाना होता था।

क्योंकि वह बहुत गरीब थी तो उसके घर में कोई दिया नहीं था। वह अँधेरे में ही अपना चावल पकाती थी। चूल्हे की आग की रोशनी ही उसके चावल पकने के लिये काफी होती थी। जब वह खाना खाने बैठती थी तब तक उसके चूल्हे की आग भी धीमी पड़ जाती थी सो उसे अँधेरे में ही खाना खाना पड़ता था।

हालाँकि वह जितना चावल घर लाती थी वह उसे सब पका लेती थी और वह **10** आदमियों के खाने लायक होता था फिर भी वह भूखी रह जाती थी। उसकी भूख शान्त ही नहीं होती थी।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि उसकी एक छोटी बहिन थी जो उससे कहीं ज़्यादा अमीर थी। एक दिन वह छोटी बहिन अपनी बड़ी बहिन से मिलने आयी। अब छोटी बहिन तो कभी बिना रोशनी के रही नहीं थी सो उसने अपनी बड़ी बहिन से कुछ तेल और एक दिया खरीदने के लिये कहा।

जरूरत के अनुसार बड़ी बहिन बेचारी दिया और तेल खरीदने पर मजबूर हो गयी। इसके लिये उसे अपने दो माप चावल का कुछ हिस्सा बेचना पड़ गया। यह कर के वह बहुत परेशान थी कि अब उसके बचे हुए चावल से उन दोनों का पेट कैसे भरेगा जबकि पूरे दो माप चावल पहले ही उसके अकेले के लिये ही काफी नहीं होते थे।

पहली बार उसके घर में दिया जला और उसने अपने बचे हुए चावल उबाले। छोटी बहिन तो यह देख कर बहुत ही आश्चर्य में पड़ गयी कि उसकी बड़ी बहिन केवल दो लोगों के लिये इतने सारे चावल बना रही थी।

उधर बड़ी बहिन को लग रहा था कि उसकी छोटी बहिन को कहीं ऐसा महसूस हो कि वह कोई गलती कर रही थी उसने सारा कुछ ही पका दिया था। दो पत्ते बिछाये गये और दोनों रात का खाना खाने बैठीं।

बर्तन का एक चौथाई हिस्सा भी उन्होंने अभी खत्म नहीं किया था कि दोनों का पेट भर गया। छोटी बहिन अपनी बड़ी बहिन की बेवकूफी पर हॅसी तो बड़ी बहिन बोली "तुम्हारे हाथ में क्या जादू है कि मैं रोज ही दो माप पूरा भर कर चावल बनाती हॅू और उसे सारा खा कर रात भर भूखी सोती हूॅ। और अब दो माप के चौथाई हिस्से से भी कम में हमारा दोनों का पेट भर गया है। तुम इसकी वजह बताओ।"

छोटी बहिन जो खुद ही बहुत होशियार थी इसकी वजह जानना चाहती थी सो अगले दिन उसने बड़ी बहिन से बिना दिया जलाये ही खाना परोसने के लिये कहा। बजाय खाना खाने के उसने अपना हाथ बढ़ाया और बालों का एक गुच्छा पकड़ लिया तो उसने तुरन्त ही अपनी बड़ी बहिन को दिया जलाने के लिये कहा।

दिये के जलने पर उन्होंने देखा कि उनके पास तो एक शैतान बैठा हुआ है। उन्होंने उससे पूछा कि तुम यहॉ आये कैसे। वह बोला कि यह तो उसका रोज का काम था कि वह घर घर जाता था और जो भी ॲधेरे में खाना खा रहा होता था वह उसका सारा खाना खा जाता था।

अब बड़ी बहिन को अपनी गलती समझ में आयी। उस दिन से उसने भी खाते समय दिया जलाना शुरू कर दिया। इससे शैतान का आना रुक गया। अब उसके लिये तो खाना काफी होता ही था बल्कि अब उसके बहुत सारे चावल बच भी जाते थे।

सो जब दिया बुझ जाता है तब शैतान आ कर उन पत्तों में से खाना खा जाते हैं जो खाना खाने के बाद फेंक दिये जाते हैं। इसी लिये यह रिवाज चल पड़ा कि अगर दिया बुझ जाये तो खाना छोड़ कर उठ जाना चाहिये।

3 ज्योतिषी का बेटा[8]

एक ज्योतिषी ने अपने मरने के समय अपने दूसरे बेटे की कुंडली बनायी और उसे अपने बेटे को विरासत में दे दी। बाकी की सब जायदाद उसने अपने बड़े बेटे को दे दी। दूसरा बेटा उस जन्म कुंडली को थोड़ी देर तक तो देखता रहा फिर उसने सोचा —

"बड़े अफसोस की बात है कि मैं इस दुनियाँ में इस तरह का अकेला ही पैदा हुआ हूँ। मेरे पिता का कहा हुआ कभी गलत नहीं निकला। मैंने खुद देखा है कि जब तक वह ज़िन्दा थे उनका कहा हुआ एक एक शब्द सही होता था। उन्होंने मेरी जन्मपत्री कैसे बनायी है – "जन्म पराभृति दारिदृयम"। मैं जन्म से ही गरीब हूँ।

और केवल यही मेरी किस्मत नहीं है – "दश वर्षाणि बन्धनम्" यानी 10 साल तक की जेल भी। यह तो गरीबी से भी ज़्यादा खराब किस्मत है।

और फिर बाद में – "समुद्रतीरे मरणम्" यानी समुद्र के किनारे मेरी मौत। इसका मतलब है कि मैं घर से दोस्तों से रिश्तेदारों से बहुत दूर मरूँगा। मेरी बदकिस्मती तो यहाँ पर अपनी उच्चतम ऊँचाई पर पहुँच गयी है।

और अब आता है जन्मपत्री का सबसे मजेदार हिस्सा – "किंचित भोगम भविष्यति" यानी इसके बाद कुछ खुशी। यह कैसी

---

[8] The Soothsayer's Son. Tale No 3.

खुशी है। यह तो मेरे लिये एक पहेली है कि मरो पहले और खुश बाद में हो। यह कैसी खुशी है। क्या यह खुशी मुझे इसी दुनियाँ में मिलेगी? या मैं कुछ गलत सोच रहा हूँ। हो सकता है ऐसा ही हो।

पर कोई कितना भी चतुर क्यों न हो वह यह नहीं बता सकता कि दूसरी दुनियाँ में क्या होने वाला है इसलिये यह खुशी मुझे इसी दुनियाँ में मिलेगी। पर वह मेरी मौत के बाद कैसे सम्भव हो सकती है। यह असम्भव है।

शायद मेरे पिता ने मुझे उन मुसीबतों से तसल्ली देने के लिये यह लिख दिया हो जो मेरी ज़िन्दगी में आयेंगी। मेरी जन्मपत्री के तीन हिस्से तो जरूर ही सच निकलने चाहिये। आखिरी चौथा हिस्सा तो बस मुझे तसल्ली देने के लिये लिखा गया है ताकि मैं उन मुसीबतों को धीरज से सह सकूँ। यह तो सच नहीं होने वाला।

इसलिये मुझे अब बनारस चले जाना चाहिये। पवित्र नदी गंगा में नहाना चाहिये अपने पापों को धोना चाहिये और अपने आपको अपने अन्त के लिये तैयार करना चाहिये।

मुझे समुद्र के किनारे की तरफ नहीं जाना चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि पिता के लिखे अनुसार मेरी वहाँ मौत हो जाये। पर जेल के लिये मैं तैयार हूँ। आजा 10 साल के लिये आजा।"

जब पिता के अन्तिम संस्कार की सब रस्में खत्म हो गयीं उसने अपने बड़े भाई से विदा ली और बनारस की तरफ चल दिया।

उसने भारत के दक्षिणी हिस्से का बीच का रास्ता लिया और इस तरह से वह दोनों समुद्र तट के पास से नहीं गया।

सप्ताहों और महीनों की यात्रा के बाद वह विन्ध्याचल पर्वत तक पहुँच गया। उसके बाद उसे एक दो दिन की यात्रा रेत से भरे मैदान से करनी थी जहाँ न कोई रहता था और न ही कोई पेड़ पौधे थे।

थोड़ा बहुत खाना जो वह अपने साथ लाया था वह खत्म हो गया था। उसका वह बर्तन जो हमेशा मीठे पानी से भरा रहता था गर्मी में सूख गया था। उसके पास न तो खाने के लिये एक कौर ही था और न ही पीने के लिये एक बूँद पानी। उसने घूम घूम कर चारों तरफ देखा तो चारों तरफ ही उसे रेगिस्तान नजर आया जहाँ से वह कहीं बच कर भी नहीं जा सकता था।

फिर भी वह अपने मन में सोचता रहा कि उसके पिता की भविष्यवाणी झूठी नहीं हो सकती इसलिये यहाँ मेरे मरने का तो कोई सवाल ही नहीं उठता। क्योंकि मुझे समुद्र तट पर मरना है सो मैं यहाँ से तो बच कर निकल ही जाऊँगा।

जब उसने ऐसा सोचा तो उसके दिमाग को थोड़ी ताकत मिली। वह जल्दी जल्दी चलने लगा ताकि कहीं उसे अपने सूखे गले को गीला करने के लिये जल्दी ही पानी मिल जाये। आखिर वह सफल हो गया या फिर उसे लगा कि वह सफल हो गया।

अचानक ही उसे एक टूटा फूटा कुँआ दिखायी दे गया। उसे लगा कि वह उसमें अपना बर्तन नीचे डाल कर थोड़ा बहुत पानी तो निकाल ही लेगा। वह हमेशा ही एक रस्सी साथ ले कर चलता था ताकि उस बर्तन को उसमें बॉध कर वह कहीं से भी पानी निकाल सके। सो उसने अपने बर्तन में रस्सी बॉधी और उसे कुँए में डाल दिया।

पर यह क्या। वह कुछ दूर तक तो नीचे गयी पर फिर रुक गयी। कुँए में से आते हुए उसने ये शब्द सुने — "मुझे बचाओ। मैं चीतों का राजा हूँ और यहॉ भूख से मरा जा रहा हूँ। पिछले तीन दिनों से मैंने कुछ नहीं खाया है। मेरी खुशकिस्मती ने तुम्हें यहॉ मुझे बचाने के लिये भेज दिया है।

अगर तुम मेरी अभी सहायता कर दोगे तो मैं ज़िन्दगी भर तुम्हारी सहायता करता रहूँगा। यह मत समझना कि मैं कोई जंगली शिकारी जानवर हूँ। जब तुम मुझे यहॉ से निकाल दोगे तो मैं तुम्हें कभी नही छुऊँगा। मैं तुमसे विनती करता हूँ कि मुझे यहॉ से निकाल लो।"

गंगाधर, यही उस लड़के का नाम था, ने अपने आपको बड़ी मुसीबत में पाया। "मैं इसे बाहर निकालूँ या नहीं। अगर मैं इसे बाहर निकालता हूँ तो हो सकता है कि यह तुरन्त ही मुझे अपना पहला कौर बना ले। नहीं नहीं यह ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि यह

मेरे पिता की भविष्यवाणी नहीं है। मुझे तो समुद्र के किनारे मरना है चीते के खाने से नहीं।"

यह सोचते ही उसने चीते से कहा कि वह उसके बर्तन को कस कर पकड़ ले। चीते ने वैसा ही किया और गंगाधर ने उसे धीरे धीरे ऊपर खींच लिया।

चीता ऊपर आ गया तो उसे राहत मिली। चीता अपनी बात का पक्का था। उसने उसे खाया नहीं बल्कि उसने उसके चारों तरफ तीन बार चक्कर काटा और फिर सामने खड़े हो कर बोला —

"मुझे ज़िन्दगी देने वाले। मेरा फायदा करवाने वाले। मैं इस दिन को कभी नहीं भूलूँगा जिस दिन तुम्हारे मेहरबान हाथों से मुझे नयी ज़िन्दगी मिली है।

तुम्हारी इस मेहरबानी के बदले में तुमसे यह वायदा करता हूँ कि मैं तुम्हारी हर मुसीबत में तुम्हारे साथ खड़ा होऊँगा। जब भी तुम किसी भी मुश्किल में हो तो बस मेरा ध्यान कर लेना। मैं जैसे भी तुम्हारी सहायता कर सकूँगा तुम्हारी सहायता के लिये आ जाऊँगा।

मैं तुम्हें थोड़े में यह भी बता देता हूँ कि मैं यहाँ कैसे आया। तीन दिन पहले मैं पास वाले जंगल में इधर उधर घूम रहा था कि मैंने एक सुनार जाता हुआ देखा।

मैं उसके पीछे भागा तो यह देखते हुए कि वह अब मेरे पंजों से नहीं बच सकता इस कुँए में कूद गया। वह भी अभी तक इस कुँए की तली में ही है। मैं भी उसके पीछे पीछे इस कुँए में कूद गया पर

मैं इसकी पहली सीढ़ी पर ही अटक गया। वह इसकी चौथी और आखिरी सीढ़ी पर है। इसकी दूसरी सीढ़ी पर एक साँप है जो भूख से अधमरा हो रहा है। इसकी तीसरी सीढ़ी पर एक चूहा है वह भी वैसे ही भूख से अधमरा हो रहा है।

यह मैंने तुम्हें इसलिये बताया ताकि तुम्हें पता रहे कि जब तुम दोबारा इसमें से पानी खींचो तो शायद ये लोग भी तुमसे अपने आपको बाहर निकालने की विनती करें। मुझे यकीन है कि वह सुनार भी बाहर निकालने के लिये तुमसे विनती जरूर करेगा।

पर मैं तुम्हें तुम्हारे दिली दोस्त की हैसियत से यह सलाह देता हूँ कि उस नीच आदमी की सहायता बिल्कुल मत करना हालाँकि एक आदमी होने के नाते वह तुम्हारा सम्बन्धी है पर इन सुनारों पर कभी भी विश्वास नहीं किया जा सकता।

तुम मुझ पर उससे ज़्यादा विश्वास कर सकते हो हालाँकि मैं आदमी को खाता भी हूँ। तुम साँप पर भी विश्वास कर सकते हो हालाँकि वह आदमी को काट लेता है। या फिर एक चूहे पर भी विश्वास कर सकते हो जो तुम्हारे घर में हजारों शरारतें करता है पर सुनार पर कभी विश्वास मत करना।"

वह भूखा चीता गंगाधर से यह कह कर बिना उसका जवाब सुने वहाँ से चला गया। गंगाधर बहुत देर तक चीते ने जिस सुन्दर ढंग से उससे बात की थी उस पर सोचता रहा।

अभी उसकी प्यास तो बुझी नहीं थी सो उसने फिर से अपना बर्तन कुँए में नीचे डाला। अबकी बार उसे साँप ने पकड़ लिया और बोला — "ओ मेरी रक्षा करने वाले। मुझे ऊपर खींच लो। मैं साँपों के राजा आदिशेष का बेटा हूँ मेरे पिता मेरे गायब हो जाने के दुख में बहुत परेशान होंगे।

तुम मुझे यहाँ से आजाद करो। मैं ज़िन्दगी भर तुम्हारी चाकरी करूँगा। तुम्हारी सहायता को याद रखूँगा और सारी ज़िन्दगी जितनी भी सहायता हो सकेगी सहायता करूँगा। मेरे ऊपर दया करो मैं मर रहा हूँ।"

गंगाधर को फिर याद आया "समुद्रतीरे मरणम्" सो उसने उसे भी बाहर निकाल लिया। जैसा कि चीते के राजा ने किया था वैसे ही साँप ने भी गंगाधर के तीन चक्कर काटे और बोला — "ओ मेरी ज़िन्दगी बचाने वाले। क्योंकि तुमने मुझे दूसरा जन्म दिया है इसलिये मुझे तुम्हें अपना पिता पुकारना चाहिये।

मैं तुमसे पहले ही कह चुका हूँ कि मैं आदिशेष का बेटा हूँ और मैं साँपों का राजा हूँ। तीन दिन पहले मैं धूप सेक रहा था कि मैंने एक चूहा अपने आगे आगे भागता देखा। मैंने उसका पीछा किया तो वह इस कुँए में आ कर गिर पड़ा। पर बजाय इसके कि मैं इसकी तीसरी सीढ़ी पर गिरता जहाँ इस समय वह है मैं दूसरी सीढ़ी पर ही अटक कर रह गया।

उसी शाम को सुनार भी इस कुॅए में गिर पड़ा वह चौथी सीढ़ी पर जा कर गिरा। और वह चीता जिसे तुमने अभी अभी निकाला है वह पहली सीढ़ी पर आ कर गिरा था।

अब मैं तुमसे यह कहना चाहता हूॅ कि तुम इस सुनार को यहॉ से बिल्कुल मत निकालना। चाहो तो चूहे को निकाल देना। नियम के अनुसार सुनारों पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिये।

मैं अब अपने पिता के पास जा रहा हूॅ। जब भी तुम किसी मुश्किल में पड़ो तो बस मुझे याद कर लेना मैं हर तरह से तुम्हारी सहायता करने के लिये तुम्हारे पास आ जाऊॅगा। अगर बार बार मेरी सलाह देने के तुमने सुनार को इस कुॅए में से बाहर निकाला तो तुम बुरी तरह दुख सहोगे।"

ऐसा कह कर सॉपों का राजकुमार वहॉ से चला गया और पल भर में ही दृष्टि से ओझल हो गया। ज्योतिषी का बेटा जो प्यास से मरा जा रहा था उसे तो अब यह भी लगने लगा था जैसे मृत्युदूत कहीं उसके आसपास ही खड़े हों। उसको उसके पिता के शब्दों पर से विश्वास उठने लगा था फिर भी उसमे तीसरी बार अपना बर्तन कुॅए में डाल दिया।

इस बार चूहे ने उसका बर्तन पकड़ लिया। गंगाधर ने भी उससे कोई बात किये बिना ही उसे ऊपर खींच लिया। पर वह भी बिना अपनी कृतज्ञता दिखाये वहॉ से जाने वाला नहीं था।

वह बोला — "ओ मेरी ज़िन्दगी की ज़िन्दगी। मुझे फायदा पहुँचने वाले। मैं चूहों का राजा हूँ। जब भी तुम किसी मुश्किल में हो तो बस मुझे याद कर लेना। मैं आ कर तुम्हारी सहायता करूँगा। मेरे तेज़ कानों ने वह सब सुन लिया है जो चीते और साँप ने तुमसे उस सुनार के बारे में कहा है जो चौथी सीढ़ी पर है।

यह एक दुखभरा सच है कि सुनारों को विश्वास बिल्कुल नहीं करना चाहिये। इसलिये तुमने जैसे हम सबकी सहायता की तुम उसकी सहायता नहीं करना। अगर तुम करोगे तो भुगतोगे। मुझे भूख लग रही है इसलिये मैं अब चलता हूँ।" सो वह भी गंगाधर को विदा कह कर वहाँ से भाग गया।

गंगाधर सुनार के अन्दर से निकालने के बारे में इन तीनों जानवरों की सलाह के बारे में कुछ देर सोचता रहा "उसे बाहर निकालने में मेरा क्या नुकसान होगा। मैं उसे यहाँ से क्यों न निकालूँ।"

यह सोचते हुए गंगाधर ने अपना बर्तन फिर से कुँए में डाल दिया। सुनार ने उसे पकड़ लिया और उससे सहायता माँगी। ज्योतिषी के बेटे के पास समय नहीं था वह तो खुद ही प्यास से मरा जा रहा था। सो उसने सुनार को भी कुँए से बाहर निकाल लिया।

सुनार गंगाधर को अपनी कहानी सुनाने लगा तो गंगाधर बोला "ज़रा रुको।" कह कर उसने पाँचवीं बार कुँए में अपना बर्तन डाला और पानी खींच कर अपनी प्यास बुझा कर सोचने लगा कि अभी

कहीं कोई और तो नहीं है कुँए में जिसे मेरी सहायता की जरूरत हो। पर फिर सुनार की कहानी सुनने लगा —

"मेरे प्यारे दोस्त। मेरी रक्षा करने वाले। ये जानवर मेरे बारे में तुमसे क्या क्या बेकार की बातें कर रहे थे। मुझे खुशी है कि तुमने उनकी सलाह नहीं मानी। मैं भूख से मरा जा रहा हूँ इसलिये मुझे जाने की इजाज़त दो।

मेरा नाम है माणिक्काशारी है। मैं यहाँ से दक्षिण में उज्जयिनी में पूर्व बड़ी सड़क पर रहता हूँ जो यहाँ से **20** कोस की दूरी पर है। जब तुम बनारस से लौटोगे तब यह जगह तुम्हारे रास्ते में पड़ेगी। मुझे मत भूलना और मुझसे लौटते समय मिल कर जाना।"

यह कह कर सुनार अपने घर चला गया। गंगाधर अपने रास्ते उत्तर की तरफ चल दिया। वह बनारस पहुँच गया। वहाँ वह **10** साल से भी ज़्यादा समय तक रहा। इस सारे समय में वह प्रार्थना करता रहा गंगा नहाता रहा और दूसरे धार्मिक संस्कार करता रहा। वह चीता साँप चूहा और सुनार सबको भूल चुका था।

दस साल के बाद अब उसे घर और अपने भाई की याद आयी तो उसने सोचा कि अब मैंने काफी पुन्य कमा लिया है अब मुझे घर चलना चाहिये। गंगाधर ने यह सोचा और अपने घर की तरफ चल दिया।

अपने पिता की भविष्यवाणी की याद कर के उसने वही रास्ता लेने का विचार किया जिससे वह **10** साल पहले बनारस आया था।

उसी रास्ते पर चलते चलते वह फिर से उसी कुँए पर आया तो उसे 10 साल पुरानी घटना याद हो आयी।

तो उसने सोचा कि पहले चीते की मेहमानदारी का इम्तिहान लिया जाये। जैसे ही उसने यह सोचा तो पल भर में ही चीता वहाँ हाजिर था। उसके मुँह में कीमती जवाहरात जड़ा एक ताज था जो सूरज की किरनों से भी ज़्यादा ज़ोर से चमक रहा था। उसने वह ताज अपनी ज़िन्दगी बचाने वाले के पैरों में रख दिया।

अपना घमंड छोड़ कर उसने उसे अपने शरीर से सहलाना शुरू कर दिया जैसे कोई पालतू जानवर करता है। वह बोला — "ओ मेरी जिन्दगी देने वाले। ऐसा कैसे हुआ कि तुम इतने दिनों तक मुझे अपने इस गरीब नौकर को भूल गये।

मैं बहुत खुश हूँ कि मैं अभी भी तुम्हारे दिल के एक कोने में हूँ। मैं उस दिन को कभी नहीं भूल सकता जब मेरी ज़िन्दगी तुम्हारे कमल जैसे हाथों में थी। मेरे पास ऐसे बहुत सारे जवाहरात हैं जो तुम्हारे लिये किसी काम के नहीं होंगे। यह ताज उन सबमें अच्छा था सो इसी को मैं तुम्हारे पास ले आया हूँ। इसे आसानी से ले जाया जा सकता है और तुम्हारे देश में तुम्हारे काम आयेगा।"

गंगाधर ने ताज की तरफ देखा उसे उलट पुलट कर देखा उसमें लगे जवाहरात एक बार गिने दोबारा गिने। उसने सोचा कि उसका सोना और हीरे अलग कर के और उनको अपने देश में बेच कर वह तो बहुत अमीर आदमी बन जायेगा।

उसने चीते राजा से विदा ली और चीते के चले जाने बाद साँप और चूहे को याद किया। तो वे भी अपनी अपनी भेंटें ले कर उसके पास आये। उनसे भी कुछ औपचारिक बातें हुईं। गंगाधर उन सब जंगली जानवरों के इस व्यवहार से बहुत खुश हुआ और दक्षिण की तरफ चल दिया।

जाते जाते वह सोचता जा रहा था कि जब इन जंगली जानवरों ने उसके साथ कितना अच्छा व्यवहार किया है तो माणिक्काशारी को तो इनसे कहीं ज़्यादा अच्छा व्यवहार करना चाहिये। मुझे अब उससे कुछ नहीं चाहिये। अगर मैं इस ताज को ऐसा का ऐसा ही ले जाऊँ तो यह मेरी गठरी में बहुत जगह लेगा। इसके अलावा यह चोरों की उत्सुकता को भी बढ़ायेगा।

रास्ते में उज्जयिनी पड़ती है तो क्यों न मैं उज्जयिनी हो कर चलूँ। सुनार भी कह रहा था कि वापसी में मैं उससे मिल कर जाऊँ। मैं उससे भी मिल लूँगा और उससे इस ताज को भी पिघलवा कर इसके हीरे अलग करवा लूँगा।

इतनी मेहरबानी तो वह मेरे ऊपर कर ही देगा। फिर उस सोने और हीरों को में किसी फटे कपड़े में लपेट कर अपनी पोटली में रख लूँगा और अपने घर चला जाऊँगा।

ऐसा सोचते सोचते वह उज्जयिनी की तरफ चल पड़ा। वहाँ जा कर उसने सुनार का पता किया तो बहुत जल्दी बिना किसी मुश्किल के उसको सुनार का घर मिल गया।

सुनार उसे अपने घर की चौखट पर देख कर बहुत खुश हुआ जिसने 10 साल पहले कई जंगली जानवरों की सलाह पर भी उसे कुँए से निकाल कर उसकी जान बचायी थी।

गंगाधर ने अन्दर पहुँचते ही उसे अपना ताज दिखाया जो उसे चीते ने दिया था। उसने उसे बताया कि वह उसे कैसे मिला था। फिर उसने उससे उसमें से सोना और हीरे अलग अलग करने की प्रार्थना की।

माणिक्काशारी ने कहा कि वह वैसा ही कर देगा जैसा वह चाहता था। अभी वह थोड़ी देर आराम करे नहाये धोये खाना खाये। गंगाधर अपनी धार्मिक रस्में करने के लिये नदी पर चला गया।

सुनार सोचने लगा "यह मणियों से जड़ा ताज एक चीते के पास कहाँ से आया। यह पता करना कोई मुश्किल काम तो नहीं। किसी राजा ने चीते के लिये एक दो दिन खाने की मेज सजायी होगी। अगर ऐसा न हुआ होता तो चीते के पास यह ताज कहाँ से आया होता।

उज्जयिनी का राजा एक हफ्ते से अपने शिकारियों के साथ शिकार पर गया हुआ था। कि अचानक एक चीता आया। हो सकता है यह वही चीता हो जिसे गंगाधर ने कुँए से निकाला था। उसने राजा पर हमला बोला हो और उसको ले कर भाग गया हो। और यही हुआ भी।

शिकारी लोग जंगल से लौटे और उन्होंने राजकुमार को बताया कि उनके पिता पर क्या बीती। उन्होंने सबने देखा कि चीता राजा को उठा कर ले गया। फिर भी उनके पास इतना साहस नहीं था कि हथियार उठा कर उस चीते से राजा के शरीर को छीन लाते।

जब उन्होंने राजा की मौत के बारे में राजकुमार को बताया तो राजकुमार बहुत रोया। उसने घोषणा करवा दी कि जो कोई उसके पिता की हत्या के बारे में खबर लायेगा वह उसे अपना आधा राज्य दे देगा।

क्योंकि राजकुमार को ज़रा सा भी विश्वास नहीं था कि उसके पिता को चीते ने खाया है। उसका विश्वास था कि राजा के शरीर पर गहने देख कर कुछ लालची शिकारियों ने उसे मार दिया है। वह घोषणा उसने इसी लिये करायी थी।

सुनार को अच्छी तरह मालूम था कि चीते ने ही राजा की जान ली है किसी शिकारी ने नहीं क्योंकि उसने गंगाधर से सुना था कि उसे वह ताज एक चीते से मिला था। फिर भी उसके मन में आधा राज्य लेने की इच्छा जागी और उसने गंगाधर को राजा का कातिल बनाने का सोचा।

ताज वहीं मेज पर रखा हुआ था जहाँ गंगाधर उसे बड़े विश्वास के साथ पिघलाने के लिये रख कर गया था। इससे पहले कि गंगाधर वापस लौटे सुनार ने ताज को अपने कपड़ों में छिपाया और महल की तरफ चल दिया।

वह राजकुमार के सामने गया और उससे कहा कि राजा के मारने वाले को पकड़ लिया गया है और ताज उसके सामने ले जा कर रख दिया। राजकुमार ने ताज अपने हाथ में लिया और उसे इधर उधर से देखा भाला और तुरन्त ही अपना आधा राज्य उसे दे दिया। बाद में उसने कातिल के बारे में पूछा।

सुनार बोला — "वह नदी में नहाने गया है और वह देखने में ऐसा ऐसा दिखायी देता है।"

तुरन्त ही हथियारों से सजे चार लोग नदी की तरफ दौड़ गये। उन्होंने बेचारे ब्राह्मण को हाथ पैरों से बाँध लिया। वह बेचारा आगे आने वाली घटनाओं से बिल्कुल अनजान नहा धो कर अपने ध्यान में बैठा हुआ था। वे लोग गंगाधर को पकड़ कर राजकुमार के सामने ले आये।

राजकुमार ने कातिल की तरफ से मुँह फेर लिया और उसे कारागार में डालने का हुक्म दे दिया। बेचारे ब्राह्मण ने अपने आपको एक अँधेरी कोठरी में बन्द पाया।

पुराने समय में कारागार आजकल की जेल के समान ही होती थीं। वह एक काला अँधेरा छोटा सा कमरा होता था जो चारों तरफ से पत्थरों की दीवार का बना रहता था जिसमें बड़े बड़े अपराध करने वालों को रखा जाता था जिसमें रह कर वे बिना खाये पिये अपनी ज़िन्दगी के सारे दिन गुजार देते थे।

उसमें मरे हुओं और मरने वालों के शरीरों से बदबू आती रहती थी। जब वह उस जगह पहुँचा तो वह क्या सोच रहा था। "यह सुनार ही है जो मुझे यहाँ तक लाया है और जहाँ तक राजकुमार का सवाल है उसने मुझसे क्यों नहीं पूछा कि मुझे यह ताज कैसे मिला।

सुनार या राजकुमार किसी के ऊपर भी लांछन लगाना बेकार है। हम सब सब अपनी अपनी किस्मत का करते और भोगते हैं। हमें उसके हुक्म का पालन करना चाहिये।

दशवर्षाणी बन्धनम् – आज तो मेरे पिता की भविष्यवाणी का अभी पहला ही दिन है। सो कम से कम इतना तो पक्का हो गया कि उनकी भविष्यवाणी झूठी नहीं है। पर इतने साल में यहाँ रहूँगा कैसे। बिना खाये पिये हुए मैं एक दो दिन तो खींच सकता हूँ पर दस साल कैसे गुजारूँगा।

ऐसा नहीं हो सकता। मुझे लगता है कि मैं तो बस अब मर ही जाऊँगा। पर इससे पहले कि मुझे मौत आये मुझे अपने उन जंगली दोस्तों को याद कर लेना चाहिये।"

ऐसा सोचते हुए नीचे के अँधेरे कमरे में गंगाधर ने अपने तीनों जंगली दोस्तों का ध्यान किया। चीता राजा साँप राजा चूहा राजा तीनों अपनी अपनी सेनाओं के साथ कारागार के पास वाले बागीचे में आ कर इकट्ठा हो गये। कुछ देर तक तो वे यही नहीं सोच सके कि वे क्या करें।

तीनों के सामने केवल एक ही समस्या थी कि अपने बचाने वाले के पास तक कैसे पहुँचा जाये जो इस समय धरती के नीचे एक कमरे में बन्द था।

उन्होंने तीनों ने आपस में सलाह की और टूटे फूटे कुँए से कारागार तक एक सुरंग बनाने की योजना बनायी। चूहे राजा ने अपनी सेना को इस काम के लिये तुरन्त ही हुक्म दिया। उन्होंने अपने तेज़ दाँतों से काट काट कर उस कुँऐ से ले कर महल के कारागार की दीवार तक सुरंग खोद दी।

जब वे जेल के कमरे की पत्थरों की दीवार तक पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वे पत्थरों में कोई छेद नहीं कर सकते तो एक तरह के बड़े चूहे बुलाये गये जिनके पैने दाँतों ने पत्थर की दीवार में छोटा सा छेद कर दिया जिससे चूहे कमरे के अन्दर पहुँच गये।

चूहा राजा अपने बचाने वाले को तसल्ली देने के लिये उसमें सबसे पहले घुसा। साँप राजा ने भी बाहर से चूहे के द्वारा अपनी दिली तसल्ली भेजी और कहा कि वह उसे वहाँ से आजाद कराने के लिये अपनी सारी कोशिश लगा देगा। बल्कि उसने उसके बाहर निकलने के लिये एक रास्ता भी सुझाया।

साँप राजा अन्दर गया और गंगाधर को वहाँ से आजाद होने की उम्मीद दिलायी। चूहा राजा ने गंगाधर को खाना पीना लाने की जिम्मेदारी ली।

उसने अपने चूहों से कहा — "जो कुछ मिठाई या रोटी तुम्हें किसी भी घर में मिले उसे हमारे बचाने वाले के खाने के लिये ले कर आओ। जो कोई कपड़ा किसी भी घर में तुम्हें टॅगा मिल जाये तो उसे काट कर पानी में भिगो कर हमारे बचाने वाले के लिये ले कर आओ ताकि वह उसे निचोड़ कर उसमें से पानी पी सके।"

चूहे राजा ने अपने चूहों को यह हुक्म दे कर गंगाधर से विदा ली। बाकी चूहे अपने राजा का हुक्म बजाने पर लग गये।

नागराज ने कहा कि उसको उसकी इस परेशानी की हालत में बहुत सहानुभूति है। चीता राजा भी तुम्हारे इस दुख से बहुत दुखी है और उसने मेरे हाथ तुम्हारे लिये यह सन्देश भेजा है। क्योंकि वह अपने बड़े शरीर की वजह से अन्दर नहीं आ सकता है जैसे हम अपने छोटे शरीरों से आ सकते हैं। चूहा राजा तुमहें खाना पानी लाने का इन्तजाम कर रहा है हम भी अपने जैसा कुछ करेंगे।

आज से हम अपनी सेना को शहर के सब लोगों को तंग करने का आदेश देंगे। आज से सॉप और चीते के काटने से शहर में मरने वालों की गिनती बढ़ जायेगी। और रोज यह गिनती बढ़ती ही रहेगी जब तक तुम यहॉ से छूट नहीं जाते।

जो कुछ भी चूहे तुम्हारे लिये खाने पीने के लिये ले कर आते हैं उसे खा पी कर तुम इस कमरे के दरवाजे के पास ही बैठना। हो सकता है कि जेल की देखभाल करने वाले कहें कि "इस देश का

राजा कितना नीच है। अपनी नीचता की वजह से यह अपनी जनता को सॉप और चीते से कटवा कटवा कर मरवा रहा है।"

जब तुम किसी को ऐसा कहते हुए सुनो तो तुम भी बहुत ज़ोर से चिल्ला कर बोलना ताकि वे लोग तुम्हें सुन लें "इस नीच राजकुमार ने मुझे भी बिना किसी अपराध के यहॉ कैद कर रखा है कि मैंने उसके पिता को मारा है जबकि उन्हें चीते ने मारा है। उसी दिन से उसके राज्य में ये सब परेशानियॉ उठ खड़ी हुई हैं।

अगर मुझे छोड़ दिया जाये तो मैं अपनी ताकत से इन सबको रुकवा सकता हूँ। सॉपों के जहरीले घावों को मरहम लगा कर मैं उनके जहर को नाकाम कर दूँगा।"

कोई भी यह बात जा कर राजकुमार से कह सकता है और अगर उसे पता चल जाये तो वह तुम्हें छोड़ भी सकता है। इस तरह से तुम आजाद हो जाओगे।"

इस तरह अपने बचाने वाले को तसल्ली दे कर उसने उसे साहस रखने के लिये कहा और उससे विदा ले कर चला गया।

उस दिन से चीते और सॉपों ने शहर भर में तहलका मचा दिया। बहुत सारे लोग और जानवर मरने लगे। रोज ही चीते जानवरों को उठा कर ले जाने लगे और सॉप लोगों को काटने लगे।

उधर गंगाधर ने ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया कि अगर उसे छोड़ दिया गया तो वह यह सब रोक देगा। पहले तो किसी ने उसे सुना नहीं फिर कुछ ने सुना तो उन्होंने उसे किसी भूत की

आवाज समझी क्योंकि उनकी समझ में यही नहीं आ रही था कि बिना खाये पिये वह अब तक ज़िन्दा ही कैसे था।

इस तरह महीनों और सालों निकल गये। गंगाधर ॲधेरे कमरे में बैठा हुआ था। उस पर तो सूरज की किरन भी नहीं पड़ रही थी वह तो केवल मिठाई और रोटी के कुछ टुकड़ों पर ही ज़िन्दा था जो चूहे उसे ला कर दे देते थे।

इन हालातों ने उसके शरीर को बिल्कुल ही बदल दिया था। वह अब एक लाल मजबूत बड़ा सा मॉस का लोथड़ा बन कर रह गया था। इस तरह से उसे वहॉ **10** साल गुजर गये जैसी भविष्यवाणी उसके पिता ने की थी।

दस साल की आखिरी शाम को एक सॉप राजकुमारी के कमरे में घुस गया और उसे काट लिया। वह मर गयी। वह राजा की अकेला बच्चा थी। उसकी सारी आशाऐं उसी पर लगी थीं। और उसे किस्मत के क्रूर हाथों ने उससे बेसमय छीन लिया था।

राजा ने उसी समय सारे सॉप के काटे को ठीक करने वालों को बुला भेजा। उसने वायदा किया कि उसको ठीक करने वाले को अपनी बेटी और अपना आधा राज्य दे दोगा।

अब एक नौकर एसा था जिसने गंगाधर को कई बार यह चिल्लाते सुना था कि अगर उसे छोड़ दिया जाये तो वह यह सब रोक देगा सो उसने यह बात राजा से जा कर कही। राजा ने तुरन्त ही किसी को उस कमरे को देखने के लिये भेजा।

एक आदमी अभी भी उसमें बैठा हुआ था। वह किस तरह से इस कमरे में ज़िन्दा रह पाया। कुछ फुसफुसाये कि लगता है यह तो कोई दैवीय आत्मा है। कुछ और फुसफुसाये कि "यह तो राजकुमारी को ज़िन्दा कर के राजकुमारी का हाथ जरूर ही ले लेगा।"

गंगाधर को राजा के पास लाया गया। जैसे ही राजा ने गंगाधर को देखा तो वह उसके पैरों पर गिर पड़ा। वह तो उसकी शानदार शक्ल देख कर ही बहुत प्रभावित हो गया। जमीन के नीचे वाले कमरे में दस साल तक बन्द रहने से उसके शरीर में एक चमक सी आ गयी थी जो किसी सामान्य आदमी के शरीर में नहीं होती थी।

राजा के पास ले जाने से पहले उसके बाल कटवाये गये ताकि उसका चेहरा दिखायी दे सके। राजा ने अपनी पहले वाली गलती के लिये उससे माफी माँगी और फिर अपनी बेटी को ज़िन्दा करने की प्रार्थना की।

गंगाधर बस इतना ही बोला — "एक मुहूर्त के अन्दर अन्दर मुझे वे सब लोग और जानवर जिन्हें साँपों ने काटा है और जो न तो दफ़नाये गये हैं और न जलाये गये हैं ला दें तो मैं उन सबको ज़िन्दा कर दूँगा।"

उसके बाद उसने अपने होठ बन्द किये आँखें बन्द कीं जैसे वह किसी गहरे ध्यान में हो। इससे राजा के दिल में उसकी इज़्ज़त और भी बढ़ गयी। गाड़ी भर भर कर लोगों और जानवरों की लाशें वहाँ

लायी जाने लगीं। कहते है कि बहुत सारी कब्रें भी खोली गयीं और उनमें दबे हुए मुर्दे भी लाये गये।

जब यह सब हो गया तो गंगाधर ने पानी से भरा एक बर्तन लिया और उसने उसका पानी नागराज और व्याघ्रराज को याद करते हुए सब पर छिड़क दिया। सारे जीव ऐसे उठ खड़े हुए जैसे किसी गहरी नींद से जागे हों।

राजकुमारी भी ज़िन्दा हो गयी। राजा की तो ख़ुशी का ठिकाना ही न रहा। उसने उस दिन को कोसा जिस दिन उसने उसे जेल में डलवाया था और अपने आपको कोसा कि कि उसने एक सुनार की बातों का विश्वास किया। उसने उसे अपनी बेटी और जैसा कि वायदा किया था आधा राज्य देने की बजाय फिर सारा ही राज्य दे दिया।

पर गंगाधर ने उससे कुछ भी नहीं लिया। तब राजा ने उससे विनती की कि वह उसे इस सब आफत से छुट्टी दिलाये। उसने राजा की यह बात मानी और सब लोगों से शहर के पास के एक जंगल में इकट्ठा होने के लिये कहा।

राजा ने गंगाधर का कहना माना और सब लोग जंगल में चले गये। वहॉ जा कर उसने सब चीतों और सॉपों को बुलाया और उन्हें हुक्म दिया कि वह तभी उसी पल से शहर में उत्पात मचाना बन्द करें।

सारे लोग उन जंगली जानवरों के ऊपर उसकी हुकूमत देख कर आश्चर्यचकित रह गये। लोगों में फिर बात हुई "हम न कहते थे कि यह कोई साधारण आदमी नहीं है। वरना यह 10 साल तक बिना खाये पिये ज़िन्दा कैसे रह सकता था। जरूर ही यह कोई देवता है।"

जब सारा शहर वहाँ इकट्ठा हुआ था तब गंगाधर कुछ देर के लिये वहाँ गूँगा सा बना बैठा रह गया था। वह नागराज और व्याघ्रराज के बारे में सोच रहा था जो उसकी सहायता के लिये अपनी सारी सेना के साथ वहाँ भागे चले आये थे। लोग तो उनको देख कर डर के मारे भागने लगे थे। तब गंगाधर ने उनको सुरक्षा का विश्वास दिलाया था और उन्हें रोका था।

शाम का धुँधलका गंगाधर का नारंगी रंग उसके शरीर पर लगी हुई राख साँप और चीते उसके पैरों के पास विनम्रता से बैठे हुए सभी कुछ उसे गंगाधर भगवान बना रहे थे। क्योंकि ऐसा कौन हो सकता था जो एक ही शब्द कह कर चीतों और साँपों की सेना को काबू में कर सकता था।

कुछ ने भीड़ में से कहा — "छोड़ो इन बातों को। यह तो जादू है जादू। यह कोई बड़ी बात नहीं है पर हाँ इतने सारे लोगों और जानवरों को ज़िन्दा कर देना जरूर ही गंगाधर का काम है।"

खैर जो कुछ भी हुआ इस बात का भीड़ के दिमाग पर बहुत असर हुआ।

गंगाधर बोला — "मेरे बच्चों तुम लोग उज्जयिनी के लोगों को इतनी तकलीफ क्यों दे रहे हो। इसका मुझे जवाब दो और यह जगह तुरन्त छोड़ दो।"

जब ज्योतिषी के बेटे ने यह कहा तो चीता राजा बोला — "इस राजा ने आपको बन्दी क्यों बनाया योर मैजेस्टी। क्या बस सुनार के कहे पर विश्वास कर के कि आपने राजा को मारा।"

सारे शिकारियों ने कहा कि "आपके पिता को एक चीता पकड़ कर ले गया है।"

चीता राजा बोला — "फिर भी। मैं तो मृत्युदूत था जो उनकी गर्दन पर वार करने के लिये भेजा गया था। मैंने वैसा ही किया और उनका ताज ला कर योर मैजेस्टी को दे दिया।

राजकुमार ने कोई जॉच पड़ताल नहीं की और तुरन्त ही योर मैजेस्टी को कैद में डाल दिया। ऐसे बेवकूफ राजा से हम न्याय की उम्मीद कैसे रख सकते हैं। जब तक कि वह अपने तरीके ठीक कर लेता हम इसी तरह से उत्पात मचाये जायेंगे।"

राजा ने उसकी यह बात सुनी। उस दिन को कोसा जब उसने सुनार की बात का विश्वास किया था। उसने अपना सिर पीटा और अपने अपराध के लिये बहुत ज़ोर ज़ोर से रोया। उस दिन से उसने न्यायपूर्वक राज करने का फैसला किया। बहुत बार माफी मॉगी। नागराज और व्याघ्रराज दोनों ने कहा कि वे भी अपना कहा करेंगे

जब तक वह राजा न्यायपूर्ण ढंग से राज करेगा और वहाँ से विदा ली।

सुनार तो अपनी जान बचा कर भागा पर राजा के सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया और गंगाधर ने उसे माफ कर दिया। अब तो गंगाधर का कहा देवता का कहा हो गया था। इसके बाद सब अपने अपने घरों को लौट गये।

राजा ने फिर से गंगाधर से अपनी बेटी से शादी करने की जिद की तो वह राजी हो गया पर तभी नहीं कुछ समय बाद। पहले वह अपने बड़े भाई से मिलना चाहता था उसके बाद वह वापस लौट कर राजकुमारी से शादी करेगा। राजा भी राजी हो गया और गंगाधर उसी दिन अपने देश चला गया।

अब ऐसा हुआ कि अनजाने में वह अपने घर जाने के लिये एक दूसरी सड़क ले बैठा जो उसे समुद्र के किनारे की तरफ ले गयी। उधर उसका बड़ा भाई भी बनारस जा रहा था तो उसने भी वही सड़क ली जिससे गंगाधर घर वापस लौट रहा था।

वे मिले तो दूर से ही उन दोनों ने एक दूसरे को पहचान लिया। दोनों एक दूसरे के गले लग गये। खुशी को मारे दोनों अपने अपने होश खो बैठे थे।

गंगाधर को तो इतनी ज़्यादा खुशी हुई कि वह उसकी ज़िन्दगी के लिये घातक बन गयी। एक शब्द में कहो तो वह तो खुशी के

मारे सचमुच ही मर गया। बड़े भाई को इससे जो दुख हुआ वह तो केवल सोचा ही जा सकता है बताया नहीं जा सकता।

उसने बार बार अपने खोये हुए भाई को देखा तो अब तो उसने उससे मिलने की सारी आशाऐं छोड़ दी थीं। वह तो उससे उसकी यात्रा का हाल भी नहीं पूछ सका कि क्रूर मौत उसे उसके सामने से ही छीन कर ले गयी। वह इसे सह नहीं सका।

वह बहुत रोया बहुत रोया। फिर उसने उसकी लाश अपने हाथों में उठायी उसे एक पेड़ के नीचे रखा और फिर बहुत रोया। पर उसके भाई के फिर से ज़िन्दा होने की तो कोई आशा ही नहीं थी।

बड़ा भाई गणपति जी का बहुत बड़ा भक्त था। उस दिन शुक्रवार था जो गणपति जी को प्रिय होता है। वह उसकी लाश को उठा कर गणेश जी के मन्दिर में ले गया और गणेश जी को पुकारने लगा। गणेश जी ने उसे दर्शन दिये और पूछा कि उसे क्या चाहिये।

बड़ा भाई बोला — "भगवन। मेरा बेचारा यह छोटा भाई मर गया है और यह इसकी लाश है। जब तक मैं आपकी पूजा खत्म करता हॅू आप इसकी देखभाल करें। अगर मैं इसे कहीं और छोड़ॅूगा तो शैतान इसके शरीर को ले जायेंगे। मैं आपकी पूजा कर लॅू उसके बाद मैं इसे जला दॅूगा।"

बड़े भाई ने गणेश जी से ऐसा कहा और भाई की लाश गणेश जी को सौंप कर वह गणेश जी की पूजा की तैयारी करने चला

गया। उधर गणेश जी ने उस लाश की देखभाल के लिये अपने गणों को तैनात कर दिया।

सो जैसे कोई पिता अपने बिगड़े हुए बच्चे को कोई फल देता है और कहता है कि वह उसे सावधानी से रख ले और वह बच्चा यह सोचता है कि अगर वह उस फल में एक कौर खा भी लेगा तो उसका पिता उसे माफ कर देगा और ऐसा सोच कर वह उसमें से एक कौर खा लेता है।

पर जब वह उसे मीठा लगता है तो वह उसे यह कहते हुए सारा का सारा ही खा जाता है "जो होगा सो देखा जायेगा अगर मैंने इसे खा भी लिया तो मेरे पिता क्या कर लेंगे ज़्यादा से ज़्यादा वह मुजे दो चार झापड़ मार लेंगे या फिर हो सकता है कि शायद माफ ही कर दें।"

उसी तरह से इन गणों ने उस लाश का पहले एक टुकड़ा खाया और जब वह उन्हें मीठा लगा तो उन्होंने उसे सारा ही खा लिया। उसके बाद उन्हें होश आया तो फिर वे आपस में यह सोचने लगे कि गणेश जी को इसका क्या जवाब दिया जायेगा।

उधर बड़ा भाई जब अपनी पूजा खत्म कर के वापस आया तो उसने गणेश जी से अपने भाई की लाश वापस माँगी तो गणेश जी ने अपने गणों को बुलाया। गण आँखें मिचकाते और डर से भरे हुए गणेश जी के सामने आये और उनसे वह लाश लाने के लिये कहा जिसे उन्होंने उनको सँभाल कर रखने के लिये दी थी तो वह तो अब

थी नहीं। इस बात से गणेश जी बहुत नाराज हुए। बड़ा भाई भी बहुत गुस्सा था।

जब उसे लाश नहीं मिली तो उसने कहा — "आपमें मेरे गहरे विश्वास का क्या यही फल है। आप तो मेरे भाई की लाश भी नहीं लौटा सके।"

गणेश जी को यह सुन कर और अपने भक्त की परेशानी को देख कर जो उनकी वजह से उसे हुई थी बहुत शर्म आयी तो उन्होंने उसे बजाय गंगाधर की लाश देने के एक जीता जागता गंगाधर दे दिया। इस तरह ज्योतिषी का दूसरा बेटा फिर से ज़िन्दा हो गया।

फिर दोनों भाई बहुत देर तक अपनी यात्रा के बारे में बात करते रहे। दोनों उज्जयिनी गये जहाँ गंगाधर की शादी राजकुमारी से कर दी गयी और गंगाधर उस राज्य का राजा बन गया। उसने बहुत दिनों तक राज किया। अपने भाई को भी उसने बहुत सारे फायदे करवाये।

अब ऐसी जन्मपत्री को कैसे पढ़ा जाये। कुछ खास ज्योतिषियों को बुलाया गया। उसके हजारों मतलब लगाये गये।

आखिर एक ज्योतिषी ने दूसरी जगह कुछ पढ़ कर एक गाँठ पकड़ ली – "समुद्रतीरे मरणम् किंचित" यानी समुद्र के किनारे मृत्यु थोड़ी देर के लिये और बाद में फिर "भोगम् भविष्यति" यानी फिर आगे सुख ही सुख है।

गंगाधर बोला — “मेरे पिता का कहा कभी गलत नहीं हो सकता।”

तीनों जंगली जानवर अक्सर ज्योतिषी के बेटे के पास आते जाते रहे जो तब उज्जयिनी का राजा बन गया था। यहाँ तक कि सुनार भी फिर राजमहल में आता जाता रहा और उसे भी राजा से बहुत कुछ मिलता रहा।
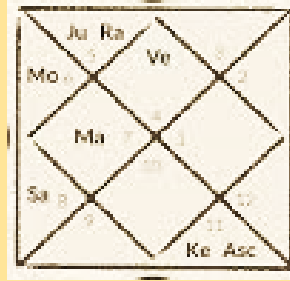
4 रणवीर सिंह[9]

एक बार की बात है कि वनजैमानगर में एक राजा राज करता था जिसका नाम था शिवाचार। वह एक बहुत ही न्यायशील राजा था और अपना राज्य इस तरह से चलाता था कि ऊपर फेंका गया कोई भी पत्थर नीचे नहीं आता था। कोई कौआ नये दुहे हुए दूध में चोंच नहीं मारता था। शेर और बैल दोनों एक ही तालाब से पानी पीते थे और शान्ति और समृद्धि राज्य में चारों तरफ फैली हुई थी।

इन कृपाओं के बावजूद उसको हमेशा दूसरों की परवाह रहती थी। उसकी इस दुनियावी ज़िन्दगी को जो चीज़ और मीठी बना देती वह थी एक बेटा। एक बेटा न होने की वजह उसे हमेशा नरक का डर लगा रहता था। उसके दिन और रात हमेशा एक बेटे के लिये प्रार्थना में ही बीतते।

वह जहाँ कहीं भी पीपल के पेड़ देखता वह ब्राह्मणों को उनके चारों तरफ बिठा देता। कोई भी डाक्टर उसे कोई भी दवा बताता तो वह उसे खाने के लिये हमेशा ही तैयार रहता चाहे वह कितनी भी कड़वी क्यों न हो।

“बेटे के लिये तो तुम गोबर खाने के लिये भी तैयार हो।” इस कहावत के अनुसार उसने बेटा पाने के लिये सब कुछ किया। पर किसी से कोई फायदा नहीं हुआ।

---

[9] Ranvir Singh. Tale No 4.

शिवाचार का एक मन्त्री था जिसका नाम था खरवदन। यह मन्त्री इतना नीच और अत्याचारी था जैसा दुनियाँ में शायद ही कोई और हो।

इस विचार ने कि राजा का कोई वारिस नहीं था और उसको उसके प्राप्त होने की कोई आशा भी नहीं थी उसके दिमाग में एक और विचार को जन्म दिया कि वह और उसका परिवार वनजैमानगर का राज्य हथिया ले।

शिवाचार को इस बात का पता था पर वह बेचारा कर ही क्या सकता था। उसने खरवदन के विचारों को परेशान करने लिये और बिना नरक में जाये स्वर्ग में जगह पाने के लिये अपनी पूजा और ज़ोर शोर से शुरू कर दी।

आखिर शिवाचार की किस्मत खुली। शिवाचार के साठवें साल में एक बेटा पैदा हुआ। इससे उसे कितनी खुशी हुई इसकी तो केवल कल्पना ही की जा सकती है वर्णन नहीं किया जा सकता।

बेटे के जन्म के उपलक्ष्य में लाखों ब्राह्मणों को खाना खिलाया गया। जेल के दरवाजे खोल दिये गये और सारे बन्दियों को आजाद कर दिया गया। हजारों गायें और बहुत सारी जमीन ब्राह्मणों को दान में दी गयी। हर तरह का दान दिया गया।

दस दिन बीत जाने के बाद 11वें दिन राजा ने अपने बेटे का मुँह देखा जिसे देखने के लिये वह इतना व्याकुल था। उसने उसका चेहरा पढ़ा तो उसने उस पर विद्वान होने अच्छे गुणों वाला होने और

समृद्धि की लाइनें पायीं। उसकी पालने में झूला झुलाने और नाम रखने की सारी रस्में बहुत धूमधाम से मनायी गयीं। राजकुमार अब एक राजा के बेटे जैसे पलते बढ़ते हैं वैसे ही बड़ा होने लगा। बड़े लोगों ने उसका नाम सुन्दर रख दिया।

वह मन्त्री जिसकी बस एक ही इच्छा थी कि वह राजा का राज्य हड़प ले राजा का बेटा पैदा होने के बाद मर सी गयी। सारे राज्य में इस घटना से बहुत खुशियाँ मनायी गयीं पर केवल मन्त्री ही इससे दुखी था।

जब किसी की बड़ी ऊँची ऊँची आशाऐं होती हैं और उन्हें पूरी होने में उसे निराशा मिलती है तो उसके रास्ते में जो कुछ भी आता है वह उसी को हटाने की कोशिश करता है। यही हालत खरवदन की हुई।

उसने अपने मन में सोचा "देखता हूँ कि यह मामला कैसे आगे बढ़ता है। राजा तो अब बूढ़ा हो गया है कब्र में पैर लटकाये बैठा है। अगर वह अपने बेटे को छोटा ही छोड़ कर मर गया तो मैं ही उसका देखरेख करने वाला बन कर रहूँगा। उस समय मुझे ऐसे बहुत सारे मौके मिलेंगे जब मैं यह राज्य हथिया सकता हूँ।"

अपने मन में ऐसा सोच कर वह कुछ समय तक के लिये चुप हो गया।

अब शिवाचार तो बहुत ही सख्त आदमी था। उसने कई मौकों पर खरवदन का दिमाग पढ़ रखा था। उस उसके इरादों का पता

था। "यह मेरे अकेले बेटे का खून भी कर सकता है। मुझे राजगद्दी की इतनी चिन्ता नहीं है जितनी अपने बेटे की है कि वह इसे मार डालेगा। "न दैवम् शंकरात् परम"। यानी शंकर जी से बड़ा कोई भगवान नहीं है। उनका अपना कोई रास्ता होगा। अगर राजकुमार की किस्मत में यही लिखा है तो हम उसे कैसे टाल सकते हैं।"

यह कह कर शिवाचार गहरी सॉसें लेने लगा और इस बात का दुख उसे खाता ही रहा।

जब सुन्दर **10** साल का हुआ तो राजा शिवाचार बीमार पड़ गया और मर गया। शिवाचार का एक नौकर था जिसका नाम था रणवीरसिंह। राजा ने उसे हमेशा ही अपना ईमानदार और वफादार नौकर पाया था।

मरते समय राजा ने उसे बुलाया और सिवाय सुन्दर के जो अपने पिता के तकिये के पास खड़ा खड़ा रो रहा था सबको बाहर भेज कर अपने नौकर से कहा — "मेरे प्यारे रणवीरसिंह। मैं अब कुछ ही घटिकाओं का मेहमान हूॅ। तुम मेरी बात सुनो और फिर उसी तरह से करना।

हमारे सबके ऊपर एक ही भगवान है जो हमारे अच्छे और बुरे कर्मों के अनुसार हमें फल देता है। अगर तुमने लालच या पैसे के लालच में आ कर मेरे विश्वास को धोखा दिया जिसकी वजह से मैं तुम्हें कुछ बता रहा हूॅ तो भगवान तुम्हें उसका फल अवश्य ही देगा। तुमसे तो कुछ छिपा नहीं है कि कितनी मुश्किलों से मैंने अपने

इस बेटे को पाया है। मैंने कितने सारे मन्दिर बनवाये कितने ब्राह्मणों को खाना खिलाया कितनी पूजा की है तब कहीं जा कर मुझे यह बेटा मिला है।"

इसके बाद दुख की वजह से वह कुछ न कह सका और ज़ोर ज़ोर से रो पड़ा। उसके ऑसू बहने लगे।

राजकुमार रो कर बोला — "पिता जी आप मेरी वजह से मत रोइये। जो हमारी किस्मत में लिखा है हम उसे किसी भी तरह मिटा नहीं सकते। दुख या सुख जो कुछ भी ब्रह्मा ने हमारी किस्मत में लिख दिये हैं वे तो हमें भोगने ही पड़ेंगे।"

यह देख कर रणवीरसिंह की ऑखों में भी ऑसू आ गये। उसने राजकुमार को अपनी गोद में ले लिया और अपनी कमीज से उसके ऑसू पोंछे।

राजा आगे बोला — "इस तरह रणवीरसिंह तुम तो सब जानते हो। अब मेरी यह इच्छा है कि जितनी कोशिशें मैंने इस बेटे को पाने के लिये की थीं उतनी ही मैं इसे बड़ा करने में भी करता क्योंकि अगर मैं अभी मर गया तो इस बच्चे की देखभाल कौन करेगा।

खरवदन कोई ऐसी तरकीब जरूर निकालेगा जिससे वह इसे मार सके और यह राज्य खुद ले सके। अब मेरी सारी आशाऐं तुम्हारे ऊपर ही टिकी हैं। इसलिये इसे मैं तुम्हें सौंपता हूँ।"

यह कह कर बूढ़ा राजा अपनी बीमारी की परवाह न करते हुए भी अपने बिस्तर से थोड़ा सा उठा अपने बेटे का हाथ चूमा और उसे रणवीरसिंह के हाथों में दे दिया।

वह फिर बोला — "तुम इस बात की चिन्ता मत करना कि इसे राज्य मिलता है या नहीं बस तुम इसे मन्त्री के नीच हाथों से बचा कर रखना जिसे मैं अब तक राज्य का लालची देखता रहा हूँ। अगर तुम ऐसा करोगे तो तुम अपने मालिक के लिये एक बहुत बड़ा काम करोगे।

इसी पल से मैं तुम्हें अपने महल का मालिक बनाता हूँ और अपने बेटे का पिता माता भाई नौकर सब कुछ बनाता हूँ। ख्याल रखना कि तुम मेरे विश्वास को मत तोड़ना।"

इतना कह कर उसने तुरन्त ही मन्त्री को बुलवा भेजा। जब वह आ गया तो उसने उससे कहा — "खरवदन। देखो मेरी क्या हालत हो गयी है। कल मैं राजगद्दी पर था और अब मैं इस दुनियाँ में कुछ मिनटों का ही मेहमान हूँ। यही ज़िन्दगी की अनिश्चितता है। आदमी के अच्छे काम ही उसके साथ दूसरी दुनियाँ तक जाते हैं। "

फिर राजा ने अपनी उँगली में से एक अँगूठी निकाली और उसे उसे देते हुए कहा — "यह मेरी सील की अँगूठी लो और अब यह राज्य तुम्हारे हाथों में है जब तक राजकुमार बालिग नहीं हो जाता। जब राजकुमार **16** साल का हो जाये तो मेहरबानी कर के उसका राज्य उसे दे देना।

राज अच्छी तरह से करना। उसे अपने बेटे की तरह रखना। ठीक समय पर कोई अच्छी और अक्लमन्द राजकुमारी देख कर उसकी शादी कर देना।"

वह अभी ठीक से अपनी बात पूरी कर भी नहीं पाया था कि उसकी साँस टूट गयी। साधु की तरह दिखायी देने वाले मन्त्री ने राजा से हर बात का वायदा किया।

शिवाचार के मरने पर रोने पीटने के बाद उसे चन्दन की लकड़ी की चिता बना कर उसमें जला दिया गया। उसके साथ उसकी बीसियों रानियाँ सती हो गयीं। सब रस्में मन्त्री की देखरेख में ठीक तरह से सम्पन्न की गयीं।

अब वनजैमानगर की गद्दी पर मन्त्री का राज हो गया। रणवीरसिंह महल का मालिक बन गया। अपने वायदों को निभाने के लिये वह सब कुछ ठीक से करता रहा। वह हमेशा ही सुन्दर के करीब रहता।

उसकी पढ़ाई और खेल के बचपन को बनाये रखने के लिये वह बीस कुलीन लोगों के अच्छे बच्चों को महल में ले आया और उन्हें राजकुमार का सहपाठी बना दिया। हर विषय को पढ़ाने के लिये उसने अलग अलग मास्टर बुलाये।

इस तरह सुन्दर को उसने बहुत अच्छी शिक्षा दिलवायी। बस उसके पर एक ही रोक थी कि वह महल के बाहर कहीं नहीं जा

पाता था। रणवीरसिंह उसकी हमेशा रक्षा करता था और उसे यह करने का पूरा अधिकार भी था।

इधर खरवदन ने जैसे ही वह राजा बना एक नोटिस निकलवा दिया कि जो आदमी सुन्दर को मारेगा उसे एक करोड़ मुहरों का इनाम मिलेगा। यह खबर सुनते ही हर लालची अपनी किस्मत आजमाने में लग गया।

इस नोटिस के निकालने से ठीक पहले खरवदन को एक अच्छी लड़की मिल गयी तो उसने उसकी शादी राजकुमार सुन्दर कर दी। वह राजकुमार के साथ महल में ही रहती थी। क्योंकि वह लड़की मन्त्री ने खुद चुनी थी इसलिये रणवीरसिंह हमेशा ही उस पर अपनी कड़ी नजर रखता था। वह सुन्दर को उससे बात नहीं करने देता था।

यह राजकुमार को बिल्कुल नहीं भाता था चाहे वह उसके वफादार नौकर का कहा ही क्यों न हो। वह सुन्दर को उसके हाथ से पान भी नहीं खाने देता था। पर प्यार तो अन्धा होता है सो राजकुमार अपने बूढ़े संरक्षक को मन ही मन कोसता रहता था परन्तु उसका कहा मानने के सिवा वह कुछ और कर भी तो नहीं सकता था।

इस तरह कुछ साल बीत गये। सुन्दर अब 16वें साल में था। राज्य को उसे देने के बारे में कोई बात ही नहीं हो रही थी। राजकुमार अभी भी महल में बन्द था।

रणवीरसिंह अभी कुछ देर और इन्तजार करना चाहता था क्योंकि वह सोचता था कि राजकुमार को राज करने की अभी कुछ और योग्यता आ जानी चाहिये तभी वह इस तरफ कोई कदम उठायेगा।

इस तरह से कुछ और समय बीत गया। राजा शिवाचार की मृत्यु को आठ साल बीत गये। सुन्दर अब **18** साल का हो गया था और वह अभी तक राज्य का मालिक नहीं बना था। उसकी शिक्षा में कोई कमी नहीं थी।

हालाँकि रणवीरसिंह उसे अपने बेटे की तरह प्यार करता था फिर भी वह प्यार उसकी पसन्द का नहीं था क्योंकि वह प्यार उसकी जवानी की खुशियों को भोगने में बाधा डाल रहा था। उसके मनोरंजन का साधन अब केवल उसके दोस्त थे।

एक सुन्दर शाम को वैशाख मास की कृष्ण पक्ष की चौदस को राजकुमार अपने दोस्तों के साथ अपने महल की सातवीं मंजिल पर बैठा हुआ शहर की तरफ देख रहा था। शहर के ऊपर रात का अँधेरा छाता जा रहा था। काम करने वाले लोग अपना अपना काम खत्म कर के घर वापस जा रहे थे।

कि अपने शहर के पूर्वी हिस्से में राजकुमार ने एक बड़ा महल देखा। चुप्पी तोड़ने के लिये उसने अपने दोस्तों से पूछा कि वह क्या है।

उसके दोस्तों ने उसे बताया कि वह शाही दरबार था जहाँ उसे आज से दो साल पहले ही बैठना चाहिये था। उस नीच मन्त्री खरवदन ने तुम्हारी जगह पर कब्जा कर लिया है क्योंकि अगर उसका इरादा तुमहारा राज्य तुम्हें वापस देने का होता तो वह तुम्हें दो साल पहले ही दे दिया होता जब तुम **16** साल के हुए थे।

हमको तो बस इसी बात की तसल्ली है कि बावजूद मन्त्री के नोटिस निकलवाने के और इतना सारा इनाम तुम्हारे सिर पर रखने के भगवान ने तुम्हें ज़िन्दा छोड़ रखा है। हमारे ख्याल से तो लोग उस नोटिस को भूल भी गये होंगे।"

इतना कह कर वे रुक गये। जैसे ही ये शब्द सुन्दर के कानों में पड़े सुन्दर तो वह ठगा सा रह गया। इस परेशानी से जो उसके चेहरे का रंग बदला वह सभी ने देखा। उनको भी बहुत दुख हुआ कि उन्होंने इस बात को छेड़ा।

राजकुमार को एक पल को लगा कि वह तो अपने दोस्तों में एक लड़की बन कर रह गया है पर फिर तुरन्त ही वह अपने पहले वाले हँसी मजाक में लग गया और कुछ दूसरी बातें करने लगा।

उस रात वे बहुत देर तक बातें करते रहे। वहाँ से जाने से पहले सुन्दर ने उन सबसे कहा कि अगली सुबह वे शाही दरबार में जाने के लिये हाजिर हों। उसी समय उसने रणवीरसिंह से कहा कि वह उसके और उसके दोस्तों के लिये घोड़े तैयार कर के रखे वह सुबह ही घुड़सवारी के लिये शहर देखने जाना चाहता है।

यह सुन कर रणवीरसिंह बहुत खुश हुआ और बोला — "माई बाप। मैं तो यह आपके मुँह से सुनने का इन्तजार ही कर रहा था। मैं आपको इस तरह बैठे देख कर यह सोच रहा था कि आपके अन्दर उत्साह नहीं है। मैं कल सुबह आप और आपके दोस्तों के लिये घोड़े तैयार करके रखूँगा।"

रणवीरसिंह ने नौकरों को कह दिया कि वे सुबह को **21** घोड़े राजकुमार और उसके दोस्तों की घुड़सवारी के लिये तैयार कर दें। उसने कुछ अपने आदमी भी इन सबके आगे जाने के लिये तैयार कर दिये।

सुबह हुई दोस्त आये और हल्का नाश्ता करने के बाद वे सब अपने अपने घोड़ों पर चढ़ कर चल दिये। कुछ घुड़सवार उनके आगे थे और कुछ पीछे। राजकुमार और उसके दोस्त उन दोनों के बीच में थे। रणवीरसिंह राजकुमार के बराबर में नंगी तलवार लिये हुए चल रहा था।

सब शहर की मुख्य सड़क से हो कर जा रहे थे। वे चार मुख्य सड़कों से हो कर गये। रास्ते में हर एक ने उठ कर अपने बूढ़े राजा के बेटे को सलाम किया। जब वे उस सड़क से जहाँ रहे थे जहाँ मन्त्री का महल था रणवीरसिंह ने देखा कि उसने राजकुमार को सलाम नहीं किया।

रणवीरसिंह को यह राजा का बहुत बड़ा अपमान महसूस हुआ। गुस्से से उसने अपने होठ काट लिये दाँत किचकिचाये और हाथ

मले। राजकुमार ने अपने बूढ़े संरक्षक के सारे हाव भावों को देखा और उसकी सादगी पर हॅसा।

दोपहर को सब महल लौट आये। दोस्त लोग चले गये। राजकुमार ने अमावस्या की कुछ रस्में कर के खाना खाया और आराम करने चला गया। यह सुबह की घुड़सवारी राजकुमार के दिमाग पर गहरा असर डाल गयी थी। हालॉकि वह रणवीरसिंह की सादगी पर हॅसा जरूर था पर वह अपमान उसके दिल को भी छू गया था।

दिन खत्म हो गया था सुन्दर ने शाम का खाना खाया और अपने सोने के कमरे में जा कर बन्द हो गया जब तक कि करीब दो घंटे नहीं हो गये। रोज की तरह से रणवीरसिंह बाहर खड़ा पहरा दे रहा था। राजकुमार ने देखा कि उसकी पत्नी अपने बिस्तर में गहरी नींद में सोयी हुई थी।

बिना उसकी नींद खराब किये हुए वह कमरे में इधर उधर चक्कर काटने लगा कि तभी उसका ध्यान एक धागे जैसी चीज़ पर गया जो उसके सोने के कमरे में एक कोने में पड़ी थी। उसने उसे उठा कर देखा तो देखा कि वह धागे की बनी हुई एक सीढ़ी थी।

उसके पास इतना समय नहीं था कि वह यह सोच सकता कि वह उसके कमरे में आयी कैसे। उसी समय रणवीरसिंह अपना रात का खाना खाने चला गया था।

राजकुमार कुछ परेशान हो कर बोला — "उफ़ इस बूढ़े को भी खाना खाने अभी जाना था और परमेश्वर ने यह सीढ़ी मेरे रास्ते में फेंक दी है। मुझे यहाँ से भाग जाना चाहिये।"

यह सोच कर सुन्दर बिना अपने संरक्षक के जाने अपने कमरे से बाहर निकल आया और अपने महल की सातवीं मंजिल पर चढ़ गया। वहाँ से उसने अपनी सीढ़ी एक बड़े पेड़ की तरफ पूर्वीय मुख्य सड़क पर लटकायी। जब उसने उसे खींच कर देखा तो वह उसमें कस कर अटक गयी थी। "अब मैं यहाँ से उतरता हूँ परमेश्वर मेरा भला करेंगे।"

यह सोच कर सुन्दर नीचे उतर गया और मिनटों में वह पूर्वीय सड़क पर था। क्योंकि रणवीरसिंह का उस पर हमेशा से ही कड़ा पहरा था इसलिये वह अपनी मर्जी से पहले कभी बाहर ही नहीं निकला था और आज वह अमावस्या की रात को बाहर घूम रहा था जब रात अँधेरी थी।

"ज़िन्दगी तो सबको प्यारी होती है। अभी अगर मन्त्री या उसका कोई आदमी मुझे देख ले और मार दे। "न दैवम् शंकरात् परम"। यानी शंकर जी से बड़ा कोई भगवान नहीं है। वह जरूर मेरी रक्षा करेंगे।"

यह सोच कर वह सबसे पास वाले पेड़ों के झुंड के पास चला गया और तब तक वहीं इधर उधर घूमता रहा जब तक शहर का शोर खत्म नहीं हो गया। उसका वहाँ ठहरना बेकार नहीं गया।

जहाँ वह खड़ा था वहीं पास में एक मकान था जिसमें एक पति पत्नी रहते थे वे बात कर रहे थे कि उसने उन्हें सुना। पति कह रहा था "प्रिये अपने आपको सँभालो। हम क्या कर सकते हैं। हमारी किस्मत यही चाहती है। भगवान करे ब्रह्मा का कोई मन्दिर न हो जिसने हमको यहाँ भेजने की बुराई की है।

जब बूढ़ा राजा ज़िन्दा था तब वह मेरे गुणों को समझता था। मेरे वेदों के ज्ञान के लिये वह मुझे हर संक्रान्ति को ठीक दक्षिणा दिया करता था।

मैं सोचता था कि अब उसका बेटा राजगद्दी पर बैठने के लिये आ जायेगा। मैं तो बस उसी दिन का इन्तजार कर रहा हूँ जब शिवाचार का बेटा यहाँ आ कर राज करेगा और हमको इन दुखों से छुटकारा दिलवायेगा।

पर अब यह आशा भी चली गयी है और मैंने इस नीच शहर को छोड़ने का मन बना लिया है। अब मैं ऐसी जगह जाऊँगा जहाँ का राजा गुणों की महत्ता समझने वाला हो।"

सुन्दर ने इस बात के हर शब्द का एक एक अक्षर सुना। यह सुन कर उसकी शर्म और गुस्से की आग को हवा लग गयी जो दबी पड़ी थी। उसने सोचा "मुझे अपना राज्य वापस लेना चाहिये। अगर मैं जीत गया तो मैं दूसरों की ज़िन्दगी बचा लूँगा। और अगर मैं मरा तो अकेला ही मरूँगा। परमेश्वर मेरी सहायता करे।"

ऐसा सोच कर वह शहर के पूर्वी दरवाजे से शहर के बाहर चला गया। रात अँधेरी थी क्योंकि वह अमावस्या की रात थी। बादल आसमान में छाये हुए थे लगता था बारिश होने वाली थी।

रास्ते में गणेश जी का मन्दिर पड़ता था। हल्की हल्की बूँदाबाँदी हो रही थी तो सुन्दर गणेश जी के मन्दिर में घुस गया ताकि बारिश खत्म होने पर वह वहाँ से आगे जा सके।

जैसे ही वह अन्दर घुसा तो वहाँ उसे दो आदमी आते हुए दिखायी दिये जो देखने में गड़रिये लगते थे। लगता था वे अपने जानवरों को देख रहे थे और मन्दिर में बारिश से बचने के लिये आ गये थे।

उन्हें देख कर सुन्दर तो काँप गया कि कहीं वे उसे मार न दें। वे आ कर मन्दिर के बरामदे में बैठ गये और अपनी थैली निकाल कर उसमें से सुपारी निकाल कर खाने लगे। पास में एक छिपकली थी जो कुछ कुछ बोल रही थी।

एक ने दूसरे से कहा — "रामकोन। मैंने सुना है कि तुम बड़े अच्छे ज्योतिषी हो और चिड़ियों और छिपकलियों की भाषा भी जानते हो। तो बताओ कि यह छिपकली क्या कह रही है।"

रामकोन बोला — "यह एक खबर दे रही है जिसे अगर कोई दूसरा समय होता तो मैं कभी नहीं बताता पर इस बरसाती रात में क्योंकि यहाँ कोई चौथा आदमी नहीं है इसलिये मैं तुम्हें बताता हूँ कि

इस शहर का राजकुमार इसी मन्दिर में घूम रहा है। ऐसा यह छिपकली बोल रही है। इसी लिये मैंने "कोई चौथा आदमी" कहा।

मुझे बहुत खुशी है कि उसके सिर की इतनी ऊँची कीमत लगाने पर भी अभी तक कोई लालची आदमी सफल नहीं हुआ है। असल बात तो यह है कि वह अपने समृद्ध भविष्य के लिये शेर की मॉद में सुरक्षित रह रहा है।"

रामकोन ने अभी अपनी बात खत्म ही की थी कि छिपकली फिर से कुछ बोली। रामकोन ने अपने दोस्त लक्ष्मणकोन से छिपकली के कहने के बारे में पूछा कि उसने फिर क्या कहा।

रामकोन ने लक्ष्मणकोन से कहा "अबकी बार यह राजकुमार के बारे में कुछ बुरी खबर दे रही है। मन्त्री और प्रधानी किसी गुप्त बात पर सलाह करने के लिये यहॉ बहुत जल्दी ही पहुॅचने वाले हैं। यह छिपकली कुछ ऐसा ही कह रही है।"

उसी समय मन्त्री की गाड़ी उधर की तरफ आती दिखायी दी। रामकोन बोला "अब हमें यहॉ से चलना चाहिये। भगवान राजकुमार की रक्षा करें।" कह कर वे दोनों वहॉ से भाग लिये।

राजकुमार को तो बस ऐसा लगने लगा जैसे उसे फॉसी के फन्दे की तरफ ले जाया जा रहा हो। उसकी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा दुश्मन मन्त्री वहॉ आ रहा था जहॉ वह छिपा हुआ था।

राजकुमार सोचने लगा “मैं तो अपनी बेवकूफी में अपने बूढ़े संरक्षक को ही बुरा भला कह रहा था। अब मैं इस मुसीबत से कैसे बचूँ। केवल शंकर जी ही जानते हैं।”

ऐसा सोच कर वह मन्दिर के सबसे भीतरी हिस्से में भाग कर मूर्ति के पीछे छिप गया और सॉस रोक कर पेड़ के तने की तरह से बैठ गया। ताकि कहीं ऐसा न हो कि उसकी सॉस की आवाज सुन कर मन्त्री को उसके वहॉ होने का पता चल जाये।

उसको वहॉ गड़रियों के छिपकली की बोली समझने के ज्ञान की तारीफ करने का काफी समय मिल गया क्योंकि अगर वे यह सब नहीं जानते तो वे तो उसे मन्त्री के हवाले कर देते।

दूसरे गड़रिये की छिपकली की बोली समझने की ताकत के अनुसार गणेश जी के मन्दिर के सामने एक गाड़ी आ कर रुकी और उसमें से मन्त्री और प्रधानी निकले। इन दोनों के अलावा वहॉ मन्त्री का गाड़ीवान था और मूर्ति के पीछे छिपा राजकुमार था। इन चारों के अलावा वहॉ और कोई नहीं था।

खरवदन और उसके सहायक ने रात के ॲधेरे में वह अकेली जगह सलाह मशवरे के लिये चुनी थी। पहले मन्त्री बोला। उसके बोलने से लग रहा था जैसे वह बहुत गुस्सा था — “इस राजकुमार को मेरी सड़क पर इस तरह से आजादी से घोड़े पर सवार हो कर जाने की इजाज़त किसने दी? हमारे इतने सारे नौकर जो हमारा नमक खाते हैं किसी ने भी उसका सिर नहीं काटा?”

प्रधानी बोला — "हुजूर। जो भी मैं आपसे कहने जा रहा हूँ आप मेरे उस कहे को माफ करें। हमने जो राज्य लिया हुआ है यह राज्य हमारा नहीं है। अगर राजकुमार ने राजगद्दी दो साल पहले ही मॉग ली होती तो हमने उसे कानूनन तरीके से उसे इसे दे दिया होता। उसने मॉगी नहीं और हमने दी नहीं।

वह कोई मॉग कर के हमें परेशान नहीं करता बल्कि एक गरीब जनता की तरह अपने महल में रहता है तो हमें उसे क्यों मारना चाहिये। हमें अपने बूढ़े आदरणीय राजा शिवाचार के अकेले बेटे को क्यों मारना चाहिये। मैं आपको जनाब यह सलाह देना चाहता हूँ कि हमको उसके सिर की इतनी चिन्ता नहीं करनी चाहिये।"

मन्त्री भड़क कर बोला — "ओ कमीने नीच। तू मुझे नीति सिखाने चला है। तू अपने बड़ों को सीख देता है। तुझे सुबह होने से पहले इसका फल भुगतना पड़ेगा।'

प्रधानी ने देखा कि उसकी इतनी अच्छी सलाह बेकार गयी जैसे बहरे के सामने भोंपू बजाना। बल्कि अब तो उसे अपनी जान की चिन्ता होने लगी थी। सो उसने तुरन्त ही हजारों बार माफी मॉगी और राजकुमार का सिर लाने के लिये एक हफ्ते का समय मॉगा।

क्योंकि खरवदन तो यही चाहता था उसने प्रधानी को छोड़ दिया। उन लोगों ने कुछ और बातों पर बातें कीं और वहाँ से चलने के लिये तैयार हुए।

राजकुमार जो गणेश जी की मूर्ति के पीछे छिपा बैठा था डर के मारे जम सा गया। अब तक वह जो छोटी छोटी साँसें ले रहा था और निकाल रहा वह उसी से काफी थक गया था और ऊपर से ये कठोर शब्द उसके कानों में पड़े तो उसकी तो बस जान ही निकल गयी। बस वह चुपचाप वहीं छिपा बैठा रहा।

खरवदन और प्रधानी की बातें खत्म हो चुकी थीं सो वे वहाँ से चले गये। सुन्दर ने साहस जुटाया और शंकर भगवान को अपने जान बचाने के लिये लाख लाख धन्यवाद दिया और प्रार्थना की वह हमेशा उसकी जान बचायें।

अब वह मन्दिर से चुपचाप बाहर निकल आया और यह सोचते हुए कि अब जो चाहे हो वह अपनी ज़िन्दगी के बारे में उनके और प्लान जान कर ही रहेगा उनकी गाड़ी के पीछे बैठ गया।

गाड़ी शहर की दूसरी दिशा में जाने लगी। वह पश्चिमी दरवाजे से बाहर निकली और शहर के बाहर एक बागीचे के पास जा पहुँची। बहादुर राजकुमार उनका पीछा करता रहा। उस बागीचे के बीच में एक सुन्दर तालाब था। तालाब के किनारे दिन जैसे लग रहा था क्योंकि वहाँ बहुत सारी रोशनी जल रही थी।

उस तालाब के बीच में एक टापू था जिस पर एक महल खड़ा था। उसके सोने के खम्भे थे। चाँदी के सोफा थे। हीरे के दरवाजे थे। यह सब मिल कर वह महल इन्द्रलोक जैसा लग रहा था।

किनारे से महल तक एक सड़क जा रही थी जिस पर दोनों तरफ खुशबू वाले पेड़ लगे हुए थे।

उस सड़क पर जा कर वह गाड़ी रुक गयी। उसके वहाँ पहुँचने से पहले ही राजकुमार गाड़ी से उतर गया और एक सुरक्षित जगह देख कर छिप गया। वह वहाँ से महल में क्या हो रहा था वह यह सब देख सकता था। उसे यकीन था कि मन्त्री को यहीं आना था।

खरवदन भी वहीं उतर गया और प्रधानी को उसने घर वापस भेज दिया। उस बागीचे से सुन्दर को यह सबसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि वहाँ कोई पुरुष नौकर नहीं था।

सड़के शुरू में ही **20** बहुत सुन्दर लड़कियाँ मन्त्री का स्वागत करने के लिये खड़ी हुई थीं। वह मन्त्री को उस खुशबूदार सड़क से महल की तरफ ले गयीं। मन्त्री जब अन्दर पहुँच गया तो वहाँ पड़े एक सोने के काउच पर जा कर बैठ गया।

वहाँ पहुँच कर उसने उन दासियों को रानी को बुलाने का हुक्म दिया। दस दस दासियाँ हाथी दाँत की पालकी को दोनों तरफ से ले कर रानी को लाने के लिये चलीं।

राजकुमार बोला — "ये दासियाँ तो खुद ही उर्वशी रम्भा जैसी हैं तो इनकी मालकिन की सुन्दरता तो दुनियाँ भर में सबसे अधिक होगी। देखूँ तो वह कैसी है।" यह सोचते हुए राजकुमार बड़ी उत्सुकता से पालकी के लौटने का इन्तजार करने लगा।

कुछ ही मिनट में वह लौट आयी। एक बहुत ही सुन्दर स्त्री पालकी में से निकली। मन्त्री उसको सहारा देने के लिये दौड़ा।

राजकुमार ने देखा क्या ही भयानक दृश्य था। उफ़। यह वह क्या देख रहा था। यह तो उसकी अपनी पत्नी थी। वही लड़की जिससे मन्त्री ने कुछ साल पहले ही उसकी शादी की थी।

"क्या यह मेरी ऑखों का धोखा है? क्या ये लोग अपना अपना काम ठीक से कर रहे हैं? मुझे इसे एक बार और देखना चाहिये।" सो उसने बार बार अपनी ऑखें साफ कर के उसे देखा कि वह कहीं किसी गलती पर तो नहीं है। पर नहीं वह किसी गलती पर नहीं था। वह उसे साफ साफ देख सकता था। यह तो उसी की पत्नी थी।

मैंने कितनी बड़ी बेवकूफी कि अपने उस बूढ़े संरक्षक को बेकार में बुरा भला कहा कि वह मेरी पत्नी से ही मेरी दोस्ती नहीं करने देना चाहता था। मैं वह आज देख रहा हूं जो उसने बहुत पहले देख लिया था।

शायद अगर मैंने उसे पहले ही अच्छी तरह देख लिया होता तो शायद किसी गुप्त रास्ते से ये लोग मुझे यहॉ ले आते। अगर मैंने इसके हाथ से कुछ खा पी लिया होता तो मैं तो उसी दिन मर ही जाता।

बेचारा मेरा बूढ़ा संरक्षक। मेरा रणवीरसिंह। उसने तो मुझे इन सब आफतों से बचाया।"

जब वह उसी काउच पर मन्त्री के पास बैठी तो ये और हजारों और विचार सुन्दर के दिमाग में चक्कर काट रहे थे। उसकी पत्नी ने मन्त्री से शिकायत की कि वह उसके पति को मारने में देर क्यों कर रहा था। खास कर के जब वह सुबह की घुड़सवारी पर गया था तब तो उसके पास बहुत सारे मौके थे।

राजकुमार ने सोचा "उफ खरवदन तूने मेरी शादी ऐसी लड़की से की। भगवान और रणवीरसिंह का बहुत बहुत धन्यवाद कि मैं उसके जाल में नहीं फँसा।"

मन्त्री ने उससे हजारों बहाने बनाये और उसे वह सब बताया जो उसके और प्रधानी के बीच हुआ था और फिर जिसका प्रधानी ने उससे वायदा किया था। उसके बाद वे सोने चले गये।

उसी समय उल्लू बोलने लगा। उसकी दासियों में से एक को पक्षियों की भाषा आती थी। मन्त्री की कृपा पाने के लिये उसने मन्त्री को बताया कि राजकुमार उसी बागीचे में एक पेड़ के पीछे छिपा खड़ा हुआ है।

सुन्दर के सिर पर रखे हुए इनाम की वजह से स्त्रियाँ भी उसका सिर काटने के लिये तैयार थीं। सारी दासियाँ हाथ में मशाल ले कर बागीचे की तरफ दौड़ पड़ीं।

ये शब्द राजकुमार के कानों में बिजली की तरह से गिरे। इससे पहले कि वे स्त्रियाँ उसको खोजतीं वह अपने बचाव में लग गया।

वह एक ऊँची दीवार के ऊपर कूदा और पतंग की तरह से वहाँ से उड़ गया।

मन्त्री और स्त्रियों के अपनी खुशबूदार सड़क पार कर के तालाब के किनारे पर आने से पहले सुन्दर शहर की उत्तरी सड़क पर पहुँच गया था। यह खबर कि राजकुमार उस रात महल से बाहर था सारे शहर में फैल गयी। लालची लोग अब उसके सिर को शहर में चारों तरफ ढूँढ रहे थे।

सुन्दर ने सोचा कि गलियों से हो कर जाना तो खतरे से खाली नहीं है सो उसने एक सुरक्षित जगह छिपने की सोची।

किस्मत से उसे एक ऐसी जगह मिल भी गयी। वह एक पुरानी खंडहर सराय थी जहाँ उसके पिता के समय में गरीबों को खाना बाँटा जाता था पर अब वहाँ वे केवल सोते थे। अब वहाँ उन्हें चावल देने वाला कोई नहीं था।

सो राजकुमार उस सराय में घुस गया और वहाँ सो रहे लोगों के बीच में जा कर लेट गया। खुशकिस्मती से उसे किसी ने देखा नहीं पर वह वहीं से उन लोगों की बाहर से आती आवाजें सुनता रहा जो उसे ढूँढ रहे थे।

मन्त्री बेकार में ही बाहर बागीचे में उसे ढूँढता रहा और दासियों को बुरा भला कहता रहा कि उन्होंने उल्लू की आवाज का गलत मतलब निकाला। फिर वह जा कर सो गया।

उत्तरी दरवाजे के पास तीन घड़ी की दूरी पर एक डाकू रहता था। वह सात साल में एक बार लूटने के लिये निकलता था। उस समय वह घरों और बड़े मकानों से केवल कीमती रत्न लूटा करता था जैसे गोमेद पुष्परूगा वज्र वैदूर्य आदि आदि। सोना चाँदी तो वह छूता भी नहीं था। वह उसकी शान के खिलाफ था।

क्योंकि वह एक ऊँचे स्तर का डाकू था वह अपनी लूट लाने के लिये एक कुली को रखता था। साफ है कि वह कुली गुफा से कभी वापस नहीं लौटता था। उसका काम खत्म होने के बाद उसे मार दिया जाता था ताकि कहीं वह डाकू का भेद न खोल दे।

बदकिस्मती से यह वही अमावस की रात थी जिसे डाकू को लूटने जाना था। वह बाहर निकला तो उसने देखा कि बहुत सारे लोग राजकुमार को ढूँढते हुए घूम रहे हैं। उसने सोचा कि लगता है कि राजकुमार महल में नहीं है सो उसने सोचा कि वही उसे पकड़ ले।

अब उसे क्योंकि एक कुली लेना था सो वह उस खंडहर की तरफ चल दिया ताकि वह उनमें से किसी एक भिखारी को पकड़ सके। जब वह उन्हें देख रहा था तो उसे उनमें राजकुमार भी दिखायी दिया। वह उसे थोड़ा मजबूत और ताकतवर लगा तो उसने सोचा कि "आज यही मेरे काम के लिये ठीक रहेगा।"

ऐसा सोच कर उसने राजकुमार को अपनी बेंत से उसकी पीठ पर थपका। राजकुमार तभी तभी सोया था। इस झपकी में उसने

सपने में देखा कि मन्त्री के लोग उसे ढूँढ रहे हैं और उनमें से एक ने उसे पकड़ लिया है। उसी समय उसने डाकू की छड़ी अपनी पीठ पर महसूस की तो उसे लगा कि उसका सपना सच हो गया है। वह डर के मारे जाग गया।

डाकू ने पूछा — "तुम कौन हो।"

राजकुमार बोला — "एक भिखारी।"

डाकू ने पूछा — "रात तुम्हें कैसी लगती है।"

राजकुमार ने कहा — "उतनी ही काली जितनी हो सकती है।"

डाकू ने एक तरह का काजल उसकी ऑखों में लगाया और फिर पूछा — "अब रात तुम्हें कैसी लग रही है।"

सुन्दर बोला — "इतनी चमकीली जितने करोड़ों सूरज आसमान में होते है।"

डाकू ने राजकुमार के माथे पर फिर तिलक लगाया और बोला — "मैं एक डाकू हूँ और मैं आज राजा का महल लूटने जा रहा हूँ क्योंकि आज राजकुमार महल में नहीं है। तुम मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें बहुत पैसे दूँगा। इस काजल ने तुम्हारी काली रात को दिन बना दिया है। इस तिलक की वजह से तुम जहॉ भी जाओगे तुम्हें कोई नहीं देख पायेगा।"

ऐसा कह कर उसने राजकुमार कुली का हाथ पकड़ कर खींचा और महल की तरफ चल दिया। जहॉ कहीं भी उसने कोई दरवाजा बन्द देखा तो उसे उसने अपने हाथ में लिये एक पत्ता दिखाया।

और लो वह ताला उड़ गया और दरवाजा अपने आप ही खुल गया। यह देख कर तो राजकुमार आश्चर्यचकित रह गया।

कुछ ही मिनटों में डाकू ने सारे दरवाजे और बक्से खोल दिये। वहाँ से उसने सारे कीमती पत्थर बटोरे उन्हें एक पोटली में बाँधा और राजकुमार के सिर पर रख दिया और उससे अपने पीछे आने के लिये कहा। सुन्दर उसके पीछे पीछे चल दिया। वह अपना ही महल लुटवाने में उसकी सहायता कर रहा था।

वह उसकी लूट ले कर उसके पीछे पीछे जा रहा था। और उस बेवकूफ डाकू को एक बार भी शक नहीं हुआ कि वह उसका कुली नहीं बल्कि उस राजमहल का राजकुमार था।

बल्कि वह एक कुली की हैसियत से उसकी सुन्दरता की प्रशंसा करता रहा और यह सोचता रहा कि वह उसकी जान बचा लेगा मारेगा नहीं और साथ में अपनी बेटी की शादी भी उससे कर देगा। क्योंकि डाकू की एक सुन्दर बेटी थी जिसके लिये वह एक अच्छे पति की खोज में था।

सो इस विचार के साथ वह अपनी गुफा के पास पहुँचा और उसके सामने जा कर रुक गया। उसने राजकुमार के सिर पर से जवाहरात की गठरी उतार ली और उसे एक बड़े से कमरे में जाने के लिये कहा जिसके मुँह पर उसने एक बहुत बड़ा पत्थर रखा हुआ था। उसने कोई मन्त्र पढ़ कर उसे हटाया।

डाकू उस गठरी को ले कर अपनी पत्नी के पास चला गया। वहाँ जा कर उसने उससे कुली की सुन्दरता का वर्णन किया और कहा कि वह उनकी बेटी के लिये बहुत सुन्दर पति रहेगा।

पर पत्नी को यह पसन्द नहीं आया सो उसने अपने पति से उसके साथ वैसा ही व्यवहार करने के लिये कहा जैसा कि वे और कुलियों के साथ करते आये थे। यानी उसे मार दो। डाकू कभी अपनी पत्नी के खिलाफ नहीं जाता था सो वह उसे मारने के लिये हथियार लाने चल दिया।

इस बीच डाकू की बेटी ने जो बहुत सुन्दर थी माता पिता की बातें सुन ली थीं। वह तुरन्त ही उस गुफा की ओर चल दी जिसमें राजकुमार बन्द था। उसने एक शब्द बोला और उसका दरवाजा खोला। राजकुमार को जो अब अपनी ज़िन्दगी से बिल्कुल निराश हो चुका था एक सुन्दर लड़की को अपनी ओर आते देख कर कुछ आशा बँधी।

आते ही वह बोली — "तुम जो कोई भी हो ओ सुन्दर कुली। तुम्हें अगर अपनी जान प्यारी है तो अभी अभी यहाँ से भाग जाओ। तुम मेरे पति हो मेरे पिता ने ऐसा ही कहा पर क्योंकि मेरी माँ यह नहीं चाहती इसलिये वह तुम्हें मारने के लिये हथियार लाने गये हैं। अगर एक बार यह दरवाजा बन्द हो जाये तो हम तीनों के अलावा कोई और इसे नहीं खोल सकता – ब्रह्मा भी नहीं।

एक बार यह सुन कर कि तुम मेरे पति हो मुझे तुम्हें हमेशा ही अपना पति मानना चाहिये। इसलिये तुम अभी अभी मेरे पिता की तलवार से बच कर भाग जाओ। अगर तुम आदमी हो तो मेरी इस सहायता के बदले में मुझसे शादी कर लेना। और अगर तुम ऐसा नहीं करते तो तुम जानवर हो और मैं भी कुॅआरी ही मर जाऊॅगी।"

कह कर उसने उस नकली कुली को वहॉ से बाहर निकाला। कुली ने भी जल्दी से उसे गले लगाया और उसके कान में फुसफुसा कर कहा कि वह राजकुमार है और वह उससे शादी जरूर करेगा और वहॉ से बाहर चला गया।

इस डर से कि डाकू उसके पीछे आयेगा वह जिस रास्ते से आया था उस रास्ते को छोड़ कर दूसरे अनजान मैदानों से हो कर शहर के दक्षिणी दरवाजे पर पहुॅच गया। रात करीब करीब बीत चुकी थी।

उस समय तक राजकुमार की खोज बन्द हो चुकी थी और राजकुमार अपने सुरक्षित बच जाने के लिये भगवान को धन्यवाद देते हुए दक्षिणी सड़क पर आ गया।

महल लौटने से पहले उसने कुछ देर सुस्ताने का निश्चय किया ताकि उसकी हॅपहॅपी बन्द हो जाये सो वह एक टूटे फूटे मकान के दरवाजे के पास की एक दीवार पर बैठ गया।

अब वह घर एक गरीब ब्राह्मण का था जिसके पास पहनने के लिये भी ढंग से कपड़े नहीं थे। जब राजकुमार उस घर की दीवार

पर बैठा तभी उस घर का दरवाजा खुला और वह बूढ़ा ब्राह्मण बाहर निकला। उसकी पत्नी ब्राह्मणी एक बर्तन में पानी लिये खड़ी थी।

ब्राह्मण का नाम शुभा सास्त्री था। घर से बाहर निकलते ही उसने एक दो मिनट तक आसमान की तरफ देखा और एक गहरी उसाॅस ले कर बोला — “यह बड़े अफसोस की बात है कि राजकुमार जो हमारे पहले राजा का अकेला बेटा है दो घटिका से अधिक ज़िन्दा नहीं रहेगा। एक कालसर्प उसे काट लेगा। हम क्या करें हम तो बहुत गरीब हैं।

अगर हम अभी सर्प होम शुरू करें तो हम सर्प के मुॅह को बाॅध सकेंगे और उसकी होम में आहुति दे सकेंगे जिससे राजकुमार की जान बच जायेगी।” ऐसा कह कर ब्राह्मण रोने लगा।

सुन्दर जो यह सब बातें सुन रहा था परेशान हो कर दीवार पर से कूद पड़ा और जब वह कूदा तो ब्राह्मण के पैरों के पास आ गिरा। उसने उसे देख कर उससे पूछा “तुम कौन हो।”

राजकुमार बोला — “मैं राजा का गड़रिया हूॅ। मेहरबानी कर के मेरे राजा की ज़िन्दगी बचाइये।”

अब शुभा सास्त्री तो बहुत ही गरीब था। उसके पास तो होम शुरू करने के लिये ज़रा सा घी भी नहीं था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। फिर वह अपने पड़ोसियों के पास घी

मॉगने गया जिसे सुन कर उसके पड़ोसी उसके और उसके ज्योतिष के ऊपर हॅसने लगे।

उधर राजकुमार गुस्से और निराशा से अपने हाथ मलने लगा। जब वह अपने हाथ मल रहा था तो उसके हाथों में उसकी ॲगूठी आ गयी। उसने तुरन्त ही उसे निकाल कर शुभा सास्त्री को दे दिया और उसे बेचने की प्रार्थना की।

ब्राह्मण तुरन्त ही पास वाले बाजार गया और ॲगूठी बेच कर थोड़ा सा घी खरीद लाया। भागता भागता घर आया ठंडे पानी से नहाया और होम करने बैठ गया। राजकुमार को सॉप का डर लग रहा था सो वह घर के अन्दर लेकिन होम की जगह से दूर बैठना चाह रहा था।

समय आने पर आसमान से एक काला सॉप नीचे राजकुमार के सिर पर गिरा पर वह उसे काट नहीं सका और आग में कूद कर मर गया। यह देखते ही बाह्मणी बोली — "यह तो गड़रिया नहीं था यह तो राजकुमार खुद था।"

सुन्दर उठा और उसने शुभा सास्त्री की तीन बार परिक्रमा की और उनसे बोला — "आप ही मेरे पिता और रक्षा करने वाले हैं। यह रात मेरे लिये एक बहुत ही अजीब रात थी।

हर समय मुझे हर मुश्किल से बच जाने का मौका मिलता चला गया और वह मौका मैंने लिया। पर आपकी ताकत के बिना मुझे इस सॉप के काटे से कोई और नहीं बचा सकता था। इसलिये मेरी

ज़िन्दगी तो अब केवल मुझे आप ही की दी हुई है। दिन निकलने से पहले मुझे यहाँ से महल भाग जाना चाहिये और कुछ ही दिनों में आपको इसका इनाम जरूर मिलेगा।"

कह कर सुन्दर अपने महल की तरफ भाग गया।

उधर रणवीरसिंह तो बिल्कुल मरे जैसा हो रहा था। अफवाह फैली हुई थी कि राजकुमार महल से भाग गया है और अब पता नहीं कहाँ है। जिस तरीके से सुन्दर महल से भागा था उससे रणवीरसिंह बहुत आश्चर्यचकित था क्योंकि ऐसा तो उसने पहले कभी किया नहीं था।

उसने सारा महल छान मारा पर यह देख कर तो उसका आश्चर्य और बढ़ गया था कि महल के सारे कमरे तो पहले से ही खुले पड़े थे और लुटे हुए थे। अब वह यह सोचने लगा कि "क्या राजकुमार को महल से किसी चाल से चुराया गया है।"

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे वह दुख के सागर में डूबा हुआ था। राजकुमार को फिर से पाने की उसकी सारी आशाऐं समाप्त हो चुकी थीं।

उसे कितनी खुशी हुई जब सुबह सुबह उसने राजकुमार को महल में घुसते देखा। "मेरे बादशाह। आप रात भर कहाँ थे। आपने तो अपने इस गरीब दास की सलाह भी ठुकरा दी। इस दुनियाँ में आपके कितने दुश्मन हैं यह आपको नहीं पता है।"

राजकुमार बोला — "अब मैं अपने सब दुश्मनों को जान गया हूँ। अब तुम वह सुनो जो मैं कहता हूँ और वही करो जो मैं तुम्हें करने के लिये कहूँ। मैंने अपना ताज बिना किसी लड़ाई के जीत लिया है।

उस दिन को बहुत बहुत धन्यवाद है जिस दिन मुझे तुम मेरे रक्षक के रूप में मिले। क्योंकि मुझे कल ही उन सब बातों की वजहों का पता चला जो तुम मुझसे कहते थे। मेरी कहानी सुन कर तुम्हारे रोंगटे खड़े हो जायेंगे।

भगवान का लाख लाख धन्यवाद है कि मैं उन सब परेशानियों से बच कर आ गया। अगर तुम्हारे पास थोड़े से लोग तैयार हों तो अब राज्य मेरा है।" इतना कह कर राजकुमार ने उसे अपनी सारी कहानी सुना दी। "अब अगर हम मन्त्री को पकड़ लें तो समझो हमारा सब काम खत्म हो गया।"

रणवीरसिंह बोला — "मैं तो यह सोच भी नहीं सकता था कि तुम एक रात में इतना सब देख लोगे और कर लोगे। और अब क्योंकि भगवान ने तुम्हें रास्ता दिखा दिया है तो अब मैं तुम्हारी बात मानूँगा।"

अपने प्लान के अनुसार सुन्दर ने हुक्म दिये। उसने वह घर और शैड बताया जहाँ उसने पिछली रात कुछ समय बिताया था। एक नौकर को उसने घर के मालिक को राजस्थानिक दफ्तर में लाने के लिये कहा।

राणवीरसिंह प्रधानी को ले आया। प्रधानी राजकुमार के अच्छे इरादों से बहुत खुश था। सुन्दर ने उसे अपना मन्त्री बना लिया। दो नौकर दोनों गड़रियों को लाने के लिये भेजे गये। बीस लोग मन्त्री के घर उन सबको जंजीरों से बाँध कर लाने के लिये भेजे गये। उनकी दासियों को भी वहाँ लाने के लिये कहा गया था।

डाकू और उसकी बेरहम पत्नी को भी नहीं भूला गया था। राजकुमार ने गुफा का वर्णन बहुत ही बारीकी से किया था। उसने डाकू और उसकी पत्नी को अचानक बिना बताये पकड़ कर लाने के लिये कहा ताकि उसे अपनी चाल खेलने का कोई मौका न मिल पाये।

डाकू की बेटी को लाने के लिये शाही पालकी भेजी गयी। राजकुमार ने उससे शादी करने का पक्का इरादा कर लिया था। शुभा सास्त्री और उसकी पत्नी को दरबार में लाने के लिये सजे हुए शाही हाथी भेजे गये।

इस तरह सुन्दर ने बिना किसी को मारे पीटे राज्य को अपने अधिकार में कर लिया। रणवीरसिंह तो राजकुमार की यह होशियारी देख कर चकित रह गया कि एक रात में ही उसने कैसे कैसी मुश्किलों का सामना सफलतापूर्वक कर लिया था।

प्रधानी की खुशी की तो कोई सीमा ही नहीं थी। उसने खुद ने दरबार के दरवाजे खोले और वहाँ उन सबको ले कर आया था जो

उस रात से सम्बन्धित थे। राजकुमार नहाया अपनी प्रार्थना की और दरबार में आया।

जब शुभा सास्त्री अपनी पत्नी के साथ वहाँ आया तो राजकुमार ने उन दोनों को तो राज सिंहासन पर बिठा दिया और खुद उनके सामने खड़े हो कर उनको उस रात की कहानी बतायी। गरीब ब्राह्मण और गड़रियों को बहुत सारा इनाम दिया।

उस दासी को देश निकाला दे दिया जो यह जानती थी कि राजकुमार के सिर पर इनाम रखा हुआ है फिर भी उसने मन्त्री को राजकुमार की छिपने की जगह का पता बता दिया। अपनी पत्नी, मन्त्री, डाकू और डाकू की पत्नी के सिर कटवा दिये।

उसने अपनी जान बचाने वाले शुभासास्त्री को दिल खोल कर इनाम दिया और उसकी बेटी से शादी कर ली क्योंकि वह उसका भला चाहने वाली थी। प्रधानी को अपना मन्त्री बना लिया।

फिर उसने अपने रक्षक रणवीरसिंह के साथ वनजैमानगर पर बहुत सालों तक राज्य किया।

5 दान अकेला ही सबसे बड़ा है[10]

तीवल[11] नाम के शहर में एक राजा था जिसका नाम था सुगुण। उसका एक बहुत ही बढ़िया मन्त्री था जिसका नाम था धर्मशील। उन दोनों ने वहाँ बहुत दिनों तक राज किया। दोनों के बच्चे थे। राजकुमार का नाम था सुबुद्धि। वह एक सदाचारी राजकुमार था और अपने नाम जैसा ही था। वह हमेशा ही दुनियाँ के लिये अच्छे काम करता रहता।

मन्त्री के बेटे का नाम था दुर्बुद्धि। वह एक बहुत ही नीच लड़का था जिसका बचपन से यही काम था कि वह जंगली जानवरों और चिड़ियों को छेड़ता रहता। जैसे जैसे वह बड़ा होता गया उसकी यह आदतें और ज़्यादा पक्की होती गयीं।

दोनों के स्वभाव में बहुत अन्तर होते हुए भी दोनों में बहुत पक्की दोस्ती थी। जब भी वे दोनों सुबह सुबह अपने बिस्तर से उठते अपनी पार्थनाऐं कहते या फिर पढ़ते लिखते यानी हर काम को करने से पहले वे अपना उद्देश्य दोहराते।

जनता को सुबुद्धि से बहुत आशाऐं थीं। वे उसमें एक बहुत ही अच्छे भले और दूसरों की भलाई करने वाले राजा के रूप में देखते

[10] Charity Alone Conquers. Tale No 5.

[11] Tival is the classical name of the modern town of Ramnad in the District of Madurai.

थे पर मन्त्री के बेटे को सभी लोग नफरत करते थे। यहाँ तक कि मन्त्री खुद भी अपने बेटे के इस उलटे दिमाग से नफरत करता था।

अब मन्त्री के बेटे का केवल एक ही दोस्त था राजकुमार और वह उसे उसकी कमियों के बावजूद दिल से प्यार करता था। दोनों एक साथ ही बड़े हुए थे। एक ही मिट्टी में खेले थे। एक ही स्कूल में पढ़े थे। एक ही गुरू से पढ़े थे।

अब यह तो किस्मत की बात थी कि राजकुमार का दिमाग इस तरह का था और मन्त्री के बेटे का दिमाग दूसरी तरह का था। हालाँकि दुर्बुद्धि को इस बात का अच्छी तरह से पता था कि सारे लोग उससे नफरत करते थे। वह यह सब भी अच्छी तरह से जानता था कि उसके चारों तरफ क्या हो रहा है पर फिर भी वह अपने आपको बदलने की कोशिश नहीं करता था।

एक दिन दुर्बुद्धि और सुबुद्धि घोड़े पर सवार कहीं जा रहे थे कि दुर्बुद्धि ने सुबुद्धि से कहा — "मेरे प्यारे दोस्त। तुम्हारे सिवा मेरा इस दुनियाँ में और कोई दोस्त नहीं है।"

सुबुद्धि बोला — "तुम चिन्ता न करो दोस्त। मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगा।"

दुर्बुद्धि बोला — "मेरे पिता तक तो मुझसे नफरत करते हैं तो फिर और कौन है जो मुझसे प्यार करेगा। दूसरी तरफ तुम्हें हर कोई प्यार करता है। अब तुम्हारी शादी भी जल्दी ही किसी सुन्दर लड़की से हो जायेगी जबकि मैं कुँआरा ही रह जाऊँगा क्योंकि मुझसे कौन

लड़की शादी करना पसन्द करेगी। तुम तो जल्दी ही राजा बन जाओगे पर मैं तुम्हारा मन्त्री नहीं बन सकता क्योंकि लोग मुझे प्यार नहीं करते। तुम ही बताओ कि मैं क्या करूँ।"

मन्त्री के बेटे ने ऐसा कह कर अपना सिर लटका लिया जैसे लोग जो उससे बहुत नफरत करते थे उनकी बात उसे अब समझ में आ रही हो और वह सच में ही उसका कुछ उपाय करना चाहता हो।

सुबुद्धि बोला — "तुम किसी पर ध्यान मत दो। मैं तुम्हें अपना मन्त्री बनाऊँगा। तुम्हें हर वह चीज़ दूँगा जो तुम्हें चाहिये और तुम्हारा हर तरह से ख्याल रखूँगा कि तुम्हारे पास सब कुछ हो।"

दुर्बुद्धि तुरन्त बोला — "अगर ऐसा है तो क्या तुम मुझे एक दिन के लिये अपनी पत्नी भी दोगे अगर तुम्हारी शादी मुझसे पहले हो जाये तो या फिर बाद में अगर मैं कुँआरा रह जाऊँ तो।" ऐसे बेशर्मी के शब्द दुर्बुद्धि ने अपने अकेले प्रिय दोस्त से कहे।

राजकुमार को गुस्सा दिलाने के लिये ये शब्द ही काफी थे पर वह इतने अच्छे स्वभाव का आदमी था कि गुस्सा होने की बजाय वह अपने साथी की बेवकूफी पर मुस्कुरा दिया और उससे कहा कि अगर उसकी शादी पहले हो गयी तो एक दिन के लिये वह अपनी पत्नी उसे दे देगा

सो दोनों में जब वे छोटे ही थे इस तरह का समझौता हो गया। इस समझौते को भी कई साल बीत गये।

एक दिन राजकुमार पास के जंगल में शिकार खेलने गया। उसका दोस्त मन्त्री और भी कई लोग उसके साथ गये थे। राजकुमार और मन्त्री का बेटा दोनों एक हिरन के पीछे लग गये। वे अपने बाकी साथियों से इतना आगे निकल गये कि वे उस घने जंगल में खो गये। उनके साथी लोग न तो उन्हें देख पा रहे थे और न ही उनका पीछा ही कर पा रहे थे।

शाम को वे घर लौट आये और राजा और मन्त्री को बताया कि उनके बेटे तो उन्हें कहीं दिखायी नहीं दिये। उन्होंने भी सोचा कि वे लोग अब बड़े थे इसलिये अब उनकी रक्षा करने का कोई खास मतलब नहीं था। वे अपना ख्याल अपने आप ही रख सकते थे।

उधर दोनों दोस्त हिरन का पीछा करते रहे। पीछा करते करते उन्होंने देखा कि अब तो उन्हें इस घने जंगल में शाम हो गयी है। उन लोगों ने सुबह को बस थोड़ा सा ही नाश्ता किया था उसके बाद तब से उन्होंने कुछ भी नहीं खाया था। उनको बड़ी तेज़ भूख लगी थी। पीछा करते करते उन्हें प्यास भी लग आयी थी। प्यास बुझाने के लिये उन्हें कहीं एक बूँद पानी भी नजर नहीं आ रहा था।

इस निराशा में उन्होंने अपने आपको घोड़ों के हवाले कर दिया था कि वे जहाँ कहीं भी उन्हें ले जायें। जानवर अपने शाही मालिकों की जरूरतों को अच्छी तरह से समझते थे। वे चलते रहे चलते रहे और चलते चलते आधी रात के करीब एक तालाब के किनारे के पास पहुँच गये।

राजकुमार और मन्त्री का बेटा दोनों ही प्यास से अधमरे से हो रहे थे। जब उनके घोड़े रुके तो उन दोनों ने अपनी आँखें खोलीं। यकायक अपने आपको एक तालाब के किनारे पा कर वे बहुत खुश हुए।

सुबुद्धि ने अपने मन में सोचा "यकीनन भगवान अपने बच्चों की देखभाल करता ही है। अगर वह हमारी परवाह नहीं करता तो वह हमें इस तालाब के किनारे लाता ही क्यों जबकि हमने अपने आपको इन घोड़ों को सौंप दिया था।" और वह अपने घोड़े से उतर गया। मन्त्री का बेटा तब तक और ज़्यादा थक गया था। वह भी अपने घोड़े से उतरा।

सुबुद्धि अपने भले स्वभाव की वजह से पहले दोनों घोड़ों को पानी पिलाने के लिये गया। जब उन्होंने पेट भर कर पानी पी लिया तब वह उन्हें पास के घास के मैदान में चरने के लिये छोड़ दिया। उसके बाद वह अपनी प्यास बुझने के लिये पानी में घुसा। मन्त्री का बेटा भी उसके पीछे पीछे घुसा।

सुबद्धि ने पहले अपनी प्रार्थना कही फिर कुछ पानी पिया और बाहर निकल आया। दुर्बुद्धि भी वापस आ गया। फिर उन्होंने एक साफ जगह देखी और बची हुई रात गुजारने के लिये वहाँ बैठ गये।

राजकुमार जब अपनी जगह बैठा तो हमेशा की तरह से बोला "दान अकेला ही सबसे बड़ा है।" और मन्त्री का बेटा अपनी बात बोला "दान न देना ही सबसे बड़ा है।"

उस समय मन्त्री के बेटे के शब्द राजकुमार के कानों में जहर की तरह से पड़े। अपने कोमल स्वभाव के बावजूद वह अपने गुस्से पर काबू नहीं रख सका।

सारे दिन की परेशानी के बाद रात में प्यास बुझाने के लिये खुशकिस्मती से तालाब के किनारे आ जाना यह सब राजकुमार के दिमाग में अभी तक घूम रहा था। उसकी प्रार्थना भी अभी तक खत्म नहीं हुई थी।

मन्त्री के बेटे को ऐसा नहीं सोचना चाहिये था। उसे ऐसा बोलना भी नहीं चाहिये था जो राजकुमार को बुरा लगता।

राजकुमार मन्त्री के बेटे से बोला — "ओ नीच। ओ भगवान में विश्वास न रखने वाले। इतनी परेशानियों के बाद भी तुम अपने नीच उद्देश्य बोल रहे हो। अभी भी बहुत देर नहीं हुई है। अपना व्यवहार बदल लो। उस भगवान के बारे में सोचो जिसने तुम्हें अभी अभी बचाया है। उसमें विश्वास रखो। आज से तुम अपना यह उद्देश्य बदल दो।"

दुर्बुद्धि जो स्वभाव से ही नीच और झगड़ालू था राजकुमार की यह भली सलाह सुन कर गुस्से में भर कर उठा — "चुप रहो। मुझे भी मालूम है और तुम्हें भी मालूम है कि तुम यहाँ अपनी पूँछ भी नहीं हिला सकते। इस जंगल में तुमसे मैं अकेला निपट सकता हूँ।"

इतना कह कर दुर्बुद्धि उठा और शेर की तरह दहाड़ता हुआ सुबुद्धि की तरफ दौड़ा। सुबुद्धि ने तो इस दृश्य की कल्पना भी नहीं की थी। दुर्बुद्धि उसके ऊपर तुरन्त ही हावी हो गया।

पलक झपकते ही दुर्बुद्धि ने सुबुद्धि को नीचे गिरा दिया और मन्त्री का बेटा अब उसके ऊपर था। उसने अपने शाही मालिक को बुरी तरह से पीटा।

पास में ही एक पंख पड़ा था। उसने उसे उठाया और उससे उसकी दोनों ऑखें निकाल कर उनसे बने खाली छेदों में रेत भर दी। फिर यह सोच कर कि उसने उसे मार दिया है वह अपना घोड़ा ले कर भाग गया।

सुबुद्धि तो करीब करीब मरा हुआ सा ही पड़ा था। उसके सारे शरीर पर घाव ही घाव थे। उसकी ऑखें चली गयी थीं। उसके शरीर को बहुत कष्ट हो रहा था। सुबुद्धि सोच रहा था "क्या हम सबके ऊपर कोई भगवान है?"

रात खत्म होने वाली थी। सुबह की ठंडी हवा से उसके शरीर में कुछ जान सी पड़ी। उससे उसे कुछ ताकत महसूस हुई। वह उठा और जमीन पर रेंगता हुआ एक मन्दिर के दरवाजे पर आ पहॅुचा। वह उसके अन्दर चला गया और दरवाजा बन्द कर के दरवाजे की कुंडी लगा ली।

यह मन्दिर काली माता का मन्दिर था। सुबह सुबह माता जड़ें और फल इकट्ठा करने बाहर जाती थीं तो वह शाम को ही लौटती

थीं। उस दिन शाम को जब वह घर लौटीं तो उन्होंने देखा कि मन्दिर का दरवाजा तो बन्द है। उन्होंने मन्दिर में इस तरह से घुस जाने वाले को उसके मारने की धमकी दी।

अन्दर से सुबुद्धि ने जवाब दिया — "मैं तो अपनी ऑखें चली जाने की वजह से वैसे ही मरा पड़ा हूँ सो अगर गुस्से के मारे तुम भी मुझे मार दोगी तो मेरे लिये बहुत अच्छा होगा क्योंकि अन्धे हो कर जीने से क्या फायदा।

दूसरी तरफ अगर तुम मुझ पर दया कर देती हो और अपनी दैवीय ताकत से मुझे ऑखें दे देती हो तो मैं तुम्हारे लिये दरवाजा खोल दूॅगा।"

काली तो अब मुश्किल में थी। वह बहुत भूखी थी। उसने देखा कि सुबुद्धि को बिना ऑखें दिये मन्दिर में जाना सम्भव नहीं है सो वह बोली — "दरवाजा खोलो। मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करती हूॅ।"

जैसे ही काली ने यह कहा वैसे ही सुबुद्धि की ऑखें वापस आ गयीं। उसकी खुशी का तो केवल अन्दाज ही लगाया जा सकता है उसे बताया नहीं जा सकता। उसने मन्दिर का दरवाजा खोल दिया और काली के सामने कसम खायी कि उस दिन से वह उस मन्दिर में उसका दास और पुजारी बन कर रहेगा।

नीच दुर्बुद्धि अपने नीच काम करने के बाद शान्ति से घोड़े पर चढ़ा और अपने घोड़े के खुरों के निशानों को देखता हुआ उस

जंगल में पहुँच गया जहाँ वे पिछले दिन राजकुमार के साथ सारा दिन शिकार खेलता रहा था। फिर वहाँ से वह अकेला ही घर लौट आया। जब उसके पिता ने उसे अकेला ही वापस घर आया देखा तो उसे लगा कि राजकुमार के साथ जरूर ही कुछ गड़बड़ है।

उसने अपने बेटे से पूछा कि राजकुमार कहाँ है।

दुर्बुद्धि बोला — "हम लोग एक हिरन का पीछा कर रहे थे कि वह इतनी तेज़ी से आगे बढ़ गया कि मुझे दिखायी देना ही बन्द हो गया। मैंने उसे ढूँढने की बहुत कोशिश की पर वह नहीं मिला सो फिर मैं अकेला ही घर लौट आया।"

पिता बोला — "अगर यह बात कोई और कहता तो मैं उसका विश्वास कर सकता था पर तुम्हारा विश्वास नहीं किया जा सकता। तुम इस राज्य में कदम मत रखना जब तक कि तुम राजकुमार को घर वापस नहीं ले आओ। अपनी ज़िन्दगी सलामत चाहते हो तो भाग जाओ यहाँ से।"

पिता के मुँह से यह सुन कर और उसके गुस्से से डर कर दुर्बुद्धि वहाँ से भाग लिया।

उधर सुबुद्धि काली के मन्दिर में रहता रहा उनकी सेवा करता रहा और इधर दुर्बुद्धि को पूरा विश्वास था कि वह अपने दोस्त राजकुमार सुबुद्धि को मार आया है सो वह जगह जगह मारा मारा फिरता रहा। बिना राजकुमार को साथ ले जाये अब वह वापस अपने देश में नहीं जा सकता था।

इस तरह कई महीने बीत गये। देवी काली सुबुद्धि की पूजा और सेवा से बहुत प्रसन्न थीं वह बोलीं — "मेरे बेटे। मैं तुम्हारी सेवा से बहुत प्रसन्न हूँ। आज से तुम्हारा यह छोटा काम बन्द। अब तुम अपने राज्य लौट जाओ। तुम्हारे माता पिता तुम्हारे खो जाने पर बहुत दुखी होंगे। तुम घर बापस जाओ और जा कर उन्हें तसल्ली दो।"

सुबुद्धि बोला — "मेरी देवी मेरी माता। मुझे माफ करें। अब मैं उन्हें अपना माता पिता नहीं मानता। यह जंगल कोई बहुत बड़ा जंगल नहीं है जहाँ वे अगर मुझे खोजना चाहते तो नहीं खोज सकते थे।

जब वे मेरी तरफ से इतने लापरवाह हैं तो मैं भी आज ही से उन्हें अपना माता पिता नहीं मानता। अब तो तुम ही मेरी माता हो तुम ही मेरे पिता हो। इसलिये मुझे यहीं रहते हुए अपनी सेवा करने की इजाज़त दें।"

ऐसा कह कर सुबुद्धि ने उनसे वही रहने की इजाज़त ले ली और देवी भी कम से कम कुछ समय के लिये राजी हो गयीं।

कुछ महीनों बाद काली ने राजकुमार को फिर बुलाया और उससे कहा — "मेरे बच्चे। मैंने तुम्हारे लिये एक दूसरा प्लान सोचा है। अगर तुम अपने माता पिता के पास नहीं जाना चाहते तो वहाँ मत जाओ पर यहाँ से कुछ दूरी पर कावेरी देश में मेरा एक बहुत बड़ा भक्त राज करता है।

उसकी बेटी को चेचक हो गयी थी और क्योंकि वह मेरी पूजा करना भूल गया तो मैंने उस लड़की की दोनों ऑखें ले लीं। राजा ने एक घोषणा करवायी है कि जो कोई भी उसकी बेटी की ऑखें वापस ला देगा वह उसे अपनी बेटी और अपना पूरा राज्य दे देगा।

उसने एक घंटा लटकवा दिया है जिसे कोई भी डाक्टर जो भी उसकी ऑखें ठीक कर सके उस घंटे को बजा दे। तो जैसे ही कोई घंटा बजाता है तो राजा दौड़ता हुआ आता है उस डाक्टर को अन्दर ले जाता है अपनी बेटी को दिखाता है।

कई लोग आये पर उन सबकी कोशिशें बेकार गयीं क्येंकि जिस चीज़ को देवी के गुस्से ने बिगाड़ दिया हो उसे कौन ठीक कर सकता है।

तो अब मैं तुम्हें वहॉ भेजना चाहती हूॅ। वह मेरा बहुत बड़ा भक्त है। हालॉकि मैंने उसे सजा दी है फिर भी उस परेशानी से उसकी बेटी के ऊपर जो परेशानी आयी है वह मुझे अच्छी नहीं लग रही। तुम वहॉ जाओ और जा कर उसका वह घंटा बजाओ। वह तुम्हें बाहर आ कर अन्दर ले जायेगा और अपनी बेटी को तुम्हें दिखायेगा।

तीन दिनों तक लगातार मेरी भस्म उसकी आखों पर लगाना। हालॉकि बेवकूफ लोग इसे राख ही कहेंगे पर मेरे भक्त इससे बहुत सारे काम कर सकते हैं। चौथे दिन उसकी ऑखें बिल्कुल ठीक हो

जायेंगी। तुम्हारी उससे शादी हो जायेगी और तुम्हें कावेरी का राज्य मिल जायेगा। और तुम्हें क्या चाहिये।

वहाँ राज करना क्योंकि तुम राजकुमार हो और राज करने के लिये बने हो न कि यहाँ जंगल में अपना समय बर्बाद करने के लिये। अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो तुम पाप करोगे और इससे ज़्यादा मेरा गुस्सा सहोगे।"

यह सुन कर राजकुमार इसे मना नहीं कर सका क्योंकि वह देवी के गुस्से से डरता था। उसकी बात मानते हुए और उसका आशीर्वाद ले कर वह वहाँ से चल दिया और कावेरी राज्य में आ पहुँचा।

उसने घंटा बजाया। राजा नये डाक्टर को लेने के लिये बाहर दौड़ा आया। उससे पहले जो डाक्टर वहाँ आये थे उन्होंने उसकी आँख ठीक करने के लिये खाने की और लगाने की दवाऐं इस्तेमाल की थीं पर इस नये डाक्टर यानी राजकुमार सुन्दर ने कहा कि वह मन्त्रों की सहायता से उसका इलाज करेगा।

राजा बहुत ही धार्मिक स्वभाव का था यह सुन कर उसे पूरा विश्वास हो गया था कि अबकी बार उसकी बेटी जरूर और बिल्कुल ठीक हो जायेगी। अब जैसा कि डाक्टर ने कहा था चौथे दिन लड़की की आँखें बिल्कुल ठीक हो गयीं।

राजा तो खुशी से पागल सा हो गया। उसने डाक्टर के माता पिता के बारे में जानना चाहा और जब उसे पता चला कि उसके

अन्दर तो शाही खून है तो वह खुद ही राज सिंहासन से उतर गया और उसकी खुशी और भी बढ़ गयी। उसने ऐसा दामाद भेजने के लिये भगवान की हजारों बार प्रार्थना की।

जैसा कि उसने अपनी घोषणा में कहा था कि जो कोई उसकी बेटी की ऑखें ठीक कर देगा वह उसे अपनी बेटी और राज्य दोनों दे देगा। इस समय अगर कोई सबसे गरीब भिखारी या सबसे नीची जाति का आदमी भी आया होता तो उसे भी इतना ही अधिकार मिलता जितना इस राजकुमार को मिला था। पर यह डाक्टर तो राजकुमार निकला इससे राजा बहुत खुश हुआ।

उसने तुरन्त ही शादी के इन्तजाम करने शुरू कर दिये और अपनी बेटी को सुबुद्धि को दे दिया। वह खुद भी काफी बूढ़ा हो चुका था सो उसी समय उसने अपना राज्य भी उसे दे दिया। इस तरह काली की कृपा से अब वह एक राज्य का राजा था और एक राजकुमारी उसकी पत्नी थी।

जैसा कि हम जानते हैं कि सुबुद्धि तो तो एक बहुत ही बढ़िया राजा था। हालॉकि वह अब वहॉ का राजा बन गया था फिर भी वह बहुत सारे कामों में अपने ससुर की सलाह लिया करता था। वह केवल नाम का राजा था वास्तव में तो वह बूढ़े राजा का मैनेजर था।

कोई भी काम सिलटाने के लिये वह रोज शाम को एक दो घंटा राजा के पास बैठ कर उनसे सलाह किया करता था। इसके अलावा

कागज पर दस्तखत करने का काम भी उसने अभी तक राजा के पास ही छोड़ रखा था। इस तरह जब सलाह लेने के लिये कोई मामला नहीं होता था तभी भी वह अपने ससुर के पास उनसे कागज दस्तखत कराने के लिये जाया करता था।

ऐसा करते करते दो साल बीत गये। एक शाम जब वह अपना दिन का काम खत्म कर के अपनी पत्नी के पास बैठा हुआ था तो उसकी नजर राज्य की पूर्वीय सड़क पर पड़ी। वह वहॉ की चहल पहल के बारे में सोचने लगा।

सामान के बोझ से लदी हुई गाड़िया चर्र चर्र करती चली जा रही थीं। कितना सारा सामान खरीदने बेचने के लिये आ जा रहा था। भले लोग अच्छे अच्छे कपड़े पहने सड़क पर आ जा रहे थे। खोमचे वाले आने जाने वालों से पूछ रहे थे कि उन्हें क्या चाहिये। यह देख कर कुछ समय के लिये उसे गर्व हो उठा कि वह एक ऐसे धनी देश के ऊपर राज कर रहा है।

पर मीठे के साथ कड़वाहट भी होती है। उसी भीड़ में उसे एक जान पहचाना सा चेहरा दिखायी दिया पर उसे याद नहीं आ सका कि वह किसका चेहरा था। एक काला सा आदमी एक दूकान के आगे निकले हुए पत्थर के कोने पर बैठा था और बोरे मरम्मत कर रहा था।

सुबुद्धि ने उसे ध्यान से देखने की कोशिश की तो बोला "अरे क्या यह दुर्बुद्धि है मन्त्री का बेटा। पर वह तो इतना काला नहीं है।

या कहना चाहिये कि इतना काला नहीं था जब मैंने उसे आखिरी बार देखा था।"

पर फिर और ध्यान से देखने पर वह चिल्ला पड़ा "अरे यह तो वही है। मेरा दोस्त मेरा साथी।"

राजकुमारी ने पूछा "कौन है यह।" और तुरन्त उसके पास दौड़ी गयी। वह कुछ देर से अपने पति का चेहरा देख रही थी जब वह गहरे विचारों में डूबा हुआ था।

"यह मेरा दोस्त है मेरा साथी। दुर्बुद्धि नाम है इसका। हम लोग जन्म से एक साथ ही रहे हैं। हम एक ही मिट्टी में खेले हैं एक ही स्कूल में पढ़े है एक ही गुरू से पढ़े हैं और कभी अलग नहीं हुए। पता नहीं किन हालातों ने इसे इस हालत में पहुँचा दिया जिसमें मैं इसे अब देख रहा हूँ।"

उसने तुरन्त ही एक आदमी को उसे लाने के लिये भेज दिया। उसने मन्त्री के बेटे के हाथों चाहे कितनी भी निर्दयता सही थी पर फिर भी जब उसने अपने दोस्त को अन्दर आते देखा तो वह उसको देख कर रो पड़ा।

उसके चेहरे की वह ललाई गायब हो चुकी थी जिसे उसने आखिरी बार उसके चेहरे पर देखा था। अब तो वह मौसमों का मारा काली खाल वाला कुली जैसा हो गया था।

वह रोते रोते बोला — “मेरे प्यारे दुर्बुद्धि मैंने तुम्हें माफ किया। पर अब तुम मुझे जल्दी से यह बताओ कि तुम्हारी यह हालत कैसे हुई।”

उसको देख कर दुर्बुद्धि भी रो पड़ा या उसने रोने का बहाना किया क्योंकि यह तो सबको पता था ही कि वह एक नीच आदमी है जो दुनियाँ की कोई भलाई करने के लिये पैदा नहीं हुआ।

“मेरे अपने ही कुकर्मों ने मुझे इस हालत तक पहुँचाया है। तुम्हारी ऑखें निकालने के बाद मुझे लगा कि मैंने तुम्हें मार दिया तो मैं जब अपने देश पहुँचा तो मेरे पिता ने मुझे हमारे राज्य से निकाल दिया। उन्होंने मुझसे कहा कि तुम्हें वापस लिये बिना में यहाँ नहीं आऊँ।

अब क्योंकि मुझे तो यह लग रहा था कि मैंने तुम्हारी ज़िन्दगी ही खत्म कर दी है इसलिये मैं तालाब के पास तुम्हें ढूँढने के लिये कभी नहीं गया। मैं इस शहर में आ गया और कई जगह काम ढूँढा पर जब कहीं कोई काम नहीं मिला तो यह कुली का काम करने लगा। और अब मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूँ।”

ऐसा कह कर दुर्बुद्धि ने अपनी बात खत्म की तो राजकुमार भी उसकी निर्दयता को भूल गया। उसने अपने आदमियों से कहा कि वे उसे ठीक से नहला दें और फिर जैसे कपड़े वह खुद पहने हुए था वैसे ही कपड़े उसे भी पहनाने के लिये कहा।

उसके बाद उसने बिना कुछ भी छिपाये हुए उसे अपनी कहानी सुनायी और उसे अपना मन्त्री बना लिया। उसने दुर्बुद्धि की सारी कहानी सिवाय उसके उसकी ऑखें निकालने के अपनी पत्नी सास और ससुर को भी बतायी।

इस तरह से सुबुद्धि की सहायता से दुर्बुद्धि को फिर से ऊँचे पद पर नियुक्त कर लिया गया। सुबुद्धि केवल यहीं नहीं रुका बल्कि उसने कागज ले कर उसे अपने ससुर के पास उनके दस्तखत के लिये भेजना भी शुरू कर दिया।

कुछ महीनों तक तो यह सब चलता रहा। दुर्बुद्धि भी कुछ समय तक जितना अच्छी तरह से व्यवहार कर सकता था करता रहा। उसकी अपनी चालों ने बूढ़े राजा का दिल जीत लिया।

एक शाम जब उसने राजा से कागजों पर दस्तखत करा लिये तो वह वहॉ दो पल खड़ा रह गया जैसे वह उससे कुछ कहना चाह रहा हो। राजा ने उससे पूछा — "तुम्हें क्या चाहिये।"

उसने केवल इतना कहा — "कुछ नहीं बस आपकी कृपा।"

और यह कह कर वह चला गया। इस तरह से वह कुछ दिन और कुछ हफ्ते तक जाता रहा। रोज वह अपना काम कराने के बाद कुछ पल वहॉ खड़ा रहता और फिर बिना कुछ कहे वहॉ से चला आता। जब भी कभी राजा उससे इस बारे में कुछ पूछता तो वह कुछ गोलमोल जवाब दे देता।

आखिर एक दिन राजा को बहुत गुस्सा आ गया। दुर्बुद्धि तो यही चाहता था। राजा ने गुस्से से कहा — "तुम कितने बड़े बेवकूफ हो कि तुम यहॉ रोज रुकते हो जैसे मुझसे कुछ कहना चाहते हो पर एक शब्द बोले बिना ही चले जाते हो।"

दुर्बुद्धि बोला — "योर औनर। मैं आपसे माफी चाहता हू पर इतने दिनों तक मैं यही सोचता रहा कि मैं आपसे अपना भेद कहू या न कहॅू। पर अब मैंने सोच लिया है कि मैं आपको अपना भेद नहीं बताऊॅगा।"

राजा चीखा — "नहीं उसे तो तुम्हें बताना ही चाहिये।"

राजा की उस भेद को जानने की उत्सुकता उसके गुस्से से कहीं ज़्यादा थी। दुर्बुद्धि ने बहुत ना नुकुर करने के बाद राजा को अपना भेद बता दिया।

वह बहुत ज़ोर से बोला — "माई लौर्ड। जबसे मैं यहॉ आया हू तबसे मैं आपके परिवार की कुलीनता के बारे में पता कर रहा हॅू। जो आपके परिवार और पुरखों ने बलिदान दिये हैं। आपने अपनी पवित्रता को कैसे बना कर रखा है। और भी बहुत सारी हजारों बातें हैं जो आपको स्वर्ग ले जाने के लिये काफी हैं।

इससे मुझे कुछ समय तक तो खुशी हुई, मैंने कहा कुछ समय के लिये, परन्तु अब सुनिये जो मैं कह रहा हॅू। जब मैंने आपके इस मशहूर परिवार की आपके दामाद के परिवार से तुलना की तो मुझे

बहुत दुख हुआ। और उस समय से जो मेरे दिल में दर्द होना शुरू हुआ है वह अभी तक रुका नहीं है।

आपको यह पता होना चाहिये कि आपका दामाद कोई राजकुमार नहीं है। इसमें तो कोई शक नहीं है कि उसकी नसों में शाही खून दौड़ रहा है जो उसे राजा जैसा तो दिखाता है पर वह दवाओं में इतना होशियार कैसे हो सकता है। कभी उससे पूछ कर देखियेगा कि यह कैसे हुआ।

ॲधेरे में रहने की बजाय आप यह जान लें कि मेरे देश के राजा जिनके राज्य में मेरे पिता मन्त्री हैं एक दिन सफर के लिये निकले। जब वह एक नाई की गली से निकल रहे थे तो उन्होंने उस जाति की एक लड़की देखी। वह उसकी सुन्दरता से बहुत प्रभावित हुए और बावजूद उसकी नीची जाति के उन्होंने उसे अपने हरम में रख लिया। आपका दामाद उसी का बेटा है। एक नाई मॉ का बेटा होने की वजह से उसको डाक्टरी कहॉ से आ गयी।

एक राजा का बेटा होने की वजह से वह राजकुमार तो दिखायी देता है पर अगर वह रानी का बेटा होता तो वह अपना राज्य क्यों छोड़ता और आपकी बेटी का इलाज करने क्यों आता।

इस राजकुमार के सिवाय या यह कहो कि इस नकली राजकुमार के सिवाय जो यहॉ आपकी बेटी का इलाज करने आये तो वे तो अपने धन्धे से डाक्टर थे पर यह नाई जाति की लड़की का बेटा होने की वजह से डाक्टर कहॉ से बन गया।”

ऐसा उस नीच दुर्बुद्धि ने कहा और अपने कागज उठा कर इतनी जल्दी से चला गया जैसे साँप भाग जाता है। जिन मीठे शब्दों में मन्त्री के बेटे ने अपनी बात कही उससे राजा के मन में गुस्सा जाग उठा कि एक नाई का बेटा उसके सिर मढ़ दिया गया है और उससे उसके परिवार को बड़ी शर्मिन्दगी उठानी पड़ेगी। राजा के मन में और भी बहुत सारे विचार उठते रहे।

उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह अपनी इस शर्मिन्दगी को कैसे खत्म करे सिवाय इसके कि सबसे पहले तो वह अपने प्यारी बेटी और दामाद की हत्या कर दे फिर बाद में अपनी और अपनी पत्नी की हत्या कर दे। उसने तुरन्त ही फाँसी देने वाले को बुलाया और वह आ भी गया।

राजा ने उसे अपनी सील वाली अँगूठी दी और उसी आधी रात को अपनी बेटी दामाद का सोने वाले कमरे का तोड़ कर घुसने के लिये और उन दोनों को मार डालने के लिये कहा।

जो हुक्म सील वाली अँगूठी के साथ दिये जाते हैं उनको न मानना सम्भव नहीं है। फाँसी देने वाले ने विनम्रता से सिर झुकाया कि वह उनके हुक्म का पालन करेगा और अपने इस भयानक काम को करने के लिये चाकू तेज़ करने के लिये चल दिया।

इस भयानक घटना का सुन्दर और उसकी पत्नी दोनों में से किसी को पता नहीं था। रानी और नीच दुर्बुद्धि को तो इस बात के पता होने की कोई जरूरत ही नहीं थी। राजा ने अपना यह हुक्म

देने के बाद अपने आपको एक कमरे में बन्द कर लिया और रोने लगा जैसे कि उसने उसी पल से अपनी बेटी को खो दिया हो।

दुर्बुद्धि यह आग लगाने के बाद कागज ले कर राजकुमार के पास आया। तभी उसके दिमाग में एक विचार आया कि सुबुद्धि का तो अब अन्त होने वाला है सो उसके अन्त के पहले उसने सुबुद्धि से जो एक वायदा उसकी पत्नी के बारे में लिया था वह उसे पूरा कर ले।

भला सुबुद्धि जो अपने वायदों को हमेशा निभाया करता था एक बार को तो सन्न रह गया। उसकी समझ में ही नहीं आया कि वह क्या करे। अपना वायदा निभाये और अपनी पत्नी को दूसरे को दे दे या फिर अपना वायदा तोड़ दे और अपनी पत्नी को बचा ले।

आखिर वह इसी निश्चय पर पहुँचा कि "दान अकेला ही सबसे बड़ा है" और भगवान उसकी पत्नी की रक्षा करने के लिये कुछ तो करेगा वह अपनी पत्नी के पास गया और उसे सब मामला समझाया और उससे मन्त्री के बेटे के पास जाने के लिये कहा।

उसकी पत्नी को यह सब अच्छा तो नहीं लगा पर हिचकिचाते हुए वह राजी हो गयी। क्योंकि एक अच्छी पत्नी होने के नाते वह अपने पति का हुक्म नहीं टाल सकती थी। उधर सुबुद्धि ने दुर्बुद्धि से कहा कि वह उसकी पत्नी को ले सकता था।

राजकुमारी रोती हुई अपनी माँ के पास गयी और बोली कि उसका पति पागल हो गया है नहीं तो ऐसा कौन है जो अपनी पत्नी को दूसरे के पास भेजेगा। इसका मतलब क्या है।

रानी बोली — "मेरी बच्ची डरो नहीं। हो सकता कि बचपन में उसने बिना सोचे समझे इस तरह का पागलपन का वायदा किया हो। अब क्योंकि उसने एक बार वायदा कर दिया है तो वह वायदा तोड़ना नहीं चाहता।

अब वह खुद तो उसे तोड़ नहीं सकता सो अपने बचाव की जिम्मेदारी उसने तुम्हारे ऊपर छोड़ दी है इसी लिये उसने तुमसे कहा है। अगर तुम अपने आपको किसी तरह से बचा लो तो वह तुम्हें माफ भी कर देगा और अपना वायदा भी पूरा कर देगा।

इसे कैसे करना चाहिये इस बारे में मेरे दिमाग में एक विचार आया है। तुम्हारी एक सौतेली बहिन है जिसकी शक्ल तुमसे काफी मिलती जुलती है तुम्हारी जगह मैं उसे भेज दूँगी।"

इस तरह से रानी ने राजकुमारी को धीरज बँधाया और जरूरी तैयारी करने चली गयी। सुबुद्धि को इस सबका कुछ पता नहीं था।

आधी रात को किसी ने उसके सोने वाले कमरे को जबरदस्ती खोला एक आदमी नंगी तलवार ले कर अन्दर घुसा और बिजली की सी तेज़ी से दोनों का कत्ल कर के वापस आ गया।

इस तरह दुर्बुद्धि जब अपनी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा पाप कर रहा था तो भगवान ने उसे मार दिया। क्योंकि यही कहा गया है कि जब पाप बढ़ जाता है तो उसे भगवान भी सहन नहीं कर सकते।

सुबह हुई सुबुद्धि अपने पलंग से उठा नहा धो कर पूजा कर दरबार में चला गया। उधर राजकुमारी और उसकी माँ भी उठीं और अपने काम में लग गयीं।

तभी एक नौकर दौड़ता हुआ वहाँ आया और रानी से बोला — "राजा अपने कमरे में बैठे हुए रो रहे है और कह रहे कि उनकी बेटी अब नहीं रही। मुझे लगता है कि हिज़ मैजेस्टी के दिमाग को कुछ हो गया है आप चल कर उनको तसल्ली दें।"

अब रानी को तो राजा के बारे में कुछ पता नहीं था सो वह अपने पति के कमरे की तरफ भागी गयी। वह बहुत चकित थी कि राजा को यह क्या हो गया है।

राजा ने उसे सारा किस्सा बताया – साधु जैसा दिखायी देने वाला मन्त्री का बेटा, नाई का दामाद और सब कुछ। फिर बोला कि उनकी बेटी और दामाद अब इस दुनियाँ में नहीं हैं।

रानी बोली — "यह आप क्या कह रहे हैं। शान्त हो जाइये। आपका दामाद दरबार में बैठा है। आपकी बिटिया अपने कमरे में तैयार हो रही है। आपने कोई सपना देखा क्या? क्या आप ठीक हैं?"

यह सुन कर राजा ने फिर फाँसी देने वाले को बुलाया और उससे वे दोनों सिर लाने के लिये कहा जिन्हें उसने रात काटे थे। वह तुरन्त ही वे सिर ले कर आया जिन्हें उसने रात काटा था तो पता चला कि वे सिर तो मन्त्री के बेटे और राजकुमारी की सौतेली बहिन के थे।

तब रानी ने राजा को अपने दामाद के वायदे के बारे में कि उसे मन्त्री के बेटे को एक दिन के लिये अपनी पत्नी को देना था बताया और साथ में यह भी कहा कि यह इन्तजाम भी उसी के दिमाग की उपज थी।

राजा कुछ समझ नहीं सका तो उसने अपनी तलवार निकाली और पागल शेर की तरह दरबार की तरफ दौड़ चला। वह हथियार लिये हुए अपने दामाद के सामने जा कर खड़ा हो गया और बोला — "तुम मुझे अपने बारे में सब कुछ सच सच बताओ। सब सच सच कहना।

अपने जन्म के बारे में, अपनी डाक्टरी सीखने के बारे में, अगर तुम राजकुमार हो तो तो तुम अपना राज्य छोड़ कर यहाँ क्यों आये, अपने इस नीच वायदे के बारे में कि तुम अपनी पत्नी को किसी और को क्यों दोगे और यह मन्त्री का बेटा कौन था।"

सुबुद्धि ने बिना कोई बात छिपाये हुए राजा को सब कुछ बता दिया। यहाँ तक कि यह भी बता दिया कि उसने उसकी आँखें निकाल ली थीं।

उसका सब हाल सुन कर राजा ने अपनी तलवार नीचे फेंक दी और अपने दामाद को गले लगा लिया। वह तो इतना खुश था कि भगवान को धन्यवाद देते देते नहीं थक रहा था जिसने उसकी बेटी दामाद को इस दुर्घटना से बचा लिया था।

"मेरे बेटे मेरी ज़िन्दगी मेरी ऑखें। क्या यह सच है क्या यह सच है कि मैं तुम दोनों को ज़िन्दा देख रहा हूँ। धर्म अकेला ही सबसे ऊँचा है। उस नीच दुष्ट को यह जानते हुए भी कि उसने तुम्हारे साथ क्या क्या बुराइयॉ कीं तुमने उसकी रक्षा की और यह साबित कर दिया कि अधर्म की कभी जीत नहीं होती। यह उसका अधर्म ही था जिसने उस रात उसकी हत्या की जबकि वह यह सोच रहा था कि वह जीत गया था।"

सुगुण और धर्मशील को तैवई में तुरन्त ही चिठ्ठियॉ भेजी गयी कि किस तरह से राजकुमार और राजकुमारी वहॉ सुरक्षित मौजूद हैं और फिर उनकी दोबारा से शादी हुई।

धर्मशील ने क्योंकि अपने बेटे को नापसन्द करता था अपने बेटे के लिये एक भी ऑसू नहीं बहाया। सुबुद्धि बहुत दिनों तक ज़िन्दा रहा और अपने और अपनी पत्नी के माता पिता को सुख देता रहा। काली मॉ की कृपा से उसके कई अक्लमन्द लड़के हुए।

6 विडामुंडन और कोडामुंडन[12]

किसी शहर में एक बहुत ही अक्लमन्द ब्राह्मण रहता था जिसका नाम था "नहीं देने वाला"। वह यह बहाना करते हुए कि उसे घर में कई ब्राह्मणों को खाना खिलाना होता है वह भीख माँगने के लिये रोज बाहर जाता था।

भले लोग जो उसकी बात पर विश्वास करते थे उसको काफी सारा चावल और दाल दे दिया करते थे। वह उन्हें ले कर घर आता और अपनी पत्नी को बताता कि किस तरह से उसने फलाँ फलाँ आदमी को धोखा दे कर कि उसे घर में कितने लोगों को खाना खिलाना है उससे इतने सारे दाल चावल ले लिये।

पर अगर कोई भूखा ब्राह्मण उसकी यह बात सुनता और उसके घर खाना खाने के लिये आता तो वह उसे कोई बहाना बना कर वापस भेज देता।

इस तरह से न देने वाला रोज एक टोकरी भर कर चावल और दूसरी जरूरत की चीज़ें ले कर आता। पर उसके घर में क्योंकि केवल दो ही आदमी थे सो उसमें से बहुत कम ही उठ पाता था। बाकी बचा खाना बेच कर वह उसका पैसा बना लेता था। इस तरह से चाल खेल खेल कर वह कई साल तक रहता रहा।

---

[12] Vidamundan and Kodamundan. Tale No 6.
(Means Mr Won't Give and Mr Won't Leave)

पड़ोस के गॉव में एक दूसरा अक्लमन्द ब्राह्मण रहता था उसका नाम था “न छोड़ने वाला”। जब भी कोई उसे ऐसा आदमी मिल जाता जो उसे कुछ देने में आनाकानी करता था जो उसने उससे मॉगी होती तो वह उससे उसे देने की मॉग करता ही रहता जब तक कि वह उससे उसे ले नहीं लेता। वह छोड़ता नहीं था।

अब इस न छोड़ने वाले ने न देने वाले के दानी होने बड़ी बड़ाई सुनी तो वह एक दिन उससे मिलने के लिये आया और उससे खाना मॉगा। तो न देने वाले ने कहा कि उस दिन तो उसके घर में **10** ब्राह्मण पहले से ही खाने के लिये तय हैं सो अगर वह कल आयेगा तो उसे निश्चित रूप से खाना मिल जायेगा।

न छोड़ने वाला इस बात पर राजी हो गया और अगले दिन आने के लिये चला गया। अब न देने वाले ने तो उससे झूठ बोला था जो वह रोज बोलने का आदी था जो कभी कभी उससे खाना मॉगने के लिये आते थे।

लेकिन न छोड़ने वाला भी कोई बेवकूफ नहीं था। वह अगले दिन नियत समय पर न देने वाले के घर के दरवाजे पर खड़ा था और उसे उसका वायदा याद दिला रहा था।

न देने वाले ने तो पहले कभी अपना वायदा निभाया नहीं था सो इस बार उसने न छोड़ने वाले को कोई और ज़्यादा अच्छे बहाने बना कर वहॉ से भेजने का प्लान बनाया। सो वह उससे कुछ इस तरह बोला —

"सर मुझे बहुत अफसोस है कि कल रात से मेरी पत्नी को बहुत ज़ोर का बुखार आ गया है वह अभी तक ठीक नहीं हुई है इसलिये मुझे अपना यह खाना खिलाने का प्रोग्राम कुछ दिनों के लिये टालना पड़ रहा है जब तक वह ठीक नहीं हो जाती इसलिये कुछ दिन तक और मुझे तकलीफ़ न दें।"

न छोड़ने वाले ने उसके ये सच्चे शब्द सुने जो उसने अपने चेहरे पा काफी दुख के भाव ला कर कहे थे और बोला — "आदरणीय जनाब। मैं आपकी पत्नी की बीमारी के बारे में सुन कर बहुत दुखी हूँ पर केवल उस वजह से एक ब्राह्मण को दान न देना तो बहुत बड़ा पाप है।

दस साल से मैं खाना बनाने का अभ्यास कर रहा हूँ और अब मैं सैंकड़ों ब्राह्मणों के लिये खाना बना सकता हूँ। तो मैं तुम्हारी इस दान की आदत को पूरा करने में सहायता कर सकता हूँ।"

न देने वाला उसकी ऐसी सहायता को सुन कर अस्वीकार नहीं कर सका और उसने इस धोखे से न छोड़ने वाले को अपने घर में खाना बनाने के लिये बुला लिया कि वह उससे खाना तो बनवा लेगा पर बाद में उसे बिना चावल दिये ही लौटा देगा।

उसने कहा — "अरे यह तो बड़ा अच्छा विचार है। मैं तुम्हारी इस सुन्दर सलाह के लिये तुम्हारा बहुत आभारी हूँ। आओ अन्दर आ जाओ। चलो दोनों साथ मिल कर खाना बनाते हैं।"

इतना कह कर न देने वाला न छोड़ने वाले को घर के अन्दर ले गया। वहाँ वे दोनों रसोईघर की तरफ गये। ब्राह्मण की पत्नी अपने पति की आज्ञा पर बीमारी का बहाना बनाये हुए लेटी रही। न देने वाला अच्छे घर का आदमी था सो उसने न छोड़ने वाले के साथ मिल कर कई तरह के खाने बनाये।

लेकिन अब समस्या थी कि उसे घर से बिना कोई खाना दिये हुए कैसे निकाला जाये क्योंकि बहुत पुराना नियम कि मेहमान को खाना नहीं खिलाया जायेगा आज भी क्यों तोड़ा जाये।

सो जब खाना बन चुका तो न देने वाले ब्राह्मण ने न छोड़ने वाले ब्राह्मण को एक पैसा दिया और बाजार से खाना खाने के लिये पत्ते लाने के लिये कहा। न छोड़ने वाला पैसा ले कर चला गया।

इस बीच न देने वाला अपनी पत्नी के पास आया और उससे कहा — "प्रिये आज मैंने तुम्हें खाना बनाने से बचा दिया है पर क्या हम ऐसे बेवकूफ अपने लिये खाना बनाने के लिये रोज पा सकेंगे। मैंने अभी उसे बाजार कुछ पत्ते लाने के लिये भेज दिया है और यह तो अच्छा नहीं लगेगा कि जब वह वापस आये तो हम उसके लिये दरवाजा बन्द कर लें। इसलिये हमें कुछ ऐसा करना चाहिये जिससे वह अपने आप ही यहाँ से भाग जाये।

मेरे दिमाग में अभी अभी एक विचार आया है कि हम यह काम कैसे कर सकते हैं। जैसे ही वह घर आता है तुम मुझसे लड़ना शुरू कर देना। फिर मैं आऊँगा और तुम्हें मारूँगा यानी फर्श को दोनों

हाथों से मारूँगा। तुम रोती रहना और मुझे गालियाँ देती रहना। अपने मेहमान को यह सब अच्छा नहीं लगेगा और वह अपने आप ही चला जायेगा।"

न देने वाले ने अभी अभी ही अपनी बात खत्म की थी कि न छोड़ने वाला पत्ते ले कर आ गया। पत्नी ने जैसा उसके पति से तय हुआ था पति को गालियाँ देनी शुरू कर दीं। उसे हर समय ब्राह्मणों को खाना खिलाने की धुन को ले कर गालियाँ देने लगी।

वह बोली — "इस तरह से हम दुनियाँ में कैसे रह सकते हैं कि तुम रोज रोज इन बड़े बड़े पेट वाले ब्राह्मणों को खाना खिला कर घर खाली कर देते हो। और फिर क्या तुम्हें तभी भी किसी को खाने के लिये बुलाना चाहिये जब मैं घर में बीमार पड़ी हूँ?"

इस तरह की बहुत सारी बातें वह अपने पति से कहे जा रही थी। पहले तो न देने वाला कुछ देर तक चुप रहा पर फिर वह ज़ोर ज़ोर से फर्श पीटने लगा। जब भी वह मारता तो उसकी पत्नी चीखती कि उसका पति उसे मारे डाल रहा है। जो कोई उस पर दया करना चाहे तो वह उसे आ कर बचाये।

न छोड़ने वाले ने घर के आँगन से ही ये आवाजें सुनी पर उसने सोचा कि उनके झगड़े में बीच में पड़ना उसके लिये ठीक नहीं है इसमें उन दोनों को अपने आप ही सिलटने दो वह एक तरफ को छिप गया ताकि वह उनके झगड़े का गवाह न बने।

कुछ समय बाद न देने वाला उस कमरे से भाहर निकल कर आया जिसमें वह फर्श पीट रहा था। बाहर निकल कर उसने देखा कि उसका मेहमान तो कहीं है नहीं। यह देख कर वह बहुत खुश हो गया।

उसके पास इस बात का कोई तर्क नहीं था कि वह वहीं कहीं आसपास में छिपा होगा क्योंकि उसने ऊपर की तरफ देखा ही नहीं। और अगर देखता भी तो भी तो भी वह उसे नहीं देख सकता था क्योंकि वह तो छिपा हुआ था।

न देने वाले ने घर के दरवाजे की चटकनी लगायी। उसकी पत्नी बाहर निकल आयी और उसने अपने मैले कपड़े उतार कर साफ सुथरे कपड़े पहन लिये।

उसके पति ने उससे कहा — "आखिर हम उसे घर से बाहर निकालने में सफल हो ही गये। आओ तुम्हें भूख लगी होगी आज हम तुम साथ साथ बैठ कर खाना खाते हैं।" उन्होंने दो पत्ते जमीन पर बिछाये और जो कुछ बनाया था उसे सारा आधा आधा बॉट लिया।

इस बीच न छोड़ने वाला उन दोनों को देख रहा था। उसको भी बहुत भूख लगी थी बस वह मौके की तलाश में था कि कब उसे मौका मिले और कब वह नीचे कूदे।

न देने वाले ने अपनी चालाकी पर सोचते हुए अपनी पत्नी से कहा — "पिये। क्या आज मैंने तुम्हें बिना नुकसान पहुँचाये हुए नहीं पीटा।"

पत्नी बोली — "और क्या मैं बिना आँसू बहाये हुए नहीं रोयी।"

कि तभी एक तीसरी आवाज सुनायी पड़ी — "क्या में तुम्हारे यहाँ खाना खाने के लिये बिना गये हुए नहीं आ गया।"

और यह कहते हुए न छोड़ने वाला ऊपर से नीचे कूद पड़ा और न देने वाले की पत्नी के सामने बिछाये गये पत्ते के सामने बैठ गया। न देने वाला हालाँकि उसे देख कर थोड़ा निराश हुआ पर अपने मेहमान की अक्लमन्दी देख कर खुश भी बहुत था।

7 वयलवल्लन और कैयवल्ल[13]

दो पास के गॉवों में दो बहुत ताकतवर लोग रहते थे। एक का नाम था वयलवल्लन यानी अच्छा बोलने वाला। वह अपने शब्दों से ही आशचर्यजनक काम कर सकता था। और दूसरे का नाम था कैयवल्ल यानी ताकतवर हाथों वाला। यह आदमी अच्छा बोल नहीं सकता था पर यह अपने हाथों से करतब कर सकता था।

एक बार ऐसा हुआ कि दोनों ने बोलने वाले के घर में साथ साथ रहने का विचार किया यह देखने के लिये दोनों में ज़्यादा अच्छा कौन था। वे उस घर में एक साथ कई महीनों तक रहे। और फिर आयी नवरात्रि।

नवरात्रि के पहले दिन काम करने वाला काली मॉ को एक बकरा भेंट चढ़ाना चाह रहा था सो उसने बोलने वाले से कहा — "हम दोनों ही अपने अपने तरीके से ताकतवर हैं इसलिये यह हमारे लिये बड़ी शर्म की बात होगी कि हम वह बकरा पैसा दे कर खरीदें जिसकी हमें बलि देनी है।"

बोलने वाला बोला — "तुम ठीक कहते हो। मुझे मालूम है कि यह काम कैसे करना है।" और उसने अपने दोस्त को शाम तक इन्तजार करने के लिये कहा।

---

[13] Vayalvallan and Kaiyavalla. Tale No 7.
(Means Mr Mighty-of-his-Mouth, and Mr Mighty-of-his Hands)

उनके घर से एक घंटे की दूरी पर एक गड़रिया रहता था। दोनों दोस्तों ने यह निश्चय किया कि वे रात को उसके बाड़े में जायेंगे और उसके जानवरों में से एक बकरा चुरा लायेंगे।

सो जब अँधेरा हुआ तो वे उसके बाड़े में गये। गड़रिये ने तभी तभी अपने बाड़े का सारा काम खत्म किया था। वह अब अपने घर जा कर खाना खाना चाहता था पर उसको पास कोई दूसरा आदमी नहीं था जो उसके बाड़े का पहरा देता।

सो उसने अपना डंडा बाड़े के सामने गाड़ा उसके ऊपर एक कम्बल डाला और बोला — "मेरे बेटे। मुझे बहुत भूख लगी है अब मैं घर खाने जाता हूँ। जब तक मैं खाना खा कर वापस आता हूँ तब तक तुम मेरे बाड़े का ख्याल रखना।

इस जंगल में चीते भूत आदि बहुत रहते हैं। कोई भी शरारती भूत–कूत मेरे जानवर चुराने आ सकता है सो तुम ज़रा इनकी देखभाल रखना।"

इतना कह कर गड़रिया वहाँ से चला गया। अब गड़रिये ने जो कुछ कहा वह सब इन दोस्तों ने भी सुना। बोलने वाला गड़रिये की यह चालाकी देख कर बहुत हँसा कि गड़रिये ने आने वाले डाकुओं के लिये यह अच्छा तरीका चुना है। वे समझेंगे कि वास्तव में कोई पहरेदारी कर रहा है जबकि वहाँ तो केवल डंडा ही खड़ा है।

पर इत्तफाक से काम करने वाला इस चाल को नहीं देख सका। उस डंडे को पहरेदार की तरह से बाड़े के सामने खड़ा देख कर वह

अपने दोस्त से बोला — "अब हम क्या करें। यहाँ तो बाड़े के सामने एक चौकीदार बैठा हुआ है।"

कहने वाला उसका शक दूर करने के लिये बोला — "वह कोई चौकीदार नहीं है। वह केवल एक डंडा है।" कह कर वह अपने दोस्त को ले कर बाड़े में घुस गया।

उस रात कुछ ऐसा हुआ कि एक भूत भी एक भेड़ को चुराने के लिये वहाँ आ पहुँचा था। उसने जब गड़रिये को कूत का नाम लेते हुए सुना तो वह तो डर के मारे काँपने लगा। उसको कूत के होने का पता ही नहीं था। उसने सोच लिया कि कूत शायद कोई उससे भी ज़्यादा ताकतवर होता होगा।

इसलिये यह सोचते हुए कि कोई कूत उसके जानवरों को चुराने के लिये आने वाला होगा। वह पहले अपने आपको दिखाना नहीं चाहता था जब तक कि वह यह न देख ले कि कूत क्या होते हैं। सो भूत ने अपने आपको एक भेड़ में बदला और जानवरों के झुंड में जा कर लेट गया।

तभी दोनों ताकतवरों ने उस बाड़े में पैर रखा और भेड़ों को देखने लगे। एक के बाद एक को वे किसी न किसी कमी की वजह से छोड़ते गये और अन्त में वे उस भेड़ के पास आ कर रुक गये जो भूत थी।

उन्होंने उसे देखा भाला तो देखा कि वह तो बहुत भारी थी क्योंकि उसके अन्दर तो भूत की आत्मा थी। सो उन्होंने उसे घर ले

जाने के लिये उसकी टॉगें बॉधनी शुरू कर दीं। जब उसके हाथ हिलने लगे तो उनकी ताकत को देख कर भूत को लगा कि यही वह कूत होगा जिसकी गड़रिया बात कर रहा था।

उसने अपने मन में सोचा “बड़े अफसोस की बात है कि ये कूत मुझे ले जाने के लिये यहॉ आ पहुॅचे हैं। अब मैं क्या करूॅ। मैं भी कितना बेवकूफ था कि मैं भी आज ही कोई भेड़ लेने के लिये यहॉ आया।”

इधर भूत यह सोच रहा था उधर काम करने वाला उस भेड़ को ले कर घर ले जा रहा था। बोलने वाला उसके पीछे पीछे जा रहा था।

भूत के भूतिया दिमाग ने तुरन्त ही काम करना शुरू कर दिया। कुछ पल में ही काम करने वाले के सारे शरीर में दर्द होने लगा। वह अपने दोस्त से बोला — “मेरे प्यारे दोस्त। मेरा तो सारा शरीर दर्द कर रहा है। मुझे कुछ ऐसा लगता है कि जो कुछ हम ले कर आये हैं वह भेड़ नहीं है।”

बोलने वाला अपने दोस्त की बात सुन कर कुछ सावधान हो गया पर वह अपना डर अपने दोस्त को दिखाना नहीं चाहता था। वह बोला — “तो इस भेड़ को नीचे रख दो। हम इसका पेट फाड़ देते हैं और फिर आधी आधी भेड़ उठा कर ले चलेंगे।”

यह सुन कर भूत डर गया और वह काम करने वाले के सिर पर ही पिघल गया। इससे काम करने वाले के सिर पर रखी हुई भेड़ का बोझा कम हो गया और दोनों दोस्त आराम से घर चले गये।

भूत भी अपने घर चला गया। वहाँ पहुँच कर उसने अपने साथियों को वह सब बताया जो उस दिन उसके साथ हुआ था और फिर वह कैसे बचा।

वे सभी उसकी बेवकूफी पर बहुत हँसे और बोले — "कूत जैसी कोई चीज़ नहीं होती। वे कूत नहीं थे। यहाँ तक कि दुनियाँ भर में कूत जैसी कोई चीज़ नहीं है। वे लोग आदमी थे। यह तुम्हारी बेवकूफी थी कि तुम उनके हाथ पड़ गये। अपने वहाँ से इस तरह बच निकलने पर क्या तुम्हें शर्म नहीं आती।"

घायल भूत ने कहा — "अगर तुम लोगों ने उन कूतों को देख लिया होता तो तुम लोगों को मुझसे ऐसा कुछ कहने का मतलब नहीं उठता।"

"ठीक है तो हमें भी इन कूतों को दिखाओ।"

घायल भूत बोला — "हाँ हाँ। क्यों नहीं।"

अगले दिन शाम को वह अपने साथियों को उन दोनों आदमियों के घर ले गया और दूर से ही बोला — "यह उनका घर है। मैं तो वहाँ जा नहीं सकता। तुम्हें जो अच्छा लगे वह कर लो।"

दूसरे भूत उसके डर को देख कर चकित थे। उन्होंने निश्चय किया कि वे अपनी जाति के कम से कम एक सदस्य के दुश्मनों को

आज हमेशा के लिये खत्म कर देंगे। सो वे एक बड़ी भीड़ में उनके घर की तरफ बढ़े।

कुछ तो उनके घर के आगे खड़े रहे ताकि उनमें से घर में से निकल कर कोई भाग न जाये। कुछ उनके घर के पीछे जा कर खड़े हो गये। बीसियों उसकी दीवार फाँद करके अन्दर कूद पड़े और उसके आँगन की तरफ बढ़े। काम करने वाला आँगन के बराबर वाले बरामदे में सोया हुआ था।

काम करने वाले ने जब कूदने आदि की आवाज सुनी तो उसकी आँखें खुलीं। उसने देखा कि कुछ भूत उसके आँगन में थे। बिना अपना मुँह खोले वह जमीन पर लेट गया। बोलने वाला अपनी पत्नी और बच्चों के साथ कमरे में लेटा हुआ था।

उसने बहुत धीरे से बोलने वाले के दरवाजे पर दस्तक दी और अपने दोस्त से कहा "अब हम क्या करें। भूतों ने हमारे घर पर हमला बोल दिया है। वे अब हमें मार देंगे।"

बोलने वाले ने कहा कि वह चुप रहे डरे नहीं बल्कि जा कर जहाँ वह पहले सोया हुआ था वहीं जा कर सो जाये। वह खुद भूतों को भगा देगा।

काम करने वाले की समझ में तो नहीं आया कि उसका दोस्त क्या कह रहा था पर इस समय वह उससे बहस नहीं करना चाहता था सो वह वापस आ कर अपनी जगह लेट गया पर वह सो नहीं

सका क्योंकि डर के मारे उसका दिल बहुत ज़ोर ज़ोर से धड़क रहा था।

उधर बोलने वाले ने अपनी पत्नी को जगाया और उससे कहा — "प्रिये। बेवकूफ भूतों ने हमारे घर पर हमला बोल दिया है पर अगर तुम वैसा ही करोगी जैसा मैं कहता हूँ तब हम सब सुरक्षित रहेंगे और भूत भी बिना किसी नुकसान के यहाँ से वापस चले जायेंगे।

मैं चाहता हूँ कि तुम बड़े वाले कमरे में जाओ और वहाँ की रोशनी जलाओ। कुछ पत्ते फर्श पर लगा दो और फिर मुझे शाम का खाना खाने के लिये जगाने की नकली कोशिश करो।

मैं उठूँगा और तुमसे पूछूँगा कि तुम्हारे पास मेरे खाने के लिये क्या है। तो तुम जवाब देना कि "मेरे पास तो तुम्हें खिलाने के लिये केवल हरी मिर्च और सब्जियाँ हैं।"

मैं फिर पूछूँगा कि "उन तीनों भूतों का क्या हुआ जिन्हें हमारा बेटा स्कूल से लौटते समय पकड़ कर लाया था।"

तो तुम जवाब देना "वह दुष्ट घर आ कर कुछ मिठाई खाना चाहता था पर घर में कोई मिठाई नहीं थी सो उसने उन तीनों भूतों को भून कर खा लिया।"

इस तरह बोलने वाला अपनी पत्नी को समझा कर अपने कमरे में सो गया। उसकी पत्नी ने वैसा ही किया। बड़े कमरे में जा कर उसने रोशनी की, खाने के लिये पत्ते लगाये और पति को खाना

खाने के लिये उठाने गयी। पति से बात करते समय उसका यह कहना कि "तीन भूत तो वह बेटा भून कर खा गया।" भूतों के कान में पड़ा।

भूत उनके बेटे की इस योग्यता को सुन कर कॉप गये। "जब बेटा तीन भूतों को भून कर मिठाई की तरह से खा सकता है तो उसका पिता क्या करेगा।" यह सोच कर वे तुरन्त ही वहॉ से भाग गये।

अपने साथी के पास पहुॅच कर उन्होंने उनसे कहा कि सचमुच में तुम्हारे ये कूत बहुत ताकतवर हैं। अगर वे यहॉ कुछ देर और रहे तो उनमें से किसी एक की भी ज़िन्दगी सुरक्षित नहीं है क्योंकि उसी शाम उसके बेटे ने तीन भूतों को भून कर मिठाई की तरह खा लिया है। इसलिये उन्होंने निश्चय किया कि वे सब पास वाले जंगल में चले जायेंगे।

इस तरह बोलने वाले ने अपनी और अपने दोस्त की दो बार भूतों से जान बचायी।

इन घटनाओं के बाद दोनों दोस्त एक बार एक पड़ोसी गॉव में गये। वहॉ से वे रात गये घर लौट रहे थे। आधा रास्ता चलने से पहले ही ॲधेरा गिरने लगा था। अब उनके सामने एक घना जंगल था जिसमें बहुत सारे जंगली शिकारी जानवर रहते थे। उन्होंने निश्चय किया कि रात वे किसी पेड़ पर गुजारेंगे सो वे एक पीपल के पेड़ पर चढ़ गये।

अब यह वही जंगल था जहॉ वे पुराने वाले भूत आ कर रहने लगे थे। रात को वे मशाल ले ले कर गीदड़ आदि जानवरों की तलाश में निकल आये। करने वाले की हालत तो बस सोची ही जा सकती है उसे बताना असम्भव है।

वे भयानक भूत उसी पेड़ के नीचे खड़े थे जिसके ऊपर ये दोनों दोस्त बैठे थे। करने वाले के हाथ कॉपने लगे शरीर हिलने लगा। उसकी पकड़ छूट गयी और वह पत्तों में से हो कर एक बहुत ज़ोर की आवाज करता हुआ नीचे गिर पड़ा। उसका दोस्त हमेशा की तरह से सावधान था। उसने तुरन्त ही एक तरकीब सोच ली थी।

वह चिल्लाया — "मैं तो इन लोगों को इनकी किस्मत पर छोड़ देना चाहता था। पर तुमको तो भूख लगी है तुम जल्दी से नीचे कूद कर कुछ को पकड़ लाओ। वह जो सबसे मजबूत वाला है उसे पकड़ना मत भूलना।"

भूतों ने भी इसे सुना तो वे उस आवाज को पहचान गये। क्या यह वही कूत नहीं था जिसके बेटे ने तीन भूतों को भून कर मिठाई के तौर पर खा लिया था। सो वे वहॉ से यह कहते हुए तुरन्त ही भाग गये — "उफ़ क्या बदकिस्मती है कि हमारे दुश्मनों ने हमारा पीछा इस जंगल तक नहीं छोड़ा।"

इस तरह बोलने वाले की होशियारी ने फिर एक बार दोनों की जान बचायी। रात गुजर गयी। सुबह होने को आयी। काम करने वाले ने तीसरी बार बोलने वाले के चारों तरफ चक्का लगाया और

सोचा कि बिना शब्दों की ताकत के शरीर की ताकत कुछ भी नहीं। बोलने वाला शरीर की ताकत वाले से ज़्यादा ताकतवर होता है।

अगर किसी के पास दोनों ताकतें हों तब तो कहना ही क्या है। यह तो ऐसा हो जाये जैसे किसी के पास सोने का कमल हो और उसमें से खुशबू आ रही हो। मेरे लिये यह काफी है कि मैं इस बात को जान सका। अब मैं अपने गॉव जाने की इजाज़त चाहता हूॅ।"

बोलने वाला बोला — "नहीं नहीं। इसमें तुम्हें मेरा कोई ऐहसान मानने की जरूरत नहीं है।" कह कर उसने उसे इज़्ज़त के साथ उसके घर वापस भेज दिया।

इससे हमें यही शिक्षा मिलती है कि बुद्धि की ताकत शरीर की ताकत से ऊॅची होती है।

8 सास जो गधी बन गयी[14]

धीरे धीरे सास गधी बन गयी – तामिल में यह एक कहावत है जो उन लोगों के लिये इस्तेमाल की जाती जो दिन ब दिन नीचे गिरते जाते हैं – फिर चाहे वे पढ़ाई में हों या नौकरी में या ज़िन्दगी में। यह कहावत इस कहानी पर आधारित है।

एक गाँव में एक ब्राह्मण रहता था। उसके साथ इसकी पत्नी माँ और सास भी रहते थे। वह एक बहुत अच्छा आदमी था और सबके साथ बहुत ही विनम्र व्यवहार करता था।

उसकी माँ को कभी उससे कोई शिकायत नहीं थी पर उसकी पत्नी बहुत ही बुरे स्वभाव की स्त्री थी। वह हमेशा अपनी सास को बहुत परेशान करती। सारा दिन किसी न किसी काम में लगाये रखती और खाना भी कम देती। इस वजह से बेचारी बुढ़िया बहुत ही परेशानी में रह रही थी।

दूसरी तरफ वह अपनी माँ को बहुत अच्छी तरह से रखती। अब पति तो पत्नी की बात मानता था। उसके अन्दर इतनी ताकत ही नहीं थी कि वह अपनी पत्नी को अपनी माँ से बुरा व्यवहार करने से रोक सकता।

एक शाम सूरज डूबने के ठीक पहले पत्नी ने गुस्से में अपनी सास को बहुत बुरा भला कहा कि सास को वहाँ से उससे पिटने से

[14] The Mother-in-law Became an Ass. Tale No 8.

बचने के लिये भागना पड़ा। परेशानी में भागी भागी वह गॉव से बाहर निकल गयी पर अब सूरज छिप गया था और ॲधेरा छाने लगा था। सो एक टूटा फूटा मन्दिर देख कर वह उसमें चली गयी ताकि वह रात वहॉ बिता सके।

वह मन्दिर काली देवी का था। वह हर रात आधी रात को अपना गॉव देखने के लिये बाहर निकलती थी। उस रात जब वह बाहर निकली तो उसने एक स्त्री को देखा। यह वही स्त्री थी जो उस ब्राह्मण की मॉ थी।

वह स्त्री इसकी चहारदीवारी में थी और काली ने जो सबसे ज़्यादा दयावान थी उसे पुकारा और उससे पूछा कि वह इतनी दुखी और परेशान क्यों थी कि उसे रात में अपना घर छोड़ कर वहॉ आना पड़ा।

तब ब्राह्मणी ने थोड़े शब्दों में उसे अपनी कहानी बतायी। जब वह उसे अपनी कहानी बता रही थी तो देवी भी अपने ज्ञान से यह पता करने की कोशिश कर रही थी कि वह सच बोल रही थी या नहीं।

उसे पता चला कि वह सच बोल रही थी तो वह उसने उससे बड़े मीठे शब्दों में बोली — "मुझे तुम्हारी परेशानियों पर दया आती है मॉ। क्योंकि तुम्हारी बहू तुमको इतना परेशान करती है जब तुम इतनी बूढ़ी हो गयी हो और तुम्हारे शरीर में अपनी ताकत नहीं है।

लो यह पका आम लो।" कह कर उसने अपनी कमर से एक पका आम निकाला और उसे उस स्त्री को दे दिया।

वह फिर बोली — "लो इसे खा लो। इसे खा कर तुम उतनी ही जवान हो जाओगी जितनी तुम्हारी बहू है फिर वह तुम्हें परेशान नहीं कर पायेगी।"

इस तरह बुढ़िया को तसल्ली दे कर दयावान काली वहाँ से चली गयी। ब्राह्मणी ने वह रात वहीं मन्दिर में ही गुजारी। क्योंकि वह एक बहुत ही प्यारी माँ थी सो वह अपने प्रिय बेटे को खिलाये बिना सारा आम नहीं खा सकी।

इस बीच जब बेटा घर लौटा तो उसने देखा कि उसकी माँ वहाँ नहीं थी। पूछने पर उसकी पत्नी ने अपनी सास को ही दोषी ठहरा दिया। अब क्योंकि अँधेरा हो गया था वह उसको ढूँढने के लिये कहीं नहीं जा सका। उसे दिन निकलने का इन्तजार करना पड़ा।

अगले दिन सुबह होते ही वह उसे ढूँढने निकल पड़ा। वह बहुत दूर नहीं गया था कि वह उसे काली के मन्दिर में मिल गयी। उसे सही सलामत देख कर वह बहुत खुश हो गया।

उसने पूछा — "माँ तुमने यह ठंडी रात यहाँ कैसे गुजारी। तुमने रात क्या खाया। मैं कैसा नीच हूँ कि मेरी शादी एक ऐसी लड़की से हुई है जिसने तुम्हें ऐसी ठंडी रात में बाहर निकाल दिया। उसकी गलतियों को भूल जाओ माँ और घर चलो।"

उसकी मॉ की ऑखों में खुशी और दुख दोनों के ऑसू आ गये। फिर उसने उसे अपनी रात की पूरी कहानी बता दी।

सुनते ही बेटा बोला — “अब तुम देर मत करो यह आम खा लो। मुझे इसमें से कुछ नहीं चाहिये। बस तुम जवान और ताकतवर हो जाओ ताकि तुम उस नीच के नीच व्यवहार का मुकाबला कर सको। मेरे लिये वही काफी है।”

सो मॉ ने वह सारा फल खा लिया। बेटा मॉ को अपने कन्धे पर बिठा कर घर ले गया। घर पहुॅच कर उसने उसे नीचे उतार कर जमीन पर बिठा दिया। पर यह क्या। यह तो वह पुरानी बुढ़िया नहीं थी। यह तो अब **16** साल की एक लड़की थी और उसकी अपनी पत्नी से बहुत ताकतवर थी।

उसकी परेशान करने वाली पत्नी तो अब खुद बहुत परेशान थी। वह अपनी इतनी ताकतवर सास के सामने खुद को बहुत ही कमजोर महसूस कर रही थी।

उसको यह बदलाव बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था। अब उसने लड़ने झगड़ने की बजाय अपने मन में सोचा “यह पत्थर जब काली देवी का फल खा कर **16** साल की जवान बन सकती है तो अगर मैं अपनी मॉ को सिखा पढ़ा कर उसी मन्दिर में भेज दूॅ तो मेरी मॉ भी ऐसी ही जवान क्यों नहीं बन सकती।”

सो उसने अपनी मॉ को वह कहानी बतायी जो उसे काली मॉ को सुनानी थी और उसे उसी मन्दिर में रात को भेज दिया। लड़की

की मॉ भी अपनी बेटी के विचारों से सहमत थी सो वह रात को उसी मन्दिर चली गयी।

रात को जब काली मॉ अपनी मूर्ति से बाहर आयीं तो लड़की की मॉ ने उन्हें झूठी कहानी सुना दी कि उनकी बहू उन्हें बहुत तंग करती है। हालॉकि वास्तव में उनकी तो कोई बहू ही नहीं थी।

काली मॉ ने जान लिया कि वह झूठ बोल रही थी पर उस पर अपनी दया दिखाते हुए उन्होंने उसको भी एक फल दिया। उसकी बेटी ने उससे कहा था कि वह उस फल को तभी न खाये बल्कि सुबह तक रखा रहने दे जब तक वह अपने दामाद को चेहरा न देख ले। उसने वैसा ही किया।

सुबह हुई बेचारा पत्नी का गुलाम ब्राह्मण अपनी पत्नी के कहे अनुसार मन्दिर से अपनी सास को लाने चल दिया जैसे वह कुछ दिन पहले अपनी मॉ को लाया था। वह गया और अपनी सास से घर चलने के लिये कहा।

वह चाहती थी उस फल का कुछ हिस्सा वह भी खाये जैसा कि उसे बताया गया था। पर ब्राह्मण ने उसे खाने से मना कर दिया तो उसने उसे सारा का सारा ही निगल लिया। अब उसे पूरा विश्वास था कि घर पहुॅच कर वह भी जवान हो जायेगी।

इस बीच उसका दामाद उसे अपने कन्धे पर बिठा कर घर की तरफ ले चला। वह भी अपने पुराने अनुभव से यही आशा कर रहा था कि उसकी सास भी उसकी मॉ की तरह से ही जवान हो

जायेगी। पर उत्सुकता में यह देखने के लिये कि उसकी सास में किस तरह का बदलाव आया उसने थोड़ा सा मुड़ कर जो देखा तो उसने देखा कि वह तो एक बेकार के बोझे को अपने कन्धे पर उठा लाया है।

उसे वहाँ किसी गधे का थोड़ा सा हिस्सा दिखायी दिया। उसे लगा कि शायद उसने अभी ठीक से देखा नहीं होगा पर वह उसे जितना ज़्यादा देखता उसे वह उतनी ही ज़्यादा गधी दिखायी देती। घर ला कर उसने उसे जो उतारा तो वह तो उसके कन्धे से कूद गयी और रेंकती हुई भाग गयी।

इस तरह काली माँ ने पत्नी के बुरे इरादे भाँप कर उसे निराश कर दिया। उसकी माँ को गधी में बदल दिया। पर दूसरे किसी को भी यह पता नहीं चला कि वह गधी थी जब तक वह दामाद के कन्धे से कूद कर भाग नहीं गयी।

9 अप्पय्या की कहानी[15]

दूर के एक गॉव में एक ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था। हालॉकि उसकी शादी हुए कई साल बीत गये थे पर उसके कोई बच्चा नहीं था। उसकी एक बच्चे की बहुत इच्छा थी पर पहली पत्नी से कोई बच्चा न होने की वजह से और न ही उससे भविष्य में कोई बच्चा होने की आशा की वजह से उसने दूसरी शादी करने का विचार किया।

पहले तो उसकी पत्नी ने इस शादी के लिये उसे मना किया पर जब उसने देखा कि उसके पति ने तो पक्का इरादा कर लिया है तो वह राजी हो गयी। उसने सोचा कि वह किसी तरह से उसकी दूसरी पत्नी को उससे दूर कर देगी।

अब क्या था जैसे ही उसे अपनी पत्नी की इजाज़त मिली उसने एक सुन्दर ब्राह्मण लड़की से शादी कर ली। वह लड़की भी ब्राह्मण की पहली पत्नी के साथ ही उसी मकान में रहने लगी। अब पहली पत्नी किसी ऐसी घटना के होने के इन्तजार में थी जिससे वह उसे बदनाम कर सके।

[15] The Story of Ayyappa. Tale No 9.
Compare the tale of "Fattu, the Valiant Weaver". Indian Antiquary. Vol 11. p 282.

ईश्वर तो खुद ही उसकी दूसरी शादी के पक्ष में थे सो एक साल बाद उसकी दूसरी पत्नी को बच्चे की आशा हो गयी। छठे महीने वह बच्चे के जन्म के लिये अपनी माँ के घर चली गयी।

उसका पति ने उसका अलग रहना **15** दिन तक तो सहा पर फिर उसके मन में उसको देखने की इच्छा फिर से हो आयी। वह अब अक्सर अपनी पहली पत्नी से पूछता कि उसे उससे मिलने के लिये कब जाना चाहिये।

पहली पत्नी को अपने पति से पूरी सहानुभूति थी। वह बोली — "प्रिय। तुम्हारी तन्दुरुस्ती तो रोज रोज गिरती ही जा रही थी। मुझे खुशी है उसके लिये तुम्हारे प्यार ने तुम्हारी तन्दुरुस्ती को और ज़्यादा खराब नहीं कर दिया है। तुम उससे मिलने के लिये कल सुबह ही चले जाओ।

कहा गया है कि बच्चों, राजा और एक बच्चे की आशा रखने वाली स्त्री के पास खाली हाथ नहीं जाना चाहिये। सो मैं तुम्हें कल **100** अपूप यानी लड्डू दूँगी जो एक अलग बर्तन में रखे होंगे। तुम वे उसे ले जा कर दे देना।

अपूप तो तुमको भी बहुत अच्छे लगते है सो तुम कहीं उन्हें रास्ते में ही न खा लेना। तुम्हारे लिये मैं कुछ अपूप अलग से दूँगी जिन्हें तुम अपनी यात्रा में खा सकते हो।"

रात भर बैठी बैठी वह अपूप बनाती रही। अपनी सौत के लिये उसने जो अपूप बनाये उसकी चीनी में उसने जहर मिला दिया। पर

अपने पति से तो उसकी कोई दुश्मनी नहीं थी सो उसने उसके लिये अच्छे वाले अपूप बनाये थे। सुबह होते ही उसने **100** अपूप एक पीतल के बर्तन में बॉध दिये जिसे उसका पति आसानी से अपने सिर पर रख सकता था।

क्योंकि यात्रा पर जाने से पहले भारी नाश्ता यात्रा के लिये ठीक नहीं रहता इसलिये पति सुबह हल्का सा नाश्ता करने के बाद अपनी दूसरी पत्नी को देखने के लिये चल दिया।

अपूप का बर्तन उसने अपने सिर पर रख लिया और दूसरे अपूप की पोटली उसने हाथ में लटका ली। उसकी दूसरी पत्नी के गॉव तक वहॉ से दो दिन की यात्रा थी।

वह जल्दी जल्दी चला जा रहा था कि शाम हो आयी। तेज़ चलने की वजह से वह थक भी गया और अब उसे भूख भी लग आयी थी तो उसने सड़क के किनारे ही एक शैड देखा और उसके पास ही एक तालाब देखा तो वह वहीं बैठ गया।

शाम की सूरज की पूजा करने के लिये हाथ मुॅह धोने के लिये वह तालाब में घुसा क्योंकि सूरज देवता तो बस अब जाने ही वाले थे। पूजा खत्म कर के उसने अपना रूमाल खोला जिसमें उसके खाने के लिये अपूप बॅधे हुए थे। वह उनको पूरा का पूरा खा गया। उसे अपूप बहुत अच्छे लगते थे सो उसने वे अपूप तुरन्त ही खत्म कर दिये।

फिर उसने पानी पिया। थकान से उसका शरीर चूर चूर हो रहा था सो अपना खाना खा कर वह वहीं शैड में सो गया। पत्नी के लिये जो अपूप वह ले कर जा रहा था उनका बर्तन उसने अपने सिर के नीचे रख लिया।

जहॉ ब्राह्मण सो रहा था वहीं पास में एक राजा रहता था जिसके एक बहुत सुन्दर बेटी थी। बहुत लोगों ने शादी के लिये उसका हाथ मॉगा। ऐसे उम्मीदवारों में से एक डाकुओं का सरदार भी था जो उसे अपने बेटे के लिये चाहता था।

हालॉकि राजा को वह लड़का अच्छा लगता था क्योंकि वह बहुत सुन्दर था पर क्योंकि वह एक डाकू था यही विचार राजा को खटकता रहता था। पर डाकुओं के सरदार ने भी अपना दिमाग बना रखा था वह अपने तरीके से अपना काम करना चाहता था।

उसने अपने गिरोह के 100 आदमी उसी रात राजकुमारी को सोते में उठा लाने के लिये राजा के घर भेज दिये। उनको कहा गया था कि वे राजकुमारी को उसके पलंग सहित उठा कर लायें। राजकुमारी को भी इस बात का पता नहीं था।

जब वे डाकू शैड के पास से गुजरे तो उन्हें बहुत प्यास लगी क्योंकि रात को जागने से प्यास तो लगती ही है। तो उन्होंने राजकुमारी का पलंग तो जमीन पर रख दिया और तालाब की ओर पानी पीने चल दिये।

तभी उनहें अपूप की खुशबू आयी – वे अपूप जो ब्राह्मण अपनी पत्नी के लिये लिये जा रहा था। वे अपूप जिनमें जहर मिला था।

डाकुओं ने इधर उधर देखा भाला तो उन्हें शैड में एक ब्राह्मण सोता हुआ मिल गया। उसने अपने सिर के नीचे जो पीतल का बर्तन लगाया हुआ था वह उसके सिर से कुछ ही दूरी पर पड़ा था। लगता था कि रात को सोते में जब उसने अपने हाथ इधर उधर फैलाये होंगे तो वह बर्तन अपनी जगह से हट गया होगा।

उन्होंने वह बर्तन खोल कर देखा तो उसमें तो अपूप रखे थे और वे भी पूरे सौ। अरे वाह यह तो आनन्द आ गया। अब हमें खाली पानी पीने की जरूरत नहीं है। अब हम सब एक एक अपूप खायेंगे और उसके बाद पानी पियेंगे।

गिरोह के सरदार ने कहा — "चलो एक एक अपूप खाओ और फिर पानी पी कर आगे बढ़ते हैं।"

जैसे ही हर एक ने अपना अपना अपूप खाया वह मर कर नीचे गिर पड़ा। यह बात अच्छी थी कि किसी को ब्राह्मणी की चाल का पता नहीं था। अगर डाकू लोग यह बात पहले से ही जानते तो उनमें से कोई भी ब्राह्मण के अपूप नहीं खाता। इसके अलावा अगर ब्राह्मण को भी यह बात पहले से पता होती तो वह उन्हें अपनी प्रिय पत्नी के लिये ले कर ही नहीं जाता।

सो यह सब बेचारे ब्राह्मण और उसकी दूसरी पत्नी की अच्छी किस्मत थी सोती हुई राजकुमारी की अच्छी किस्मत थी कि वे सारे जहरीले अपूप डाकुओं ने खा लिये थे।

सुबह को ब्राह्मण जब अपनी नींद पूरी होने पर उठा तो उसने देखा कि उसके अपूपों का बर्तन तो वहाँ कहीं नहीं है और बाहर बहुत सारे लोग मरे पड़े हैं। उन आदमियों को तो वह पहचान गया वे डाकू थे।

अपने बर्तन के खोने पर उसे बहुत गुस्सा आ रहा था। उसने वहाँ पड़े एक आदमी की तलवार उठायी और उससे सब आदमियों के सिर काट डाले। जब वह सिर काट रहा था तो वह यही सोच कर उनके सिर काट रहा था कि वह ज़िन्दा लोगों के सिर काट रहा है जो उसके लड्डू खा कर वहाँ सो रहे थे।

क्योंकि उसे तो पता ही नहीं था कि अपूपों में जहर था और वे जहरीले अपूप खा कर वे डाकू मर गये थे।

जब वह उनके सिर काट रहा था तो उसकी निगाह राजकुमारी के पलंग पर पड़ी। वह उधर की तरफ बढ़ा तो उसने देखा कि उस पर तो एक बहुत सुन्दर लड़की सोयी हुई है।

अपनी अक्लमन्दी से अब उसका रहा सहा शक भी पक्का हो गया था कि जिन आदमियों के सिर उसने काटे हैं वे यकीनन ही डाकू थे जो उस लड़की को उठा कर ले जा रहे थे।

उसका यह शक भी जल्दी ही दूर हो गया क्योंकि तभी उसने राजा और उसके साथियों की आवाजें सुनी वे कह रहे थे “पकड़ो पकड़ो उस डाकू को पकड़ो जो हमारी राजकुमारी को ले आया है।”

ब्राह्मण ने तुरन्त ही सोच लिया कि यह इस लड़की का पिता होगा सो उसने यकायक ही लड़की को जगाया और उससे कहा — “देखो तुम्हारे घर से तुम्हें ये सौ डाकू उठा लाये थे। मैंने उन्हें अकेले ने ही मार दिया है।”

राजकुमारी तो यह सुन कर बहुत खुश हुई क्योंकि उसे मालूम था कि ये डाकू पहले भी उसके साथ ऐसी ही चालें खेलने की कोशिशें कर चुके हैं। सो वह आदर के साथ ब्राह्मण के पैरों पर गिर पड़ी।

वह बोली — “दोस्त। आज तक मैंने ऐसा कोई बहादुर नहीं सुना जो अकेला ही 100 लोगों से लड़ा हो और उसने उन सबको मार दिया हो। तुम्हारी बहादुरी तो तारीफ के काबिल है। इस याद में कि तुमने मेरी इन जंगलियों से जान बचायी है मैं तुम्हारी पत्नी बनूँगी।”

उसका पिता और उसकी सेना वहीं पास तक आ गयी थी। राजा भी डाकुओं के सरदार की हर हरकत पर नजर रखे था सो जैसे ही उसने सुना कि डाकू उसकी बेटी को उठा कर ले गये हैं तो वह तुरन्त ही अपनी सेना ले कर जंगल की तरफ चल पड़ा।

अपनी बेटी को सुरक्षित देख कर तो बहुत ही खुश हो गया। उसने दौड़ कर अपनी बेटी को गले लगा लिया। उधर राजकुमारी ने ब्राह्मण की तरफ इशारा करके बताया कि उस ब्राह्मण ने उसकी डाकुओं से रक्षा की है।

राजा ने उससे हजारों सवाल पूछे। अब ब्राह्मण तो लड़ाई की कला में होशियार था सो उसने राजा को बहुत अच्छे जवाब दिये। और इस तरह से उसने अपना पहला कारनामा पूरा किया।

राजा तो उसकी इस बहादुरी पर बहुत चकित हुआ। वह उसे अपने महल ले गया और उससे अपनी बेटी से शादी कर दी। और अब वह एक राजा का दामाद बन गया।

राजकुमारी के देश के पास ही एक शेरनी रहती थी जिसे आदमी का मॉस खाना बहुत अच्छा लगता था इसलिये राजा को हर हफ्ते एक आदमी उसके खाने के लिये भेजना पड़ता था।

एक दिन सब लोग राजा के पास गये और बोले — "योर मैजेस्टी। अब तो आपके पास एक इतना अच्छा दामाद है जिसने अपनी तलवार से **100** डाकुओं को मार डाला था तो अब आपको हर हफ्ते एक आदमी को भेजने की क्या जरूरत है। हम सब आपसे विनती करते हैं कि अगले हफ्ते आप उन्हें भेज दें वह उसे मार देंगे।"

राजा को यह सुझाव बहुत पसन्द आया तो उसने अपने दामाद को बुलवाया और उसे शेरनी को मारने के लिये अपने कुछ सैनिकों

के साथ जंगल भेज दिया। अब ब्राह्मण मना तो कर नहीं सकता था कि कहीं उसका पहला काम बेकार न हो जाये।

यह सोचते हुए कि इस काम में भी उसकी किस्मत उसका साथ देगी उसने अपने ससुर से कहा कि वह उसे एक बरगद के पेड़ पर सारे किस्म के हथियार दे कर बिठवा दें बाकी वह देख लेगा। राजा ने वैसा ही करवा दिया।

शेरनी के खाने का समय पास आ रहा था। वह आयी तो उसने देखा कि वहाँ तो कोई नहीं था। कभी कभी कुछ लोग जंगल में इधर उधर हो जाते थे तो वह उसी पेड़ के नीचे आ कर उनका इन्तजार करती थी सो वह वहीं आ कर खड़ी हो गयी जिस पेड़ के ऊपर वह ब्राह्मण बैठा था।

यह देख कर ब्राह्मण तो बहुत डर गया। वह कॉपने लगा। इस कॉपने में उसके हाथ में पकड़ी हुई तलवार नीचे गिर गयी।

उसी समय शेरनी ने जॅभाई लेने के लिये अपना मुँह खोला तो वह तलवार सीधी उसके मुँह में जा गिरी और वह उसी समय मर गयी।

ब्राह्मण ने जब यह देखा तो वह नीचे उतर आया और राजा को बताने के लिये हजारों कहानियॉ सोचने लगा कि उसने शेरनी को कैसे मारा। इस काम ने तो उसकी साख और भी बढ़ा दी। उसके सम्मान में बहुत सारी दावतें हुईं। सारे देश ने राजा के दामाद को आशीर्वाद दिये।

इस राज्य के पास एक बहुत बड़े राजा का राज्य था। वह पड़ोस के सारे राजाओं से टैक्स वसूल करता था। इस राजा को हमारे ब्राह्मण का ससुर भी टैक्स देता था।

अब ब्राह्मण के ससुर के पास तो ब्राह्मण जैसा बहादुर आदमी था जिसने अकेले ने सौ आदमी मर दिये एक शेरनी को मार दिया था सो अपने दामाद की ताकत पर विश्वास कर के उसने उस राजा को टैक्स देना बन्द कर दिया। इस राजा का नाम अप्पय्या राजा था।

जैसे ही अप्पय्या राजा को टैक्स नहीं मिला तो उसने ब्राह्मण के ससुर पर हमला बोल दिया। ससुर ने अपने दामाद से सहायता मॉगी। बेचारा ब्राह्मण फिर से उन्हें मना नहीं कर सका क्योंकि अगर वह करता तो उसकी पुरानी साख भी चली जाती।

इसलिये उसने यह काम करने की भी सोची। उसने सोचा कि उसे अपनी किस्मत पर ज़्यादा भरोसा रखना चाहिये बजाय कोशिश छोड़ देने के।

उसने राजा से उसका सबसे अच्छा घोड़ा और सबसे तेज़ धार वाली तलवार मॉगी और दुश्मन से लड़ने चल दिया। दुश्मन का कैम्प नदी के उस पार लगा हुआ था जो उस शहर के पूर्व में कुछ ही दूरी पर बहती थी।

राजा के पास एक नया घोड़ा था जो पहले कभी किसी लड़ाई में नहीं गया था। उसने वह घोड़ा अपने दामाद को दे दिया और एक

तेज़ धार की तलवार दे कर उसे लड़ाई के लिये रवाना किया। ब्राह्मण ने नौकरों से कहा कि वे उसे घोड़े की जीन पर बिठा कर रस्सियों से बॉध दें। नौकरों ने ऐसा ही किया और वह अपने काम पर चल पड़ा।

घोड़े ने पहले कभी किसी को अपनी पीठ पर बिठाया नहीं था सो यह देख कर वह गुस्से में भर कर ज़ोर ज़ोर से दौड़ने लगा। वह इतनी ज़ोर से दौड़ रहा था कि देखने वालों को लग रहा था कि उसके सवार की जान खतरे से खाली नहीं। ब्राह्मण खुद भी डर के मारे मरा जा रहा था।

उसने अपने घोड़े को काबू में करने की बहुत कोशिश की पर वह काबू में ही नहीं आ रहा था। जितनी ज़ोर से वह उसकी लगाम खींचता वह उतनी ही तेज़ी से दौड़ता। उसने अपनी ज़िन्दगी को भगवान के हाथों में छोड़ दिया था। इससे उसकी रस्सियॉ ढीली हो गयी थीं।

नदी के पास आ कर घोड़ा नदी में कूद गया और उसे तैर कर उसके दूसरे किनारे पर आ पहुॅचा। इससे वे सब रस्सियॉ जिनसे बॅधा हुआ ब्राह्मण घोड़े पर बैठा था वे सब गीली हो गयी थीं। गीली होने की वजह से वे फूल गयी थीं और अब उनसे ब्राह्मण के शरीर में दर्द होने लगा था। वह बेचारा उसे सहता रहा।

घोड़े ने नदी पार कर ली थी और अब वह नदी के दूसरी तरफ आगे बढ़ रहा था कि ब्राह्मण को एक ताड़ का पेड़ दिखायी दे गया

जिसे अभी हाल की बाढ़ ने काफी उखाड़ दिया था। इतना उखाड़ दिया था कि ज़रा सा हाथ लगने से ही वह गिर सकता था।

अब ब्राह्मण घोड़े को तो रोक नहीं सकता था सो डर के मारे उसने वह ताड़ का पेड़ कस कर पकड़ लिया। ताड़ का पेड़ तो पहले से ही बहुत ढीला था वह उखड़ कर उसके हाथ में आ गया। घोड़ा अभी भी बहुत तेज़ी से भाग रहा था। अब उसकी यह समझ में यह नहीं आ रहा था कि वह पेड़ को पकड़े रहे तब ज़्यादा सुरक्षित है या जब उसे छोड़ देगा तब ज़्यादा सुरक्षित रहेगा।

वह इस निराशा में चिल्लाया "अप्पा अय्या।" घोड़ा अभी भी भाग चला जा रहा था। और घोड़े पर ब्राह्मण अभी भी सवार था। उसके हाथ में अभी भी ताड़ का पेड़ था।

हालॉकि ब्राह्मण तो अपनी जान बचाने के लिये भागा जा रहा था पर जो लोग दूर से उसे भागते हुए देख रहे थे उनको वह ताड़ के पेड़ के साथ युद्धभूमि में जाता हुआ दिखायी दे रहा था।

जब वह "अप्पा अय्या" चिल्लाया था तो दुश्मन ने समझा कि वह उनको चुनौती देता हुआ चला आ रहा है क्योंकि उनके राजा का नाम अप्पय्या था। यह देख कर तो वह डर ही गये कि दुश्मन की सेना का लीडर जब ताड़ का एक बड़ा से पेड़ लिये उनको चुनौती दे रहा है तो उसकी सेना का क्या हाल होगा।

बस यह सोचते ही वे युद्धभूमि से भाग लिये। "यथा राजा तथा प्रजा"। सारी सेना वहॉ से भाग निकली। इस तरह पल भर में ही

दुश्मन की सेना वहाँ से गायब हो गयी। उधर घोड़ा भी थक हार कर महल लौट आया।

राजा जो कुछ नदी के पार हो रहा था यह सब अपने सबसे ऊँचे कमरे से देख रहा था। उसे विश्वास हो गया कि उसके दामाद में कोई अनोखी ताकत है जिससे उसने उसके दुश्मन को भगा दिया है सो उसके लौटने पर वह उसका स्वागत करने गया।

ब्राह्मण की रस्सियाँ काटी गयीं जिनमें जकड़ा वह घोड़े पर बैठा था। राजा ने उससे अपना और अपने देश का आभार प्रगट किया। उसको सारे नगर में घुमाया गया।

इस तरह तीन अलग अलग मौकों पर तीन अलग अलग परिस्थितियों में किस्मत ने ब्राह्मण का साथ दिया और उसे मशहूर कर दिया। फिर उसने अपनी दोनों पुरानी पत्नियों को महल में बुला भेजा।

उसकी दूसरी पत्नी जिसको बच्चे की आशा थी जब वह उसके लिये अपूपा ले कर चलना शुरू किया था और जब तक वह फिर ब्राह्मण के पास आयी तो उसका बेटा एक साल का हो गया था।

पहली पत्नी ने अपना अपराध स्वीकार किया कि उसने अपनी सौत के लिये जहर भरे अपूपा भेजे थे और ब्राह्मण से माफी माँगी। तब उस समय ब्राह्मण को पता चला कि पहली बार में जो उसने सौ आदमियों के सिर काटे थे वे ज़िन्दा के नहीं बल्कि मुर्दा लोगों के

काटे थे। उन्होंने यकीनन ही मेरी पत्नी के बनाये हुए अपूप खाये होंगे।

और क्योंकि उसकी इस नीचता ने उसकी ज़िन्दगी को एक नयी शुरूआत दी थी उसने अपनी पत्नी को माफ कर दिया। उधर उसने भी अपने पति की पत्नियों से द्वेश रखना छोड़ दिया। उसके बाद चारों बहुत दिनों तक शान्ति से रहे।

10 एक ब्राह्मण लड़की जिसने चीते से शादी की[16]

किसी एक गॉव में एक ब्राह्मण रहता था जिसके तीन बेटे और एक बेटी थी। बेटी सबसे छोटी थी इसलिये उसे बहुत प्यार से पाला गया था और इसी लिये वह थोड़ी बिगड़ी हुई भी थी।

जिस किसी सुन्दर लड़के को वह देखती उसी के लिये कहती कि मैं उससे शादी करूँगी। इसलिये उसके माता पिता को कई रास्ते ढूँढने पड़ते ताकि वे उसे उसके इस तरह के प्रेमियों से बचा सकें।

इस तरह से कुछ साल निकल गये। लड़की बड़ी हो गयी तो उसके माता पिता ने समाज से निकाले जाने के डर से कि उन्होंने उसकी शादी ठीक समय से नहीं की तो लोग क्या कहेंगे उसके लिये कोई दुलहा देखना शुरू किया।

उनके गॉव के पास एक बहुत ही भयानक चीता रहता था। उसने जादू बहुत अच्छी तरह से सीख रखा था। उस जादू की सहायता से वह कोई भी रूप ले सकता था। उसे ब्राह्मणों का खाना बहुत अच्छा लगता था सो वह चीता जब तब एक ब्राह्मण का रूप रख लेता और ब्राह्मणों द्वारा बनाया हुआ खाना खाने के लिये अक्सर मन्दिरों में और दूसरी जगहों पर जाया करता था।

अब वह चीता किसी ब्राह्मण लड़की से शादी भी करना चाहता था ताकि वह उसके ब्राह्मणों जैसा खाना बना सके।

---

[16] The Brahman Girl Who Married a Tiger. Tale No 10.

एक बार जब वह सत्र[17] में खाना खा रहा था उसने कुछ लोगों से एक सुन्दर ब्राहंण लड़की के बारे में सुना जो हर किसी सुन्दर ब्राह्मण लड़के से शादी करने को तैयार हो जाती थी।

उसने सोचा "आज मैं किसका चेहरा देख कर उठा था उसकी जय हो। अब मैं एक सुन्दर ब्राह्मण लड़के का रूप रखूँगा और उस लड़की का दिल जीत लूँगा।"

अगले दिन उसने एक ऐसे ब्राह्मण का रूप बनाया जो रामायण पढ़ना जानता हो और एक घाट पर जा कर बैठ गया। वहाँ उसने अपनी रामायण खोली और मीठे स्वर में रामायण पढ़ने लगा। इस नये शास्त्री की आवाज बहुत अच्छी थी सो लोग वहाँ आ आ कर उसकी रामायण सुनने लगे।

अब वह जिस लड़की के लिये यह रामायण पढ़ रहा था वह भी कुछ समय बाद नदी पर नहाने के लिये आयी। उसने इस ब्राह्मण को रामायण पढ़ते सुना तो वह भी मोहित हो कर उसकी रामायण सुनने बैठ गयी।

घर जा कर उसने अपने माता पिता से जिद की कि वे उसकी शादी की बात उस ब्राह्मण से जल्दी करें ताकि वह उसे खो न दे। लड़की की माँ उस ब्राह्मण के लड़के से बहुत खुश थी कि भगवान ने उसे इतना अच्छा लड़का भेज दिया था।

[17] Satra means public place

उसने अपने पति से इस बारे में बात की तो उसका पति भी बहुत खुश था कि महेश्वर ने उसे इतना अच्छा लड़का भेज दिया है।

पिता ने शास्त्री जी को घर पर खाने के लिये बुलाया। शास्त्री ने घर आ कर उनकी बेटी से शादी करने की इच्छा प्रगट की तो पिता राजी हो गया।

शास्त्री के लिये एक बहुत ही शानदार खाने का इन्तजाम किया गया फिर उससे उसके माता पिता उम्र आदि के बारें पूछा गया जिसके लिये चालाक चीते ने जवाब दिया कि वह पास के जंगल के उस पार एक गॉव में पैदा हुआ था।

ब्राह्मण के पास उसकी और ज़्यादा जानकारी लेने के इन्तजार का समय नहीं था क्योंकि लड़का बहुत सुन्दर था। उसने अगले ही दिन अपनी बेटी की शादी उससे कर दी।

एक महीने तक खाने पीने चलते रहे। इस बीच दुलहे से उसको सारे नये सम्बन्धी सन्तुष्ट रहे जिन्होंने यही सोच रख था कि वह एक आदमी है। उसने भी ब्राह्मण के खाने के साथ पूरा न्याय किया और जो कुछ भी उसके सामने रखा गया सब उसने बहुत प्रेम से खाया।

जब एक महीना हो गया तो शास्त्री ने अपने रोजमर्रा के शिकार के बारे में सोचा सो वह जंगल में अपने घर के आसपास घूमता रहा। दूसरे का खाना एक दो दिन के लिये तो ठीक होता है पर अपना खाना एक महीने तक न खाना तो बहुत मुश्किल काम है।

सो एक दिन उसने अपने ससुर से कहा — “अब मुझे अपने बूढ़े माता पिता के पास जाना चाहिये क्योंकि वे मेरे वहाँ न रहने दुखी हो रहे होंगे। और फिर मैं दोबारा अपने गाँव से यहाँ आ कर अपनी पत्नी को ले जाने का दोबारा खर्चा करूँ यह भी तो ठीक नहीं है।

सो अगर आप मुझे इजाज़त तो मैं उसे अपने साथ अभी उसके घर ले जाऊँ और उसे उसकी सास के हवाले कर दूँ ताकि वह इसकी ठीक से देखभाल कर सके।”

ब्राह्मण राजी हो गया और बोला — “मेरे प्यारे दामाद। तुम उसके पति हो और वह तुम्हारी पत्नी है। हम उसे तुम्हारे साथ भेजते हैं हालाँकि उसको इस तरह भेजना उसी तरह का है जैसे किसी को उसकी आँखों पर पट्टी बाँध कर जंगल में भेज देना।

पर हम तो अब यही समझते है कि तुम ही उसके सब कुछ हो सो हमें विश्वास है कि तुम उसे ठीक से रखोगे।”

लड़की की माँ तो यही सोच सोच कर रोती रही कि उसकी बेटी इतनी दूर चली जायेगी फिर भी अगला दिन ही जाने के लिये तय हुआ। माँ सारा दिन अपनी बेटी के लिये बहुत सारी मिठाई नमकीन बनाती रही। जब वह जाने लगी तो उसने कुछ नीम की पत्तियाँ उसके साथ रख दीं और कुछ उसके सिर पर रख दीं।

जब वे चलने लगे तो लड़की के घर वालों ने लड़के से कहा कि जहॉ कहीं रास्ते में जगह मिले वह लड़की को थोड़ा आराम करा दे पानी पिला दे। लड़के ने हॉ कर दी और इस तरह यात्रा शुरू हुई।

दोनों की यात्रा दो तीन घड़ी[18] तक अच्छे से खुशी खुशी बात करते करते बीती। तभी लड़की ने रास्ते में एक तालाब देखा जिसके पास चिड़ियें मीठा मीठा गा रही थीं। उसने अपने पति से विनती की कि वह उसे उस तालाब के किनारे तक ले चले और वहॉ उसके साथ कुछ खा पी ले।

पर वह बोला — "चुप रहो नहीं तो में तुम्हें अपना असली रूप दिखा दूॅगा।"

इस बात का उसे कुछ मतलब तो समझ में नहीं आया पर वह डर बहुत गयी और चुपचाप उसके पीछे पीछे चलती रही। कुछ देर चलने के बाद उसे एक और तालाब दिखायी दिया। उसने वहॉ फिर से अपने पति से अपनी बात दोहरायी पर उसने उसे फिर वही जवाब दे दिया।

अब उसको बहुत भूख लग आयी थी। उसको अपने पति की आवाज भी अच्छी नहीं लग रही थी जो जंगल में घुसते ही काफी बदल गयी थी तो आखिर उसने उससे कहा — "ठीक है। तुम मुझे अपनी असली शक्ल दिखाओ।"

[18] One Ghadee is equal to 24 minutes.

जैसे ही उसने यह शब्द कहे उस आदमी की तो शक्ल ही बदल गयी। चार टॉगें, धारीदार खाल, लम्बी पूँछ और एक चीते का मुँह उसके सामने प्रगट हो गया और अब एक आदमी की बजाय एक चीता उसके सामने खड़ा था।

वह बोला — "अब जान लो कि मैं तुम्हारा पति चीता हूँ। अगर तुम्हें अपनी ज़िन्दगी प्यारी है तो तुम मेरे सारे हुक्मों का ठीक से पालन करो क्योंकि मैं तुमसे आदमी की आवाज में बात कर सकता हूँ और तुम जो कुछ भी कहोगी वह समझ भी सकता हूँ। एक घंटे में हम अपने घर पहुँच जायेंगे जहॉ की तुम रानी होगी।

तुम्हें वहॉ घर के सामने पॉच छह टब रखे दिखायी देंगे जिन्हें तुम्हें रोज वैसे ही खाने से भरने होंगे जैसा खाना तुम अपने घर में बनाती हो। तुम्हारे लिये खाने का सब सामान लाने का जिम्मा मैं लेता हूँ।"

इतना कह कर चीता उसको प्यार से घर के अन्दर ले गया। लड़की की परेशानी सोची ज़्यादा जा सकती है बजाय लिखने के। अगर वह कुछ बोलती तो उसे जान से हाथ धोने पड़ते। सो रोते हुए वह अपने पति के घर में घुसी।

उसे वहॉ छोड़ कर चीता बाहर चला गया और उसके लिये खाना बनाने का सब सामान ले कर ही लौटा – कई सारे काशीफल और मॉस। उसने जल्दी से उसे तैयार किया और फिर उसे अपने पति को खाने के लिये दिया।

खा पी कर वह फिर बाहर चला गया और फिर कई सब्जियाँ और माँस ले कर आया और उससे कहा — "मैं हर सुबह सब्जियाँ और माँस लेने जाऊँगा और तुम वह सब पका कर रखोगी जो कुछ घर में होगा।"

अगले दिन जैसे ही चीता घर से बाहर गया जो कुछ भी घर में बचा हुआ रखा था वह उसने पकाया और उससे बाहर रखे टब भर दिये। शाम को चीता वापस लौट कर आया तो चिल्लाया — "मुझे जंगल में किसी आदमी और किसी स्त्री की बू आ रही है।"

यह सुन कर लड़की डर गयी और अन्दर जा कर छिप गयी। उसके बाद चीते ने खाना खाया और उससे दरवाजा खोलने के लिये कहा। उसने तुरन्त ही दरवाजा खोल दिया। दोनों ने कुछ देर तक बातें कीं। उसके बाद चीता कुछ देर के लिये आराम करने के लिये लेट गया। शाम को वह फिर से शिकार के लिये चला गया।

ऐसा काफी दिनों तक चलता रहा। दोनों के घर में एक बच्चे ने जन्म लिया जो एक चीता ही था।

एक दिन जब चीता बाहर गया हुआ था लड़की घर में बैठी रो रही थी कि एक कौआ उसके पास बिखरे हुए चावल खाने के लिये आया। उसने लड़की को रोते हुए देखा तो वह खुद भी रोने लगा।

यह देख कर लड़की ने कौए से पूछा कि क्या वह उसकी कुछ सहायता कर सकता है। कौआ बोला "हॅा कर सकता हूँ।"

वह उठी और एक नीम की पत्ती ले कर आयी और उस पर उसने एक कील से अपने सारे दर्द लिखे जो वह वहाँ जंगल में उठा रही थी और अपने भाइयों से विनती की कि वे जल्दी से जल्दी आ कर उसे वहाँ से छुटकारा दिलायें। यह नीम की पत्ती उसने कौए के गले में बाँध दी।

कौए ने उसका मतलब समझ लिया और वह उसकी पत्ती को ले कर उड़ चला। उसके घर जा कर वह उसके एक भाई के कन्धे पर बैठ गया। भाई ने कौए के गले में से पत्ती खोली और उसे पढ़ा तो उसमें लिखा हुआ अपने भाइयों को बताया।

तीनों भाइयों ने माँ से रास्ते के खाने के लिये कुछ माँगा तो माँ के पास तीनों के लिये काफी चावल नहीं था सो उसने मिट्टी की एक गेंद बनायी और उसके ऊपर चावल लगा दिये जिससे वह चावल की गेंद जैसी लगने लगी। यह उसने तीनों भाइयों को दिया और वे जंगल की ओर चल दिये।

वे लोग अभी बहुत दूर नहीं गये थे कि उन्हें एक गधा दिखायी दिया। सबसे छोटे भाई ने खेल खेल के मूड में उसे साथ ले लिया। दोनों बड़े भाइयों ने कुछ देर तक तो मना किया पर फिर उसको ले जाने की इजाज़त दे दी।

आगे चल कर उनको एक चींटी मिली तो बीच वाले भाई ने उसे अपने साथ ले लिया। चींटी के पास ही एक बहुत बड़ा ताड़

का पेड़ पड़ा था। बड़े भाई ने चीते से बचने के लिये उस पेड़ को अपने साथ ले लिया।

सूरज काफी चढ़ आया था। तीनों भाइयों को भूख लग आयी थी सो वे एक तालाब के पास बैठ गये और उन्होंने खाने की पोटली खोली तो देखा कि उसमे तो चावल की जगह मिट्टी की गेंद रखी थी। पर क्योंकि वे बहुत भूखे थे सो उन्होंने तालाब का सारा पानी पी लिया और अपनी यात्रा पर आगे बढ़े।

तालाब के बाद उन्हें एक टब दिखायी दिखायी जो पड़ोस के गॉव के धोबी का था। उन्होंने इसे भी ले लिया। गधा चींटी और ताड़ का पेड़ तो उनके पास पहले से ही थे।

कौए के हाथ जो चिट्ठी उनकी बहिन ने उन्हें भेजी थी उसमें लिखे हुए रास्ते पर चल कर वे आखिर चीते के घर पहुँच गये। बहिन अपने भाइयों को देख कर बहुत खुश हुई।

उसने उनका स्वागत किया — "मेरे प्यारे भाइयो मैं तुम्हें देख कर बहुत खुश हूँ। पर अब चीते के आने का समय हो गया है तो तुम लोग ऊपर वाले कमरे में छिप जाओ और उसके जाने का इन्तजार करो।"

ऐसा कह कर उसने अपने भाइयों को ऊपर वाले कमरे में भेज दिया। चीता बाहर से लौट आया था। आदमी की खुशबू से उसने पहचान लिया कि उसके घर में कोई आदमी है। उसने अपनी पत्नी से पूछा कि क्या उसके घर में कोई आदमी था।

उसने कहा "नहीं।" पर उसके तीनों भाई अपने अपने सामान के साथ उपर वाले कमरे में बैठे थे। जब वहॉ से उन्होंने चीते को अपनी बहिन के साथ ऐसा कुछ करते देखा तो वे बहुत डर गये। और सबसे छोटा वाला भाई तो इतना डर गया कि वह तो कॉप ही गया और इस कॉपने में सब नीचे गिर पड़े।

चीते ने अपनी पत्नी से पूछा "यह सब क्या है।"

पत्नी बोली — "कुछ नहीं। ये तो तुम्हारे साले हैं। ये यहॉ तीन घंटे पहले ही आये हैं। जब तुम अपना खाना खत्म कर लोगे तब ये तुमसे मुलाकात करेंगे।"

चीता बोला — "मेरे साले ऐसे कायर कैसे हो सकते हैं।"

तब उसने उनसे बोलने के लिये कहा तो सबसे छोटे भाई ने चींटी गधे के कान में रख दी और जैसे ही उसने गधे के कान में काटा तो वह बहुत ज़ोर ज़ोर से रेंकने लगा।

चीते ने अपनी पत्नी से पूछा "अरे तुम्हारे भाई की आवाज इतनी मोटी क्यों है।"

फिर उसने उनसे उनकी टॉगें दिखाने के लिये कहा। चीते की बेवकूफी से उत्साहित हो कर सबसे बड़े भाई ने ताड़ के पेड़ का तना आगे बढ़ा दिया।

"उफ़ मेरे पिता की कसम। मैंने आज तक ऐसी टॉग किसी की नहीं देखी।" इसके बाद चीते ने उन्हें अपना पेट दिखाने के लिये कहा तो दूसरे भाई ने धोबी वाल टब आगे कर दिया।

चीता बोला — “उफ़ ऐसी कठोर आवाज इतनी लम्बी टॉग और ऐसा पेट। मैंने तो आज तक ऐसा कोई आदमी नहीं सुना।”

और वह वहॉ से भाग गया।

अब ॲधेरा हो गया था सो चीते के डर का फायदा उठाते हुए भाइयों ने अपनी बहिन को साथ ले कर वहॉ से भागने की योजना बनायी।

जो कुछ भी थोड़ा बहुत खाना उनकी बहिन के पास बचा था उन्होंने उसे खाया और उससे चलने के लिये कहा। खुशकिस्मती से उसका चीता बच्चा उस समय सोया हुआ था। उसने उसके दो टुकड़े किये और उन्हें भट्टी के ऊपर टॉग दिया। इस तरह बच्चे से छुटकारा पा कर वह अपने भाइयों के साथ भाग ली।

सामने के दरवाजे की कुंडी लगाने से पहले वह घर के पीछे वाले दरवाजे से बाहर निकली। पर जैसे ही चीते बच्चे के टुकड़ों ने भुनना शुरू किया तो उनमें से तेल टपकने लगा जिससे आग लग गयी।

जब चीता रात को लौट कर आया तब उसने सामने का दरवाजा बन्द पाया अन्दर से आग जलने की आवाज आ रही थी। उसे लगा कि यह आवाज मफ़िन पकने की थी।

“मैं देखता हूॅ कि तू कितनी चालाक है तूने दरवाजा बन्द कर रखा है और अपने भाइयों के लिये मफ़िन पका रही है। मैं देखता हूॅ कि मुझे मफ़िन कैसे नहीं मिलते।”

इतना कह कर घर के पीछे वाले दरवाजे की तरफ गया और वहॉ से अपने घर में घुसा तो वह तो वहॉ अपने बच्चे को दो टुकड़ों भट्टी के ऊपर लटका देख कर परेशान हो गया। उसकी ब्राह्मण पत्नी उसका घर छोड़ कर चली गयी थी। घर छोड़ने से पहले वह उसकी बहुत सारी सम्पत्ति ले गयी थी।

अब चीते को अपनी पत्नी की धोखेधड़ी का पता चला। उसे अपने बच्चे का बहुत दुख था जो अब नहीं था। उसने निश्चय किया कि वह उससे इन सब बातों का बदला लेगा और उसे जंगल वापस ले कर आयेगा और उसे दो की जगह कई हिस्सों में काट डालेगा। पर उसे वापस कैसे लाया जाये?

उसने अपना पहले वाला दुलहे वाला रूप रखा। उस रूप में उसने अपनी शादी के कुछ साल और जोड़े जो उसने शादी से अब तक गुजार दिये थे और अगली सुबह ही अपने ससुर के घर चल दिया।

उसकी पत्नी और उसके सालों ने उसे दूर से ही देख लिया था कि वह किस तरह धोखा देने वाली शक्ल रख कर वहॉ आ रहा था। उन्होंने उसको मारने का सोच लिया।

इस बीच चीता दुलहा घर तक आ पहुॅचा तो उसके सास और ससुर ने उसका स्वागत किया। उसके साले भी उसके खाने के लिये इधर उधर दौड़ने लगे। चीता दुलहा अपने इस सुन्दर स्वागत से बहुत खुश हुआ।

उनके घर के पीछे एक टूटा फूटा सा कुँआ था। सबसे बड़े भाई ने उसके मुँह को पतली पतली डंडियों से ढक दिया और उसके ऊपर एक बहुत ही बढ़िया चटाई बिछा दी।

वहाँ के रिवाज के अनुसार मेहमान को खाना खिलाने से पहले तेल मल कर नहलाना होता था सो उन्होंने उसे कुँए के ऊपर चटाई पर बैठ जाने के लिये कहा।

जैसे ही वह उस चटाई पर बैठा तो वे पतली डंडियाँ उसका बोझा नहीं सँभाल सकीं। वे टूट गयीं और चीता दुलहा जी कुँए में गिर गये। तुरन्त ही कुँए को पत्थरों और कूड़े कबाड़ से ढक दिया गया जिससे अब वह चीता किसी के साथ भी कोई शरारत नहीं कर सकता था।

पर ब्राह्मण की बेटी ने इस याद में कि उसने कभी एक चीते से शादी की थी एक छोटा सा खम्भा बनवा दिया जिसमें उसने तुलसी बो दी।

यह कहानी एक मशहूर तमिल कहावत के सन्दर्भ में सुनायी जाती है "चुप रहो नहीं तो मैं तुम्हें अपना असली रूप दिखा दूँगा।"

11 अच्छा पति और बुरी पत्नी[19]

दूर के एक गाँव में एक ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था। वह अपने अच्छे स्वभाव और दानशीलता के लिये बहुत मशहूर था। वह जितना अपने इन गुणों के लिये मशहूर था उतनी ही उसकी पत्नी इस गुणों से दूर थी।

लेकिन क्योंकि परमेश्वर ने उनको शादी के बन्धन में बाँध दिया था इसलिये अब उन्हें साथ साथ तो रहना ही था चाहे उनके स्वभाव एक दूसरे से बिल्कुल अलग थे।

हर रोज ब्राह्मण को अपनी पत्नी के बुरे स्वभाव का सामना करना पड़ता। और अगर वह किसी और ब्राह्मण को खाने के लिये बुलाता तो किसी न किसी बहाने उसे वहाँ से भगा देती।

एक दिन गर्मी की एक सुबह एक बेवकूफ सा ब्राह्मण हमारे हीरो ब्राह्मण के घर आया। तुरन्त ही उसे खाने के लिये कहा गया। उसने अपनी पत्नी से थोड़ा जल्दी खाना बनाने के लिये कहा और फिर नदी पर नहाने चला गया।

उसका दोस्त उस दिन कुछ अच्छा महसूस नहीं कर रहा था सो वह घर पर ही गर्म पानी से नहाना चाहता था इसलिये वह उसके साथ नदी पर नहाने नहीं गया बल्कि घर के बाहर के बरामदे में ही बैठा रहा।

---

[19] The Good Husband and the Bad Wife. Tale No 11.

अगर और कोई मेहमान होता तो वह उसे लालची बताती और उसे वापस भेज देती पर उसे लगा कि यह मेहमान उसके पति का कोई खास दोस्त था इसलिये वह उससे कुछ कहना नहीं चाहती थी पर उसने एक ऐसा प्लान बनाया जिससे वह मेहमान अपने आप ही चला जाये।

वह अपने पति के दोस्त के सामने का फर्श गोबर से लीपने चली। फर्श लीप कर उसने उसके बीच में लम्बा सा एक मूसल रख दिया जिसे उसने दीवार से टिका कर खड़ा कर दिया। वह बड़े आराम से उस मूसल के पास पहुँची और उसकी पूजा करने लगी।

मेहमान को यह बात कुछ अजीब सी लगी। उसकी समझ में ही नहीं आया कि वह कर क्या रही थी। जब उससे रहा नहीं गया तो उसने आदरपूर्वक उससे पूछा कि वह क्या कर रही थी।

उसने भी विनम्रता से कहा "इसे मूसल पूजा कहते हैं। मैं इसे रोज ही करती हूँ। इस मूसल को उस आदमी के सिर पर मारा जाता है जिसकी काली देवी को बलि चढ़ायी जाती है जिसकी मेरे पति बहुत भक्ति से पूजा करते हैं।

रोज ही जब वह नहा कर वापस आते हैं तो इस मूसल को माँगते हैं। मैं उनके आने से पहले ही इस मूसल को तैयार रखती हूँ। और फिर इस मूसल से उस आदमी का सिर तोड़ते हैं जिसे भी भी वे उस दिन खाना खिलाने के लिये बुला लेते हैं। यह उनकी देवी को भेंट होती है। आज आप उनके शिकार हैं।"

यह सुन कर मेहमान बेचारा तो परेशान हो गया। उसने सोचा "क्या? यह ब्राह्मण मेहमान का सिर तोड़ता है? मैं इससे धोखा नहीं खा सकता।" और वह वहॉ से भागने के लिये तैयार हो गया।

पत्नी उसका यह परेशानी देख कर बोली — "मुझे आपके साथ सचमुच ही बहुत सहानुभूति है। पर आप अपने आपको बचाने के लिये एक काम कर सकते हैं।

अगर आप सामने दरवाजे से बाहर निकल कर सड़क पर जायें तो शायद आपको मेरे पति मिल जायें पर अगर आप घर के पिछले दरवाजे से जायेंगे तब तो वह आपको यकीनन ही नहीं मिलेंगे। इसलिये अच्छा हो अगर आप घर के पिछले दरवाजे से बाहर निकल जायें।"

मेहमान ने पत्नी के प्लान को बहुत पसन्द किया और जल्दी से घर के पिछले दरवाजे से निकल कर बाहर चला गया। उसके जाते ही पत्नी ने वह जगह सब साफ कर दी जो उसने मूसल की पूजा के लिये तैयार की थी

उसके जाने के जल्दी ही बाद हमारा हीरो ब्राह्मण नहा धो कर वापस आ गया। आ कर उसने देखा कि उसका दोस्त तो उसके घर में है ही नहीं।

उसने अपनी पत्नी से पूछा कि वह कहॉ है तो उसकी पत्नी बोली — "वह तो बहुत ही लालची था। वह चाहता था कि मैं उसे वह वाला मूसल दे दूँ जिसे मैं अपने दहेज में ले कर आयी थी। और

जब मैंने उसे वह देने से मना कर दिया तो वह घर के पीछे के दरवाजे से निकल कर भाग गया।"

पर उसका पति तो बहुत ही दयालु था। उसने सोचा कि मेहमान का इस तरह से घर से जाना ठीक नहीं मूसल का क्या अगर वह चला भी गया तो और नया आ जायेगा। वह मूसल भी तो अब चालीस साल पुराना हो गया था।

सो उसने मूसल उठाया और उसे ले कर अपने दोस्त के पीछे भागा और चिल्लाया — "ओ ब्राह्मण रुको। अपना यह मूसल तो लेते जाओ।"

पर उस ब्राह्मण को मेजबान की कही गयी कहानी अब ज़्यादा सच लगी। उसने सोचा कि यह ब्राह्मण अब मुझे पकड़ने के लिये आ रहा है सो वह वहीं से चिल्लाया — "तुम अपने मूसल के साथ भाड़ में जाओ। अब तुम मुझे कभी अपने घर में नहीं पकड़ पाओगे।" और भाग गया।

12 अच्छी पत्नी और बुरा पति[20]

दूर के एक गॉव में एक पति पत्नी रहते थे। उसकी पत्नी कुछ बेवकूफ किस्म की स्त्री थी। वह हर उस बात पर विश्वास कर लेती थी जो कुछ उससे कहा जाता था।

जब भी किसी को उससे कोई काम कराना होता था तो लोग उसके पास आते थे उसकी चापलूसी करते थे और अपना काम करवा लेते थे। पर यह काम वे तब करते थे जब उसका पति घर पर नहीं होता था क्योंकि उसका पति बहुत ही कंजूस था। वह एक पैसा भी किसी को नहीं दे सकता था और इसी लिये वह काफी अमीर भी था।

फिर भी बहुत सारे मॉगने वाले उसकी पत्नी के पास आते उससे मॉगते और अक्सर उससे वह लेने में सफल हो जाते जो वे उससे लेने आते। जब कभी उसके पति को यह बात मालूम पड़ जाती तो वह उसे बहुत डॉटता। कभी कभी तो उसे मारता भी था।

इस तरह से जब झगड़े बढ़ने लगे तो घर में शान्ति रखने के लिये पत्नी ने अपनी दान देने की आदत को छोड़ दिया।

उसी गॉव में एक दुष्ट रहता था जिसे उस कंजूस अमीर के यहॉ क्या होता रहता था सब बातों का पता था। अमीर की पत्नी की देने

[20] The Good Wife and the Bad Husband. Tale No 12.

की पुरानी आदत को फिर से लाने के लिये कि जो कुछ भी वह चाहता वह उससे ले लेता उसने यह किया।

एक दिन जब पति अपने घोड़े पर सवार हो कर अपनी जमीन देखने गया था दोपहर के समय वह उसकी पत्नी के पास आ पहुँचा। वह उसके घर पहुँचते ही उसकी देहरी पर ऐसे गिर पड़ा जैस थक कर चूर हो गया हो।

वह तुरन्त ही उसके पास भागी गयी और उससे पूछा कि वह कौन था। वह बोला — "मैं कैलाश का रहने वाला हूँ। वहाँ एक बूढ़े पति पत्नी रहते हैं। उन्होंने मुझे अपने बेटे बहू की खबर लाने के लिये यहाँ भेजा है।"

पत्नी ने पूछा — "वे किस्मत वाले लोग कौन हैं जो महादेव के पहाड़ पर रहते हैं।"

यह पूछने पर उस दुष्ट ने उस ब्राह्मण के माता पिता का नाम लिया। उनका नाम जानने के लिये उसने बहुत ही सावधानी से काम लिया था।

पत्नी ने पूछा — "क्या तुम सचमुच वहीं से आ रहे हो। वे लोग वहाँ कैसे हैं। ठीक तो हैं न। अगर मेरे पति यहाँ होते तो वह तुमको देख कर कितना खुश होते।

तुम यहाँ बैठो और थोड़ा आराम कर ले जब तक वह लौट कर घर आते हैं। वे वहाँ कैसे रहते हैं। क्या उन्हें वहाँ खोने के लिये खाना और पहनने के लिये कपड़ा ठीक से मिल जाता है।"

ये और कई बहुत सारे सवाल उसने उस दुष्ट से पूछे। उसने भी उन सवालों के जवाब जल्दी जल्दी दे दिये क्योंकि उसे मालूम था कि अगर वह कंजूस उसके वहाँ जाने से पहले आ गया तो वह उसका क्या हाल करेगा।

उसने कहा — "माँ। दूसरी दुनियाँ में मिलने वाले दुखों का हाल मैं आपको शब्दों में नहीं बता सकता। उनके पास तो अपना शरीर ढकने के लिये कोई फटा कपड़ा भी नहीं है।

और पिछले छह दिनों से तो उन्होंने खाना भी नहीं खाया है। वे केवल पानी पर ही ज़िन्दा हैं। अगर आप उनको देख पातीं तो आपका तो दिल ही टूट जाता।"

दुष्ट के वे शब्द उस स्त्री के दिल में उतर गये। उसको विश्वास हो गया कि वह सचमुच कैलाश से ही आया है और उसके सास ससुर ने ही उसे उनके पास भेजा है।

उसने पूछा — "पर वे इतने दुखी क्यों हैं जबकि उनके बेटे के पास कितना सारा खाना खाने को है और इतना सारे कपड़े पहनने को हैं। उनकी बहू इतने सारे गहने पहनती है।"

इतना कह कर वह अन्दर गयी और अपने अपने पति के दो बक्से भर कर कपड़े ले कर वहाँ आ गयी और उन दोनों बक्सों को उस दुष्ट को दे दिया। उसने कहा कि वह उन दोनों बक्सों को ले जा कर कैलाश में उसके सास ससुर को दे दे। उसने अपने गहनों का बक्सा भी उसको अपनी सास को देने के लिये दे दिया।

वह बोला — "पर खाली गहनों और कपड़ों से तो उनका पेट नहीं भरेगा।"

यह सुन कर वह बेवकूफ स्त्री अपने पति का पैसे रखने वाला बक्सा ले कर आयी और उसे उस दुष्ट के कोट की जेब में उलट दिया।

यह सब ले कर वह दुष्ट वहाँ से जल्दी से यह कह कर चल दिया कि वह ये सब चीज़ें उसके सास ससुर को जरूर ही दे देगा।

तौर तरीके के अनुसार पत्नी उसको कुछ दूर तक छोड़ने के लिये गयी। उसने अपने सम्बन्धियों को भी अपने बारे में खबर भेजी और घर वापस आ गयी। दुष्ट ने इन सब चीज़ों को अपने कोट में बाँधा और जल्दी जल्दी नदी की तरफ चल दिया और नदी पार की।

जैसे ही पत्नी घर वापस पहुँची उसका पति घर वापस आ गया। अब पत्नी का उत्साह यह सब कर के इतना अधिक था कि जैसे ही पति घर के अन्दर घुसा वैसे ही उसने उसको उाके पीछे घटी सारी कहानी बता दी। कि किस तरह से उसके माता पिता की खबर ले कर एक आदमी कैलाश से आया था और फिर कैसे उसने उसके हाथ उनके लिये कपड़ा गहना और कुछ पैसे भिजवा दिये हैं।

यह सुन कर तो ब्राह्मण का गुस्सा सातवें असमान पर जा पहुँचा। पर कुछ देर के लिये उसने थोड़ा सा सब्र रखा फिर उससे पूच कि वह दूत किधर की तरफ गया था उसने अपनी पत्नी से कहा

कि वह उसके पीछे पीछे जाना चाहता था क्योंकि उसे अपने माता पिता को कुछ और खबर भी भेजनी थी।

पत्नी को तो इस बात का बिल्कुल भी ख्याल नहीं था कि वह क्या करना चाहता था से उसने सीधे स्वभाव उस दिशा की तरफ इशारा कर दिया जिसमें वह गया था। अपनी सीधी सादी पत्नी को इस तरह से धोखा देने पर गुस्सा हो कर पति तुरन्त ही अपने घोड़े पर सवार हो कर उधर की तरफ चल दिया।

एक घंटे की दौड़ के बाद ही उसने उसे पकड़ लिया। दुष्ट ने देखा कि वह अब बच कर नहीं भाग सकता सो वह एक पीपल के पेड़ के ऊपर चढ़ गया। हमारा हीरो भी उसी पेड़ के नीचे आ गया और चिल्ला कर उसे नीचे उतरने के लिये कहा।

दुष्ट बोला — "नहीं। मैं नहीं आ सकता। यह रास्ता कैलाश को जाता है।"

पति ने देखा कि यह तो किसी तरह भी नीचे नहीं आ रहा। पर वहाँ पर तीसरा आदमी कोई था भी नहीं जिसे वह अपनी सहायता के लिये बुला सकता सो उसने अपना घोड़ा बराबर वाले पेड़ से बाँधा और उस पेड़ पर चढ़ने लगा।

जैसे ही दुष्ट ने यह देखा तो उसने भगवान को लाख लाख धन्यवाद दिया। जैसे ही पति ऊपर चढ़ कर उसके पास तक पहुँचा उसने वहाँ से तुरन्त ही अपना सामान नीचे फेंक दिया और एक डाल से दूसरी डाल पर कूदते कूदते वह खुद भी नीचे उतर आया। इसके

बाद वह अपने दुश्मन के घोड़े पर चढ़ा अपना सामान लादा और एक घने वन की तरफ दौड़ गया जहॉ उसको ढूँढना मुश्किल था।

अब हमारे हीरो की उम्र का दुष्ट की उम्र से तो कोई मुकाबला ही नहीं था सो वह बेचारा धीरे धीरे नीचे उतर आया। अपनी बेवकूफी को कोसता हुआ कि उसने अपने सामान के लिये अपना घोड़े को खतरे में डाला। फिर धीरे धीरे वह घर चला गया।

उसकी पत्नी उसका इन्तजार ही कर रही थी। उसको देखते ही खुश हो कर बोली — "मैंने भी यही सोचा था कि तुमने अपना घोड़ा भी कैलाश भेज दिया होगा अपने पिता के लिये।"

अपनी पत्नी की बात सुन कर पति को बहुत गुस्सा आया। अपनी बेवकूफी को छिपाने के लिये उसने हॉ में सिर हिला दिया।

इस तरह दुनियॉ में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपनी मर्जी से तो किसी को कुछ भी देना नहीं चाहते पर अपनी बेवकूफी या किसी दुर्घटनावश उसे खो देते हैं।

13 खोया हुआ ऊँट और दूसरी कहानियाँ[21]

पहला भाग

1 खोया हुआ ऊँट[22]

एक शहर था अलकापुरी। वह ऐसी सारी सम्पत्ति के लिये मशहूर था जो धरती या समुद्र में पायी जाती है। उस शहर के लोग कोई दूसरी भाषा बोलते थे। उस शहर के राजा का नाम था अलकेश जो सब गुणों का सागर था।

वह इतना न्यायशील राजा था कि उसके राज में गाय और चीता दोनों एक घाट पर पानी पीते थे। बिल्ली और चूहे साथ साथ खेलते थे और काइट चिड़िया और तोते एक ही घोंसले में अपने अंडे देते थे जैसे कि वे एक ही जाति की दो चिड़िया हों। स्त्रियाँ कभी अपना गुणों का रास्ता नहीं छोड़ती थीं और अपने पति को भगवान मानती थीं।

बारिश समय पर होती थी और अलकेश की सारी प्रजा खुश खुश शान्ति से रहती थी। थोड़े में कहो तो अलकेश शरीर था और उसकी प्रजा उसकी आत्मा क्योंकि वह हमेशा सब कुछ ठीक ठीक करता था।

---

[21] The Lost Camel and Other Tales. Tale No 13.

[22] The Lost Camel.

अलकापुरी में एक अमीर सौदागर रहता था। एक दिन उसका एक ऊँट खो गया। उसने उसे चारों तरफ देखा पर वह उसे कहीं नहीं मिला।

आखिर वह एक ऐसी सड़क पर पहुँच गया जहाँ उसे बताया गया कि वह शायद उसे मथुरापुरी में मिल जाये। मथरापुरी के राजा का नाम मथुरेश था। मथुरेश के नीचे चार बहुत अच्छे मन्त्री थे – बोधादित्य बोधचन्द्र बोधव्यापक और बोधविभीषण।

इन चारों मन्त्रियों ने किसी वजह से नाराज हो कर मथुरेश का राज्य छोड़ दिया था और किसी दूसरे राज्य के लिये निकल पड़े थे। जब वे जा रहे थे तो उन्होंने ऊँट के जाने के निशान देखे। चारों मन्त्रियों ने अपनी अपनी बुद्धि के अनुसार उसके पाँवों के निशान और दूसरी बातें देख कर अपनी अपनी राय दी।

उसी समय उन्हें वह सौदागर मिल गया जो अपना ऊँट ढूँढ रहा था। वे उससे बातें करने लगे। चारों मन्त्रियों में से एक ने उससे पूछा — "आपका ऊँट कहीं लँगड़ा तो नहीं था।"

दूसरे ने उससे पूछा — "आपका ऊँट दाँयी आँख से काना तो नहीं था।"

तीसरे ने पूछा — "कहीं उसकी पूँछ बहुत ज़्यादा छोटी तो नहीं थी।"

चौथे ने पूछा — "कहीं उसे कौलिक दर्द तो नहीं था।"

सौदागर को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने उन सबके सवालों का जवाब हॉ में दिया। उसे विश्वास हो गया था कि इन लोगों ने जरूर ही उसके ऊॅट को कहीं देखा है सो उसने तुरन्त ही उनसे पूछा कि उन्होंने उसके ऊॅट को कहॉ देखा है।

उन्होंने बताया कि उन्होंने ऊॅट को तो नहीं देखा हॉ उसके निशान जरूर देखे हैं। पर उनका इतना छोटा छोटा हाल सुन कर उसे लगा कि उन्होंने ही उसके ऊॅट को चुराया है। उसने तुरन्त ही राजा अलकेश के पास जा कर इसकी शिकायत की।

सौदागर की कहानी सुन कर अलकेश खुद भी बहुत प्रभावित हुआ। उसको भी लगा कि वे जरूर जानते होंगे कि ऊॅट कहॉ है। उसने उनको बुलाया और धमकी दी कि अगर उन्होंने सच नहीं बोला तो वह उन्हें कड़ी सजा देगा।

उसका कहना यह था कि "जब तक वह ऊॅट उनके पास नहीं होता तो उन्हें यह कैसे पता होता कि ऊॅट लॅगड़ा था या काना था या उसकी पूॅछ बहुत छोटी थी या फिर उसे कौलिक दर्द था। इसका मतलब था कि जरूर ही उन्होंने उसे चुराया है।"

इसके जवाब में उन चारों ने अपनी अपनी वजहें दीं जिनसे उन्हें इस बात का पता चला था। पहले मन्त्री ने कहा कि उसने जब उसके पैरों के निशान देखे तो उसके एक पैर के निशान हल्के थे इसलिये मैंने यह अन्दाज लगाया कि वह एक पैर से लंगड़ा था।

दूसरे मन्त्री ने कहा कि सड़क के दोनों किनारों पर पत्ते लगे थे पर केवल बॉयी तरफ के पत्ते ही खाये गये थे दॉयी तरफ के पत्ते ऐसे के ऐसे ही थे छुए भी नहीं गये थे। इसलिये मुझे लगा कि वह दॉयी ऑख से काना था।

तीसरे मन्त्री ने कहा मुझे सड़क पर खून की कुछ बूॅदें दिखायी दीं जो मैंने अन्दाजा लगाया कि मक्खियों के काटे से बहा होगा। इसलिये मैंने यह अन्दाजा लगाया कि उसकी पूॅछ इतनी छोटी रही होगी कि वह बेचारा अपनी मक्खियॉ भी नहीं उड़ा पाया।

चौथे मन्त्री ने कहा मैंने देखा कि उसके आगे के पैर तो जमीन में ठीक से जमे हुए थे जबकि पीछे वाले पैरों ने जमीन को मुश्किल से ही छुआ था। यह इसलिये होता है जब किसी जानवर के पेट में दर्द होता है।

जब राजा ने उनकी सफाइयॉ सुनीं तो वह तो दंग रह गया। उसने पॉच सौ पगोडा तो उस सौदागर को दिये जिसका ऊॅट खो गया था और उन चारों नौजवानों का अपना खास मन्त्री बना लिया और उन्हें कई गॉव इनाम में दिये।

2 तीन आफतें[23]

उस समय से वे चारों नौजवान मन्त्री राज्य के सारे मामलों में अलकेश के अपने खास सलाहकार बन गये। अब रात को पाप

[23] The Three Calamities.

और अपराध होते ही हैं सो वे लोग बारी बारी से अलकापुरी में रात को पहरा देते। हर मन्त्री रात के एक पहर यानी तीन घंटे का पहरा देता। इस तरह वे अलकेश की वफादारी से सेवा करने लगे।

एक रात जब पहले मन्त्री का पहरा खत्म हो गया तो वह रोज की तरह शाही सोने के कमरे को देखने के लिये गया कि वह ठीक से सुरक्षित है या नहीं।

वहाँ से देखभाल कर वह काली के मन्दिर गया जहाँ उसे एक स्त्री की आवाज सुनायी पड़ी जो लगता था बड़े दुख में थी और सुबक रही थी। वह वहीं मन्दिर मे लगे एक बरगद के पेड़ के पीछे छिप गया और पुकारा — "तुम कौन हो और तुम इस तरह क्यों रो रही हो।"

तुरन्त ही मन्दिर से रोने की आवाज आनी बन्द हो गयी और एक आवाज सुनायी पड़ी — "तू कौन है जो मुझसे इस तरह का सवाल पूछता है।"

मन्त्री पहचान गया कि यह तो काली खुद ही है जो रो रही है सो वह पेड़ के पीछे से निकल कर उसके पैरों पर गिर पड़ा — "ओ माँ काली। मेरी माँ। शम्भवी। महामयी। आप ऐसे क्यों रो रही हैं।"

काली बोली — "इस बात को तुझे बताने से क्या फायदा। क्या तू कोई सहायता कर सकता है?"

मन्त्री बोला — “अगर मैं कर सकता तो और अगर आपकी कृपा हुई तो मैं क्या नहीं कर सकता।”

तब देवी ने कहा कि राजा पर एक मुसीबत आने वाली है और यह सोच कर कि इतना अच्छा राजा दुनियॉ से चला जायेगा वह रोती है।

इस तरह की मुसीबत की कल्पना से ही मन्त्री कॉप गया। वह फिर से देवी के पैरों पर गिर पड़ा। उसकी ऑखों से ऑसू बहने लगे। वह रो कर बोला कि वह राजा की रक्षा करे।

काली उसके मालिक के लिये उसकी भक्ति देख कर बहुत खुश हुई। वह बोली — “तुम्हारे राजा के ऊपर कल तीन मुसीबतें आने वाली हैं। उन तीनों में से कोई भी घटना उसे मार सकती है।

सबसे पहले तो सुबह को ही बहुत सारी गाड़ियॉ धान की नयी फसल ले कर आयेंगी। राजा यह देख कर बहुत खुश होगा और तुरन्त ही एक माप धान का छिलका उतरवा कर अपने नाश्ते के लिये पकाने का हुक्म देगा।

उसके धान के खेतों में सॉप भी रहते हैं। एक दिन दो सॉपों में लड़ाई हुई उन्होंने एक दूसरे के ऊपर जहर उगला जो वहॉ के अन्न में घुस गया। इसलिये राजा का सुबह खाना जहर से भरा होगा पर यह पहली ही मुट्ठी धान में होगा सो वह मर जायेगा।

अगर वह इस मुसीबत से बच जाता है तो दूसरी मुसीबत उसके लिये दोपहर के समय खड़ी है। विजयनगर का राजा कल हमारे

राजा को मिठाई की कुछ टोकरियाँ भेजेगा। उनमें से पहली टोकरी में उसने कुछ तीर छिपा रखे होंगे।

राजा अलकेश को किसी धोखाधड़ी का शक नहीं होगा इसलिये वह पहली ही टोकरी अपने सामने खोलने के लिये कहेगा और जैसे ही वह मिठाई निकालने के लिये उसमें अपना हाथ डालेगा उन तीरों से उसकी मृत्यु हो जायेगी।

अगर वह इस दूसरी मुसीबत से बच जाता है तो तीसरी मुसीबत कल रात को उसकी ज़िन्दगी का अन्त कर देगी। एक बहुत ही खतरनाक साँप उसके सोने के कमरे में उसके पलंग पर जिन जंजीरों से वह लटका हुआ है उन पर से हो कर आयेगा और उसे काट लेगा।

अगर वह इन तीनों मुसीबतों से बच जाता है तो फिर वह एक सौ तीस साल की उम्र तक ज़िन्दा रहेगा।"

काली ने यह सब बहुत दुखी हो कर कहा क्योंकि वह सोचती थी कि राजा इन तीनों में से किसी न किसी से जरूर ही मर जायेगा।

मन्त्री ने काली को जमीन पर लेट कर प्रणाम किया और काली से कहा कि अगर वह उस पर कृपा करें तो यकीनन ही वह राजा के ऊपर आने वाली तीनों मुसीबतों को टालने की पूरी पूरी कोशिश करेगा।

काली मुस्कुरायी और गायब हो गयी। मन्त्री ने उसकी मुस्कुराहट को समझा कि उस पर काली प्रसन्न है सो उसने अपनी

जरूरी पूजा की और महल की तरफ चल दिया। उसने इस बात का ध्यान रखा कि वह यह बात गलती से भी किसी को भी न बताये। यहाँ तक कि उसने तीनों साथियों को भी इस बारे में कुछ नहीं बताया।

सूरज को निकलने में अभी एक घंटा बाकी था कि धान की फसल कट कट कर महल में आने लगी। वह खेतों का सबसे अच्छा धन था और उसे राजा के लिये खास तौर पर चुना गया था। अब वे गाड़ियाँ महल के आँगन में आने लगीं।

अलकेश वहीं मौजूद था उसने पहली ही गाड़ी में से एक माप धान निकाल कर उसे छील कर अपने सुबह के नाश्ते में पकाने का हुक्म दे दिया।

मन्त्री तो यह देख कर चकित रह गया कि यह सब तो काली के कहे अनुसार ही हो रहा था। वह सोच रहा था कि वह अब इस मुसीबत कैसे दूर करे पर काली की मुस्कुराहट याद कर के उसे थोड़ी हिम्मत मिली।

वह तुरन्त ही शाही रसोईघर में गया और रसोइये से विनती की कि जब राजा के नाश्ते का समय हो तो वह उसे बता दे। उधर अलकेश धान को ठीक से रखने के बारे में बता कर अपने सुबह के कामों के लिये चला गया।

उसके बाद एक गाड़ी मिठाई की शीशियाँ लिये हुए महल के आँगन में आ पहुँची। इसे विजयनगर के राजा ने अलकेश के लिये

भेजा था। वह दूत जो उस गाड़ी के साथ आया था उसने शाही नौकरों से कहा कि उसे इस गाड़ी को राजा को ही देने का हुक्म है।

मन्त्री इसका मतलब समझ गया। उसने दूत से कहा कि वह वहीं रुके वह अभी अन्दर से राजा को बुला कर लाता है। कह कर वह महल के अन्दर चला गया।

उसने एक नौकर को राजा के जैसा बनाया और उसे बाहर ले आया। दूत ने पहली शीशी निकाल कर उसके सामने कर दी। राजा ने भी उसे तुरन्त ही खोल दी। पर यह क्या जैसे ही उसने शीशी खोली कि एक तीर उसमें से निकल कर राजा की छाती में लग गया और राजा वहीं का वहीं मर गया।

उसी पल दूत को पकड़ लिया गया और बॉध दिया गया। वहॉ खड़े औफीसर लोग राजा की मौत पर रोने लगे। इस घटना की खबर सारे महल में तुरन्त ही फैल गयी। उसी समय असली अलकेश बाहर आया। औफीसरों ने देखा कि एक अलकेश तो मरा पड़ा है और दूसरा उनके सामने ज़िन्दा खड़ा है।

उसके बाद मन्त्री ने सबको बताया कि किस तरह से उसने इसमें धोखे की सम्भावना महसूस की थी सो वह असली राजा की जगह एक नौकर को राजा बना कर ले आया था सो इस तरह से वह अपने शाही मालिक की जगह मारा गया और असली राजा बच गया। अलकेश ने मन्त्री को अपनी जान बचाने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया और अपने महल में चला गया।

इस तरह मन्त्री बोधादित्य राजा अलकेश की पहली मुसीबत टाल कर उसकी जान बचाने में सफल रहा।

अब खाने का समय आया। राजा और उसके दरबारी खाना खाने बैठे। बस बोधादित्य नहीं बैठा। वह खड़ा ही रहा। उसने अपने लिये पत्ता भी नहीं बिछाया था।

राजा ने हॅसते हुए उसे एक पत्ते की तरफ इशारा किया पर बोधादित्य नहीं बैठा। वह उस समय राजा के पास रहना चाहता था और खाना खाना नहीं चाहता था। तो राजा ने उसे उसकी मर्जी का ही करने देने का फैसला किया।

पत्तों पर खाना परसा गया। सब अपने अपने चावलों में दाल घी आदि मिलाने लगे। बोधादित्य अभी भी राजा के पास ही खड़ा हुआ था।

जैसे ही राजा ने दाल चावल का कौर बना कर उसे अपने मुॅह में रखना चाहा वह बोला — "रुक जाइये मालिक। बहुत दिनों से मेरी यह इच्छा थी कि मैं आपके हाथ से यह पहला कौर खाऊॅ। मैं आपसे विनती करता हॅू कि आप यह पहला कौर मुझे दे दें और पत्ते पर बचे हुए बाकी के चावल आप खा लें।"

मन्त्री के ये शब्द विनती के स्वर में कम थे हुक्म के स्वर में ज़्यादा थे। मन्त्री के मुॅह से ऐसी बात सुन कर राजा थोड़ा गुस्सा हो गया। एक मन्त्री की तरफ से जब ऐसी विनती भी आयी हो तो यह तो एक तरह से उसका अपमान ही था।

पर राजा अलकेश ने जो कुछ भी सोचा हो मन्त्री के सुबह की उसके जान बचाने की याद कर के उसने उसे वह पहला कौर उसे दे दिया जिसे बोधादित्य ने बहुत खुशी से ले लिया। वह काली का बहुत आभारी था कि उसके बताने की वजह से वह राजा के ऊपर आयी दूसरी मुसीबत को भी टाल सका।

पर राजा और वहाँ मौजूद लोगों के विचार कुछ और ही थे। उन्होंने सबने बोधादित्य को अपराधी और घमंडी बताया पर राजा ने इस बात के लिये केवल अपने आपको ही दोषी समझा कि उसने बोधादित्य की सेवाओं के लिये उसको जरूरत से ज़्यादा छूट दे रखी थी।

जब शाम को रात हुई तो मन्त्री का दिल बहुत ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा क्योंकि काली द्वारा कही गयी तीसरी मुसीबत का सामना तो उसे अभी करना ही था।

जब उसका पहरा खत्म हो गया तो रोज की तरह सोने जाने से पहले वह राजा का शोने का कमरा देखने गया। वहाँ उसने देखा कि राजा के कमरे में बहुत तेज़ रोशनी हो रही थी और राजा और रानी बराबर बराबर झूलने वाले पलंग पर लेटे हुए थे। पलंग छत से चार जंजीरों के सहारे लटका हुआ था।

उसी समय एक भयानक काला साँप पलंग की एक जंजीर के सहारे राजा के पलंग पर नीचे उतर रहा था। उसकी तो बू ही किसी आदमी को मारने के लिये काफी थी। वह रानी के सिर की तरफ

बढ़ रहा था। मन्त्री बिना कोई आवाज किये हुए आगे बढ़ा और उसने अपनी तेज़ तलवार के एक ही वार से उस जहरीले सॉप के दो टुकड़े कर दिये।

रात के इस समय किसी की ऑख न खुल जाये इस वजह से बोधादित्य ने बिना कोई आवाज किये सॉप के वे दोनों टुकड़े पलंग की छत पर डाल दिये और इस बात पर खुश होते हुए कि उसने राजा को तीसरी मुसीबत से भी बचा लिया था वह कमरे के बाहर आने ही वाला था कि... ।

उसने देखा कि सॉप के जहर की एक बूॅद रानी की छाती पर गिर पड़ी थी। वह बुड़बुड़ाया “हे देवी यह आप मेरे काम में क्या अड़ंगा लगा रही हैं जबकि मैं आप ही की बतायी हुई मुसीबतों को टालने की कोशिश में लगा हूॅ।

मुझसे राजा को बचाने के लिये जो भी हो सकता था मैंने किया पर अब आखिरी कोशिश में क्या मैं उसकी प्यारी पत्नी की जान ले लूॅ। अब मैं क्या करूॅ।”

यह सोच कर उसने रानी की छाती से जहर की बूॅद अपनी सबसे छोटी ॲगली से पोंछ दी। और फिर उसकी अपनी ॲगली में लगा जहर कहीं उसकी अपनी जान न ले ले इस डर से उसने उसे ऊपर से थोड़ा सा काट कर उसे भी पलंग की छत पर फेंक दिया।

उसी समय रानी की ऑख खुल गयी।

वह चिल्लायी “तुम कौन हो।”

मन्त्री ने बहुत ही नम्रता से कहा — "आदरणीय रानी माँ। मैं आपका बेटा बोधादित्य।" और यह कह कर वह तुरन्त ही वहाँ से चला गया।

यह देख कर रानी ने सोचा कि "क्या आजकल अच्छे लोग नाम की कोई चीज़ रह गयी है? मैं तो बोधादित्य को अपना बेटा मानती थी पर इसने तो जब मैं और मेरे पति गहरी नींद सो रहे थे तो मुझे अपमानित किया है। मैं राजा से इसकी शिकायत जरूर करूँगी और सुबह से पहले ही इसका सिर कटवा दूँगी।"

सो उसने धीरे से राजा को जगाया और अपने सुन्दर चेहरे पर आँसू बहाते हुए उसे सब बताया और फिर बोली — "अब तक मैं सोचती थी कि मैं केवल आप ही की पत्नी हूँ पर इस रात आपके मन्त्री बोधादित्य ने मुझे शक में डाल दिया। क्योंकि जब मैंने पूछा कि "तुम कौन हो।" तो वह यह कह कर चला गया कि "मैं बोधादित्य हूँ।"

अपने सोने के कमरे मे ऐसा कुछ हुआ सुन कर राजा अलकेश बहुत गुस्सा हुआ और ऐसे नौकर को सुबह ही मरवाने का निश्चय कर लिया। पर उसने सोचा कि उसे मरवाने से पहले वह अपने दूसरे तीनों मन्त्रियों से सलाह जरूर लेगा।

दूसरा भाग

जब दूसरे मन्त्री का पहरा खत्म हुआ तो वह भी अपने नियम के अनुसार घर जाने से पहले राजा के सोने के कमरे को देखने के लिये गया। राजा अलकेश ने किसी के पैरों की आवाज सुनी तो उसने पूछा "कौन है।"

"हुजूर आपका नौकर बोधचन्द्र।"

राजा ने उसे बुलाया — "यहाँ आओ बोधचन्द्र। मुझे तुमसे कुछ बात करनी है।"

जब वह आ गया तो गुस्से से अपने रुँधे हुए गले से उसे बताया कि कैसे उसके साथी और उसके पहले मन्त्री बोधादित्य ने उसके साथ व्यवहार किया था। फिर उससे पूछा कि क्या कोई भी सजा उसके लिये ज़्यादा हो सकती थी।

बोधचन्द्र ने राजा के सामने बहुत ही विनम्र हो कर जवाब दिया — "माई लौर्ड। ऐसे अपराधी को तो बहुत कड़ा दंड मिलना चाहिये। क्या कोई अपने कपड़ों में आग बाँध कर यह सोच सकता है कि अरे कोई बात नहीं यह तो एक बहुत छोटी सी चिनगारी है इससे क्या होगा।

तो हम ऐसे किसी आदमी को कैसे माफ कर सकते हैं जो अपने नियमों से ज़रा सा भी इधर उधर होता हो। इसलिये अगर बोधादित्य सचमुच में दोषी है तो उसको ठीक से सजा मिलनी ही चाहिये।

पर आप मुझे यह सलाह देने की इजाज़त दें कि इस बारे में कोई भी फैसला करने से इस मामले की पूरी तरीके से जॉच की जानी चाहिये। हमको पहले यह मालूम करना चाहिये कि इस तरह शाही हरम के नियम तोड़ने की क्या वजह रही थी।

क्योंकि अगर हम गुस्से में कोई फैसला करते हैं या लापरवाही दिखाते हैं तो फिर हमें कहीं उस समय पछताना न पड़े जब पछताने का कोई फायदा न हो। उदाहरण के लिये मैं मैजेस्टी को एक कहानी सुनाना चाहता हूँ।"

राजा ने उसे तुरन्त ही इजाज़त दे दी और उसने यह कहानी सुनायी —

3 ईमानदार मगर जल्दबाज शिकारी और उसका वफादार कुत्ता[24]

एक जंगल में एक बार एक शिकारी रहता था जिसका नाम उग्रवीर था। वह उस जंगल का राजा था और इस वजह से उसे वहॉ के राजा को टैक्स देना पड़ता था।

एक बार ऐसा हुआ कि राजा ने उसको बिना बताये ही उससे टैक्स के एक हजार पॉच सौ पौन्स मॉग लिये। उस टैक्स को देने के लिये शिकारी ने अपनी सारी जायदाद बेच दी पर फिर भी उसके पास एक हजार पौन्स ही इकट्ठा हुए। अब वह बेचारा परेशान था कि बाकी की बची रकम वह कैसे जमा करे।

[24] The Honest But Rash Hunter and His Faithful Dog.

आखिर उसको दिमाग में अपना कुत्ता आया। वह अपना कुत्ता बराबर वाले शहर में ले गया। वहॉ वह कुबेर नाम के एक अमीर सौदागर से मिला और उसके पास उसे पॉच सौ पौन्स में गिरवी रख दिया। साथ में उसने इस तरह के कर्जे का एक कागज भी लिख दिया।

जाने से पहले शिकारी ने ऑखों में ऑसू भर कर अपने कुत्ते से कहा — "ओ मृगसिंह। ओ मेरे वफादार दोस्त। अपने नये मालिक को तब तक मत छोड़ना जब तक मैं उसको उसका सारा पैसा वापस न कर दूॅ जो मैंने उससे उधार लिया है। तुम उनकी उसी वफादारी से सेवा करना और उनका कहा मानना जैसा तुम मेरा मानते आ रहे थे।" इतना कह कर वह चला गया।

कुछ दिनों बाद सौदागर को अपने काम के सिलसिले में कहीं बाहर जाना पड़ा। उसने शिकारी के कुत्ते को अपने पास बुलाया और उससे घर की रखवाली करने के लिये कहा और उससे कहा कि वह उसके घर की चोर डाकुओं से रक्षा करे।

कुत्ते ने अपनी ऑखें और पूॅछ दोनों हिला कर उसे बताया कि वह उसकी बात समझ गया है। सौदागर ने अपनी पत्नी से कहा कि वह उसके कुत्ते को दिन में तीन बार खाना खिलाती रहे और वह चला गया।

कुत्ता रात भर घर के बाहर बैठ कर उसके घर की रखवाली करता रहता। कुछ दिन तक तो सौदागर की पत्नी ने उसे दिन में

तीन बार खाना दिया पर उसका इस तरह का व्यवहार ज़्यादा दिन नहीं चला। उसका एक नौजवान दोस्त था जो कुबेर के तुरन्त जाने के बाद ही सौदागर के घर अक्सर आने लगा।

वफादार कुत्ते ने जान लिया कि उसके मालिक को उसकी पत्नी का यह व्यवहार बिल्कुल अच्छा नहीं लगेगा। सो एक रात जब वह नौजवान घर से बाहर जा रहा था मृगसिंह उसके ऊपर भूखे शेर की तरह से कूद पड़ा और उसे उसके गले से पकड़ कर उसे दूसरी दुनियॉ में भेज दिया।

यह आवाज सुन कर सौदागर की पत्नी अपने प्रेमी को बचाने के लिये घर से बाहर आयी पर तब तक तो वह मर चुका था। हालॉकि वह अपने प्रेमी के मर जाने से बहुत दुखी थी पर उसके दिमाग ने तेजी से काम किया।

यह सोचते हुए कि वह इस तरह अपनी शर्म छिपा लेगी वह उसकी लाश उठा कर घर के पीछे बागीचे में ले गयी जहॉ उसने एक गड़ढा खोद कर उसे वहा गाड़ दिया और उसे मिट्टी और पत्तों से ढक दिया।

पर यह सब वह इस तरह नहीं कर पायी कि किसी ने उसे देखा न हो। उसका कुत्ता यह सब देख रहा था। इसलिये इस सबके बाद में तो वह कुत्ते से बहुत नफरत करने लगी। उसने उसे खाना भी नहीं दिया। अब वह बेचारा खाना खा कर लोग जो पत्ते बाहर फेंक

देते थे उनमें जो थोड़ा बहुत चावल लगा रह जाता था वही खा कर अपना गुजारा करता था।

पर दरवाजे के बाहर वह अभी भी पहरेदारी करता था।

दो महीने बाहर रह कर सौदागर घर लौटा। कुत्ते ने जैसे ही उसका मालिक लौटा तो दौड़ कर उसके ऊपर चढ़ कर उसका स्वागत किया। उसके बाद वह उसका कपड़ा पकड़ कर खींचने लगा।

वह उस बागीचे के उस हिस्से में ले गया जहाँ सौदागर की पत्नी ने अपने प्रेमी की लाश गाड़ी थी और वहाँ जा कर वह जगह खुरचने लगा। उसी समय वह सौदाागर के चेहरे की तरफ दुख से देखता भी जा रहा था।

यह देख कर सौदागर को लगा कि कुत्ता शायद यह चाह रहा था कि वह उस जगह को खोद कर देखे। सो उसने वह जगह खोदी और एक नौजवान की लाश वहाँ दबी हुई पायी। उसको शक हो गया कि यह उसकी पत्नी का ही कोई प्रेमी था।

गुस्से में भर कर वह अपने घर में दौड़ा और अपनी पत्नी को धमकी दी कि वह अपने इस प्रेम सम्बन्ध के बारे में सब कुछ सच सच बता दे नहीं तो वह उसे मार देगा। नीच स्त्री ने देखा कि अब तो उसका पाप खुल गया है सो उसने सब कुछ स्वीकार कर लिया।

पति बोला — "तुम स्त्री जाति के ऊपर एक धब्बा हो। तुम्हारे अन्दर तो इतना ज़रा सा भी गुण नहीं है जितना इस वफादार कुत्ते में

है जिसे तुमने बदला लेने की वजह से भूखा मार लिया। पर मैं यह सब तुमसे क्यों कहूँ।

मैं बहुत खुश हूँ कि तुमसे मेरे कोई बच्चा नहीं है। अब तुम चली जाओ यहाँ से और मुझे फिर कभी अपना मुँह मत दिखाना।"

फिर उसने कुत्ते को दूध चीनी चावल खिलाये और उससे कहा — "ओ मेरे विश्वासी दोस्त। मेरे पास तेरे लिये आभार प्रगट करने के लिये शब्द नहीं हैं। तूने मेरी बहुत बड़ी सेवा की है। पाँच सौ पौन्स तो तूने जो मेरी सेवा की है उसके मुकाबले में कुछ भी नहीं हैं। वह शिकारी तेरे बिना कैसे रह रहा होगा। मैं अब तुझे उसके पास वापस जाने की इजाज़त देता हूँ।"

सौदागर ने शिकारी का लिखा हुआ कर्ज का कागज निकाला उसे ऊपर से थोड़ा सा फाड़ा ताकि यह लगे कि अब वह कर्जनामा बेकार है उसे कुत्ते के मुँह में रखा और उसे उसके पुराने मालिक के पास भेज दिया। कुत्ता भी जल्दी से जंगल की तरफ दौड़ गया।

उधर शिकारी ने अब तक पाँच सौ पौन्स जमा कर लिये थे सो वह पैसा उसके ब्याज के साथ ले कर वह सौदागर के पास जाने वाल था ताकि वह सौदागर के पैसे वापस कर के अपना कुत्ता वापस ला सके।

पर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ जब मृगसिंह उसे रास्ते में ही मिल गया। जैसे ही कुत्ते ने अपने मालिक को देखा तो वह अपने मालिक का प्यार पाने के लिये उसकी तरफ दौड़ा।

कुत्ते को इस तरह से अपनी तरफ दौड़ते आते देख कर शिकारी के दिमाग में आया कि यह कहीं अपने नये मालिक को छोड़ कर तो मेरे पास भागा नहीं चला आ रहा। अभी तो मैंने उसका पैसा भी वापस नहीं किया है।

यह सोच कर उसने उसे मारने की सोची। उसने तुरन्त ही एक पेड़ से एक बेल तोड़ी और उससे उसका गला घोट दिया। और वह वफादार जानवर जो अपने पुराने मालिक से दया के अलावा कुछ नहीं चाहता था गला घुटने से मर गया। शिकारी सौदागर के पास गया उसे पैसे दिये।

कुबेर बोला — "मेरे दोस्त। तुम्हारे कुत्ते ने जो मेरी पत्नी के प्रेमी के मारने में मेरी सेवा की है वह तुम्हारा कर्जा चुकाने से भी ज़्यादा है। इसलिये मैंने उसे तुम्हारे पास जाने की इजाज़त दे दी थी। उसके मुँह में मैंने तुम्हारा लिखा हुआ कर्जे का कागज भी फाड़ कर रख दिया था। क्या तुम्हें वह रास्ते में नहीं मिला?"

यह सुन कर तो शिकारी को होश उड़ गये। उसका चेहरा सफेद पड़ गया। सौदागर घबरा कर बोला — "क्या बात है। तुम इतने परेशान क्यों हो। तुमने उस कुत्ते का क्या किया?"

शिकारी को अब सारी बातें साफ हो गयी थीं। वह जमीन पर गिर पड़ा जैसे किसी बहुत बड़े पेड़ को जड़ से उखाड़ दिया हो। कुबेर को यह बताने के बाद कि किस तरह उसने बेदर्दी से अपने

कुत्ते का खून कर दिया उसने अपने आपको चाकू मार कर मार लिया।

सौदागर बेचारा कुत्ते और शिकारी दोनों की मौत पर बहुत दुखी हुआ। ये दोनों मौतें ही न होतीं अगर वह शिकारी के पैसे वापस लौटाने का इन्तजार करता तो। और यह सब उसी की गलती से हुआ। उसने शिकारी की छाती में लगा हुआ चाकू निकाला और खुद को मार लिया।

इस दुखभरी कहानी की खबर सारे जंगल में फैल गयी। जब शिकारी की पत्नी ने यह सुन तो वह अपने पति के बिना ज़िन्दा रहना नहीं चाहती थी सो वह कुँए में कूद कर मर गयी।

अन्त में सौदागर की पत्नी ने जब देखा कि उसके बुरे व्यवहार की वजह से कितनी मौतें हो गयीं और बच्चे उसे गली में बुरा भला कहने लगे तो उसने भी अपनी जान दे दी।"

दूसरा मन्त्री आगे बोला — "योर मैजेस्टी। इसलिये मैं आपसे नम्रता से विनती करता हूँ कि इससे पहले कि गुस्से में भर कर आप कोई कदम उठायें बोधादित्य के मामले को गम्भीरता से जॉच की जाये।"

ऐसा कह कर वह राजा से विदा ले कर अपने घर चला गया।

तीसरा भाग

जब तीसरे मन्त्री बोधव्यापक का पहरा खत्म हुआ तो वह भी रोज की तरह घर जाने से पहले राजा का सोने का कमरा देखने गया कि वहाँ सब ठीक है या नहीं।

उसके पैरों की आवाज सुन कर राजा ने उसे भी अपने पास बुलाया और उसे अपने पहले मन्त्री बोधादित्य के अपराध के बारे में बताया और उससे भी उसको सजा देने के बारे में सलाह माँगी।

बोधव्यापक ने भी नम्रता से सिर झुकाया और बोला — "ओ कुलीन राजा। इतने कड़े अपराध की सजा तो उसे यकीनन मिलनी ही चाहिये।

फिर भी यह हमारा फर्ज है कि हम सजा देने से पहले यह निश्चित कर लें कि वह इस अपराध का दोषी है भी या नहीं। क्योंकि बिना सोचे समझे जाँचे सजा देने के भयंकर परिणाम हो सकते हैं जैसा कि अगर आपकी इजाज़त हो तो मैं एक कहानी सुना कर आपको बताऊँ।"

राजा ने इजाज़त दे दी और बोधव्यापक ने फिर यह कहानी सुनायी —

4 ब्राह्मण की पत्नी और एक नेवले की कहानी[25]

गंगा जो बनारस से भी हो कर बहती है के किनारे एक शहर है मिथिला। उस शहर में एक गरीब ब्राह्मण रहता था जिसका नाम था विद्याधर। उसके कोई बच्चा नहीं था तो उसने और उसकी पत्नी ने एक नेवले को अपने पास रखा हुआ था जिसे वह पालते पोसते थे।

वह उनका सब कुछ था – सबसे छोटा बेटा सबसे बड़ी बेटी उनका बड़ा बेटा छोटी बेटी। वे उसे इतने प्यार से पालते थे।

भगवान विश्वेश्वर और उनकी पत्नी विशालाक्षी[26] ने यह देखा तो उन्हें उस दुखी जोड़े पर दया आ गयी। अपनी दैवीय ताकत से उन्होंने उन्हें एक बेटा दिया। पर इस बेटे के मिल जाने से उनके नेवले के प्यार में कोई कमी नहीं हुई।

बल्कि इसका उल्टा ही असर हुआ क्योंकि उनको लगा कि यह नेवला ही उनकी दुनियाँ में बेटे की खुशियाँ ले कर आया है। इस तरह से उनका अपना बेटा और नेवला दानों ही साथ साथ बड़े हुए जैसे कोई जुड़वाँ भाई हों।

अब एक दिन क्या हुआ कि ब्राह्मण तो दान लेने के लिये गया हुआ था और ब्राह्मणी बाहर कुछ पत्ते तोड़ने गयी थी। उनका बेटा पालने में सोया हुआ था। नेवला उसके पास बैठा हुआ उसका ध्यान रख रहा था।

[25] Story of the Brahman's Wife and Mungoose.

[26] Other names of God Shiv and Parvati

कि एक साँप जो बाहर के बागीचे में बने कुँए में रहता था घर में आ गया और पालने के ऊपर चढ़ने लगा। नेवले ने उसे पालने पर चढ़ते देख लिया तो उसने उसके ऊपर बहुत ज़ोर से हमला किया और उसके कई टुकड़े कर दिये। पर उसने ब्राह्मणी के बेटे को बचा लिया। वह जहरीला साँप पालने के नीचे पड़ा था।

यह देख कर नेवला बहुत खुश था सो वह अपने खून भरे दाँत ब्राह्मणी को दिखाने के लिये बाहर बागीचे में भागा गया पर जल्दबाजी में उसने उसे अपने बच्चे का कातिल समझ कर अपने हाथ में लिये हुए चाकू के एक ही वार से उसका सिर काट दिया। उसके बाद वह अपने बेटे को देखने के लिये घर लौटी।

अन्दर जा कर जब उसने पालना देखा तो देखा कि उसमें उसका बेटा तो ज़िन्दा और बिल्कुल ठीक था। पर वह अपने छोटे साथी को वहाँ न देख कर रो रहा था। पालने के नीचे एक जहरीला साँप कटा पड़ा था।

असली मामला तो उसकी अब समझ में आया। उसी समय ब्राह्मण भी लौट आया तो उसकी पत्नी ने उससे अपनी जल्दबाजी की घटना बतायी और फिर अपने आपको मार लिया। उधर ब्राह्मण ने भी अपनी पत्नी और नेवले के मरने पर अपने बच्चे को मारा और खुद भी मर गया।"

तीसरा मन्त्री बोधव्यापक इतनी कहानी सुना कर बोला — "इस तरह से एक आदमी के एक जल्दबाजी के काम ने चार लोगों की

जानें लीं। सो यह सच है कि बिना सोचे समझे किया गया काम कई मुसीबतें लाता है। इसलिये बोधादित्य को इस तरह मारने का विचार छोड़ दीजिये जब तक आप इस मामले की पूरी जॉच न कर लें।"

अलकेश ने बोधव्यापक को वहॉ से जाने का आदेश दिया तो वह अपने घर चला गया।

जब चौथे मन्त्री बोधविभीषण का पहरा खत्म हुआ तो वह भी रोज की तरह राजा का सोने का कमरा देखने के लिये गया तो राजा ने उसे भी बुला लिया और उससे भी अपने पहले मन्त्री की करतूत बखान की और उससे भी मन्त्री को सजा के बारे में सलाह मॉगी।

बोधव्यापक सिर झुका कर बोला — "ओ महान राजा। मुझे तो ज़रा भी विश्वास नहीं होता कि बोधादित्य की इसमें ज़रा सी भी गलती है या वह इतना बड़ा अपराध कर सकता है। मैं आपको आदरसहित यह याद दिलाना चाहता हूॅ कि इस तरीके से जल्दी में किया गया फैसला आप जैसे मशहूर राजा के लिये ठीक नहीं होगा।

जल्दबाजी में किये गये फैसले और काम बुराइयों और अन्याय को जन्म देते हैं। इसका एक बहुत अच्छा उदाहरण मैं इस कहानी के द्वारा आपके सामने रखता हूॅ —

5 एक बेवफा पत्नी और एक नमकहराम अन्धे की कहानी[27]

मिथिला शहर में एक नौजवान ब्राह्मण रहता था। उसका अपने ससुर से झगड़ा हो गया था सो वह तीर्थयात्रा के लिये बनारस की तरफ चल पड़ा।

रास्ते में वह एक जंगल में से हो कर जा रहा था कि उसको एक अन्धा आदमी मिला जिसकी पत्नी उसे एक डंडे की सहायता से ले जा रही थी। डंडे का एक सिरा उसके हाथ में था और दूसरा सिरा उसके पति ने पकड़ा हुआ था। वह लड़की नौजवान थी सुन्दर थी।

तीर्थयात्री ब्राह्मण ने उसे इशारा किया कि वह अपने अन्धे पति को छोड़ दे और उसके साथ चले। यह सलाह उस लड़की को अच्छी लगी। उसने अपने पति को थोड़ी देर के लिये एक पेड़ की छॉह में बैठने के लिये कहा।

उसने एक पका हुआ आम तोड़ कर ला कर उसे दिया। अन्धा आदमी उसके कहे अनुसार वहॉ बैठ गया। उसे फिर वहीं बैठा छोड़ कर वह लड़की नौजवान ब्राह्मण के साथ चल दी।

अब वह अन्धा आदमी वहॉ बैठा बैठा अपनी पत्नी का बहुत देर तक इन्तजार करता रहा। जब उसने देखा कि कोई उसके पास नहीं आ रहा था तो वह बहुत परेशान हो गया। उसने अपनी पत्नी को और जिसके साथ वह भागी थी उन दोनों को बहुत कोसा।

---

[27] Story of the Faithless Wife and the Ungrateful Blind Man

वह अन्धा बड़ी दुखी हालत में छह दिन तक वहॉ उसी पेड़ के नीचे बैठा रहा। छह दिनों तक उसने न तो एक कौर खाना खाया था और न एक घूँट पानी ही पिया था। वह बिल्कुल मरे जैसा हो रहा था कि उसने अपने पास कदमों की आहट सुनी तो वह बेचारा धीरे से ही सहायता के लिये पुकार सका।

उधर से एक सेट्टी पति पत्नी चले जा रहे थे उन्होंने उससे पूछा कि उसकी यह हालत कैसे हुई। अन्धे आदमी ने उन्हें बताया कि किस तरह से उसकी पत्नी उसे छोड़ कर एक नौजवान ब्राह्मण के साथ चली गयी थी जो उन्हें रास्ते में ही मिला था और उसे वह वहॉ पेड़ के नीचे अकेला बैठा छोड़ गयी।

उसकी कहानी सुन कर सेट्टी पति पत्नी के दिल में उसके लिये दया आ गयी। उन्होंने उसे अपने पास से खाने के लिये कुछ चावल दिये और पीने के लिये पानी दिया। फिर सेट्टी ने अपनी पत्नी से कहा कि वह उसे अपने साथ ले कर आये।

पत्नी को यह बात बहुत बुरी लगी कि वह अपने पति के सामने किसी और आदमी के साथ आये। पर भलाई का काम कभी बीच में नहीं छोड़ना नही चाहिये इसलिये उसने अपने पति की बात मानी और उस अन्धे के साथ साथ चलने लगी।

इस तरह से वे एक दिन चलते रहे और तीनों एक शहर में पहुँच गये। वहॉ वे रात को सेट्टी के एक दोस्त के घर ठहरे। खाना

खाते समय पति पत्नी ने अन्धे को खाना खिलाने से पहले उसे चखा।

अगली सुबह जब दिन निकल आया तो उन्होंने अन्धे से कहा कि वह उस शहर में अपने लिये खुद ही कुछ ढूँढने की कोशिश करे और वे खुद अपनी यात्रा पर आगे जाने की तैयारी करने लगे।

पर अन्धे आदमी ने वह सब भलाई भुलाते हुए जो उन्होंने उसके साथ की थी ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया — "क्या इस शहर में कोई राजा नहीं है जो मेरी रक्षा कर सके और मुझे मेरे अधिकार दिलवा सके।

यहाँ यह एक आदमी है जो मेरी पत्नी लिये जा रहा है। क्योंकि मैं अन्धा हूँ इसलिये वह मना करती है कि मैं उसका पति हूँ और उस दुष्ट के साथ जा रही है। क्या राजा मेरी कोई सहायता नहीं करेगा।"

सड़क के लोगों ने जब यह सुना तो उन्होंने यह बात तुरन्त ही राजा से जा कर कही। उसने भी अपने आदमियों को इस मामले की पूरी जानकारी हासिल करने के लिये कहा।

असल में सेट्टी की पत्नी क्योंकि अन्धे को साथ लिये चल रही थी तो लोगों ने समझा कि वह अन्धे की ही पत्नी थी और उन्होंने गलती से यह समझ लिया कि वह अन्धे की ही पत्नी थी और अब सेट्टी उसे ले कर जाना चाहता था।

सो दोनों को ही अपराधी समझ लिया गया। सेट्टी को उन्होंने फॉसी पर चढ़ाने का हुक्म सुना दिया क्योंकि वह दूसरे की पत्नी को छीन लेना चाहता था। और उसकी पत्नी को भट्टी में डालने का हुक्म सुना दिया गया क्योंकि वह अपने पति को अन्धा होने की वजह से छोड़ कर जाना चाहती थी।

जब ये सजाऐं सुनायी गयीं तो अन्धे आदमी के ऊपर तो जैसे बिजली गिर पड़ी। उसने सोचा कि उसने तो जान बूझ कर झूठ बोला था और उसने दो भले आदमयों की जान ले ली। इस बात से उसका दिल ग्लानि से भर गया।

उसने तो केवल यह सोच कर यह झूठ बोला था कि उसके इस झूठ से केवल सेट्टी को ही सजा होगी और वह इस स्त्री को अपनी पहली पत्नी की जगह रख लेगा। पर अब उसने देखा कि उसे भी सजा हो गयी तो वह अपने आपको कोसने लगा।

"ओ नीच। मैं नहीं जानता कि मैंने अपनी पुरानी ज़िन्दगी में क्या पाप किये हैं जिसकी वजह से मैं अन्धा बना। मेरी असली पत्नी भी मुझे छोड़ कर चली गयी। मैं अभी भी पाप के ऊपर पाप इकट्ठा करता जा रहा हूॅ।

मैंने जान बूझ कर झूठ बोल कर एक भले पति पत्नी की हत्या का पाप अपने सिर ले लिया है। उन्होंने तो मेरी उस जंगल से मेरी जान बचायी खाना खिलाया पानी पिलाया और मैंने उन्हें क्या

दिया। यह भयानक मौत। हे महेश्वर। अब तेरे पास मेरे लिये क्या सजा है।”

उसकी ये सब बातें पास में खड़े कुछ लोगों ने सुन लीं तो उन्होंने जा कर राजा को इस बात की सूचना दी। यह सुनते ही राजा ने अपने आपको कोसा कि उसने इतनी जल्दी में पति पत्नी को मारने का फैसला लिया।

उसने तुरन्त ही सेट्टी और उसकी पत्नी को छोड़ दिया और उस अन्धे आदमी को भट्टी में जला कर मारने का हुक्म दे दिया।”

चौथा मन्त्री आगे बोला — “आप देख सकते हैं माई लौर्ड कि राजा ने जल्दी में फैसला कर के अपने आपको किस मुसीबत में डाल लिया था। वह तो इत्तफाक की बात थी कि उसको सच का पता चल गया वरना वह अपने आपको शायद कभी माफ नहीं करता।

इसी लिये मैं आपसे कहता हूँ ओ मशहूर राजा। कि आप बोधादित्य के मामले की ठीक से जॉच करें और तभी उसे सजा दें जब वह अपराधी पाया जाये।”

यह कह कर चौथा मन्त्री भी राजा की इजाज़त ले कर अपने घर चला गया।

चौथा भाग

रात खत्म हो गयी थी। बुराइयों का घर ॲधेरा भी छॅट गया था। दिन निकल आया था। राजा अलकेश अपने सोने वाले कमरे में से

उठा नहाया धोया पूजा की और नाश्ता कर के अपनी काउन्सिल को बुलाया। उस काउन्सिल में उसके पिता के बूढ़े मन्त्री थे और सलाहकार थे।

अलकेश उस सभा के बीच में बैठ गया। उसके चेहरे पर गुस्सा साफ झलक रहा था। उसकी ऑखें कुछ अस्वाभाविक थीं। वे लाल थीं। और उसकी सॉस बहुत गर्म थी।

सभा में बैठ कर उसने सबसे कहा — "ओ मेरे पिता के और मेरे मन्त्रियों आप सब सुनें। कल रात पहले पहरे के समय जब मैं और मेरी पत्नी अपने कमरे में सो रहे थे तो मेरा पहला मन्त्री बोधादित्य मेरे कमरे में आया और उसने अपनी ॲगली से मेरी पत्नी की छाती को छुआ। आप सब इस अपराध की गम्भीरता पर विचार करें और मुझे उसकी सजा बतायें।"

अलकेश ने जब ऐसा अपनी काउन्सिल से कहा तो सारे लोग बिना यह जाने हुए कि उन्हें क्या कहना चाहिये मुॅह लटका कर बैठ गये।

उन्हीं मन्त्रियों में एक बड़ी उम्र का मन्त्री भी था जिसका नाम था मनुनीति। उसने बोधादित्य को अपने पास बुलाया और उससे उसकी सारी कहानी सुनी और समझी।

तब उसने राजा के सामने सिर झुका कर कहा — "ओ कुलीन राजा। आदमी हमेशा ही अक्लमन्द नहीं होते। आपके सवाल के जवाब में मैं आपके सामने एक कहानी कहने की इजाज़त चाहूॅगा

जिसमें एक राजा के राज में एक भले काम का बदला अपमान से दिया गया —

6 एक निराले आम की कहानी[28]

कावेरी नदी के किनारे एक शहर है तिरुमदैविरुदूर। वहाँ एक राजा राज करता था जिसका नाम था चक्रादित्य। उसी शहर में एक गरीब ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था। उसके कोई बच्चा नहीं था सो वे एक तोते के बच्चे को पालते थे। और उसे वे इतने प्यार से रखते थे जैसे वह उनका अपना ही बच्चा हो।

एक दिन तोता घर की छत पर बैठा हुआ था और धूप की गर्मी का आनन्द ले रहा था कि तोतों का एक झुंड उधर से गुजरा। वे आपस में किसी खास आम के फल की बात कर रहे थे तो ब्राह्मण के तोते ने पूछा कि उस आम के फल में क्या खास बात थी।

उन तोतों ने कहा कि सात समुद्र पार एक बहुत बड़ा आम का पेड़ था जिसके आम का फल खाने से चाहे कोई कितना भी बूढ़ा क्यों न हो जवान हो जाता था।

यह सुन कर ब्राह्मण के तोते ने उनसे विनती की कि वे उसे भी साथ ले चलें। वे मान गये और सब उड़ते रहे। अन्त में जब वे सब आम के पेड़ के पास पहुँचे तो सबने उस पेड़ के आम खाये।

---

[28] Story of the Wonderful Mango Fruit.

पर ब्राह्मण के तोते ने सोचा "यह ठीक नहीं है कि मैं अकेला ही इस फल को खाऊँ। मैं तो जवान हूँ पर मेरे माता पिता यानी ब्राह्मण और उसकी पत्नी तो बूढ़े हैं। मुझे यह फल उनको दे देना चाहिये। वे उसे खा कर जवान हो जायेंगे और खिल उठेंगे।"

उसी शाम वह तोता फल ले कर ब्राह्मण के पास आया और उसे उस फल के असाधारण गुण बताये और वह फल उसे दे दिया। ब्राह्मण ने सोचा "मैं तो बहुत गरीब हूँ। मुझे इससे क्या फर्क पड़ता है कि मैं जवान हो कर बहुत दिनों तक जिन्दा रहूँ या इसी पल मर जाऊँ।

हमारा राजा बहुत अच्छा है दयावान है दानशील है। अगर वह यह फल खा कर जवान हो कर बहुत दिन तक राज करता है तो इससे अच्छी और क्या बात होगी इसलिये मैं यह फल अपने राजा को दे आता हूँ।"

यह सोच कर कि वह उस फल को नहीं खायेगा वह उस फल को ले कर राजा के पास पहुँचा और उसे फल भेंट किया। उसने राजा को यह भी बताया कि वह फल उसे कैसे मिला और उसके क्या गुण हैं। राजा ने ब्राह्मण को उसकी इस भेंट के बदले में बहुत सारा इनाम दिया और वापस भेज दिया।

अब राजा सोचने लगा "यहाँ एक फल है जिसे खा कर आदमी हमेशा के लिये जवान हो जायेगा। मुझे यह फल अकेले ही खा लेना

चाहिये पर उससे मुझे क्या खुशी मिलेगी अगर मेरे साथ वह खुशी बाँटने के लिये मेरे अपने लोग और मेरी जनता न हो तो।

इसलिये मैं इसको अपने बागीचे में बो देता हूँ। कुछ समय बाद यह बढ़ कर पेड़ हो जायेगा जिसमे बहुत सारे फल लगेंगे और उन सबमें भी वही गुण होगा। फिर उसमें से हर आदमी वह फल खायेगा और मेर साथ साथ हमेशा के लिये जवान हो जायेगा।"

यह सोच कर उसने अपने माली को बुलाया और वह फल उसे बोने के लिये दे दिया जिसे उसने राजा के सामने ही बो दिया। समय आने पर वह एक बहुत सुन्दर पेड़ बन गया। वसन्त के मौसम में उस पर कलियाँ खिलने लगीं और जल्दी ही फल भी लग गये।

राजा ने आम का फल तोड़ने के लिये एक शुभ घड़ी सुझवायी और उस घड़ी में वह फल तोड़ कर घर के पंडित को दे दिया। वह पंडित नब्बे साल का था और राजा आशा करता था कि वह जल्दी ही जवान हो जायेगा।

पर जैसे ही पंडित ने वह आम खाया तो वह तो मर कर गिर गया। राजा को तो इस बात की बिल्कुल आशा नहीं थी। यह देख कर वह बहुत निराश हुआ और साथ में दुखी भी हुआ। जब पंडित की पत्नी ने अपने पति की मृत्यु के बारे में सुन तो वह वहाँ आयी और अपने पति के साथ सती होने की इजाज़त माँगी।

इससे राजा का दुख और बढ़ गया पर उसने उसे सती होने की इजाज़त दे दी। उसके अन्तिम संस्कार की सारी रस्में सब उसी की निगरानी में पूरी हुईं।

इसके बाद चक्रादित्य ने उस गरीब ब्राह्मण को बुलवा भेजा जो उसे आम दे गया था। उसने उससे पूछा कि उसने राजा को जहरीला फल देने की हिम्मत कैसे की।

ब्राह्मण बोला — " हुजूर। मैंने एक तोता अपने घर में पाला हुआ था। क्योंकि मेरे कोई बच्चा नहीं था सो मैं उसी को अपना बेटा समझता था। एक दिन वह तोता मेरे लिये एक आम ले कर आया और मुझे उसके आश्चर्यजनक गुण बताये। उस तोते पर विश्वास करते हुए मैंने वह फल आपको दे दिया। मुझे तो उस पर कोई अविश्वास ही नहीं हुआ। "

राजा ने गरीब ब्राह्मण की बात सुनी पर सोचा कि पंडित जी की मृत्यु का बदला तो लेना ही चाहिये। सो इस बारे में उसने अपने मन्त्रियों से सलाह माँगी। उन्होंने उसके लिये बहुत ही हल्की सी सजा देने की सलाह दी।

उन्होंने राजा को सलाह दी कि ब्राह्मण की बाँयी आँख फोड़ दी जायी। वैसा ही किया गया। जब वह घर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने उसे देखा तो उसने पूछा कि उसके साथ ऐसा क्यों किया गया।

ब्राह्मण बोला — "प्रिये यह जो हमने तोता इतने प्यार से पाला हुआ है यह सब उसी की वजह से है। "

दोनों ने यह तय किया कि वे उस नीच तोते की गर्दन मरोड़ देंगे। तोते ने उनकी यह बात सुन ली तो बोला — "मेरे प्यारे माता पिता। पिछली ज़िन्दगी के किसी भी अच्छे काम का इनाम जरूर मिलना चाहिये और किसी भी बुरे काम की सजा भी जरूर मिलनी चाहिये।

मैं आपके लिये वह फल अच्छे इरादे से ले कर आया था पर मेरे पिछले जन्म के पापों ने उसका कोई दूसरा ही असर किया। इसलिये मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मुझे मार दीजिये और फिर थोड़े से दूध के साथ एक गडढे में गाड़ दीजिये।

और जब मेरे दफ़न की रस्म पूरी हो जाये तो मैं आपसे विनती करता हूँ कि उसके बाद आप अपने पापों से मुक्ति पाने के लिये बनारस की तीर्थयात्रा करें।"

सो ब्राह्मण पति पत्नी ने अपने प्रिय तोते को मारा और उसको उसके कहे अनुसार कुछ दूध के साथ गाड़ दिया। फिर वे बनारस की यात्रा के लिये चल दिये।

इस बीच राजा ने अपने माली से कहा कि वह उस जहर वाले फल के पेड़ की देखभाल ठीक से करे ताकि कोई उसका फल कोई गलती से भी न खा ले। कुछ ही समय में सारे राज्य में यह बात फैल गयी कि राजा के बागीचे में एक पेड़ है जिसके फल जहरीले हैं।

उसी शहर में एक धोबिन रहती थी जिसकी अक्सर ही अपनी बहू से लड़ाई होती रहती थी। एक दिन वह अपनी ज़िन्दगी से तंग हो कर यह धमकी देती हुई घर से निकल गयी कि वह उस जहरीले पेड़ के फल खा कर अपनी जान दे देगी।

वह तोता जिसे ब्राह्मण ने मार दिया अब वह फिर से एक हरे तोते के रूप में पैदा हो गया था और उस मौके का इन्तजार कर रहा था जब वह उस फल की उपयोगिता को बता पायेगा। उसने देखा कि एक बुढ़िया उस पेड़ की तरफ बढ़ी चली आ रही है। उस पेड़ का फल खा कर वह अपनी ज़िन्दगी खत्म कर लेना चाहती थी।

उसको देख कर तोते ने एक फल अपनी चोंच से तोड़ा और उसके सामने फेंक दिया। बुढ़िया उस फल को देख कर बहुत खुश हुई कि उसकी किस्मत भी उसकी मौत में उसका साथ दे रही थी। उसने वह फल उठाया और बड़े लालचीपने से उसे खा लिया।

पर यह क्या मरने की बजाय वह तो जवान हो गयी और फूल की तरह खिल गयी। जिन लोगों ने उसे एक बुढ़िया के रूप में घर छोड़ते हुए देखा था वे उसे एक जवान लड़की के रूप में आते हुए देख कर बड़े आश्चर्यचकित हुए। उनको पता चल गया कि उसमें यह बदलाव उस पेड़ के फल खाने से आया था।

यह अजीब सी खबर राजा के पास पहुँची तो उसने उस पेड़ को फिर से जॉचने का निश्चय किया। उसने माली को उसका एक और

फल लाने के लिये कहा और उसे एक नब्बे साल के बूढ़े सुनार को खाने के लिये दे दिया।

यह सुनार शाही घराने की स्त्रियों के लिये गहने बनाया करता था। एक बार इसने गहने बनाते समय कुछ सोना चुरा लिया था इसलिये राजा ने उसे जेल में डलवा दिया था। जैसे ही उसने वह फल खाया तो वह भी एक सोलह साल का लड़का बन गया।

राजा को अब विश्वास हो गया था कि इस पेड़ के फल जो अब तक जहरीले थे अब जवान बनाने में बदल गये हैं। पर उसको खा कर उनका बूढ़ा पंडित कैसे मर गया।

वह केवल एक दुर्घटना थी। एक दिन एक बहुत बड़ा साँप उस पेड़ की एक शाख पर सो रहा था। उसका सिर एक फल के ऊपर लटका हुआ था। जहर उसके मुँह से निकल कर उस फल पर गिर पड़ा।

अब माली को तो इस बात का पता नहीं था। सो जब राजा ने उससे उस पेड़ का एक फल मँगवाया तो इत्तफाक से वह वही फल तोड़ कर ले आया जिस पर साँप का जहर गिर गया था। उसी की वजह से पंडित जी की जान चली गयी।

इसके बाद राजा ने अपनी मुनादी बदलवा दी कि जो कोई चाहे वह उस पेड़ के फल खा सकता था और जवान हो सकता था। इसके बाद वहाँ बहुत सारे लोग उस पेड़ के फल खाने के लिये आये और जवान हो कर गये। पर राजा चक्रादित्य का दिल ब्राह्मण के

साथ बुरा बर्ताव करने की वजह से कसकता रहा जो अब बनारस से वापस घर लौट आया था।

तुरन्त ही राजा ने उसे बुलवा भेजा। राजा ने अपनी गलती मानी और फिर उसे एक फल दिया जिसे खा कर वह नौजवान हो गया। उसकी ऑख भी वापस आ गयी। पर उस तोते की हानि जो सात समुद्र पार कर के उसके लिये जवान होने का फल ले कर आया था नहीं भरी जा सकी।"

बूढ़ा मन्त्री मनुनीति आगे बोला — "हम लोगों को आवेश में आ कर कोई भी फैसला करना ठीक नहीं है खास कर के बोधादित्य के मामले में। सबसे पहले यानी राजा के फैसले से पहले हम लोगों को उसके बारे में पूरी जानकारी कर लेनी चाहिये।"

पॉचवॉ भाग

जब मनुनीति की आम की कहानी खत्म हो गयी तो राजा अलकेश ने अपने चारों मन्त्रियों को अपने सामने बुलवाया और गुस्से से देखते हुए बोधादित्य से बोला — "इस तरह से तुम हरम का नियम तोड़ कर मेरी बिना इजाज़त के तुम मेरे सोने के कमरे में क्यों घुसे।"

बोधादित्य ने राजा से प्रार्थना की कि वह एक कहानी सुनाना चाहता है कि कैसे एक ब्राह्मण ने एक भूखे यात्री को खाना खिला कर उसको मारने की बदनामी अपने सिर ली। राजा अलकेश के हॉ करने पर उसने अपनी कहानी शुरू की —

7 जहरीले खाने की कहानी

एक शहर था विजयनगर। उसके उत्तर में एक नदी बहती थी जिसके दोनों तरफ आम के पेड़ों के कुंज थे। एक दिन एक नौजवान ब्राह्मण यात्री वहाँ आया और नदी के किनारे आ कर बैठ गया। उसको वह जगह सायेदार और ठंडी लगी तो वहाँ उसने पूजा की और अपने चावल का खाना खाया जिसे वह अपने साथ बाँध कर लाया था।

उसके आने से तीन दिन पहले वहाँ उसी जगह एक बूढ़ा ब्राह्मण आया था। वह सत्तर साल से भी ज़्यादा उम्र का था। असल में वह वहाँ अपने परिवार से लड़ कर और फिर मरने के लिये आ गया था। जब तक वहाँ पहुँचा उसने कोई खाना नहीं खाया था। सो वह तीन दिन से बहुत बुरी हालत में पड़ा हुआ था।

जब हमारा नौजवान यात्री वहाँ पहुँचा तो वह दयनीय हालत में पड़ा हुआ था सो उसने अपना कुछ चावल उसके पास रखा। बूढ़ा उठा और पास की नदी में अपने हाथ पैर धोने गया और खाना खाने से पहले एक दो मन्त्र पढ़े।

जब यह सब हो रहा था तो एक काइट चिड़िया अपनी चोंच में एक साँप लिये जा रही थी। वह भी उसी पेड़ के ऊपर बैठ गयी जिसके नीचे ये दोनों बैठे हुए थे। वह ऊपर बैठी हुई अपना साँप खा रही थी और नीचे वे दोनों बैठे अपने चावल खा रहे थे।

उसी समय साँप के जहर की एक दो बूँद बूढ़े के खाने पर जा गिरीं। बूढ़ा इतना भूखा था और जल्दी जल्दी खा रहा था कि उसको पता ही नहीं चला कि उसके खाने में जहर मिल गया है। कुछ ही पल में वह मर गया।

नौजवान यात्री ने जब उसको धरती पर इस तरह लेटते हुए देखा तो वह उसकी सहायता के लिये दौड़ा पर तब तक तो उसके प्राण पखेरू उड़ चुके थे। उसने सोचा कि क्योंकि यह बूढ़ा तीन दिन से भूखा था और इसने खाना जल्दी जल्दी खाया शायद यह इसी लिये मर गया।

अब वह उसकी लाश को काइट और गीदड़ों के खाने के लिये भी वहाँ छोड़ना नहीं चाहता था सो आगे जाने से पहले उसने उसका दाह संस्कार करने का निश्चय किया।

इस उद्देश्य से वह पास के गाँव में सहायता माँगने के लिये गया। वहाँ जा कर उसने गाँव वालों को बताया कि नदी के किनारे ऐसा ऐसा हो गया है आप मेरी सहायता करें।

गाँव वालों ने समझा कि इसी नौजवान ने उस बूढ़े को लूटा है और फिर मार दिया है सो उन्होंने उसे पकड़ लिया। उसकी अच्छी तरह से पिटायी की और उसे गाँव के काली के मन्दिर में ले जा कर बन्द कर दिया।

अफसोस। एक भूखे को खाना खिलाने का क्या बदला मिला। दुखी नौजवान रो पड़ा और अपना दुख काली को सुनाने लगा और

उनकी प्रार्थना करने लगा। क्योंकि वह तो एक बहुत बड़ा पंडित था जो चारों वेद छहों शास्त्र और **64** कलाओं का ज्ञाता था।

उसकी प्रार्थना सुन कर काली का गुस्सा गॉव वालों पर निकल पड़ा जिन्होंने उस भोले भाले आदमी को बिना किसी अपराध के इतनी बड़ी सजा दी थी। अचानक सारे गॉव में आग लग गयी। सारे लोगों के घर और दूसरी चीज़ें जल गयीं और वे बिना घर के हो गये।

इस मुसीबत के समय में वे काली के मन्दिर गये और उनसे बिनम्रतापूर्वक इस मुसीबत की वजह पूछने की कोशिश की। काली उन्हीं लोगों में से एक आदमी में घुस गयी और बोली — "ओ निर्दयी गॉव वालो। तुमने एक बहुत ही दयालु पवित्र और दानी ब्राह्मण को मेरे सामने सामने बन्दी बना कर रखा हुआ है।

वह बूढ़ा तो जहर से मरा था जो एक सॉप का था जो उसी पेड़ पर ऊपर था। एक काइट चिड़िया उसे खा रही थी तभी उसमें से उसका जहर उसके चावलों पर पड़ गया।

और तुम लोगों ने बिना कोई जॉच पड़ताल किये इस आदमी के साथ इतना बुरा व्यवहार किया। इस वजह से हम तुम्हारे गॉव में आये और इसी वजह से तुम लोगों के ऊपर यह मुसीबत आयी। सावधान आगे से ऐसा पाप मत करना।"

इतना कह कर काली उस आदमी में से चली गयी जिसके अन्दर जा कर वह बोली थी। तब गॉव वालों को लगा कि उनसे तो बहुत

ही बड़ी गलती हो गयी। उन्होंने ब्राह्मण को छोड़ दिया और उससे माफी माँगी। उसने भी तुरन्त ही उन सबको माफ कर दिया।

इस तरह से उस बेचारे भोलेभाले आदमी ने अपने एक अच्छे काम के लिये सजा पायी।"

बोधादित्य आगे बोला — "मेरे सबसे कुलीन राजा। आपकी जान बचाने के लिये मैंने हरम का यह नियम तोड़ा।"

बोधादित्य ने यह कह कर जेल से एक बन्दी चोर को बुला भेजा जो अपनी चोरी के लिये सजा भोग रहा था और उसको पिछले दिन के चावल जो उसने राजा से लिये थे उसे खाने के लिये दिये। वह चोर उनको खाते ही मर गया।

फिर उसने एक नौकर को राजा के सोने के कमरे में से उसके पलंग की छत पर पड़े हुए साँप के टुकड़े और अपनी उँगली का टुकड़ा लाने के लिये भेजा जिन्हें उसने चकित राजा और दूसरे लोगों के सामने रख दिया।

वह फिर राजा से बोला — "योर मैजेस्टी। जैसा कि आपको और प्रजा को मालूम है कि हम चारों मन्त्री पूरी रात यानी के रात के चारों प्रहर पहरा देते हैं। उसमें मेरा बारी सबसे पहले आती है।

सो परसों जब मैं अपने काम पर लगा हुआ था मन्दिर की ओर से आती हुई मैंने एक रोने की आवाज सुनी। मैं उस ओर बढ़ा ताकि मैं देख सकूँ कि कौन रो रहा है और क्यों रो रहा है। जब मैं

मन्दिर में पहुँचा तो मैंने देखा कि काली देवी खुद ही बहुत ज़ोर ज़ोर से सुबक सुबक कर रो रही हैं।

पूछने पर उन्होंने बताया कि अगले दिन राजा के ऊपर तीन मुसीबतें आने वाली हैं। पहली मुसीबत तो यह थी कि विजयनगर के राजा को हमारे राजा को एक जानलेवा तीर भेजना था।

दूसरी मुसीबत थी जहर से भरे चावल की और तीसरी मुसीबत एक साँप थी। मैंने इन तीनों मुसीबतों से राजा को बचाने कि लिये मैंने राजा के हरम में जाने की हिम्मत की।" उसके बाद उसने फिर राजा को सारा हाल बता दिया।

यह सुन कर तो राजा अलकेश और प्रजा सभी बहुत खुश हुए और बोधादित्य की बहुत तारीफ की। अब यह बात साफ हो गयी थी कि उसने कोई गलत काम नहीं किया था बल्कि उसने तो तीन बार अलग अलग मौके पर राजा की जान ही बचायी थी। और केवल राजा की ही नहीं बल्कि साँप के जहर से रानी की जान भी बचायी थी।

तब राजा अलकेश ने इस कहावत के पीछे यह कहानी सुनायी —

8 बचाने वाले को खाना[29]

उत्तर देश में एक ब्राह्मण रहता था जिसका नाम था कुशलनाथ। वह वहाँ अपनी पत्नी और छह बेटों के साथ रहता था। सब लोग कुछ समय तक तो समृद्धि की हालत में रहे पर कुछ समय बाद ब्राह्मण की जन्म कुंडली में शनिदेव का प्रवेश हुआ तो उसकी हालत बहुत खराब हो गयी।

वह ब्राह्मण जो पहले कभी बहुत समृद्ध हुआ करता था अब उसकी हालत यह हो गयी थी कि वह दाने दाने को तरसने लगा था। वह जंगल में से लकड़ी काट लेता या फिर थोड़े बहुत चावल बीन लेता। यह सब उसके परिवार को ठीक से खाना खिलाने के लायक भी नहीं था।

एक दिन जब वह बाँस की पत्तियाँ इकट्ठा कर रहा था तो उसने देखा कि पास की एक झाड़ी में आग लगी है और उसके बीच में एक साँप जल रहा है। ब्राह्मण तुरन्त ही उसको बचाने के लिये दौड़ा और अपनी लम्बी हरी डंडी आग की तरफ बढ़ा दी।

वह साँप उस डंडी पर रेंग गया और ब्राह्मण ने वह डंडी अपनी तरफ खींच ली। साँप बाहर निकल आया। उसकी जान बच गयी।

पर जैसे ही वह बाहर निकला वह अपना फन उठा कर उसको काटने के लिये खड़ा हो गया। यह देख कर ब्राह्मण ने तो बहुत

[29] In English language it goes like this “Quarreling With One’s Bread and Butter”

ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया। उसे बहुत अफसोस हुआ कि उसने एक ऐसे नमकहराम प्राणी की जान बचायी।

सॉप ने पूछा — "ए ब्राह्मण। तुम क्यों रोते हो।"

बूढ़ा बोला — "तुम अब मुझे मारना चाह रहे हो। क्या मेरे तुम्हारे जान बचाने का यही बदला है।"

सॉप बोला — "ठीक। तुमने मेरी जान बचायी यह तो ठीक है पर मैं अब अपनी भूख कैसे मिटाऊँ।"

ब्राह्मण बोला — "तुम अपनी भूख की बात करते हो पर यह सोचो कि जब तुम मुझे खा लोगे तो मेरी पत्नी और मेरे छह बेटों की भूख कौन शान्त करेगा।"

सॉप ने शान्ति से ब्राह्मण की चिन्ता सुनी और उस पर विचार कर के अपने फन में से एक मणि बाहर फेंकी और उससे उसे अपने घर ले जा कर अपनी पत्नी को देने के लिये कहा और कहा कि वह इस मणि से अपने घर का खर्चा चलाये और फिर उसके खाने के लिये जंगल वापस आये।

बूढ़ा राजी हो गया। वह मणि ले कर घर चला गया। अपनी पत्नी को मणि दे कर सॉप से अपना समझौता बताया और जंगल वापस चला गया। इधर सॉप अपने इस बुरे व्यवहार के ऊपर विचार करता रहा।

उसने सोचा "उसके साथ क्या मेरा यह व्यवहार ठीक था। मैं तो उसी को खाना चाहता हूँ जिसने मुझे आग से जलने से बचाया।

नहीं नहीं यह ठीक नहीं है। अगर आज मुझे खाना नहीं भी मिलता तो भी मैं चाहे भूख से मर जाऊँ पर मुझे अपनी जान बचाने वाले को नहीं खाना चाहिये।"

वह यह सब विचार कर ही रहा था कि ब्राह्मण अपने समझौते के अनुसार सॉप के खाये जाने के लिये वहॉ आ पहुॅचा। सॉप ने उसे एक और कीमती रत्न दिया और उसके लिये शुभ कामना की कि वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ बहुत समय तक और खुश खुश रहे और अपने रास्ते चला गया। ब्राह्मण भी खुशी खुशी अपने घर वापस लौट आया।"

राजा आगे बोला — "जैसे कि सॉप अपना भला करने वाले के लिये बुरा काम करने वाला था वैसा ही मैं भी करने वाला था। वैसे ही गुस्से में भर कर मैं अपने वफादार मन्त्री बोधादित्य को फॉसी की सजा देने वाला था जिसने मेरी जान बचायी। आज मैं इस पाप से बच गया वरना इस पाप का मेरे पास कोई प्रायश्चित नहीं होता।"

उसी समय अलकेश ने अपनी ज़िन्दगी भर रोज एक हजार ब्राह्मणों को खाना खिलाने का प्रण लिया। उसने अपनी इस गलती के प्रयश्चित के लिये बहुत सारा दान भी दिया।

उसके बाद से बोधादित्य और तीनों दूसरे मन्त्री राजा के और ज़्यादा प्यारे हो गये। अपने इन चारों मन्त्रियों की सहायता से अलकेश ने ज़िन्दगी भर हॅसी खुशी राज किया।

14 बन्दर और ढोल[30]

दूर एक जंगल में एक बन्दर रहता था। एक दिन जब वह सेब खा रहा था उस पेड़ का एक कॉटा उसकी पूँछ की नोक में घुस गया। उसने उसे निकालने की बहुत कोशिश की पर वह किसी तरह उसे निकाल न सका।

सो वह बराबर के गॉव चल दिया। वहॉ वह एक नाई की दूकान पर पहुॅचा और उससे विनती की कि वह उसका कॉटा निकाल दे। बन्दर बोला — "दोस्त नाई। मेरी पूँछ की नोक में एक कॉटा घुस गया है। मेहरबानी कर के इसे निकाल दो मैं तुम्हें इनाम दूॅगा।"

नाई ने अपना चाकू उठाया और उसकी पूॅछ देखनी शुरू की पर जब वह उसकी पूॅछ में से कॉटा काट रहा था तो गलती से उससे उसकी पूॅछ की नोक भी कट गयी। यह देख कर बन्दर बहुत गुस्सा हुआ और बोला — "दोस्त नाई। अब या तो मुझे मेरी पूॅछ की नोक वापस करो या फिर अपना चाकू मुझे दे दो।"

नाई तो अब बड़ी मुश्किल में पड़ गया था। अब क्योंकि वह उसकी पूॅछ की नोक तो वापस कर नहीं सकता था सो उसे उसे अपना चाकू देना पड़ा।

---

[30] The Monkey With the Tom Tom. Tale No 14.
Compare the story of "Choohe Ki Shadi" in "Punjab ki Lok Kathayen" by Flora Annie Steel translated in Hindi by Sushma Gupta.

चालकी से चाकू ले कर बन्दर जंगल भागा गया। रास्ते में उसे एक बुढ़िया मिली जो एक सूखे पेड़ को ईंधन के लिये काट रही थी।

बन्दर चिल्लाया — "दादी माँ दादी माँ। यह पेड़ तो बहुत सख्त है। आप मेरा यह तेज़ चाकू ले लें तो आप अपने लिये लकड़ी आसानी से काट सकेंगी।"

बुढ़िया यह सुन कर बहुत खुश हुई और उसने उससे चाकू ले लिया। लकड़ी काटते काटते वह चाकू थोड़ा खुट्टल हो गया तो उससे लकड़ी मुश्किल से कटने लगी। बन्दर ने देखा कि बुढ़िया ने तो उसका चाकू ही खराब कर दिया।

वह बोला — "दादी माँ। आपने तो मेरा चाकू ही खराब कर दिया तो या तो मुझे इससे अच्छा चाकू दीजिये या फिर मुझे अपनी काटा हुआ सारा ईंधन दीजिये।"

अब वह बुढ़िया उससे ज़्यादा अच्छा चाकू तो कहीं से ला नहीं सकती थी सो उसने अपना सारा ईंधन उसे दे दिया और उस दिन वह बिना कोई ईंधन लिये ही घर चली गयी।

दुष्ट बन्दर ने सूखी लकड़ियों का गट्ठर अपने सिर पर रखा और पास के शहर में बेचने के लिये चल दिया। वहाँ उसे एक बुढ़िया मिली जो सड़क के किनारे बैठी हुई खीर बना रही थी।

बन्दर उससे बोला — "दादी माँ दादी माँ। आप खीर बना रही हैं और आपका ईंधन तो खत्म हो रहा है। लीजिये आप मेरा ईंधन

इस्तेमाल कीजिये और फिर और ज़्यादा खीर बनाइये।" बुढ़िया ने उससे ईंधन ले लिया और उसे बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

चालाक बन्दर वहीं बैठा रहा जब तक कि उसके ईंधन की आखिरी डंडी भी नहीं जल गयी। जब उसका सारा ईंधन खत्म हो गया तो वह बुढ़िया से बोला — "दादी माँ दादी माँ। अब या तो मेरा ईंधन वापस करो या फिर मुझे अपनी सारी खीर दो।"

अब वह उसे उसका ईंधन तो वापस नहीं कर सकती थी क्योंकि वह तो जल गया था सो उसे उसे अपनी सारी खीर देनी पड़ी। बन्दर उसकी खीर ले कर वहाँ से चलता बना।

रास्ते में उसे एक परैया मिल गया जो ढोल लिये चला आ रहा था। बन्दर ने उससे कहा — "तुम मेरी यह खीर ले लो और मुझे यह ढोल दे दो।"

परैया को बहुत भूख लगी थी सो उसने बन्दर से अपने ढोल के बदले में खीर ले ली। बन्दर खुशी खुशी अपना ढोल ले कर वहाँ से चला गया। वह अपना ढोल ले कर एक ऊँचे से पेड़ पर चढ़ गया और ढोल बजा बजा कर गाने लगा —

मैंने अपनी पूँछ खोयी तो एक चाकू पाया ढम ढम ढम
फिर मैंने चाकू खोया तो लकड़ी का एक गट्ठर पाया ढम ढम ढम
लकड़ी का गट्ठर खोया तो खीर मिली ढम ढम ढम
खीर खोयी तो मुझे ढोल मिला ढम ढम ढम

इस तरह इस भली दुनियाँ में ऐसे बहुत सारे नीच लोग रहते हैं जो अपनी नीच हरकतों के सहारे जीते हैं।

15 पतन से पहले घमंड चला जाता है[31]

इस अंग्रेजी कहावत की तरह की एक कहावत तामिल में भी कही जाती है जिसका मतलब है कि "घमंड नाश का कारण होता है।" नीचे लिखी कहानी इस कहावत को सच करती है।

एक गॉव में कपड़े के 10 व्यापारी रहते थे। वे अक्सर साथ रहते थे। व्यापार करने के लिये एक बार वे बहुत दूर चले गये और वहॉ से अपना सामान बेच कर बहुत सारा पैसा ले कर लौट रहे थे।

उनके गॉव के पास एक बहुत घना जंगल पड़ता था जहॉ वे सुबह सुबह पहुॅचे। उन व्यापारियों को इस बात का पता ही नहीं था कि उस जंगल में तीन बहुत ही खतरनाक डाकू रहते थे।

जब वे उसमें से हो कर गुजर रहे थे तो वे डाकू उनके सामने आ गये। उनके हाथों में तलवारें और मुदगड़ थे। उन्होंने व्यापारियों से कहा कि वे अपनी सारी धन दौलत उनके सामने रख दें।

अब उन व्यापारियों के पास कोई हथियार तो था नहीं। हालॉकि वे उन डाकुओं से संख्या में ज़्यादा थे फिर भी उन्होंने अपनी सारी धन सम्पत्ति उनके सामने निकाल कर रख दी। डाकुओं ने केवल उनकी धन सम्पत्ति ही नहीं बल्कि उनके शरीर के कपड़े भी

[31] Pride Goeth Before a Fall. Tale No 15.

उतरवा लिये। पहनने के लिये उनको केवल एक एक लॅगोटी दे दी – आठ इंच चौड़ी और **20** इंच लम्बी।

यह विचार कि उन्होंने **10** लोगों को जीत लिया और उनकी सब सम्पत्ति छीन ली उनके दिमाग में बैठ गया। सो अब वे उन दसों लोगों के सामने तीन राजाओं की तरह बैठ गये और उनके घर लौटने से पहले उनसे नाचने के लिये कहा।

व्यापारी बेचारे अपनी किस्मत को कोसने लगे। जो कुछ उनके पास था वह तो वे सब खो ही चुके थे सिवाय लॅगोटी के लेकिन फिर भी डाकू अभी सन्तुष्ट नहीं थे। वे चाहते थे कि इस हालत में वे उनके सामने नाचें।

अब उन दस व्यापारियों में एक व्यापारी कुछ होशियार सा था। वह अपने और अपने साथियों के ऊपर आयी इस मुसीबत के बारे में विचार करने लगा नाचने के बारे में विचार करने लगा और उस शान के बारे में विचार करने लगा जिस शान से डाकू उनके सामने घास पर बैठे हुए थे।

उसने देखा कि इस समय उन लोगों ने अपने हथियार जमीन पर रख दिये थे। शायद उन्हें पक्का विश्वास था कि उन्होंने इन व्यापारियों को पूरे तरीके से जीत लिया है।

सो कुछ सोचते हुए उसने पहले नाचना शुरू किया। और जैसे ऐसे मौकों पर साधारणतया गीत लीडर द्वारा शुरू किया जाता है और बाकी लोग ताल देते रहते हैं तो उसने गाना शुरू किया —

हम 10 लोग हैं वे तीन लोग हैं
अगर हम में से तीन तीन आदमी इन तीनों को धर ले
तो वह आदमी रह जायेगा ता थेई तोम तडिंगना

डाकू लोग सब बे पढ़े लिखे थे। उनको लगा कि यह आदमी तो केवल गाना गा रहा है। सो इस तरह लीडर गाना गाते हुए आगे बढ़ा और उसने दो बार यह गाना गाया। तब तक वह और उसके साथी उन डाकुओं के पास पहुँच चुके थे।

उसके साथियों ने इसका मतलब समझ लिया था। जिसका मतलब अच्छे अच्छे पढ़े लिखे लोग नहीं समझ सकते थे जब तक वह उस व्यापार की भाषा न समझते हों।

जब दो व्यापारी किसी चीज़ की कीमत के बारे में किसी खरीदार के सामने बात कर रहे होते हैं तो वे लोग अपनी गुप्त भाषा का इस्तेमाल करते हैं। एक व्यापारी दूसरे व्यापारी से पूछेगा कि "इस कपड़े की क्या कीमत है।" तो दूसरा जवाब देगा "पुली रुपया।" यानी 10 रुपया।

इस तरह से खरीदार को किसी भी तरह यह पता नहीं चलने का कि उस कपड़े का क्या दाम है जब तक कि वह उस व्यापार की बारीकियॉ न जानता हो। इस भाषा के अनुसार तिरु मतलब तीन। इस तरह लीडर के गाने का मतलब था कि वे खुद तो 10 लोग थे और डाकू केवल तीन थे।

अगर तीन तीन लोग एक एक डाकू पर कूद पड़ें तो नौ लोग उन तीनों को पकड़ लेंगे और बचा हुआ एक आदमी उनके हाथ पैर बाँध देगा।

अब तीनों डाकुओं को गीत का मतलब तो पता चल नहीं रहा था और न नाचने वालों के इरादों का पता था वे तो बस अपनी जीत की शान में बैठे हुए थे पान तम्बाकू खा रहे थे।

इस बीच गीत तीसरी बार गाया गया। उन्होंने ता थेई तोम ही गाया था और जैसे ही उनके मुँह से निकला "तडिंगना" नाचने वाले तीन हिस्सें में बँट गये औ उन्होंने एक एक डाकू को अपने कब्जे में ले लिया।

उन लोगों ने बचे हुए आदमी जो लीडर खुद था पर ही सब कुछ छोड़ दिया था। लीडर ने एक लम्बे से कपड़े की कुछ पट्टियाँ फाड़ीं और उनसे उन डाकुओं के हाथ पैर बाँध दिये। अब वे बिल्कुल विनम्र हो गये थे और चावल की बोरी की तरह से इधर उधर लुढ़क गये थे।

दसों व्यापारियों ने अपना सब सामान उन डाकुओं से वापस लिया उनकी तलवारें और मुदगड़ लिये और वहाँ से भाग लिये। घर आ कर उन्होंने उस दिन का सारा हाल अपने घर वालों को सुनाया।

16 अच्छी साख अच्छे काम से ही बनती है[32]

एक शहर में पत्नीप्रिय नाम का राजा राज करता था। उसके दरबार में एक गरीब ब्राह्मण था जिसका नाम था पापभीरु। हर सुबह वह एक पीले रंग का नीबू ले कर दरबार में आता था राजा को देता था और अपनी तामिल भाषा में उसको आशीर्वाद देता था —

अगर अच्छा बोओगे तो अच्छा उगेगा अगर बुरा बोओगे तो बुरा उगेगा
इस तरह अच्छा या बुरा तो अन्त में ही पता चलेगा

राजा उसके इस आशीर्वाद का उतना ही आदर करता था जितना कि वह उसके सफेद बालों का करता था। इस तरीके से राजा को फल के देने का उसका कार्यक्रम चलता रहा। ब्राह्मण की उससे कोई माँग नहीं थी वह तो बस उसकी इज़्ज़त करता था।

यह देख कर कि ब्राह्मण का कोई खास बाहरी उद्देश्य नहीं है केवल राजसेवा करना ही उसका उद्देश्य है या राजा के प्रति कर्तव्य है तो उसकी अपने इस सुबह के मेहमान के प्रति भक्ति कुछ और बढ़ गयी।

राजा को फल देने के बाद ब्राह्मण राजा की पूजा खत्म होने का इन्तजार करता फिर वह अपने घर चला जाता जहाँ उसकी पत्नी उसकी पूजा का सामान तैयार रख कर उसका इन्तजार करती।

[32] Good Will Grows Out of Good. Tale No 16.

पापभीरु फिर जो कुछ भी उसकी पत्नी ने पकाया होता वह खाता। कभी कभी उसका पड़ोसी ब्राह्मण उसको खाने के लिये बुला लेता जिसे वह तुरन्त ही स्वीकार कर लेता।

क्योंकि उसके पिता ने जब वह अपनी आखिरी सॉस ले रहे थे उसे अपने पास बुलाया और आखिरी उपदेश देते हुए यह सलाह दी —

सुबह के खाने का कभी अपमान नहीं करो न वह कहो जो तुम्हारी ऑखें देखती हैं
लेकिन राजा की सेवा प्रसिद्धि पाने के लिये करो

इसी लिये पापभीरु ने राजा के पास जाना शुरू किया था। उसने कभी खाने के निमन्त्रण को मना नहीं किया हालॉकि वह अक्सर बहुत ही अजीब से समय पर आता था।

अब एक दिन एक एकादशी की सुबह पापभीरु राजा के पास रोज की तरह नीबू ले कर उसका आदर करने गया तो वहॉ जा कर उसे पता चला कि वह तो पूजा करने चले गये हैं तो वह उनकी पूजा की जगह चला गया।

ब्राह्मण को देखते ही राजा का चेहरा चमक उठा। वह बोला — "धरती पर मेरे सबसे ज़्यादा पूज्य भगवान। जब मैंने तुम्हें दरबार में आज सुबह नहीं देखा तो मुझे लगा कि तुम्हारे साथ कुछ बुरा हो गया है। पर भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि उसने तुम्हें मेरे पास भेज दिया हालॉकि कुछ देर हो गयी।

क्योंकि मैं अपनी पूजा अपनी तलवार को भगवान के पास रख कर ही करता हूँ। पर कल रात में उसे अपनी रानी के कमरे में ही भूल आया था। वह मेरे उस काउच के तकिये के नीचे रखी है जिस पर मैं अक्सर सोता हूँ।

जब तक तुम नहीं आये थे मुझे कोई ऐसा भरोसे वाला आदमी नहीं मिला जिसे भेज कर मैं उसे मँगवा लेता। इसलिये मैं अब तक तुम्हारा इन्तजार कर रहा था। अब तुम आ गये हो तो मुझे वह तलवार ला कर दे दो।"

बेचारा ब्राह्मण यह सुन कर बहुत खुश हो गया। उसको लगा कि राज की सेवा करने का यह अच्छा मौका है सो वह हरम की तरफ उस कमरे की तरफ दौड़ा जहाँ राजा अक्सर सोया करता था।

रानी बहुत ही नीच स्त्री थी और हमेशा ही राजा के किसी न किसी दरबारी से मिलती रहती थी। जब पापभीरु लौटा तो यह देख कर आश्चर्य में पड़ गया कि रानी अपने एक प्रेमी के साथ बागीचे में घूम रही थी। ब्राह्मण बेचारा सीधा राजा के कमरे में गया उसका तकिया उठाया तलवार को महसूस किया और उसे ले कर वहाँ से चला गया।

अपने पिता की बात मान कर कि जो कुछ तुम देखो उसे कहो नहीं वह बिना कुछ बोले चला गया पर उसका दिल बहुत भारी हो गया।

रानी और उसका प्रेमी मन्त्री बहुत डर हो गये। मन्त्री बोला — "इस बूढ़े ब्राह्मण ने हमें देख लिया है अब यह पहला मौका मिलते ही राजा से हमारी शिकायत कर देगा।"

पर रानी जितनी अपने बोलने में तेज़ थी उतनी ही वह पाप करने में भी तेज़ थी। वह बोली — "मैं उसे कल सुबह का सूरज निकलने से पहले ही मार दूँगी। तुम यहीं इन्तजार करो। मैं राजा को बता कर आती हूँ कि इसका क्या करना है और आ कर तुम्हें भी बताती हूँ। फिर तुम घर जा सकते हो।"

इतना कह कर रानी राजा के पास गयी जो अभी भी पूजा में था। राजा उसको देखते ही खड़ा हो गया और उससे पूछा कि आज उसके अचानक वहाँ आने का क्या मतलब है।

रानी बोली — "हिज़ मैजेस्टी सोचते है कि सारी दुनियाँ वैसी ही सीधी है जैसे कि वह खुद सीधे हैं। वह नीच ब्राह्मण जिसके बाल इतने सफेद हैं जैसे दूध अभी तक अपनी जवानी के दिन नहीं भूला है। उसने मुझसे अपने साथ भाग जाने के लिये कहा। अगर आपने कल सुबह से पहले उसे नहीं मरवाया तो मैं खुद को मार लूँगी।"

राजा तो यह सुन कर बहुत ही दुखी हो गया। जितनी वह उस ब्राह्मण की इ़ज़्ज़त करता था वह सब पल भर में हवा हो गयी। उसने अपने दो बड़े सजा देने वालों को बुलाया और अपनी पत्नी के सामने ही बोला — "शहर के पूर्वी दरवाजे की तरफ लोहे का एक बड़ा पतीला ले जाओ और उसमें तिल का तेल ऊपर तक भर कर

उसे खूब गर्म करो। एक आदमी सुबह को तुम्हारे पास आयेगा और तुमसे पूछेगा "क्या सब हो गया?"

बिना देखे कि वह कौन है उसके हाथ पैर बाँध कर उसे खौलते तेल में डाल देना। जब वह उसमें मर जाये तो आग बुझा देना और तेल फेंक देना।"

सजा देने वालों ने राजा से हुक्म लिये और अपना यह भयानक काम करने की तैयारी करने चले गये। रानी भी यह सुन कर अपने दिल में बहुत खुश हुई कि उसने ब्राह्मण के मरवाने का इन्तजाम सफलतापूर्वक खत्म कर लिया।

उसने जा कर यह खबर मन्त्री को दे दी पर उसने उस खास सवाल के बार में कुछ नहीं बताया जो वह अपराधी वहाँ जा कर उन सजा देने वालों से पूछेगा।

मन्त्री यह सुन कर बहुत खुश हुआ और अपने महल चला गया और ब्राह्मण के मरने की खबर का इन्तजार करने लगा।

जब राजा की पूजा खत्म हो गयी तो उसने पापभीरु को बुलाया। ब्राह्मण को इससे पहले कभी राजा ने ऐसे अजीब समय पर नहीं बुलाया था सो वह धड़कते दिल से राजा के सामने हाजिर हुआ।

जब वह राजा के सामने आया तो राजा ने सोचा कि कहीं कोई शक उसके दिमाग में न उठे इसलिये उससे बड़ी विनम्रता से कहा — "प्रिय ब्राह्मण। कल सुबह जब तुम अपनी पूजा के लिये जाओ तो

पूर्वी दरवाजे से जाना। वहाँ तुमको एक बड़े से पतीले के पास दो आदमी बैठे मिलेंगे उनसे ज़रा यह पूछना "क्या सब हो गया?" और जो कुछ भी वे जवाब दें वह मुझे आ कर बताना।"

राजा ने उससे यह ऐसा विश्वास करते हुए कहा था कि वह अब कभी वापस नहीं आयेगा। जबकि ब्राह्मण बहुत खुश था कि उसको राजा की सेवा दोबारा करने का मौका मिलेगा। वह घर चला गया खूब गहरी नींद सोया।

अगले दिन वह अपने रोज के समय से आधा घंटा पहले ही उठ गया और सूखे कपड़ों की पोटली अपने सिर पर रख नदी पर नहाने चल दिया। राजा ने उससे जैसा कहा था उसने वैसा ही किया। उसने पूर्वी दरवाजे से जाने वाली सड़क पकड़ी और नदी की तरफ चल दिया।

अभी वह कुछ ही दूर गया होगा कि उसके एक दोस्त ने उससे द्वादशी के नाश्ते के लिये बुलाया। दोस्त बोला — "मेरी माँ ने कल सारे दिन से अभी तक एक बूँद पानी भी नही पिया है। चावल और नहाने के लिये गर्म पानी बिल्कुल तैयार है।

थोड़ा सा गर्म पानी अपने सिर पर डाल लो और थोड़ा सा चावल खा लो। तुम्हारा कोई भी काम कितना ही जरूरी क्यों न हो पर मेरी माँ की खातिर मेरे ऊपर इतनी दया करो।"

पापभीरु ने अपने पिता का कहा माना कि सुबह के खाने को कभी मना नहीं करना चाहिये। वह अपने दोस्त के घर चला गया पर राजा का हुक्म उसके सिर पर एक बोझ बना रहा।

इस बीच मन्त्री इस बात को जानने के लिये बहुत उत्सुक था कि उस ब्राह्मण का क्या हुआ पर उसके बार में किसी से पूछने से डर रहा था ताकि लोग उसके बारे कहीं कोई शक न करने लगें। सो जैसे ही सूरज निकला वह खुद ही पूर्वी दरवाजे की तरफ चल दिया।

वहॉ उसे एक बड़े से बर्तन के पास दो आदमी बैठे मिल गये तो उनसे उसने ऐसे ही पूछ लिया "क्या सब हो गया?"

अब जैसा कि उनसे कहा गया था कि आने वाले को देखने की जरूरत नहीं है कि वह कौन है बस उसके हाथ पैर बॉध कर तेल से भरे बर्तन में फेंक देना। सो उन्होंने वैसा ही किया।

वह बेचारा रोया चिल्लाया पर वहॉ उसकी आवाज कौन सुनता। जब वह मर गया तो उसको बाहर निकाल कर फेंक दिया आग बुझा दी और तेल बिखेर दिया।

उधर ब्राह्मण जल्दी जल्दी द्वादशी का नाश्ता करके पान हाथ में लिये ही पूर्वी दरवाजे की तरफ बढ़ गया ताकि वह जल्दी से उन दो आदमियों से यह पूछ सके कि "क्या काम हो गया?"

जब उसने उनसे यह सवाल पूछा तो वे मुस्कुरा कर बोले — "जी सरकार। हो गया। हमने मन्त्री को खौलते हुए तेल में डाल

कर मार दिया। हमने राजा के हुक्म का पूरा पूरा पालन किया। आप जा कर उनके यह खबर दे सकते हैं।"

इस सब की वजह न जानते हुए वह भागा भागा राजा के पास गया और उसे सब बताया।

मन्त्री का इस मामले में बीच में पड़ना राजा के दिल में शक पैदा कर गया। उसने अपनी तलवार निकाली। उसे अपने दॉये हाथ में ले कर उसने ब्राह्मण के सिर के बाल अपने बॉये हाथ में पकड़ कर ऐंठ दिये और उससे पूछा कि क्या उसने कल सुबह रानी से अपने साथ भागने की बात नहीं की थी। उसने उससे यह भी कहा कि अगर उसने झूठ बोला तो वह उसको मार देगा।

बेचारे ब्राह्मण ने उसे सब साफ साफ बता दिया कि उसने पिछले दिन क्या देखा था। इस पर राजा ने उसे छोड़ दिया अपनी तलवार नीचे फेंक दी और उसके पैरों में गिर पड़ा और बोला — आपके आशीर्वाद का मतलब अब मेरी समझ में आ रहा है। आपने तो अच्छे के सिवा कुछ बोया ही नहीं और उसी अच्छाई ने आज आपकी जान बचायी।

वह नीच मन्त्री जिसकी अपनी गलती उसे कचोट रही थी वह आपकी मौत के बारे सुनने के लिये इतना बेचैन था क्योंकि उसका इरादा खराब था उसने बुराई बोयी जिसकी वजह से उसे मौत मिली जिसे उसने कभी आशा भी नहीं की थी। एक दूसरे आदमी जिसने बुराई बोयी वह है मेरी रानी जिसको मैंने बेहद प्यार किया।"

ऐसा कह कर उसने रानी को फाँसी पर चढ़वा दिया। ब्राह्मण को उसने अपना मन्त्री बना लिया और फिर बहुत दिनों तक राज किया।

17 रोशनी समृद्धि लाती है[33]

तामिल में एक कहावत है "दीपम लक्ष्मीकरम" यानी रोशनी समृद्धि लाती है। इसे समझाने के लिये यह नीचे लिखी कहानी दी जाती है —

गोविन्दपाठी नाम के शहर में पशुपति शेट्टी नाम का एक व्यापारी रहता था। उसके एक बेटा था एक बेटी थी। बेटे का नाम था विनीत और बेटी का नाम था गर्वी। जब वे अभी बच्चे ही थे तो उन्होंने एक दूसरे से यह कसम खायी कि जब भी कभी उनके बच्चे होंगे तो वे आपस में उनकी शादी कर देंगे। वे यह निश्चित करेंगे कि यह काम हो कर रहता है।

गर्वी जब बड़ी हो गयी तो उसकी शादी एक बहुत बड़े व्यापारी से हो गयी। समय के साथ साथ इसके तीन बेटियाँ हुईं जिनमें से सबसे छोटी का नाम था सुगुणी।

विनीत के तीन बेटे हुए। इससे पहले कि वे पहले अपनी कसम पूरी करते एक ऐसी घटना घट गयी जिससे उनकी कसम पूरी न हो सकी।

पशुपति शेट्टी दुनियाँ से चला गया। उसने बहुत सारे लोगों से उधार ले रखा था। उसके मरने के बाद वे सब परेशान हो गये। उसका कर्ज निपटाने पशुपति की सारी जायदाद बेच देनी पड़ी।

---

[33] Light Brings Prosperity. Tale No 17.

अपने पिता के मरने के एक दो महीने बाद ही वह एक भिखारी की तरह से हो गया। वह एक बहुत ही समझदार आदमी था सो वह उसे सहता रहा और जो कुछ भी उसके पास था उसी के साथ एक ईमानदारी की ज़िन्दगी बिताता रहा।

उसकी बहिन गर्वी की शादी तो एक बहुत ही अमीर व्यापारी से हुई थी। जब उसने देखा कि उसका भाई बहुत ही गरीबी में अपनी ज़िन्दगी बिता रहा है तो जो कसम उसने अपने भाई के साथ खायी थी वह उसे परेशान करने लगी कि वह अपनी बेटियों की शादी अपने भाई के बेटों से करे या नहीं।

इस बात को वह महीनों तक सोचती रही। फिर उसने अपने मन में सोच लिया कि वह अपनी बेटियों को इतनी गरीबी में नहीं देगी।

उसकी खुशकिस्मती से दो धनी व्यापारियों ने उसकी दो बड़ी बेटियों का हाथ पहले ही मॉग रखा था। उसने उनको स्वीकार कर लिया था और उनकी शादी भी हो गयी थी। अब केवल उसकी छोटी बेटी की शादी रह गयी थी।

विनीत इस निराशा से बहुत परेशान था क्योंकि उसने तो कभी यह सोचा भी नहीं था कि उसकी बहिन उसकी गरीबी की तरफ इतनी नीची दृष्टि से देखेगी। पर वह क्योंकि वह बहुत समझदार था इसलिये उसने कुछ कहा भी नहीं।

उन लोगों के बचपन की इस कसम के बारे में सबको मालूम था। कुछ लोग तो विनीत से सहानुभूति रखते थे और कुछ लोग गर्वी की उसके ऐसे व्यवहार की आलोचना करते थे कि क्योंकि उसका भाई गरीब हो गया इसलिये उसने अपनी कसम तोड़ दी।

ये बातें सुगुणी के कानों में भी पड़ीं जिसकी अभी भी शादी नहीं हुई थी। वह बहुत पढ़ी लिखी और समझदार लड़की थी। वह जानती थी कि उसके मामा विनीत बहुत ही दानवीर आदमी हैं और उनके सब बेटे बहुत गुणी और अच्छे स्वभाव के हैं।

इस विचार ने कि उसकी माँ इस आने जाने वाले धन के सामने इतने अच्छे गुणों को भूल गयी है उसके दिल को बहुत चोट पहुँचायी।

सो हालाँकि एक हिन्दू लड़की के लिये यह सामाजिक नियमों के विरुद्ध है कि वह अपना पति अपने आप चुने फिर भी वह अपनी माँ के पास गयी और बोली — "मुझे आपके और मामा जी के बीच में जो कसम आप लोगों ने खायी थी उसके बारे में पता है कि आपको अपनी बेटियों की शादी उनके बेटों से करनी थी।

मुझे बहुत शर्म आती है कि आपने मेरी बहिनों के सिलसिले में अपना वायदा तोड़ दिया पर मुझसे ऐसी बेशर्मी नहीं सही जाती। मैं अपने उन तीनों भाइयों में से किसी एक से ही शादी करूँगी किसी दूसरे से नहीं। आप इस बारे में सोच लें और मुझे अपना फैसला बता दें।"

गर्वी अपनी छोटी बेटी के मुँह से ऐसी बात सुन कर दंग रह गयी। उसने पूछा — "क्या तुम एक भिखारी से शादी करना चाहती हो। हम इस बात के लिये कभी राजी नहीं होंगे। और अगर तुम अपनी बात पर अड़ी रहना चाहती हो तो ठीक है हम तुम्हें तुम्हारे उस गरीब को दे देंगे जिसके पास एक भी पैसा नहीं है पर फिर हम तुम्हारा कभी मुँह भी नहीं देखेंगे।"

पर सुगुणी अपनी बात पर अड़ी रही। सो उसकी शादी विनीत के सबसे छोटे बेटे के साथ तय कर दी गयी। विनीत ने इसके बारे में अपनी बहिन से तो कोई बात नहीं की पर उसने तब तक इन्तजार किया जब तक उसकी बहिन की बेटियों की शादी हो नहीं गयी और वे अपने अपने घर नहीं चली गयीं।

और जब उसने सुना कि कि सुगुणी उसके तीसरे बेटे से शादी करने के लिये तैयार है वह बहुत खुश हुआ। उसने तुरन्त ही अपने दोनों बड़े बेटों के लिये दो गरीब घरों से लड़कियाँ देख कर उनकी शादी तय कर दी और फिर तीनों बेटों की शादी एक साथ कर दी।

सुगुणी अपने गरीब भाई के साथ व्यवहार में बहुत अच्छी थी और उसे प्यार भी बहुत करती थी। वह कभी भी अपने अमीर घर से आने की वजह से घमंड नहीं करती थी। न कभी उसने अपने पति का उसके भाइयों का या उसके पिता का अपमान ही किया।

अब विनीत अपने तीनों बेटों के साथ सुबह सुबह सूखी पत्तियाँ इकट्ठा करने चला जाता था और उसकी तीनों बहुऐं घर में उनको

जोड़ जोड़ कर थाली बनाया करती थीं। उन थालियों को सब आदमी मिल कर बाजार में चार पण प्रति थाली बेच आते थे।

कभी इन थालियों के उन्हें ज़्यादा दाम मिलते तो कभी कम। पर जो पैसा विनीत घर ले कर आता घर की बहुऐं उससे घर चलातीं। सुगुणी उन सबमें छोटी थी। वह पैसे को बहुत सँभाल कर खर्च करती थी और अपने ससुर और उनके बेटों को आराम से खाना खिलाती। जो बच जाता उसे वे तीनों बहुऐं बॉट कर खा लेतीं।

सारा परिवार सुगुणी की बहुत तारीफ और आदर करता। उसके माता पिता ने तो जैसे उसे कभी न देखने की कसम खायी हुई थी। उन्होंने कभी यह देखने की कोशिश नहीं की कि उनकी लाड़ली बेटी अपनी ससुराल में कैसे रहती है। इस तरह दो साल बीत गये।

एक दिन वहॉ का राजा तेल लगा कर नहा रहा था तो उसने अपनी एक अंगूठी अपनी उॅगली से निकाली और अपने खुले ऑगन के एक आले में रख दी।

एक गरुड़ चिड़िया उस समय ऊपर आसमान में चक्कर काट रही थी। उसने ॲगूठी में लगे लालों को मॉस के टुकड़े समझा सो वह नीचे उतरी और उस ॲगूठी को ले कर ऊपर उड़ गयी। पर जब उसने देखा कि वह तो मॉस नहीं है तो उसने उसे नीचे फेंक दिया। इत्तफाक से वह ॲगूठी सुगुणी के घर में आ पड़ी।

सुगुणी उस समय अकेली ही अपने घर के ऑगन में काम कर रही थे उसके घर वाले घर के दूसरे हिस्सों में थे। उसने वह अॅगूठी उठा ली और छिपा ली।

उसके थोड़ी ही देर बाद उसने राजा की मुनादी सुनी। मुनादी पीटने वाला कह रहा था कि राजा की एक कीमती अॅगूठी खो गयी है जो भी आदमी उसे ढूॅढ कर लायेगा उसे बहुत बड़ा इनाम दिया जायेगा।

सुगुणी ने अपने पति और उसके भाइयों को बुलाया और उनसे कहा — "मेरे स्वामी और भाइयो। राजा की अॅगूठी मेरे पास है। ठीक दोपहर को एक गरुड़ चिड़िया आयी और इसे यहॉ हमारे ऑगन में डाल गयी। लो यह है वह अॅगूठी।

हम सबको राजा के पास जाना चाहिये और तुम तीनों के सामने मैं राजा को यह अॅगूठी दूॅगी और उसे समझाऊॅगी कि यह अॅगूठी मेरे पास कैसे आयी। जब हिज़ मैजेस्टी मुझे इनाम देने की बात करें तो मैं ही उनसे इनाम मॉगूॅगी। आप लोग मेरी बात काटने की या मेरी इच्छाओं को रोकने की कोशिश न करें चाहे वे आप लोगों को बहुत ही छोटी लगें।"

भाई लोग राजी हो गये। सब मिल कर महल चले। वे सब सुगुणी की बहुत इज़्ज़त करते थे। वे सब आशा करते थे कि राजा के महल जाने का कोई न कोई अच्छा परिणाम निकलेगा। सब लोग

महल पहुँच गये। सुगुणी ने सब कुछ बताते हुए वह ॲगूठी राजा को दे दी।

राजा उसके विनम्र व्यवहार से बहुत प्रभावित हुआ और उससे इनाम मॉगने के लिये कहा।

सुगुणी बोली — "योर मैजेस्टी। राजाओं के राजा। आपका नौकर बस आपसे एक ही एहसान मॉगता है। कि एक शुक्रवार की शाम को शहर की सारी रोशनियॉ बन्द कर दी जायें। यहॉ तक कि महल में भी एक भी दिया न जले। केवल आपके इस नौकर के घर में इतने दिये जलें जितने वह जलाना चाहे।"

राजा बोला — "जैसा तुम चाहो ओ लड़की। हम तुम्हें तुम्हारी इच्छा पूरी करने की इजाज़त अगले शुक्रवार से देते हैं।"

सुगुणी ने खुशी से राजा को सिर झुकाया और घर चली आयी। अब उसके पास जो आखिरी रत्न बचा था उसने उसे बेच कर पैसे बना लिये।

अगला शुक्रवार आया। उसने सारा दिन उपवास किया। जब शाम आयी तो उसने अपने पति और उसके दोनों भाइयों को बुलाया और उनसे कहा — "आज मैंने एक हजार दिये जलाने का इन्तजाम कर लिया है। तुम लोगों में से एक को एक पल भी पलक बिना झपकाये घर को सामने से और बाकी दोनों को घर के पीछे से देखना चाहिये।

उस समय अगर कोई शानदार स्त्री घर में घुसने की इजाज़त माँगे तो तुम लोग बहादुरी से उससे कहना कि घुसने से पहले वह एक वायदा करे कि एक बार वह अगर अन्दर आये तो फिर वह कभी यहाँ से जाये नहीं। और जब वह यह वायदा कर ले तभी उसे अन्दर आने की इजाज़त देना।

इसी तरह से अगर कोई स्त्री घर के बाहर जाना चाहे तो ऐसा ही वायदा उससे भी ले लेना – कि वह अगर बाहर जा रही है तो जाये पर वह अपनी सारी ज़िन्दगी फिर कभी वापस लौट कर यहाँ न आये।"

सुगुणी ने भाइयों से जो कुछ कहा वह उन सबको बड़ा अजीब सा लगा पर उन्होंने उसे उसके मन का काम करने दिया और धीरज से इन्तजार किया कि इस सबसे क्या होता है। अब उस शुक्रवार की रात राजा के हुक्म से सारा शहर अँधेरे में डूबा हुआ था यहाँ तक कि राजा का अपना महल भी।

अष्टलक्ष्मी शहर में आयीं। वे हर गली में घर घर गयीं। सारे घर अँधेरे में डूबे हुए थे केवल सुगुणी के घर में उजाला था। उन्होंने सुगुणी के घर घुसने की कोशिश की पर वहाँ तो तीन भाई पहरा दे रहे थे।

उन्होंने घर के सामने पहरा देने वाले भाई से उस घर में घुसने की इजाज़त माँगी तो उसने उनसे वायदा करने के लिये कहा। उन्होंने वायदा किया तो उसने उन्हें घर के अन्दर जाने दिया।

बाद में उन सबको पता चला कि वे तो अष्टलक्ष्मी थीं तो उन्होंने अपने छोटे भाई की पत्नी की बहुत तारीफ की।

जैसे ही वे अन्दर गयीं एक पल बाद ही घर से एक अजीब सी स्त्री बाहर निकालने की इजाज़त माँगने लगी पर पीछे पहरा देने वाले दोनों भाइयों ने उससे यह वायदा करने के लिये कहा कि अगर वह यहाँ से गयी तो फिर ज़िन्दगी भर यहाँ लौट कर नहीं आयेगी।

उसने भी यह वायदा किया और चली गयी। बाद में भाइयों को पता चला कि वह तो "मूदेवी" थी अष्टलक्ष्मी की बड़ी बहिन क्योंकि उसने कहा — "अब क्योंकि मेरी छोटी बहिनें यहाँ आ गयी हैं मैं यहाँ एक पल को भी नहीं ठहर सकती। यहाँ जितनी भी पवित्र चीज़ें हैं मैं उन सबकी कसम खा कर कहती हूँ कि मैं अब यहाँ कभी नहीं आऊँगी।" इतना कह कर मूदेवी वहाँ से चली गयी।

जब सुबह हुई तो अष्टलक्ष्मी उसी घर में बस गयी थीं। उनके भंडार धन धान्य से भर गये। बर्तन दूध से भर गये। उस दिन से सुगुणी का घर हर चीज़ से भर गया। तीनों भाई और उसका ससुर सब इस बात पर बहुत खुश थे जिस तरह सुगुणी उनकी घर में समृद्धि ले कर आयी थी।

इससे सुगुणी के माता पिता को भी अपना अपमान महसूस नहीं हुआ। उन्होंने उसे माफ कर दिया। उसने विनम्रता से उन्हें माफ कर दिया। वह फिर उस समृद्ध घर में खुशी खुशी रही।

इसलिये हिन्दुओं में यह विश्वास है कि घर में रोशनी समृद्धि लाती है।

18 चन्द्रलेखा और आठ डाकू[34]

पुराने समय में पांड्या नाम के देश में एक शहर था जिसका नाम था कैवल्यम। उसमें एक नाचने वाली लड़की रहती थी जिसका नाम था मुत्तुमोहना। वह स्त्रियों में एक रत्न थी। हालाँकि वह एक नाचने वाली थी पर वह बहुत पढ़ी लिखी और पवित्र स्त्री थी। वह शिव जी के मन्दिर जाये बिना कोई खाना नहीं खाती थी।

वह राजाओं मन्त्रियों और ब्राह्मणों में घूमती थी और नीची जाति के लोगों में कभी नहीं जाती थी चाहे वे कितने भी अमीर क्यों न हों। उसके एक बेटी थी चन्द्रलेखा जो राजाओं मन्त्रियों आदि बड़े आदमियों के बच्चों के स्कूल में उन्हीं के साथ पढ़ती थी।

जबसे उसने वर्णमाला लिखनी पढ़नी सीखी चन्द्रलेखा तभी से बहुत होशियार थी उसलिये उसके गुरू लोग भी उसको बहुत मन से पढ़ाते थे। चार साल पूरे होते न होते वह बहुत कुछ सीख गयी और पंडिता बन गयी।

हालाँकि वह जन्म से ही एक नाचने वाली की बेटी थी पर फिर भी उसकी पढ़ाई पर किसी को भी कोई ऐतराज नहीं था। अब वह बड़ी हो गयी थी। अब वह चारों वेदों शास्त्रों और चौंसठ कलाओं में भी होशियार हो गयी थी। अब उसने स्कूल जाना बन्द कर दिया था।

[34] Chandralekha and the Eight Robbers. Tale No 18.

एक दिन उसकी माँ मुत्तुमोहना ने कहा — “बेटी। पिछले सात आठ सालों से तुम पढ़ रही हो। अब तुम शिक्षा के भिन्न भिन्न क्षेत्रों होशियार हो गयी हो अब तुम्हें अपने गुरू को गुरू दक्षिणा के रूप में बहुत सारा पैसा देना चाहिये जिसने तुम्हें इतना सिखाया। तुम जितना चाहो उतन पैसा मेरे खजाने से निकाल लो।”

इतना कह कर मुत्तुमोहना ने खजाने की चाभी चन्द्रलेखा को दे दी। चन्द्रलेखा अपनी माँ की यह बात सुन कर बहुत खुश हुई। उसने पाँच पाँच हजार मुहरें पाँच टोकरियों में भरीं उनको पाँच दासियों के सिर पर रखवाया और खुद एक थाली में पान सुपारी गोला फूल रख कर पैसे के साथ साथ उन्हें भी गुरू जी को देने के लिये गयी।

दासियों ने मुहरों की टोकरियाँ गुरू जी के सामने रख दीं और घर के बाहर खड़ी हो कर इन्तजार करने लगीं और चन्द्रलेखा अपनी लायी हुई थाली गुरू जी के सामने रख कर और जमीन पर लेट कर उन्हें प्रणाम करने लगी।

प्रणाम के बाद उठ कर वह बोली — “ओ मेरे पवित्र गुरू। आपने मुझे पढ़ाने में बहुत तकलीफें उठायीं। मेरी अज्ञानता को दूर कर आप मुझे प्रकाश में लाये। पिछले आठ साल से मैं आपकी नियमित रूप से शिष्या रही हूँ और आपने मुझे सब कुछ सिखाया है। मैं आप से विनम्रतापूर्वक कहती हूँ कि आज आप मेरे हाथों से वह स्वीकार करें जो मैं आपके लिये ले कर आयी हूँ।”

इतना कह कर उसने मुहरों की टोकरियाँ और पान सुपारी की थाली उसने गुरू जी की तरफ खिसका दी। यह कर के वह इस आशा में थी कि वह अपने गुरू से अब उनका आशीर्वाद सुनेगी पर हम देखेंगे कि इस मामले में वह बहुत जल्दी ही निराश हो गयी।

वह नीच ब्राह्मण बोला — "प्रिय चन्द्रलेखा। क्या तुम जानती हो कि मैं कैवल्यम के राजकुमारों का मन्त्रियों के बच्चों का और कई अमीरों के बच्चों का गुरू हूँ। जहाँ तक पैसे का सवाल है वह मेरे पास बहुत है मुझे तुम्हारी एक भी मुहर नहीं चाहिये। पर मैं चाहता हूँ कि तुम मुझसे शादी कर लो।"

जब उस नीच ब्राह्मण ने चन्द्रलेखा से ऐसा कहा तो चन्द्रलेखा के चेहरे का तो रंग ही बदल गया। अपने गुरू से वह तो ऐसी बात सुन कर ही काँप गयी क्योंकि वह तो अभी तक उन्हें पूर्णता का प्रतीक मानती थी। फिर भी उसने आशा नहीं छोड़ी वह उनकी बात को गलत बताने के लिये बोली —

"मेरे पवित्र गुरू। मैं आपके चरणों का इतना आदर करती हूँ कि हालाँकि आप सब कुछ साफ साफ कह रहे हैं पर फिर भी मुझे लग रहा है कि आप मेरे चरित्र का इम्तिहान ले रहे हैं।

क्या आप यह नियम नहीं जानते कि गुरू तो तो शिष्य के पिता के बराबर होता है और इस तरह से मैं आपकी बेटी के बराबर हुई इसलिये अभी जो कुछ भी आपने मुझसे कहा उसे भूल जाइये और

उन चीज़ों को स्वीकार कर मुझे घर जाने की इजाज़त दीजिये जो मैं आपके लिये ले कर आयी हूँ।"

पर उस नीच गुरू ने तो इस मतलब से ऐसा कुछ कहा ही नहीं था। उसने तो वह सब बड़ी ईमानदारी से कहा था। उसकी चुप और नजर ने उस नाचने वाली लड़की को तुरन्त ही यह बता दिया कि उसके गुरू के दिमाग में क्या चल रहा था।

सो वह तुरन्त ही बाहर गयी और अपनी दासियों से कहा कि वे पैसों की टोकरियाँ वहाँ से उठा कर घर चलें।

घर में मुत्तुमोहना बड़ी उत्सुकता से अपनी बेटी के लौटने का इन्तजार कर रही थी। जैसे ही चन्द्रलेखा घर वापस लौटी तो माँ ने देखा कि उसका चेहरा तो उतरा हुआ है और साथ में वह जो कुछ भी अपने गुरू को देने के लिये ले गयी थी उसे भी वह उनको बिना दिये ही वापस ले आयी है।

सो उसने तुरन्त ही ताड़ लिया कि जरूर कहीं कुछ गड़बड़ है। उसने अपनी बेटी से उसकी उदासी की वजह पूछी तो उसने अपनी माँ को सारी कहानी बता दी। मुत्तुमोहना को उसकी बात सुन कर बहुत खुशी हुई कि उसकी बेटी अपने इरादे की पक्की है।

उसने अपनी बेटी को विश्वास दिलाया कि हालाँकि वह खुद एक नाचने वाली के घर पैदा हुई है पर वह उसकी शादी किसी अच्छे नौजवान से कर देगी और वह पवित्रता की ज़िन्दगी बितायेगी।

जो पैसा उसकी बेटी वापस ले कर आयी थी उसे उसने ले जा कर सुरक्षित रख दिया।

जब ब्राह्मण चन्द्रलेखा की तरफ से निराश हो गया था तो वह चन्द्रलेखा से बहुत गुस्सा हो गया। कोई अमीर नौजवान चन्द्रलेखा के पास भी न फटक सके इसके लिये उसने चन्द्रलेखा के बारे में यह अफवाह उड़ा दी कि चन्द्रलेखा को भूत ने जकड़ रखा है।

उसकी इस अफवाह का वही परिणाम हुआ जो उसने सोचा था। अब उसका प्यार पाने के लिये उसके पास कोई नहीं जाता था। इससे उसकी मॉ को बहुत परेशानी थी। उसकी बहुत इच्छा थी कि कोई अमीर नौजवान आ कर उसकी बेटी का दिल जीत ले पर उसके गुरू की फैलायी हुई अफवाहें रास्ते में रुकावट डाल रही थीं।

इस तरह एक साल बीत गया। गुरू की फैलायी हुई अफवाह ज़ोर पकड़ती गयी। यह समय मॉ बेटी को बहुत लम्बा लगा कि एक दिन एक साधु मुत्तुमोहना के घर आया तो मुत्तुमोहना ने उसको चन्द्रलेखा की सारी कहानी उसे बतायी।

साधु ने चन्द्रलेखा की कहानी सुनी और बोला — “क्योंकि यह विश्वास कि तुम्हारी बेटी को किसी भूत ने घेर रखा है शहर वालों के दिल में घर कर गया है। अब इसके लिये यह जरूरी है कि वह इसी अमावस की रात को शमशान में राक्षसों के राजा की पूजा करे। जब वह यह कर लेगी तब वह बिल्कुल ठीक हो जायेगी। उसके बाद उसके लायक कोई लड़का उसका दिल जीत लेगा।”

ऐसा कह कर वह साधु वहाँ से चला गया। मुत्तुमोहना को उसकी यह सलाह ठीक लगी। उसे अच्छी तरह मालूम था कि उसकी बेटी को किसी भूत ने नहीं घेरा है बल्कि यह सब उसके गुरू का फैलाया हुआ है।[35]

पर फिर भी उसके नाम से इस धब्बे को छुड़ाने के लिये उसने जनता में यह फैला दिया कि उसकी बेटी अमावस की रात को शमशान में राक्षसों के राजा की पूजा करने जायेगी।

अब ऐसी पूजाओं में यह एक सामान्य नियम है कि जो आदमी भूतों से घिरा हुआ है उसे अकेले ही शमशान जाना चाहिये। इस नियम के अनुसार चन्द्रलेखा अगली अमावस की रात को अकेले ही शमशान चल दी। साथ में उसके कुछ पूजा की चीज़ें थीं और एक दिया था।

कैवल्यम के पास पाँच कोस की दूरी पर ही एक बहुत बड़ा जंगल था खांडवम। वहाँ आठ डाकू रहते थे जिन्होंने सारे देश में हल्ला गुल्ला मचा रखा था। जिस समय चन्द्रलेखा शमशान जा रही थी ये डाकू अपनी उस दिन की लूट का सामान छिपाने जा रहे थे।

उनका इरादा था कि वे यह सामान छिपाने के बाद रात के पिछले प्रहर में फिर से जा कर कुछ और लूटने की कोशिश करेंगे।

---

[35] In stories like this, that of a master falling in love with the girl he has been teaching he is usually made a soothsayer. In that capacity he asks the guardian to put the girl in alight box and to float her down a river. The girl is taken by a young man and becomes his wife. A tiger or a lion then is put in the box and the teacher, a great way down the river, takes the box and wishes to marry the girl he is torn to pieces by the tiger or lion already kept in it as a fit reward for his evil intentions. But here the story takes a different turn.

सो उन्होंने अपना वह सामान रखा और वह किसी दूसरी जगह जाने के लिये निकल पड़े।

जब चन्द्रलेखा ने दूर से आती कदमों की आवाज सुनी तो वह समझ गयी कि कहीं कुछ गड़बड़ है। उसने अपनी चमकती हुई रोशनी अपनी टोकरी से ढक ली और किसी खाली जगह में जा कर छिप गयी।

डाकू आये और अपने चारों तरफ देखने लगे तो उनको कोई दिखायी नहीं दिया पर फिर भी इस बात से डरते हुए कि कहीं कोई पास में हो सकता है एक डाकू ने कन्नाकोल एक औजार लिया और उसे अपने सिर के चारों तरफ घुमा कर पूर्व की तरफ फेंक दिया।

कन्नाकोल एक औजार होता है जिससे डाकू लोग दीवारों में छेद कर के घरों मे घुसने के काम में लाते हैं। कुछ डाकुओं का कहना है कि वे इसे बिजली से पाते हैं। इसके लिये वे किसी तूफानी रात को गाय के गोबर का एक ढेर बनाते हैं जिसमें बिजली आ कर गिर जाती है और उस ढेर के बीच में एक सलाख छोड़ जाती है।

यह सलाख इतनी ताकतवर होती है कि यह किसी पत्थर की दीवार को भी बिना कोई आवाज किये तोड़ सकती है। इसके अन्दर मालिक के हुक्म मानने का भी गुण होता है।

सो जब आठों डाकुओं के सरदार ने अपना वह कन्नाकोल फेंका तो अपने गुण के अनुसार वह उसी छेद में जा कर गिरा जिसमें चन्द्रलेखा छिपी हुई थी और उसकी पीठ में चुभने लगा।

जैसे ही उसने उसे महसूस किया तो उसने उसे निकालने की कोशिश की और निकाल कर कम से कम आवाज के साथ अपने पैरों के नीचे फेंक दिया और उसके ऊपर मजबूती से खड़ी हो गयी।

डाकुओं ने धन के वे आठ बक्से जो वे अपने साथ ले कर आये थे शमशान के पास वाली रेत की जमीन में छिपाने के बाद रोज की तरह अपनी बची हुई रात बिताने चल दिये।

जैसे ही वे वहॉ से गये चन्द्रलेखा अपनी छिपी हुई जगह से बाहर निकली वह सलाख उठायी जो डाकू ने उसकी तरफ फेंकी थी डाकुओं के गाड़े गये आठ बक्से निकाले और इन सबको साथ ले कर जल्दी जल्दी अपने घर चल दी। वह जल्दी ही घर पहुॅच गयी और जा कर मॉ को अपनी कहानी सुनायी।

उसकी मॉ ने तुरन्त ही उन सब बक्सों को खाली किया उसकी सब चीज़ें सॅभाल कर रखीं। खाली बक्सों में उसने पत्थर पुराने लोहे के टुकड़े और बेकार का सामान भरा। फिर उन्हें दो दो कर के अपनी चारपायी की हर टॉग के पास रखा और सो गयी।

अब रात खत्म होने पर आ रही थी और अब डाकुओं को कुछ और सामान मिल गया था सो उसे भी गाड़ने के लिये वे वहीं आये जहॉ वे अपना पुराना सामान गाड़ कर गये था। पर उनके आश्चर्य की तो सीमा ही नहीं रही जब उन्होंने देखा कि वहॉ उनके पहले गड़े हुए आठों बक्से तो थे ही नहीं।

पर क्योंकि अब दिन निकलने वाला हो रहा था सो वे उस मामले की जाँच को अगले दिन पर छोड़ कर वापस जंगल चले गये। उनके इस बात पर बड़ा आश्चर्य था कि वे तो दूसरों पर चाल खेलते थे और आज उन्हीं के साथ कोई चाल खेल गया।

अब उनको यकीन था कि वह सलाख जो उन्होंने उस अनजान आदमी की तरफ फेंकी थी जो शमशान के पास घूम रहा था वह उससे जरूर ही घायल हो गया होगा। सो उनमें से एक ने मरहम बेचने वाले का रूप रखा, गोले के एक बर्तन में थोड़ा सा मरहम रखा और कैवल्यम शहर में मरहम बेचने चल दिया।

“सबसे अच्छा मरहम ले लो। नये पुराने जख्मों को ठीक करने वाला मरहम ले लो। मेरा मरहम खरीदो और ठीक हो जाओ।” दूसरे सातों डाकुओं ने भी अलग अलग वेश रखे और कैवल्यम की सड़कों पर चक्कर काटने लगे।

चन्द्रलेखा की दासियों में से एक दासी ने देखा कि चन्द्रलेखा की पीठ पर एक घाव है जिससे वह परेशान है। उसने तो सोचा ही नहीं था कि मरहम बेचने वाला कोई चोर होगा सो उसने मरहम बेचने वाले को घर में बुला लिया।

फिर उसने चन्द्रलेखा को बताया कि उसने एक मरहम वाले को बुलाया है अगर वह उससे कुछ मरहम खरीद लेगी तो उसको उस मरहम से फायदा होगा। चन्द्रलेखा ने मरहम वाले को देखते ही पहचान लिया कि वह उन डाकुओं में से एक था।

उधर उस नीच चोर को भी पता चल गया कि वही उसके बक्सों की चोर है क्योंकि उसका वह घाव उसी की सलाख से बना हुआ था। वे दोनों एक दूसरे से बहुत जल्दी अलग हो गये। चन्द्रलेखा ने थोड़ा सा मरहम खरीदा। मरहम बेचने वाले ने भी उसे अपनी गोले की बोतल से थोड़ा सा मरहम दिया और चला गया।

आठों चोरों ने फिर आनन्द मनाने के लिये कैवल्यम के बाहर एक जगह तय की और वहाँ सबको पता चला कि उनका सामान किसने चुराया था।

उन्होंने सोचा कि उनको इस तरह हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठना चाहिये सो उन्होंने उसी रात चन्द्रलेखा के घर में घुसने का इरादा किया और उसे और अपने बक्सों को वहाँ से लाने का प्लान बनाया।

चन्द्रलेखा बहुत होशियार थी। उसने अपने सारे खजानों को तो ताले में रख दिया और वे आठों बक्से जिनमें उसकी माँ ने पत्थर और बेकार की चीज़ें भर रखी थीं उसने अपनी चारपायी के नीचे रख लिये जिस पर वह उस रात सोने का बहाना करने जा रही थी।

समय आने पर डाकुओं ने उसके कमरे में एक छेद किया और उसके कमरे में घुस गये। वहाँ उन्होंने उसको सोता हुआ पाया। उसको यह देख कर भी बहुत खुशी हुई कि उसके आठों बक्से वहीं रखे हुए थे। उन्होंने सोचा कि लड़की तो सोयी हुई है उसके लिये हम कल आयेंगे पर ये बक्से हम आज ही ले चलते हैं।

आपस में इस तरह की बात करके उन्होंने वे आठों बक्से उठाये और ले कर घर चल दिये। जब वे घर पहुँचे तो सुबह हो गयी थी। पर जब उन्होंने अपना सामान बॉटने के लिये बक्से खोले तो आश्चर्य उनको उनमें अपने सामान की बजाय पत्थर भरे पड़े थे। यह देख कर सबने दॉतों तले उँगली दबा ली कि

"यह लड़की तो बहुत चालाक है। इसने तो हम सबको धोखा दे दिया। कोई बात नहीं। ज़रा यह दिन गुजर जाये तब देखते हैं कि यह हमारे फन्दे में फँसती है या नहीं।" इस तरह सोचते सोचते उन्होंने अपना दिन गुजार दिया।

पर इधर चन्द्रलेखा भी चुप नहीं बैठी थी। उसे पूरा यकीन था वे डाकू उसके कमरे में फिर से आयेंगे और इस मौके की तैयारी में उसने डाकुओं की सलाख से एक तेज़ चाकू बनाया और उसे अपने तकिये के नीचे रख लिया।

सामान्य रूप से वह वहॉ पान के पत्तों का थैला भी रखा करती थी जिसमें उसकी सुपारी और चूना आदि भी रहते थे।

रात आयी। चन्द्रलेखा ने उस दिन खाना जल्दी खा लिया और सोने चली गयी। इतनी जल्दी वह सो तो नहीं सकी पर वह ऑखें बन्द कर के लेटी रही।

आधी रात से पहले ही डाकू उसके कमरे में आये और आपस में बात करने लगे "ओह यह स्त्री तो बड़ी गहरी नींद सो रही है। हम इसके साथ कोई शरारत नहीं करेंगे। हम दो दो इसकी चारपायी

के चारों पायों को उठा कर इसकी पूरी की पूरी चारपायी ही जंगल ले जायेंगे और वहाँ ले जा कर हम इसे मार डालेंगे।"

इस तरह दो दो डाकू उसकी चारपायी के चारों कोनों पर खड़े हो गये और उसकी चारपायी उठा कर जंगल ले गये। अपने दुश्मन को इस तरह से जंगल में ले आने से वे बहुत खुश थे। अब वहाँ उनको उसकी सुरक्षा की तो कोई चिन्ता ही नहीं थी सो वे चारपायी को वहीं छोड़ कर अपनी गुफा की तरफ चल दिये।

इस बीच चन्द्रलेखा चारपायी पर चुपचाप नहीं लेटी हुई थी। जंगल तक के रास्ते में आम के पेड़ों के छह सुन्दर गलियारे पड़ते थे। आम का मौसम था सारे पेड़ कच्चे पक्के आमों से लदे पड़े थे। जाते समय उसने बहुत सारे आम तोड़ कर अपनी चारपायी पर रख लिये।

जब उसने कम से कम इतने आम तोड़ लिये जितने कि उसके वजन के बराबर होते तो वह एक पेड़ की डाल पकड़ कर झूल गयी। डाकू पहले की तरह चलते रहे। उनको लगा ही नहीं कि पहले उनके सिर का बोझ बढ़ गया था और फिर घट गया। हमारी चन्द्रलेखा वहीं आम के पेड़ पर सुरक्षित बैठी रह गयी।

डाकू जब अपनी गुफा में आये तब सुबह हो रही थी। डाकुओं ने अपना बोझा नीचे रखा तो देखा कि जो चारपायी वे ले कर आये थे उस पर कुछ कच्चे पक्के आम पड़े हुए थे और लड़की तो वहाँ से गायब थी।

उनके मुँह से निकला — "अरे यह लड़की हाड़ माँस की थी या फिर कोई शैतान थी।"

उनमें से एक बोला — "लगता है कि वह बहुत तेज़ है। पर फिर भी अगर हम उसे जंगल में ढूँढेंगे तो शायद वह हमें मिल जायेगी।"

फिर जैसे ही दिन की रोशनी निकली आठों डाकू लड़की खोज में निकल पड़े। इस बीच चन्द्रलेखा की भी आँख खुल गयी तो उसने देखा कि वह तो बीच जंगल में है। वह वहाँ से बच कर भाग जाने से डर रही थी क्योंकि उसके घर का रास्ता बहुत लम्बा था सो उसने दिन भर वहीं जंगल में किसी घनी झाड़ी में छिपे रहने का इरादा किया और रात होने का इन्तजार करने लगी।

अपनी चारपायी से आम के पेड़ पर लटकने से पहले चन्द्रलेखा ने अपने तकिये के नीचे वह चाकू जो उसने डाकुओं की सलाख से बनाया था और अपना पान रखने वाला थैला निकाल लिया था और उसके बाद ही वह पेड़ पर चढ़ी थी।

रात तक इन्तजार करने के लिये उसे एक खोखला पेड़ मिल गया सो वह उतर कर उस खोखली जगह में घुस गयी और रात का इन्तजार करने लगी।

सारा दिन वे आठ डाकू उसे सारे जंगल में इधर उधर ढूँढते रहे। उनमें से एक चन्द्रलेखा के पास तक आया भी पर वह उसे

दिखायी नहीं दी। वह पेड़ पर भी चढ़ा। जब वह पेड़ पर चढ़ा तब तो चन्द्रलेखा की जान ही निकल गयी।

जैसे ही डाकू ने पेड़ पर चढ़ कर उसे देखा कि तभी उसके दिमाग में एक विचार आया वह एक बड़ी मुस्कुराहट के साथ उससे बोली — "मेरे प्यारे पति। मुझे तुम्हें अपना पति ही पुकारना चाहिये क्योंकि भगवान ने तुम्हें अब उस ऊँचाई तक पहुँचा दिया है जहाँ मेरे पति को होना चाहिये। चिल्लाना नहीं। अब तुम नीचे आ जाओ हम एक दूसरे के साथ खुश रहेंगे। इसी पल से तुम मेरे पति बन जाओ और मैं तुम्हारी पत्नी।"

जब चन्द्रलेखा ने ऐसा कहा तो वह डाकू तो बहुत खुश हो गया उसका अपने साथ किये गये पुराने व्यवहार को भूल कर वह नीचे उतरने लगा। मुस्कुरा कर उसने उसका स्वागत किया। कुछ पान सुपारी उसने उसे खाने के लिये दीं और कुछ उसने खुद खायीं।

पान खाने से जो जीभ लाल हो जाती है उसे बेपढ़े लिखों के समाज में यह समझा जाता है कि पति पत्नी दोनों एक दूसरे को बहुत प्यार करते हैं। सो जब वह पान खा रही थी तो उसने अपनी जीभ उसे यह कह कर उसे दिखायी कि देखो मेरी जीभ कितनी लाल है मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूँ।

यह देख कर डाकू ने भी अपनी जीभ बाहर निकाल दी कि देखो मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ। चन्द्रलेखा ने उसकी जीभ पास से देखने के लिये बाँये हाथ से पकड़ कर खींची और तुरन्त ही दाँये

हाथ से उसे और उसकी नाक को चाकू से काट दिया। डाकू की समझ में ही नहीं आया कि यह क्या हो गया कि तभी उसने उसका गला भी काट दिया। वह मर गया।

अब शाम जल्दी ही होने वाली थी बाकी के सात डाकू भी बिना उसे लिये ही गुफा में वापस आ गये थे। वे सोचते थे कि यकीनन उनके साथी को चन्द्रलेखा मिल ही गयी होगी। उन्होंने रात भर उसका इन्तजार किया पर वह तो वापस ही नहीं आया। जो आदमी मर गया था वह वापस कैसे आता।

जैसे ही शाम ढली चन्द्रलेखा अपने घर की तरफ चल दी। अब चन्द्रलेखा इस घटना से और ज़्यादा बहादुर हो गयी थी। वह आधी रात तक सुरक्षित रूप से अपने घर पहुँच गयी थी। वह बहुत थक गयी थी सो जाते ही वह सो गयी।

सुबह उठते ही उसने अपने कमरे की दीवारें लोहे की चादरों से सुरक्षित करनी शुरू कर दीं। अपने चाकू के साथ साथ उसने अब अपने हथियारों में पिसी लाल मिर्च का थैला और जोड़ लिया था।

रात हुई तो फिर से सोने चली गयी। वास्तव में वह सोयी नहीं थी बस डाकुओं का इन्तजार कर रही थी। जैसा कि वह आशा कर रही थी आधी रात के करीब डाकुओं ने उसके कमरे की पूर्वीय दीवार में छेद किया और सात में से एक डाकू ने अपना सिर अन्दर घुसाया।

चन्द्रलेखा वहीं उस छेद के पास ही अपना चाकू और मिर्च का थैला लिये खड़ी थी तो जैसे ही डाकू ने अपना सिर अन्दर डाला उसने चाकू से उसकी नाक काट डाली और उस घाव में पिसी मिर्च डाल दी।

इतना दर्द उससे सहा नहीं गया तो उसने अपना सिर बाहर की तरफ खींच लिया। दूसरा डाकू पहले वाले डाकू को कोसते हुए कि उसने तो बहुत जल्दी ही अपनी नाक कटवा डाली अन्दर घुसा पर उसके साथ भी चन्द्रलेखा ने वही किया जो पहले के साथ किया था। उसने भी अपने आपको रोते चिल्लाते बाहर खींच लिया।

इस तरह चन्द्रलेखा ने सभी डाकुओं की नाक काट ली और उनके घावों में पिसी लाल मिर्च भर दी। कहीं कोई उन्हें पहचान न ले वे वहाँ से जितनी जल्दी भाग सकते थे जंगल भाग गये। वहाँ जा कर उन्होंने कुछ दिन आराम किया। वे चोरी करने भी कहीं नहीं जा सके।

इस तरह चन्द्रलेखा ने सभी डाकुओं को तीन चार बार पछाड़ा। अब जितना वह उन्हें पछाड़ती उतना ही ज़्यादा वह अपनी सुरक्षा के लिये चिन्तित होती खास कर के जब जबकि उसने उनके चेहरे को ज़िन्दगी भर के लिये बिगाड़ दिया था।

वह सोचती कि "चोरों के घाव जब ठीक हो जायेंगे तब एक न एक दिन वे फिर मेरे घर आयेंगे और मुझे मार डालेंगे। आखिर मैं हूँ क्या। एक लड़की ही न।"

यह सोच कर वह महल गयी और जा कर राजकुमार को अपनी और डाकुओं के बीच हुआ सब कुछ बता दिया। यह राजकुमार उसकी पढ़ाई का साथी था। वह उसकी बहादुरी के बारे में सुन कर बहुत आश्चर्य करने लगा।

उसने कहा कि जब अगली बार उसके घर डाकू आयेंगे तब वह उसकी सहायता जरूर करेगा। सो उस दिन से उसका एक जासूस चन्द्रलेखा के घर पर सोने लगा ताकि जब वे आयें तो वह राजकुमार के उनके आने की सूचना दे दे पर कई बार मात खाने के बाद डाकू भी अब चन्द्रलेखा के घर आने से डरते थे क्योंकि अब उनको यह भी मालूम हो गया था कि उसके पास उनकी सलाख से बना चाकू भी था।

इसलिये उन्होंने अब दूसरी तरकीब सोची। उन्होंने चन्द्रलेखा को नाच के बहाने जंगल में बुलाया। इसके लिये उन्होंने एक आदमी उसके घर भेजा।

नौकर चन्द्रलेखा के घर आया और उससे कहा — "आदरणीय मैम। आप जो कोई भी हैं आपका अब अमीर बनने का समय आ गया है। मैं आपके घर की स्थिति से कह सकता हूँ कि आप नाचने वालियों में से एक हैं।

मेरे मालिकों ने एक शादी के उपलक्ष्य में अपने सम्बन्धियों के लिये जंगल में एक नाच का इन्तजाम किया है। शादी परसों है।

अगर आप वहाँ आयेंगी तो मेरे मालिक आपको हर मिनट के नाच के लिये एक करोड़ मुहरें देंगे।"

नौकर के मुँह से यह सुन कर चन्द्रलेखा समझ गयी कि यह न्यौता जरूर ही उन डाकुओं का ही है फिर भी उसने उनका न्यौता स्वीकार कर लिया। उसने उस आदमी से कहा कि वह कल उसको और उसके साज़ बजाने वालों को आ कर ले जाये।

तुरन्त ही वह राजकुमार के पास गयी और उसे नाच के बारे में बताया।

उसने कहा — ""मुझे मालूम है कि यह चाल उन्हीं डाकुओं की है मुझे मारने के लिये पर इससे पहले कि वे मुझे मारें हमें उन्हें मार देना चाहिये। इस मामले में मुझे एक तरकीब सूझी है। एक नाच पार्टी सात लोगों से ज़्यादा लोगों की होती हैं – एक ढोलक बजाने वाला एक मंजीरा बजाने वाला एक नागस्वर बाँसुरी बजाने वाला आदि आदि।

सो मैं आपसे विनती करती हूँ कि आप मुझे अपने सात बहुत ताकतवर आदमी दे दें जो मेरी पार्टी के आदमी बन कर वहाँ जायेंगे। इसके अलावा आप अपने कुछ लोग आसपास की झाड़ियों में छिपा कर रखें ताकि जब हम उन्हें इशारा करें तो वे उन डाकुओं को गिरफ्तार करने आ जायें।"

चन्द्रलेखा की इस तरकीब को सबने सराहा। राजकुमार ने कहा कि वह खुद उसका ढोलक बजाने वाला बन कर उसके साथ जायेगा।

उसने अपनी फौज में से छह और ताकतवर आदमी चुने और उन सबको चन्द्रलेखा के साज़ बजाने वाले बन कर चलने के लिये कहा। एक हजार आदमी उसने अपनी फौज में से चुने और उनको नाच वाली जगह के आसपास पहरा देने के लिये कहा।

इस तरह सब तैयारी कर के वे सब सुबह को ही चन्द्रलेखा के घर से जाने के लिये तैयार हो गये।

सुबह होने के डेढ़ घंटे के बाद ही डाकुओं का नौकर चन्द्रलेखा को लेने के लिये आया जहाँ राजकुमार और उसके छह ताकतवर आदमी चन्द्रलेखा की नाच पार्टी के रूप में उसका इन्तजार कर रहे थे।

जैसे ही चन्द्रलेखा और उसकी पार्टी उस नौकर के साथ चली कि एक जासूस फौज की तरफ उनको यह बताने के लिये भागा कि चन्द्रलेखा अपने घर से चल चुकी है अब तुम लोग भी आधा घंटा की दूरी से उनके पीछे ही रहना।

काफी देर तक चलने के बाद चन्द्रलेखा अपने नाच की जगह पहुँची। उसके सब मेजबान बिना नाक के थे और कुछ की नाकों पर तो अभी भी पट्टी बँधी हुई थी। जब उन्होंने चन्द्रलेखा और

उसकी पार्टी के लोगों को सजे हुए देखा तो डाकुओं का पत्थर दिल भी कुछ मुलायम हो गया।

"अब तो वह हमारे काबू में है हम भी तो ज़रा उसका नाच देख लें। बजाय इसके कि हम इसे पहले मारें पहले हमें इसका नाच देख लेना चाहिये। सब एक आवाज में बोले "हॉ हॉ।" और उसी समय उसको नाचने का हुक्म दे दिया गया।

चन्द्रलेखा जे हर विद्या में निपुण थी उसने अपने सबसे अच्छे नाच से अपना नाच शुरू किया और सबका मन मोह लिया कि अचानक मॅजीरों पर आवाज गूॅजी "ता थेई तोम"। यह नाच खत्म होने का फौज को डाकुओं को मारने का इशारा था।

तुरन्त ही नाचने वाली के साथ जो पार्टी आयी थी उसने सातों डाकुओं को पकड़ लिया। इससे पहले कि डाकुओं के नौकर उनकी सहायता के लिये दौड़ते उन्होंने किसी फौज की पैरों की दौड़ कर आती हुई आवाज सुनी। कुछ पलों में ही राजकुमार के एक हजार लोग वहॉ मौजूद थे। इन्होंने सब डाकुओं और उनके साथियों को बन्दी बना लिया।

कैवल्यम के अन्दर बाहर दोनों ही जगह इन डाकुओं के प्रति इतना गुस्सा था कि किसी को इनके प्रति दया नहीं आयी और उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया।

राजकुमार चन्द्रलेखा के गुणों से इतना प्रभवित था कि उसके एक नाचने वाली के घर में जन्म लेने के बाद भी उसे स्त्री जाति का एक रत्न समझा और उससे शादी कर ली।

"लड़की को बाजार में खरीदो।" यह एक कहावत है फिर चाहे वह कहीं भी क्यों न पैदा हुई हो बस वह गुणवान होनी चाहिये। और चन्द्रलेखा ने अपने गुणों के द्वारा एक राजकुमार को अपने पति के रूप में पा लिया।

जब राजकुमार को चन्द्रलेखा के गुरू के असली स्वभाव का पता चला जो उसका भी गुरू था तो उसने उसे उसकी पिछली सेवाओं को ध्यान में रखते हुए केवल देश निकाला ही दे दिया।

19 किस्मत की जीत[36]

दक्षिण देश में एक ब्राह्मण का लड़का रहता था जिसे बचपन से ही संस्कृत बहुत अच्छी तरह से सिखायी गयी थी। उसने इतना सारा दर्शन पढ़ा था कि सोलह साल की उम्र तक पहुँचते पहुँचते उसका मन दुनियाँ के सुखों के त्याग की तरफ बढ़ चुका था। वह जो कुछ भी इस दुनियाँ मे देखता वह सब उसे मिथ्या या झूठ नजर आता।

सो उसने दुनियाँ छोड़ कर जंगल जाने का निश्चय कर लिया जहाँ उसने सोचा कि वह किसी बड़े साधु से मिलेगा और अपनी ज़िन्दगी के दिन खुशी और शान्ति से उसी के पास रह कर बितायेगा।

ऐसा विचार करके उसने एक दिन अपने माता पिता को बिना बताये घर छोड़ दिया और दंडकारण्य की तरफ चला गया। उस घने जंगल में बहुत दिनों तक घूमने और बहुत सारे जंगली जानवरों का सामना करने के बाद वह तुंगभद्रा नदी के किनारे पहुँच गया।

एक ऐसे जंगल में चलने और दुख झेलने के बाद जिसमें से पहले कभी कोई भी आदमी न गुजरा हो, जंगली जानवरों के बीच उसके अकेलेपन का अनुभव, उसका डर कि इतना सब सहने के बाद उसको कोई फायदा नहीं हुआ तो यानी उसे दर्शन की आगे की शिक्षा सिखाने वाला कोई गुरू न मिला तो क्या होगा।

---

[36] The Conquest of Fate. Tale No 19.

यह सब बातें उसके दिमाग में बार बार घूम जातीं। वह बहुत निराश हो गया था और थक गया था सो उसने अपने चारों तरफ देखा जितनी दूर तक वह देख सकता था।

यह क्या सच था या फिर कोई कल्पना थी। उसने अपने सामने पत्तों से बनी हुई एक कुटिया देखी। अब अकेले यात्री के लिये अगर कोई शरण की जगह दिखायी ही दे जाये तो वह बहुत बड़ी बात थी। सो वह उस्सकी तरफ चलता चला गया जब तक उसे यह पक्का नहीं हो गया कि वहाँ सचमुच ही पत्तों की बनी हुई एक कुटिया थी।

वह उसमें गया तो एक बहुत ही बूढ़े ब्राह्मण ने जो अस्सी साल से भी ऊपर की उम्र का था हमारे नौजवान दार्शनिक का स्वागत किया। उस पत्तों की कुटिया के मालिक ने बड़ी मीठी आवाज में पूछा — “मेरे बच्चे। तुम्हें यहाँ इतने घने जंगल में क्या चीज़ खींच लायी है।”

हमारा नौजवान लड़का सुब्रमन्य बोला — “ज्ञान की खोज। ऊँचे ज्ञान की खोज।”

बूढ़ा साधु बोला — बैठ जाओ मेरे बच्चे।” वह बहुत खुश थे कि इस कलियुग में भी जो एक पापियों का युग था एक आदमी ऐसा था जिसने ऊँचा ज्ञान प्राप्त करने के लिये अपना घर छोड़ दिया। ऐसा व्यवहार पा कर लड़का बहुत खुश हुआ कि कम से कम वह जंगली जानवरों से तो बचा।

अब हम उस साधु के बारे में जानने की कोशिश करते हैं जिसके पास सुब्रमन्य पहुँच गया था। इस कलियुग में भी पुराने दिनों में विद्वान लोग जब दुनियाँ को भोग लेते थे तो वे जंगल चले जाते थे ताकि वे अपनी ज़िन्दगी के आखिरी दिन शान्ति से अकेले ध्यान में गुजार सकें।

कोई पत्नी को साथ ले लेते थे कोई नहीं भी लेते थे। जब वे अपनी पत्नी को साथ ले जाते थे तब उसे वानप्रस्थ आश्रम में जाना कहते थे।

यह बूढ़ा साधु अपनी इसी वानप्रस्थ आश्रम से गुजर रहा था क्योंकि जंगल में इसकी पत्नी भी इसके साथ रहती थी। इस साधु का नाम था ज्ञाननिधि। जंगल आ कर इसने तुंग और भद्रा के संगम पर अपनी पत्तों की एक कुटिया बना ली थी और यहीं रह कर वह दिन रात ध्यान करता था।

हालाँकि यह उम्र में बड़ा था पर अभी भी इसमें आदमी की तरह ताकत थी क्योंकि इसने अपनी जवानी बहुत अच्छे से गुजारी थी। इसकी यह बाद की ज़िन्दगी बिल्कुल पापरहित और सादा थी।

यह आदमियों से दूर भगवान के पास यह अपने दिन गुजारा करता था। जंगल से इसे जड़ पत्ते फल फूल मिल जाते थे और तुंगभद्रा से इसे पीने के लिये ठंडा जल मिल जाता था। यह बहुत ही सादगी से रह रहा था —

पहाड़ों की तरफ से मैं उनके घास के मैदानों से निर्दोष खाना लाता हूँ
थैला भर कर पत्ते और फल और नदी से साफ पानी

उसकी वफादार पत्नी यह सब ले कर आती थी जबकि ज्ञाननिधि अपना सारा समय ध्यान में गुजारता था। तो इस तरह का था ज्ञाननिधि जिसके घर में हमारे नौजवान दार्शनिक सुब्रमन्य ने अपना ठिकाना बनाया था।

दोनों एक दूसरे से सवाल पूछ कर बहुत खुश थे कि किस्मत ने उन दोनों को मिला दिया था। ज्ञाननिधि अपना बहुत मुश्किल से कमाया हुआ ज्ञान सुब्रमन्यम को देने में बहुत खुश था क्योंकि जिस इच्छा के साथ उसने दुनियाँ छोड़ कर जंगल को अपनाया था उसकी सिखायी हुई चीज़ों को वह बहुत जल्दी जल्दी सीख रहा था।

सुब्रमन्य ने भी अपने गुरू की पत्नी को उसके काम से आजाद कर दिया था। अपने परिवार के लिये अब जंगल से पत्ते फल फूल आदि वह खुद लाया करता था। इस तरह पाँच साल बीत गये। सुब्रमन्य आर्यों के कई तरह के दर्शन में होशियार हो गया।

ज्ञाननिधि को तुंगभद्रा नदी का स्रोत देखने की बहुत इच्छा थी पर उसकी पत्नी को दो महीने बाद बच्चा होने वाला था इसलिये वह उसको साथ ले कर नहीं जा सकता था। उसकी देखभाल के लिये उसे अपने शिष्य सुब्रमन्य को वहीं छोड़ना पड़ा।

सो उसने अपनी पत्नी को सुब्रमन्य की देखभाल में छोड़ा। एक दूसरे साधु की पत्नी को अपनी पत्नी के साथ के लिये छोड़ा जिसे वह किसी दूसरे जंगल से ले कर आया था और ज्ञाननिधि तुंगभद्रा नदी का स्रोत देखने चला गया।

अब हिन्दुओं में यह एक बहुत ही पक्का विश्वास है कि ब्रह्मा जी जब कोई आदमी धरती पर आता है तो उसकी ज़िन्दगी में होने वाली घटनाऐं पहले ही उसके माथे पर लिख देते हैं और यह काम वह उसके जन्म के समय ही करते हैं।

जब भगवान यह करते हैं तो कोई उन्हें देख तो नहीं सकता पर सुब्रमन्यम की ऑखें सामान्य नहीं थीं। ज्ञाननिधि ने जो उसे सबसे ऊॅचा ज्ञान दिया था उससे उसे बहुत आसानी से पता चल गया कि उसके गुरू की पत्नी के कमरे में कोई अदृश्य रूप से घुस गया है।

यह पता होते ही वह ज़ोर से पर आदर सहित बोला — "सर। आप यहॉ रुक जाइये।"

बड़े भगवान कॉप गये क्योंकि उन्हें तो अपना काम करने के लिये अनगिनत मकानों में घुसने की आदत थी पर तब तक किसी आदमी ने उन्हें देखा नहीं था और रुकने के लिये नहीं कहा था। यह देख सुन कर तो वह बहुत ही आश्चर्यचकित रह गये।

वह चौंकते से अभी खड़े थे कि एक बार आवाज और आयी — "आप जैसी बड़ी उम्र वाले को मेरे गुरू की पत्नी के कमरे में घुसना शोभा नहीं देता। मैं यहॉ उनकी पहरेदारी कर रहा हूॅ और मैं

आपको अन्दर जाने की इजाज़त नहीं दे रहा। मेरे गुरू की पत्नी की तबियत ठीक नहीं है। मेहरबानी कर के आप बाहर ही रुक जाइये।"

अब क्योंकि ब्रह्मा जी को तो आने वाले बच्चे का भविष्य लिखने की जल्दी थी सो उन्होंने जल्दी से सुब्रमन्य को समझाने की कोशिश की कि वह कौन थे और वहाँ किसलिये आये थे।

जैसे ही हमारे नौजवान हीरो को उनके बारे में पता चला जो उसके सामने खड़े थे तो वह उठ कर खड़ा हो गया और अपना आदर दिखाने के लिये उसने अपना ऊपर पहनने वाला कपड़ा अपनी कमर में बाँध लिया। फिर उसने दुनियाँ बनाने वाले की तीन बार परिक्रमा की और उनके पैरों में लेट गया।

ब्रह्मा जी के पास ज़्यादा समय नहीं था। वह तुरन्त ही वहाँ से जाना चाहते थे पर हमारा नौजवान उनके पैर ही नहीं छोड़ रहा था जब तक कि उन्होंने उसे यह नहीं समझा दिया कि उनके उस बच्चे के माथे पर लिखने का क्या मतलब था।

ब्रह्मा जी बोले — "मेरे बच्चे। मैं खुद नहीं जानता कि मेरे लोहे के नाखून उस बच्चे के माथे पर क्या लिखेंगे। जब बच्चा पैदा होगा तब मैं अपना नाखून उसके माथे पर रखूँगा तो वह बच्चे के पुराने जन्मों के कर्मों के आधार पर उसकी किस्मत लिखेंगे। तुम मुझे देर मत करो। मेरे लिये देर करना ठीक नहीं है। मुझे अन्दर जाने दो।"

इस पर सुब्रमन्य बोला — "तब कम से कम जब आप यहाँ से जायेंगे तब तो आप मुझे बता कर जायेंगे कि आपने उसकी किस्मत में क्या लिखा है।"

ब्रह्मा जी राजी हो गये और अन्दर चले गये। पल भर बाद ही वह बाहर आ गये और बोले — "मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैंने होने वाले बच्चे के माथे पर क्या लिखा पर अगर तुम यह बात किसी को बताओगे तो तुम्हारे सिर के हजारों टुकड़े हो जायेंगे।

यह बच्चा लड़का है। इसकी आगे की ज़िन्दगी बहुत मुश्किल है। एक भैंस और एक बोरी अनाज से इसका गुजारा होगा। क्या कर सकते हैं। शायद इसने अपनी पुरानी ज़िन्दगी में कोई अच्छा काम नहीं किया इसी लिये इसको अपने पापों का फल तो भोगना ही पड़ेगा।"

"क्या ओ परम ब्रह्म? इसके पिता तो एक बहुत बड़े साधु हैं। क्या एक साधु के बेटे की किस्मत में यही लिखा है।" कह कर साधु का सच्चा शिष्य रो पड़ा।

ब्रह्मा जी बोले — "इस मामले में मैं क्या कर सकता हूँ। पुराने जन्म के कर्मों का फल इस जन्म में तो भुगतना पड़ता है। पर यह याद रखना कि अगर तुमने यह बात किसी को बतायी तो तुम्हारे सिर के हजारों टुकड़े हो जायेंगे।"

यह कह कर ब्रह्मा जी चले गये और सुब्रमन्य वहीं यह सोचता बैठा रह गया कि एक साधु के बेटे को इतनी मुश्किल ज़िन्दगी जीनी

पड़ेगी यह सब सहना पड़ेगा। वह तो इस बारे में अपने होठ भी नहीं खोल सकता था क्योंकि अगर उसने ऐसा किया तो उसके सिर के हजारों टुकड़े हो जायेंगे।

इस दुख में कुछ दिन गुजर गये। जब ज्ञाननिधि अपनी तीर्थ यात्रा से लौटे तो अपनी पत्नी और बच्चे को देख कर बहुत खुश हुए। उन विद्वान के साथ में सुब्रमन्य अपना दुख भूल गया।

उसको वहॉ पढ़ते लिखते तीन साल और बीत गये। गुरू जी फिर से तुंगभद्रा नदी के स्रोत की तीर्थयात्रा पर जाने के लिये इच्छुक थे। इत्तफाक से उनकी पत्नी को उस समय भी बच्चे की आशा थी। सो इस बार भी उन्होंने वही किया जो पिछली बार किया था। उन्होंने अपने शिष्य और एक साधु की पत्नी को घर छोड़ा और चले गये।

एक बार फिर बच्चे के जन्म के समय ब्रह्मा जी वहॉ आये पर इस बार उनको अन्दर जाने में कोई खास परेशानी नहीं हुई क्योंकि सुब्रमन्य को पता था कि वह वहॉ क्यों आये थे।

जब सुब्रमन्यम ने उस बच्चे की किस्मत के बारे में पूछा तो ब्रह्मा जी ने फिर उसी वायदे के साथ उसे इस बच्चे का भविष्य भी उसको बता दिया। यह बच्चा एक लड़की होगी। और वह ओछे और छोटे किस्म की लड़की होगी।

यह सुन कर तो हमारा नौजवान दार्शनिक और भी परेशान हो गया और इतना ज़्यादा परेशान हो गया कि उसे यहाँ शब्दों में नहीं बताया जा सकता।

काफी कोशिश करने के बाद वह अपने आपको दर्शन के ज्ञान की सहायता से थोड़ा शान्त कर सका – कि किस्मत अकेली ही दुनियाँ पर राज करती है।

समय आने पर ज्ञाननिधि अपनी यात्रा से वापस आ गये। हमारे नौजवान शिष्य ने उनके साथ दो और साल बिताये। दस साल के ऊपर समय बीतने के बाद लड़का पाँच साल का हो गया और बेटी दो साल की हो गयी। जितना वे बड़े होते जाते थे सुब्रमन्य उनके लिये उतना ही चिन्तित होता जाता था।

एक दिन उसने गुरू जी से कहा कि वह दूर हिमालय और दूसरे पर्वतों पर जाना चाहता है। ज्ञाननिधि ने भी सोचा कि अब वह काफी सीख गया है सो उसको उसकी उत्सुकता शान्त करने की इजाज़त दे दी।

हमारा हीरो चला। कई साल बाद कई शहरों से गुजरने के बाद कई विद्वानों से मिलने के बाद वह हिमालय पहुँच गया। वहाँ उसे बहुत सारे साधु मिले। वह वहाँ उनके साथ कुछ समय तक रहा। वह एक ही जगह नहीं रहा क्योंकि उसका उद्देश्य तो दुनियाँ देखने का था। इसलिये वह एक जगह से दूसरी जगह जाता रहा।

बीस साल की लम्बी और मजेदार यात्रा के बाद वह फिर से तुंगभद्रा के किनारे उसी जगह लौटा जहॉ वह दस साल रह कर गया था जहॉ उसने ज्ञाननिधि से दर्शन की शिक्षा पायी थी। पर वहॉ न तो अब ज्ञाननिधि ही थे और न ही उनकी पत्नी। वे दोनों बहुत पहले ही मृत्यु का शिकार बन गये थे।

यह देख कर वह बहुत दुखी हुआ कि उसके गुरू और उनकी पत्नी अब दोनों ही वहॉ नहीं थे। सो वह पास के एक शहर चल दिया। वहॉ काफी ढूॅढने के बाद उसे एक कुली मिला जिसके पास केवल एक भैंस थी। किस्मत जो ब्रह्मा जी ने अपने नाखून से उसके गुरू के बेटे के माथे पर लिखी थी तुरन्त ही उसके दिमाग में दौड़ गयी।

वह उस कुली की तरफ बढ़ा तो पास से देखने पर उसे पता चल गया कि वह उसके गुरू जी का ही बेटा था क्योंकि उसकी शक्ल उसके गुरू जी से काफी मिल रही थी। यह देख कर उसके दुख की सीमा नहीं रही कि उसके इतने विद्वान गुरू जी का बेटा इस तरह से एक भैंस की देखभाल कर रहा था।

वह उसके घर तक गया तो उसने देखा कि उसकी एक पत्नी है और दो बच्चे हैं। उसके घर में अनाज का केवल एक बोरा रखा हुआ है और कुछ भी नहीं है। जिसमें से वह थोड़ा सा अनाज रोज अपनी पत्नी को घर के खाने के लिये देता था।

चावल पकाया जाता और सारा परिवार कुली की थोड़ी सी आमदनी से अपने आपको किसी तरह से ज़िन्दा रखता। हर बार जब भी अनाज के बोरे में से अनाज खत्म हो जाता तो वह उसे फिर से भर लेता। इस तरह से ब्रह्मा जी के नाखून से लिखे अनुसार वह अपने दिन बिता रहा था। गुरू जी के बेटे का नाम कपाली था।

उसने कपाली से पूछा — "क्या तुम्हें मेरी याद है कपाली।"

कुली एक अजनबी के मुँह से अपना नाम सुन कर आश्चर्य में पड़ गया।

वह बोला — "मुझे अफसोस है कि मैं आपको पहचान नहीं सका जनाब।"

तब सुब्रमन्य ने उसे बताया कि वह कौन था और उससे विनती की कि वह उसकी सलाह माने। वह बोला — "मेरे बच्चे। मैं तुमसे जैसा कहता हूँ तुम वैसा ही करो। कल सुबह तुम सुबह सवेरे उठो और अपनी भैंस और अनाज के बोरे को बाजार ले जाओ। जितने दाम में भी वे बिकें उन्हें बेच आओ और इस बारे में दोबारा मत सोचना।

उन्हें बेच कर जो पैसा तुम्हें मिले उससे बहुत अच्छा खाना खरीद कर लाओ और उसे आज ही सारा खा जाओ कल के लिये एक कौर भी बचा कर नहीं रखना।

उसके बाद तुम्हें एक दिन में तुम जितना खा सकते हो उससे कहीं ज़्यादा खाना मिलेगा। बिना उसे कल के लिये बचाने के उसको

भी तुम उसी दिन खत्म कर लेना। ज़रा सा भी नहीं बचाना। उससे कई ब्राह्मणों को खाना खिलाना। यह मत सोचना कि मैं तुम्हारी बरबादी के लिये तुम्हें ऐसा बता रहा हूँ।

अन्त में तुम देखोगे कि तुम्हारे पिता का यह शिष्य तुम्हारी ही समृद्धि के लिये यह सब बता रहा है।"

पर जो कुछ सुब्रमन्यम ने उससे कहा उसे उस पर विश्वास ही नहीं हुआ। कपाली ने सोचा "अगर जो कुछ मेरे पास है मैं उसे सारा का सारा आज ही बेच दूँगा तो कल मैं अपनी पत्नी और बच्चों को क्या खिलाऊँगा।"

ऐसा सोच कर उसने अपनी पत्नी से राय ली। उसकी पत्नी एक बहुत ही गुणी और अक्लमन्द स्त्री थी। वह बोली — "स्वामी। हमने सुना है कि आपके पिता एक बहुत बड़े महात्मा थे। यह उनका शिष्य है इसे भी उतना ही बड़ा महात्मा होना चाहिये। एक महात्मा हमें बर्बाद करने के लिये ऐसी सलाह नहीं देगा। हमें इन महात्मा की सलाह माननी चाहिये।"

जब कपाली की पत्नी ने उससे ऐसा कहा तो उसने तय कर लिया कि वह अपनी भैंस और अनाज का बोरा कल सुबह ही बेच देगा। और फिर उसने वैसा ही किया।

उन्हें बेच कर उसे जो पैसे मिले उनसे तो वह इतना खाना खरीद सका जो **50** ब्राह्मणों के लिये काफी होता। सो उस दिन उसने पहले दिन **50** ब्राह्मणों को खाना खिलाया।

रात हुई और कपाली सोने चला गया पर वह सो नहीं सका। इस समय सुब्रमन्य बाहर बरामदे में नंगी जमीन पर सो रहा था। कपाली सुब्रमन्य के पास आया और बोला — "ओ पवित्र साधु। आधी रात हो गयी है। अब सुबह होने में केवल सात घंटे ही बाकी हैं। मैं अपने भूखे बच्चों के लिये सुबह क्या करूँगा।

जो कुछ मेरे पास था वह सब तो मैंने खर्च कर दिया। मेरे पास सुबह के लिये ठंडे चावलों तक का एक कौर भी नहीं है। मैं अपने परिवार को क्या खिलाऊँगा।"

तब सुब्रमन्य ने उसे अपनी मुट्ठी में बन्द कुछ पैसे दिखाये। वे पैसे अगर भगवान ने उनकी कोई सहायता नहीं की तो एक भैंस और एक बोरा अनाज खरीदने के लिये काफी थे। और उससे बची हुई रात में शान्ति से सोने के लिये कहा।

कपाली अभी केवल चार घंटे ही सोया होगा कि उसने एक सपना देखा कि उसका सारा परिवार – उसकी पत्नी और बच्चे सब एक मुट्ठी चावल के लिये चीख रहे हैं। अचानक उसकी ऑख खुल गयी और वह अपनी गरीबी को कोसने लगा जिसकी वजह से उसके दिमाग में ऐसे विचार आते रहते थे।

सूरज भगवान को ऊपर उठने में अब केवल दो ही घंटे बाकी बचे थे। इससे पहले ही वह अपना नहाना धोना और पूजा कर लेना चाहता था सो वह अपने बागीचे के कुॅए पर नहाने चला गया।

भैंस का शैड भी बागीचे में ही बना हुआ था। यह उसका रोज का प्रोग्राम था कि वह नहाने से पहले भैंस को ताजा घास दिया करता था। उस दिन उसने सोचा कि आज तो उसे सुबह का यह काम नहीं करना पड़ेगा क्योंकि अपनी भैंस तो वह कल ही बेच आया था।

पर आदत के अनुसार उसकी नजर उधर चली गयी। यह क्या उस शैड में तो एक भैंस खड़ी हुई थी। उसने अपनी गरीबी को फिर से कोसा कि गरीबी उसे क्या क्या दिखाती है। उसने तो अपनी भैंस कल ही बेच दी थी फिर यह भैंस यहाँ कहाँ से आ गयी।

सो वह भैंस के शैड में गया तो देखा कि वहाँ तो सचमुच ही एक असली भैंस खड़ी हुई थी। उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। वह तुरन्त ही घर वापस गया और एक दिया ले कर आया। तब उसने उस दिये की रोशनी में देखा कि एक असली भैंस खड़ी हुई थी और एक बोरा अनाज वहीं रखा हुआ था।

वह तो खुशी से पागल सा हो गया तुरन्त ही यह सब बताने के लिये वह अपने मेहमान के पास दौड़ा गया। जब सुब्रमन्य ने यह सुना तो उसने मुँह बना कर कहा — "मेरे प्यारे कपाली। तुम अभी से इतना खुश क्यों होते हो। आज भी तुम इस भैंस और बोरी को बाजार ले जाओ और इसे कल की तरह बेच आओ।"

अबकी बार कपाली ने उससे एक सवाल भी नहीं किया। वह सुबह होते ही उन दोनों को बाजार ले गया और उन्हें बेच कर उसके

पैसे से खाना खरीद लाया। उस दिन भी उसने **50** ब्राह्मणों को खाना खिलाया और तीसरे दिन के लिये कुछ भी बचा कर नहीं रखा गया। कपाली के घर में ऐसा ही चलता रहा।

कपाली अपने भैंस के शैड मे रोज एक भैंस और एक बोरा अनाज रखा पाता। वह उसे उसी दिन बेच कर खाना खरीद लाता और ब्राह्मणों को खाना खिलता और अगले दिन के लिये कुछ भी बचा कर नहीं रखता।

इस तरह से एक महीना बीत गया। एक दिन सुबमन्य बोला — "मेरे प्यारे कपाली। मैं तुम्हारे पिता का शिष्य हूँ मैं कभी तुम्हें ऐसी कोई सलाह नहीं दूँगा जो तुम्हारा कल्याण न करे।

जब मुझे मालूम हुआ कि तुम बहुत बड़े साधु ज्ञाननिधि के बेटे हो और इस तरह की दुखपूर्ण ज़िन्दगी बिता रहे हो तो मैं तुम्हारा दुख दूर करने चला आया। अब मेरा काम यहॉ खत्म हुआ। मैंने तुम्हें आराम से रहने का तरीका बता दिया।

तुम यह रोज करते रहना जैसा कि पिछले महीने से करते चले आ रहे हो। कभी कुछ बचा कर नहीं रखना क्योंकि अगर तुमने इस खुशी का छोटा सा हिस्सा भी बचा कर रखा तो तुम्हारी यह सारी की सारी खुशी चली जायेगी और तुम फिर से अपनी दुखभरी ज़िन्दगी बिताने पर मजबूर हो जाओगे।

तुम्हारी तरफ से मेरा काम खत्म हुआ। अगर तुम्हारे मन में इकट्ठा करने की लालसा जाग गयी तो तुम फिर से अपनी पुरानी ज़िन्दगी बिताने लगोगे इसलिये याद रखना कि इकट्ठा नहीं करना।"

कपाली ने उसकी बात को शब्द ब शब्द पालन करने का वायदा किया और उससे घर में ही रहने के लिये कहा।

इस पर सुब्रमन्य ने कहा — "बेटा तुम्हारे घर में रहने की बजाय मेरे पास कुछ और अच्छा काम है करने के लिये। इसलिये अभी मुझे माफ करो। पर इससे पहले कि मैं तुम्हारे घर से जाऊँ मुझे यह बताओ कि तुम्हारी बहिन कहाँ है।

बीस साल पहले जब मैं उसे छोड कर गया था तब वह केवल दो साल की थी। अब तो वह **22–23** साल की हो गयी होगी। मुझे बताओ कहाँ है वह।"

बहिन का नाम सुन कर कपाली की आँखों से आँसू बहने लगे। वह रोते रोते बोला — "ओ मेरे मालिक। उसके बारे में न पूछो। वह तो दुनियाँ के लिये जैसे खो ही गयी है। मुझे तो उसके बारे में सोचने से भी शर्म आती है। इस खुशी के मौके पर हमें उस नीच के बारे में क्यों सोचना चाहिये।"

यह सुन कर सुब्रमन्य के दिमाग में जो कुछ ब्रह्मा जी ने उसकी किस्मत में लिखा था वह उसे याद हो आया। वह समझ गया कि कपाली क्या कहना चाहता था।

वह बोला — "तुम उन बातों को छोड़ो बस तुम मुझे बताओ कि वह है कहाँ।"

तब कपाली ने अपने आँसू बहाते हुए कहा कि ज्ञाननिधि की बेटी यानी उसकी बहिन बराबर वाले गाँव में एक बहुत ही खराब ज़िन्दगी जी रही है और उसका नाम कल्याणी है।

सुब्रमन्य ने कपाली के बच्चों को आशीर्वाद दिया उसे एक बार फिर चतावनी दी और कपाली और उसकी पत्नी से विदा ले कर वहाँ से चल दिया। उसने अपने गुरू के बेटे के लिये वह जो कुछ कर सकता था वह किया अब उसने अपने गुरू की बेटी को सुधारने का निश्चय कर लिया जो अब उसके लिये सबसे पहला काम था।

वह उस गाँव की तरफ चल दिया जो उसे कपाली ने बताया था। वह शाम तक वहाँ पहुँच गया और उसके घर जा कर उसका दरवाजा खटखटाया। दरवाजा तुरन्त ही खुल गया। पर उस दिन अपने घर के दरवाजे पर एक ऐसा चेहरा देखा जैसा कि उसने कभी देखने की आशा ही नहीं की थी।

आने वाले ने पूछा — "क्या तुम मुझे जानती हो कल्याणी।"

उसने जवाब दिया कि वह उसे नहीं जानती थी। तब उसने उसे बताया कि वह कौन था। जब उसे यह पता चला कि वह आदमी जो उसके सामने खड़ा है उसके पिता का शिष्य है तो वह बहुत ज़ोर ज़ोर से रो पड़ी।

यह विचार कि इतने बड़े और पवित्र साधु की बेटी होते हुए भी उसने यह किस तरह की नीच ज़िन्दगी अपना रखी है जो दुनियाँ में सबसे ज़्यादा शर्मनाक है उसके दिल को दुखी कर दिया।

वह उसके पैरों पर गिर पड़ी और उससे माफी माँगी। तब उसने अपने दुख उसे बताये और फिर उसे वे परिस्थितियाँ बतायीं जिनकी वजह से वह ऐसी ज़िन्दगी गुजारने पर मजबूर हुई थी।

तब उसने उसको तसल्ली दी और कहा — "प्यारी बेटी। जब मैं देखता हूँ कि जरूरत ने तुम्हें इस तरह की ज़िन्दगी जीने पर मजबूर कर दिया है तो मेरा दिल रोता है। पर मैं तुम्हारी इज़्ज़त तुम्हें वापस दिला सकता हूँ अगर तुम मेरा कहा मानो तो।

आज की रात से तुम अपने घर का दरवाजा बन्द कर लो और केवल उसी के लिये दरवाजा खोलना जो तुम्हारे लिये एक माप पहले पानी के मोती ले कर आये। तुम मेरी इस सलाह को एक दिन मानो फिर मैं तुम्हें और आगे कोई सलाह दूँगा।

एक बड़े साधु की बेटी होने के बावजूद जरूरत की मजबूरी की वजह से जो कुछ उसे करना पड़ रहा था उनकी वजह से वह सुब्रमन्य की बात मानने के लिये तुरन्त ही तैयार हो गयी।

उसने अपने घर का दरवाजा बन्द कर दिया और किसी को भी नहीं खोला जब तक कि उनमें से कोई उसके एक माप पहले पानी के मोती ले कर नहीं आता। उसके घर आने वालों को लगा कि कल्याणी पागल हो गयी है सो वे वापस चले गये।

अब रात होने वाली थी उसके सारे दोस्त निराश हो कर वापस चले गये थे। उस गाँव में ऐसा कौन था जो उसके लिये पहले एक माप पानी के मोती ले कर आता। लेकिन जैसा कि ब्रह्मा जी ने अपने नाखूनों से जो कुछ उसकी किस्मत में लिख दिया था तो कोई तो था जो उसकी शर्त पूरी करता।

और क्योंकि कोई आदमी इस शर्त को पूरा नहीं कर सकता था तो ब्रह्मा जी को खुद को ही एक नौजवान का रूप रखना पड़ा। रात के पिछले प्रहर में वह एक माप मोती ले कर वहाँ आये और उसका दरवाजा खटखटाया। कुछ देर वह वहाँ रहे और सुबह होने से पहले ही चले गये।

अगले दिन सुबह कल्याणी ने अपने पिता के शिष्य को यह बताया तो वह जान गया कि उसकी तरकीब काम कर रही थी। उसने कल्याणी से कहा — "बेटी आज से तुम अपनी पुरानी हालत में लौट रही हो। इस दुनियाँ में बहुत कम लोग ऐसे हैं जो एक रात में एक माप भर मोती तुम्हें दे जायेंगे।

इसलिये जो तुम्हें कल रात एक माप भर कर मोती दे गया वही तुम्हें उन्हें आगे भी देता रहेगा और वही तुम्हारा होने वाला पति होगा। और किसी दूसरे आदमी को तुम्हारा चेहरा नहीं देखना चाहिये। तुम मेरा कहा करती रहना।

जो मोती वह ले कर आये तुम उन्हें रोज बाजार में बेचती रहना और उस पैसे को गरीबों को खाना और दूसरे दानों के लिये खर्च

करती रहना। उसमें से कुछ भी तुम अगले दिन के लिये बचा कर नहीं रखना। बल्कि इस इच्छा को भी अपने मन में पनपने नहीं देना।

जिस दिन तुम मेरी सलाह नहीं मानोगी उसी दिन से तुम अपना पति खो दोगी और तुम्हें अपनी पुरानी वाली नीच ज़िन्दगी बितानी पड़ जायेगी।"

सुब्रमन्यम ने उससे ऐसा कहा तो उसने उसकी बात तुरन्त ही मान ली। उसके बाद वह उसके घर के सामने वाले पेड़ के नीचे रहने चला गया। वह वहाँ से देखता रहा कि उसकी तरकीब काम कर रही थी या नहीं। उसने देखा कि उसकी कोशिश सफल हो गयी थी।

इस तरह अपने गुरू के दोनों बच्चों को समृद्धि देने के बाद सुब्रमन्य ने कल्याणी से विदा ली। उसकी इजाज़त लेने पर जो उसे बड़ी मुश्किल से मिल पायी उसने अपनी यात्रा फिर शुरू की।

एक चाँदनी रात आधी रात के समय उसकी आँख खुल गयी। कुछ कौए काँव काँव कर रहे थे सो उसे लगा कि सुबह हो गयी सो वह उठ कर अपनी यात्रा पर चल दिया। वह बहुत दूर नहीं गया था कि उसे एक सुन्दर आदमी मिला जो उसी की ओर आ रहा था।

उसने देखा कि उसके एक कन्धे पर अनाज का एक बोरा रखा हुआ था उसके कन्धे से मोती का एक थैला लटका हुआ था और उसके आगे आगे एक भैंस चल रही थी।

सुब्रमन्य ने पूछा — “जनाब आप कौन हैं और इस जंगल में से हो कर कहाँ जा रहे हैं।”

आते हुए आदमी ने अपना अनाज का बोरा अपने कन्धे से नीचे रख दिया और ज़ोर ज़ोर से रोने लगा और बोला — “हर रात कपाली के घर यह अनाज को बोरा ले जाते ले जाते तो मेरा सिर ही गंजा हो गया है। यह भैंस मैं रोज कपाली के शैड में ले जाता हूँ और मोती का यह थैला मुझे रोज कल्याणी के घर ले जाना होता है।

मैंने तो अपने नाखून से उनके सिर पर उनकी किस्मत लिखी थी पर तुम्हारी तरकीबों से मुझे उन्हें वह देना पड़ता है जो मैंने उनकी किस्मत में लिखा था। तुम मुझे इस मुसीबत से कब छुटकारा दिलाओगे।”

इस तरह ब्रह्मा जी रोते रहे क्योंकि वहाँ और कोई आदमी तो था नहीं। वह तो सबके बनाने वाले और रखवाले थे।

जब सुब्रमन्य ने अपने गुरू के बच्चों को तरकीब बतायी थी तबसे उन बच्चों ने अपनी अपनी किस्मत जीत ली थी और इस तरह से ब्रह्मा जी को भी जीत लिया गया था। सो उन्होंने उनको हमेशा के लिये वह सुविधाऐं दे दी थीं और खुद उस काम से छुट्टी पा ली थी।

20 ब्राह्मण पुजारी जो अमीलदार बन गया[37]

कर्नाटक देश में एक बड़ा मशहूर राजा राज करता था जिसका नाम था चामुंडा। गुंडप्पा नाम का एक घरेलू पंडित उसकी सेवा करता था। वह सब रस्मों में बहुत होशियार था।

एक दिन चामुंडा पान खाते खाते गुंडप्पा से बोला। गुंडप्पा उसके सामने ही बैठा था। वह बोला — "मेरे प्रिय पंडित। तुम मेरी सारी धार्मिक रस्में बहुत अच्छी तरह से कराते रहे हो। मैं तुमसे बहुत खुश हूँ। तुम्हारी क्या इच्छा है बोलो मैं उसे पूरी करने की कोशिश करूँगा।"

पंडित को यह सुन कर बहुत खुशी हुई वह बोला — "मेरी हमेशा से यह इच्छा रही है कि मैं एक अमीलदार[38] बनूँ ताकि मैं बहुत सारे लोगों के ऊपर राज कर सकूँ। अगर योर मैजेस्टी चाहें तो मेरी इच्छा पूरी हो सकती है।"

राजा बोला — "ठीक है।"

सो जब नंजनगोडा की अमीलदारी खाली हुई तो राजा ने उसे यह सोचते हुए कि यह तो बहुत ही अक्लमन्द है और अपना काम बहुत अच्छे से करता है सो वह यह काम भी ठीक से करेगा उसे उस गॉव का अमीलदार बना दिया।

---

[37] The Brahman Priest Who Became an Amildar. Tale No 20. A Kannad story.

[38] Amildar means "Head of a Village"

वहाँ भेजने से पहले राजा ने गुंडप्पा को तीन सलाह दीं —

एक, तुम हमेशा ब्लैक दिखायी देने चाहिये। मतलब हमेशा गुस्से में दिखायी देने चाहिये।

दूसरे, जब तुम राजकाज के मामले की बात करो तो तुम छिपे तौर पर उसका कान काट लेना। मतलब कि तुम उसे गुप्त रूप से कहना।

तीसरे ठीक से राज करने के लिये हर एक के बाल[39] तुम्हारे पास होने चाहिये। मतलब तुमको हर आदमी पर अपना अधिकार इस्तेमाल कर के हर एक को अपने काबू में रखना चहिये।

गुंडप्पा ने राजा की इन सलाहों को बड़े ध्यान से सुना। राजा ने भी देखा कि वह उसकी सलाहों को बड़े ध्यान से सुन रहा था सो उसे लगा कि वह उसकी बातें समझ गया है। राजा ने उसे फिर वहाँ की नियुक्ति का कागज दे दिया और गुंडप्पा खुशी खुशी अपने घर लौट आया।

घर आ कर उसने अपनी पत्नी को अपने नये काम के बारे में बताया और कहा कि वह अपना यह नया काम बहुत जल्दी शुरू करना चाहता है।

उधर राजा ने भी अपने कुछ दूत नंजनगोडा भेज कर यह खबर वहाँ पहुँचवा दी कि अब एक नया अमीलदार जल्दी ही आने वाला

---

[39] In the book “Lock” word is used here. One meaning of lock is hair also. So Gundappa used this meaning instead of the “lock” or secret

है सो वे उसको स्वागत करने के लिये गॉव के दरवाजे के पास खड़े रहें और उसे अपने साथ अन्दर ले जायें।

अगले दिन गुंडप्पा सुबह सवेरे ही साफ सुथरे कपड़ों की एक पोटली ले कर और तीन गज चौड़ी और छह गज लम्बी पगड़ी बॉध कर वहॉ चल दिया। बेचारा पंडित।

रास्ते में उसने जहॉ कहीं भी कुशा घास देखी वह उसकी ताजगी देख कर उसके प्रति आकर्षित हो गया और उसको इकट्ठी कर कर के रखने लगा। ऐसा वह सारे रास्ते करता चला गया।

वह पवित्र घास तो उसे इतनी प्यारी हो गयी थी कि हालॉकि अमीलदार होने के नाते शायद वह उसे कभी इस्तेमाल नहीं करता पर फिर भी वह उसे इकट्ठा किये बिना आगे नहीं बढ़ पा रहा था।

सो उसके कपड़ों की पोटली उसके सिर पर थी और उसकी प्यारी कुशा घास उसके हाथों में थी। ऐसे उसने नंजनगोडा गॉव में दिन के 10वें घंटे में प्रवेश किया। हालॉकि उसे वहॉ पहुॅचते पहुॅचते काफी देर हो गयी थी फिर भी उसको लेने आये हुए अफसरों में से कोई भी खाना खाने घर नहीं गया था। सब उसका वहीं इन्तजार कर रहे थे।

जब सबने गुंडप्पा को देखा तो उन सबने उसे एक पंडित ही समझा। सिर पर रखी पोटली और हाथ में पवित्र हरी घास उसका काम बता रही थी कि वह क्या काम करता था।

हर एक ने सोचा कि यह पंडित भी क्योंकि उसी सड़क से आ रहा था जिससे अमीलदार आने वाला था तो शायद यह उसकी कोई खबर लाया होगा – जैसे वह रास्ते में कहीं रुक गया है या फिर वह थोड़ी देर में शाम तक आयेगा।

सो जो आदमी अमीलदार के नीचे काम करने वाला था वह पुजारी के पास आया और उससे पूछा कि क्या वह अमीलदार के आने की कोई खबर लाया है।

यह सुन कर हमारे हीरो ने अपनी पोटली नीचे रखी और कुछ घास के साथ अपना नियुक्ति पत्र निकाला और अपने हाथों से उसे दे दिया कि वह तो खुद ही अमीलदार था।

जो लोग उसे वहाँ लेने आये थे वे तो उस अजीब से पंडित को देख कर बहुत आश्चर्य में पड़ गये कि ऐसे आदमी को राजा ने ऐसे आदरणीय पद पर रखा है। पर जब सबको यह पता चल गया कि गुंडप्पा ही नया अमीलदार है तब वहाँ रस्मी संगीत बजाया गया और उसे एक अमीलदार की हैसियत से गाँव के अन्दर ले जाया गया।

सुबह से उसने कुछ खाया नहीं था। उसके लिये उसके नीचे काम करने वाले के घर में एक बहुत ही बढ़िया दावत का इन्तजाम था। वहीं गुंडप्पा ने खाना खाया और आराम किया। उसने वहाँ के अफसरों को बताया कि वह दिन की **12**वीं घड़ी में अपने दफ्तर आयेगा।

सो सारे अफसर अपने अपने घर चले गये। नहाये धोये खाना खाया और फिर दफ्तर में हाजिरी लगाने पहुँच गये।

चीफ़ असिस्टैन्ट गुंडप्पा को अपने घर ले गया और उसके ओहदे के अनुसार उसका स्वागत किया। अब गुंडप्पा तो एक पंडित था वह खाना खूब खाता था। उसने ज़िन्दगी में कभी एक पैसा अपने खाने पर खर्च नहीं किया इसलिये उसे खाने के सामान की कीमत पूछने की कोई जरूरत ही नहीं थी।

वह तो केवल दूसरों का खाना खाते खाते ही इतना मोटा हो गया था। सो उसने अपने असिस्टैन्ट के घर खूब पेट भर कर खाना खाया और फिर हाथ धोने के लिये उठ गया। असिस्टैन्ट बहुत खुश था कि अमीलदार को खाना पसन्द आया।

खाना खाने के बाद उसे पान सुपारी चाहिये थी हालाँकि इसे तो जब मेजबान दे तभी लेना चाहिये उससे पहले माँगना तो अच्छी बात नहीं थी। पर उसके असिस्टैन्ट ने उसे मालिक का हुक्म समझ कर उसे एक बहुत बड़ी थाली में जायफल सुपारी पत्ते चूना कत्था आदि ला दिया।

अमीलदार ने फिर पूछा — "और दक्षिणा कहाँ है।"

उसके मेजबान को यह बात बिल्कुल समझ में नहीं आयी कि वह सचमुच में दक्षिणा माँग रहा था या फिर उससे मजाक कर रहा था। पर इससे पहले कि वह अपने दिमाग में इस पहेली का हल सोचे उसने फिर पूछ लिया — "दक्षिणा कहाँ है।"

अब उसके असिस्टैन्ट को लगा कि शायद यह कुछ रिश्वत खाने का आदी होगा तो वह तुरन्त ही पॉच सौ मुहरों का एक थैला एक थाली में रख कर ले आया

अब ब्राह्मण की दक्षिणा तो साधारणतया एक या दो रुपया होती है पर क्या एक अमीलदार को इतनी दक्षिणा मॉगना शोभा देता है सो जब उसने दक्षिणा मॉगी तो असिस्टैन्ट को लगा कि वह जरूर ही रिश्वत मॉग रहा होगा।

गुंडप्पा तो इतनी सारी दक्षिणा देख कर बहुत ही खुश हो गया। उसे अपनी पूरी ज़िन्दगी इतनी दक्षिणा नहीं मिली थी। उसने तुरन्त है थैली खोली और उसका एक एक सोने का सिक्का सावधानी से गिना। फिर उनको बॉध लिया। फिर उसने अपना पान चबाना शुरू किया और एक ही बार में सारा का सारा जायफल और सौंफ उठा कर खा ली।

यह सब देख कर असिस्टैन्ट को उसके असली अमीलदार होने पर कुछ शक हुआ पर यह तो राजा का हुक्म था सो उसको तो उसे मानना ही था।

गुंडप्पा ने अपने असिस्टैन्ट से कहा कि वह उससे पहले दफ्तर जाये और वहॉ जा कर कहे कि वह खुद अभी आधा घंटे में आता है। असिस्टैन्ट ने एक नौकर गुंडप्पा के पास छोड़ा और यह देखने के लिये दफ्तर चला गया कि अमीलदार के पहुॅचने से पहले वहॉ सब ठीकठाक है या नहीं।

अब गुंडप्पा को राजा की बतायी हुई तीन सलाहें याद आयीं। उनकी पहली सलाह थी जब भी वह दफ्तर जाये तो काला दिखायी दे कर जाना चाहिये। राजा ने गुस्से के लिये ब्लैक शब्द इस्तेमाल किया था जिसका शाब्दिक मतलब होता है काला पर इसका अलंकारिक मतलब होता है गुस्से से भरा हुआ।

सो उसने उसका शाब्दिक मतलब लिया। वह रसोईघर में गया और रसोइये से कोयले का चूरा माँगा और उससे अपना सारा चेहरा काला कर लिया। फिर उसने अपना चेहरा एक कपड़े से ढका जैसे उसे उसे दिखाने में शर्म आ रही थी और वह दफ्तर में घुसा।

इस तरह चेहरे को काला करके अमीलदार दफ्तर में घुसा और अपनी कुर्सी पर बैठ गया। जब तब वह अपनी ऑख से कपड़ा हटा कर यह देख लेता कि उसके अफसर कैसे काम कर रहे थे। इस बीच क्लर्क और दूसरे लोग मुँह फेर कर हँस लेते थे कि उनका यह नया अमीलदार कैसा है।

शाम होने को आ रही थी और अभी कुछ कागजों पर दस्तखत करने बाकी थे। सो उनको हाथ में उठाते हुए असिस्टैन्ट उठा और बड़े आदर के साथ अमीलदार के पास चला और कुछ दूरी पर खड़ा हो गया। गुंडप्पा ने उसे अपने और पास आने के लिये कहा और असिस्टैन्ट उसके और पास आने लगा।

गुंडप्पा ने कहा — "और पास आओ।"

तो वह बेचारा उसके और पास आ गया।

अब उसे राजा की दूसरी सलाह याद आयी कि जब भी वह अपने असिस्टैन्ट से राजकाज की बात करे तो उसके कान में काट लेना। अब गुंडप्पा तो राजा की हर बात का शाब्दिक मतलब लेता था सो जैसे ही वह काफी पास आ गया उसने चुपके से अपना मुँह बढ़ा कर उसका कान काट लिया।

फिर उसने लड़खड़ाती आवाज में उससे पूछा कि उसके लोग वहाँ समृद्ध तो थे। यह देख कर असिस्टैन्ट को तो अपनी जान ही खतरे में दिखायी दी तो वह घबरा कर ज़ोर से बोला — “जी हाँ सब समृद्ध है।”

गुंडप्पा ने उसका कान तब तक नहीं छोड़ा जब तक उसने कम से कम उसे 20 बार उसे यह नहीं कह दिया। उस बेचारे का कान सूजने लगा। वह दुखी हो कर दफ्तर से चला गया। उसने सोचा कि वह राजा को नये अमीलदार के पागलपन के कामों को बतायेगा।

राजा की तीन सलाहों में से दो सलाह तो अब तक मानी जा चुकी थीं पर तीसरी वाली सलाह कि सब लोगों के ताले तुम्हारे हाथ में होने चाहिये अभी बाकी बची थी। गुंडप्पा ने उसे भी तुरन्त ही मानने का इरादा किया।

रात हो चुकी थी। गुंडप्पा अभी भी अपनी कुर्सी में बैठा हुआ था। अब जब अमीलदार घर नहीं गया था तो बाकी लोग घर कैसे

जाते। वे सब भी वहीं बैठे हुए थे। इस तरह बैठे बैठे उन सबको वहा चार घंटे रात बीत गयी पर अमीलदार नहीं उठा।

वह अभी तक कपड़े से ढका अपना काला चेहरा वहीं बैठा था। कुछ कुछ देर में वह झॉक लेता था कि बाकी लोग सो गये या जागे हुए हैं। बात यह थी वह अपने सारे लोगों के बाल अपने हाथ में लेने के चक्कर में था।

अब वे अफसर भी बेचारे कब तक जाग सकते थे उनको नींद के झोंके आने लगे थे। आधी रात के समय नये अमीलदार के बेवकूफी भरे काम से बेखबर सभी सो गये थे। यही समय ठीक था। वह कैंची ले कर उनके बाल काटने के लिये उठा। उसने अपने अफसरों के सारे बाल काट लिये।

उनको उसने एक कपड़े में बॉधा और उन्हें ले कर देर रात अपने असिस्टैन्ट के घर पहुँचा। वहॉ नौकरों ने उसे कुछ खाना दिया। उसके बाद वह अपने मुहरों के थैले के साथ राजा को यह बताने के लिये चला कि कितनी अच्छी तरह से उसने उसकी सलाह मानी थी।

सुबह सवेरे ही वह राजा के पास पहुॅच गया। पल भर बाद ही उसका असिस्टैन्ट भी वहीं पहुॅच गया। उसको देखते ही असिस्टैन्ट तो कोई भी शिकायत करने से बहुत ही डर गया पर दरबार में उसका सूजा हुआ कान किसी से भी नहीं छिप सका।

गुंडप्पा राजा के सामने अपना कोयले लगा चेहरा लिये खड़ा था। उसने कहा — "ओ राजा। आपने मुझे मेरे नये काम के लिये मेरा चहरा काला करने के लिये कहा था। देखिये मैंने यह रंग अभी तक भी नहीं हटाया है।

दूसरी बात आपने मुझसे कही थी कि मैं जब भी राजकाज की बात करूँ तो कान काटते हुए कहूँ सो आप देख सकते हैं कि यह मेरा असिस्टैन्ट आपके सामने खड़ा हुआ है कि मैंने आपकी दूसरी बात मानी या नहीं। और जहाँ तक मेरे अफसरों के बालों का सवाल है सो ये रहे वे बाल।"

कह कर उसने कटे हुए बालों की पोटली खोल दी।

राजा ने इतना बड़ा बेवकूफ पहले कभी नहीं देखा था। केवल यह विचार कि गुंडप्पा ने कई आदरणीय लोगों के बाल काट लिये हैं और उसने सचमुच में एक भले आदमी का कान काट लिया है राजा को बड़ी शर्म महसूस हुई।

उसने गुंडप्पा के असिस्टैन्ट से माफी माँगी और इस दिन से अपने अफसरों का चुनाव करने में बहुत सावधानी बरतने लगा। गुंडप्पा को उसकी पंडित की पदवी से निकाल दिया। अब क्योंकि उसे दूसरों के पैसे से खाना खाने को नहीं मिलता था सो वह बेचारा दुबला होता चला गया।

21 माली की चालाक पत्नी[40]

किसी गॉव में एक गरीब माली अपनी पत्नी के था रहता था। वह अपने घर के पीछे की जमीन में कुछ पत्ते उगाता था। उसकी 30 क्यारियॉ थीं जिनमें से आधी क्यारियों को वह रोज पानी देता था। यह काम उसे दिन की पॉचवीं घड़ी से 15वीं घड़ी तक काम में लगाये रखता।

उसकी पत्नी हर शाम एक टोकरी भर कर पत्ते तोड़ती और अगले दिन सुबह उन्हें बाजार बेचने के लिये ले जाती। इनको बेचने से उसे एक दो माप चावल मिल जाता। उधर अगर माली को भी कुछ दूसरा काम मिल जाता तो उसे भी तॉबे के कुछ सिक्के मिल जाते। इसी से उनका गुजारा चलता।

उस गॉव में एक काली देवी का मन्दिर था। उसके पास ही एक तालाब था और तालाब के किनारे आम का एक पेड़ खड़ा था। तालाब की मछलियॉ और पेड़ के आम देवी के लिये थे। अगर कोई उस तालाब से मछलियॉ पकड़ता या फिर उस पेड़ से आम तोड़ता पाया जाता उसे तुरन्त ही गॉव से निकाल दिया जाता। इसलिये वह तालाब और वह पेड़ जनता के लिये बिल्कुल भी नहीं थे।

एक सुबह माली अपने पत्ते बेच कर बाजार से लौट रहा था कि वह काली के मन्दिर के पास से गुजरा। आम के पेड़ पर आम देवी

[40] The Gardener's Cunning Wife. Tale No 21.

द्वारा सुरक्षित थे। वे इतने सारे और पके हुए थे कि माली की नजर उन पर पड़े बिना न रह सकी। उनको देख कर उसके मुँह में पानी आ गया।

उसने अपने चारों तरफ देखा तो वहाँ तो कोई नहीं था। कम से कम जहाँ तक उसकी नजर जाती थी। सो उसने जल्दी से एक पका हुआ आम तोड़ लिया और फिर तालाब में उसे धोने गया। उसी समय बहुत सुन्दर मछलियों का एक झुंड वहाँ आया।

इन मछलियों को किसी तरह का को खतरा था नहीं इसलिये वे वहाँ पर निडर हो कर घूम रही थीं। यहाँ भी माली ने अपने चारों तरफ देखा और जब वहाँ उसे कोई दिखायी नहीं दिया तो पाँच छह मछलियाँ उसने अपनी एक ही मुट्ठी में ही पकड़ लीं।

उसने आम और मछलियों को अपनी चावल की टोकरी में छिपा कर रख लिया और यह सोचते हुए खुशी खुशी घर लौट आया कि वह पकड़ा नहीं गया।

उसे मछली बहुत अच्छी लगती थी सो जब वह घर पहुँचा तो उसने अपनी पत्नी को वह सब दिखाया जो वह उस दिन ले कर आया था और फिर उससे उसने मछली और आम पकाने के लिये कहा जिसे उसने अभी तक चखा नहीं था।

इस बीच उसे अपने बागीचे में पानी देना था सो वह घर के पीछे चला गया। वह “पिकोता” से पानी देता था सो इसके लिये उसे एक खम्भे पर ऊपर नीचे दौड़ना पड़ता था जबकि उसके किसी

साथी को पानी उठा कर बागीचे में देना पड़ता था। पानी उठाने का काम उसके पड़ोसी का बेटा करता था।

इस बीच पत्नी ने आम और मछली को पका लिया था। उसकी खुशबू इतनी अच्छी आ रही थी कि हालॅकि मछली अभी आधी ही पकी थी कि उसने उसे चखना शुरू कर दिया। वह खाती गयी वह खाती गयी जब तक कि उसने उसे आधा नहीं खा लिया।

आखिर वह पक गयी तो जो कुछ थोड़े से टुकड़े जो कढ़ाई में बचे थे उन्हें आग पर से नीचे उतार लिया गया। फिर वह बरामदे में गयी तो उसने अपने पति को पिकोता पर ऊपर नीचे चढ़ते उतरते देखा।

उसने उसे वहीं से बुलाया कि मछली तैयार है वह आ कर उसे चख ले। पर वह उसे सुन नहीं पाया और पिकोता पर चढ़ने उतरने में ही लगा रहा। बस उसने हाथ हिला कर ही उसे जवाब दिया। इस हाथ हिलाने का मतलब उसकी पत्नी ने यह लगाया जैसे वह कह रहा हो कि "तुम मेरे हिस्से का भी खा लो।"

पर यह तो केवल उसकी कल्पना ही थी फिर भी वह अन्दर गयी और जा कर उसमें से एक टुकड़ा खा लिया। टुकड़ा खा कर वह फिर बरामदे में आयी और अपने पति को इशारा करने लगी। पति ने फिर इशारा किया जिसे उसने फिर से यही समझा कि वह उससे कह रहा है कि "तुम खा लो।" वह फिर अन्दर गयी और एक टुकड़ा खा लिया।

इस तरह वह खाती चली गयी जब तक कि उसने सारी मछली खत्म नहीं कर ली। सारी मछली खाने के बाद उसे होश आया कि उसका पति कितने शौक से मछली और आम ले कर आया था और कितने दुख की बात है कि लालच में आ कर मैं ही उसे सारा खा गयी उसके लिये एक भी टुकड़ा नहीं छोड़ा।

यह देख कर उसने सोचा कि अब जब वह अन्दर आ कर यह देखेगा कि सारी मछली खत्म हो गयी है तब तो वह बहुत गुस्सा होगा। मुझे अपने बचाने के लिये कुछ तरकीब सोचनी चाहिये।

उसने वह कड़ाही उठायी जिसमे उसने आम और मछली पकायी थी और उसे बाहर ले गयी और उसे उसी साइज़ के बर्तन से ढक कर उसके सामने बैठ गयी। फिर उसने अपने बाल खोले और उनको मोड़ने लगी और बहुत ज़ोर ज़ोर से शोर मचाने लगी।

ऐसा हिन्दू समाज में कई जगह होता है जिसमें स्त्रियाँ अपने बाल खोल कर अपना सिर बहुत ज़ोर ज़ोर से हिलाती हैं और कुछ कुछ बोलती रहती हैं। ऐसा माना जाता है कि इस समय उनके ऊपर देवी आ गयी है।

ऐसे समय में अगर उनसे कोई सवाल पूछा जाये तो वे उसका जवाब भी देती हैं जिनमें से कुछ सच्चे भी निकल आते हैं। ऐसा ही दृश्य किसी भूत के आने पर भी होता है।

सो जब माली ने अपनी पत्नी को इस हालत में देखा तो उसे लगा कि उससे कहीं कुछ गलती हो गयी है जिससे उसे बुरा महसूस

होने लगा। अपनी पत्नी में यह बदलाव देख कर वह पिकोता से उतर आया और उसके सामने आ कर खड़ा हो गया।

जैसे ही पत्नी ने पति को देखा तो वह गरजी — "तुमने मेरा आम और मछली खा कर मुझे क्यों परेशान किया। तुमने ऐस अधर्म का काम क्यों किया। तुम्हें अपने इस कर्म का फल भोगना ही पड़ेगा।"

बेचारे माली ने सोचा कि मेरी पत्नी के ऊपर देवी आ गयी है। देवी की दैवीय ताकत मेरी पत्नी को मार भी सकती है। अब मैं क्या करूँ।

सो वह देवी के पैरों पर गिर पड़ा। उसने सोचा कि यही ठीक था। वह बोला — "ओ पूज्य देवी। आपका यह नौकर आज अपने सीधे रास्ते से डिग गया था। आज आप इसे माफ कर दें। मैं दोबारा ऐसा काम नहीं करूँगा।"

"ठीक है तब इस कड़ाही को ले कर जाओ जिसमें तुम्हारी चोरी का फल है और इसे मेरे तालाब में गहरा डाल दो। इससे मछली ज़िन्दा हो कर तालाब में तैरने लगेगी और आम भी साबुत हो कर पेड़ पर जा लगेगा।"

माली ने इस हुक्म को बहुत ही विनम्रता से सुना फिर वह कढ़ाई उठायी और तालाब की तरफ भाग गया। वहाँ पहुँच कर उसने उसे तालाब में डुबो दिया और घर वापस आ गया। उसको पूरा विश्वास था कि उसका पाप माफ कर दिया गया है। पकी हुई मछली और

आम दोनों ज़िन्दा हो कर अपनी अपनी जगह पहुँच गये हैं। इस तरह चालाक पत्नी ने पति के गुस्से से अपने आपका बचाव किया।

22 इसे भिखारी के लिये रख दो[41]

जब घर में किसी खास दिन कोई मिठाई बनायी जाती है तो बच्चे कहते हैं कि "मॉ। यह बहुत अच्छी मिठाई है इसे कल सुबह के लिये उठा कर रख दो।"

मॉ कहती "अगर तुम मुझसे इसे किसी भिखारी के लिये उठा कर रखने के लिये कहो तो मैं इसे उसके लिये उठा कर रख दूॅगी पर मै इसे सुबह के लिये उठा कर नहीं रखूॅगी।"

बच्चे उत्सुकता से पूछते — "मॉ पर हमें ऐसा क्यों नहीं कहना चहिये कि इसे सुबह के लिये रख दो।"

तब दक्षिणी भारत की मॉ उसे यह कहानी सुनाती —

"एक गॉव में एक पति पत्नी रहते थे जो आपस में एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे। पति खेत और बागीचों की देखभाल करता था और शाम को बहुत सारी सब्जियॉ ले कर घर लौटता था।

पत्नी उनको पकाती और अपने पति को पेट भर कर खिलाती। सुबह को जाने से पहले पति अपने नाश्ते के लिये रात की बची हुई सब्जियॉ ले जाता था।

[41] Keep it for the Beggar. Tale No 22.

पति को दाल बहुत अच्छी लगती थी सो पत्नी हर रात बहुत सारी दाल बनाती और बहुत सारी दाल पति के नाश्ते के लिये बचा कर रख देती।

और पति भी क्योंकि उसे दाल बहुत अच्छी लगती थी वह उसे ठंडे चावल के साथ खाता था अपनी पत्नी से हर रात कहता था कि वह उसे उसके लिये सुबह नाश्ते के लिये बचा कर रख दे। हालाँकि उसकी पत्नी इसका खुद ही इस बात का बहुत ख्याल रखती थी पर फिर भी पति भी उसे याद दिलाना नहीं भूलता था।

पत्नी हमेशा यही जवाब देती — "जी हॉ। मैं रख दूँगी।"

यह सिलसिला कई सालों तक चलता रहा। रोज ही दाल काफी सारी बनायी जाती कि वह शाम को तो खाने के काम आ ही जाये अगले दिन सुबह के लिये भी बच जाये। हर रात पति अपनी पत्नी से बची हुई दाल अगले दिन के लिये रखने के लिये कहता।

एक दिन पति ने रात को खाना खाया तो उसके खाने के बाद पत्नी उसी के पत्ते पर खाना खाने बैठी। इस रात भी पति ने अपना रोज का वाक्य कहा — "थोड़ी सी दाल मेरे लिये कल के लिये भी रख देना।"

उसी समय बाहर दरवाजे पर किसी के हॅसने की आवाज सुनायी पड़ी। पति और पत्नी दोनों ही उस हॅसी को भौंचक्के रह गये। उन्होंने अपना सारा घर देखा भाला पर उनको कोई दिखायी नहीं दिया।

पति ने फिर एक बार कहा — "थोड़ी सी दाल मेरे लिये कल के लिये भी रख देना।" फिर एक बार और हँसी सुनायी दी। यह देख कर कि उसके कहने के तुरन्त बाद ही एक बार फिर से उसे हँसी सुनायी दी थी उसने फिर कहा — "थोड़ी सी दाल मेरे लिये कल के लिये भी रख देना।"

तीसरी बार भी उसे हँसी सुनायी दी। अब तो उनके आश्चर्य की कोई सीमा ही नहीं रही। घर में तीन बार हँसी की आवाज सुनी गयी पर दिखायी कोई नहीं दे रहा था।

यह सोच कर कि शायद कोई पड़ोस के घर से उसकी हँसी उड़ा रहा होगा पति ने पड़ोस के घरों से पूरी तरीके से जानकारी ली पर पाया कि उसके किसी पड़ोसी घर से उसकी कोई हँसी नहीं उड़ायी गयी थी।

वह तो इस हँसी से डर गया क्योंकि यह तो तीन बार बराबर सुनी गयी और घर में कोई था नहीं और उसने यह आवाज साफ साफ सुनी थी।

उसी रात को उसने ऊपर एक मुसीबत आ गयी। जब वह अपने मकान के पिछले दरवाजे की चटखनी लगा रहा था तो एक सॉप ने उसकी ऊँगली में काट लिया। पड़ोसियों ने इस जहरीले जानवर के बार में सुना तो वे अपने चाकू आदि ले कर दौड़े।

पति जिसे दाल बहुत अच्छी लगती थी बेहोश होने लगा था। उसकी पत्नी जो उसके पास ही बैठी हुई थी बेचारी रो रो कर कह

कर रही थी — “इतनी जल्दी तुम अपनी दाल कैसे भूल गये और हम लोगों को अकेला छोड़ कर दूसरी दुनियाँ में चले गये। अभी अभी तो तुमने मुझसे कहा था कि मेरे लिये सुबह के लिये दाल रख दो और उसे बिना चखे ही चले गये।”

पड़ोसियों ने साँप को ढूँढना शुरू किया पर साँप तो उन्हें मिला नहीं। हाँ एक आवाज खाली जगह से आती जरूर सुनायी दी — “इस आदमी का अन्त इस रात की 12वीं घड़ी में हुआ है। यमराज जी ने मुझे हुक्म दिया था कि मैं इसके प्राण ले कर आऊँ। मैं यहाँ 8वीं घड़ी में आया था जब यह अपनी पत्नी से दाल रखने के लिये कह रहा था।

अब मैं तो इसके प्राण ले जाने के लिये आया था सो मेरी हँसी नहीं रुकी सो मैं हँस पड़ा। अब क्योंकि मैं तो देवता हूँ इसलिये मैं किसी को दिखायी नहीं दिया इसलिये हँसने के बाद भी मैं इस घर में भी किसी को नहीं मिला। उसके बाद मैंने साँप का रूप रखा और उसके प्राण लेने के समय का इन्तजार करने लगा।

यह बेचारा तो अब नहीं है। चार घड़ी पहले इसे यकीन था कि यह ज़िन्दा रहेगा और कल सुबह दाल खायेगा। इस अनिश्चितता की दुनियाँ में लोग कितने बेवकूफ हैं। मेरी हँसी की वजह तो इस आदमी का यह विश्वास था कि वह कल सुबह उठ कर नाश्ते में दाल जरूर खायेगा।”

यह कह कर यम दूत अपने मालिक के पास यह बताने के लिये चला गया कि उसने उनका काम कर दिया है।”

यह कहानी सुना कर माँ बोली — “उस दिन से मेरे बच्चों यह जाना गया कि हमारा जीवन अनिश्चित है और जो आदमी अभी है यह जरूरी नहीं है कि वही आदमी अगले पल भी ज़िन्दा रहे।

अगर ऐसा है तो तुम यह कैसे कह सकते हो कि यह मिठाई मेरे लिये कल सुबह के लिये रख देना। जैसा कि तुमने इस कहानी में देखा कि हमारा जीवन निश्चित नहीं है इसलिये हमें यह न कह कर कि “यह हमारे लिये सुबह के लिये रख दो।” हमें यह कहना चाहिये कि “इसे भिखारी के लिये रख दो।”

अगर हम किसी भिखारी के लिये रखते हैं और अपनी खुशकिस्मती से हम ज़िन्दा रहते हैं तो हम उसमें से कुछ खा कर बाकी बचा भिखारी को दे देंगे। पर अगर हम किसी वजह से नहीं रह पाते तो फिर वह भिखारी को चला जायेगा।

इसलिये अबसे अगर तुम्हें रात की रखी चीज़ अगले दिन खानी होगी तो तुम यह कहोगे कि “यह किसी भिखारी के लिये रख दो।”

“ठीक है माँ अबसे हम यही कहेंगे।”

हिन्दुस्तान में पत्नियाँ पति से पहले खाना नहीं खातीं खास कर के ब्राह्मणों में। केवल वही पत्नियाँ खा लेती हैं जो या तो बीमार होती हैं या फिर जिन्हें बच्चे की आशा होती है।

इन दोनों हालतों में भी अगर पत्नी के लिये यह सम्भव होता है कि वह पति का इन्तजार कर सकती है तो वह जरूर करती है। नहीं तो वह केवल मजबूरी में ही पति से पहले खाना खाती है। पति के खाना खाते समय पत्नी पति की थाली के सामने ही बैठती है।

बहुत सारे पति अपनी थाली बिल्कुल साफ छोड़ते हैं या तो अपनी पत्नी के प्रेम में या फिर इसलिये कि पत्नी की भावनाओं को ठेस न पहुँचे।

23 खुशकिस्मती केवल किस्मत वालों के लिये[42]

एक बार की बात है कि एक गॉव में एक अमीर ब्राह्मण रहता था। वह एक घर बनाना चाहता था – बहुत बड़ा अपनी हैसियत के अनुसार। इसके लिये उसने कई ज्योतिषियों को बुलवाया और उनकी राय के अनुसार एक बहुत बड़ा घर बनाने के लिये जगह तय की।

हिन्दू ज्योतिषियों के अनुसार दिन का एक खास हिस्सा कोई भी काम करने के लिये खराब होता है। इस समय को "राहु काल" यानी "राहु का बुरा समय" या "त्याज्य काल" यानी "समय जिसे इस्तेमाल नहीं करना चाहिये" बोलते हैं। ब्राह्मण ने इस बात का विचार किये बिना ही अपना मकान दस साल में बना कर तैयार किया।

घर में पहली बार घुसने की रस्म को बहुत गरीब लोग भी अपनी हैसियत के अनुसार बहुत ही धूमधाम से मनाते हैं। हमारे ब्राह्मण ने भी ब्राह्मणों और देवताओं को खुश करने के लिये अपना बहुत सारा पैसा इस रस्म को मनाने में खर्च किया। गाजे बाजे के साथ उसने अपने घर में प्रवेश किया। सारा दिन उसके घर में आनन्द मनता रहा।

---

[42] Good Luck to the Lucky One, OR Shall I Fall Down? Tale No 23.

शाम को सारे मेहमान अपने अपने घर चले गये। ब्राह्मण सारे दिन के कार्य से थक गया था सो वह भी सोने चला गया।

इससे पहले वह सोता कि उसने अपने सिर के ऊपर एक बड़ी डरावनी आवाज सुनी "क्या मैं गिर जाऊँ? क्या मैं गिर जाऊँ?"

मकान मालिक तो यह आवाज सुन कर बहुत डर गया। उसे लगा कि किसी भूत ने उसके मकान को कब्जा लिया है और वह उसके ऊपर की छत को नीचे गिराना चाहता है। उसी रात को जितनी जल्दी से वह उस मकान में घुसा था उतनी ही जल्दी से उसने उसे खाली कर दिया और अपने पुराने घर में वापस चला गया।

तामिल भाषा में एक कहावत है "छोटा बनाओ और आराम से रहो।" जिसका मतलब होता है बिना बहुत सारा धन खर्च किये बिना छोटा घर बनाओ और उसमें समृद्धि से रहो। इसलिये गाँवों में बड़े मकानों की जगह छोटे मकान ही ज़्यादा पसन्द किये जाते हैं।

पर यह विचार ही कि उसने उस मकान में इतना सारा पैसा लगाया है मकान मालिक को खाये जा रहा था। मकान क्योंकि बहुत बड़ा था इसलिये उसमें भूत के आने सम्भावना कहीं से भी हो सकती थी। जिस दिन वह मकान में घुसा था उसी दिन बहुत सारे लोग उसके बारे बहुत कुछ कह रहे थे।

स्त्रियों ने भी नहाने के घाटों पर उस मकान में भूत होने के बारे में बात करनी शुरू कर दी थी। एक ने कहा कि जब वह नदी की और आ रही थी तब उसने कुछ भूतों को मकान की ऊपर वाली

मंजिल के बीच में जो खम्भा खड़ा हुआ था उसके चारों तरफ नाचते देखा था। दूसरी बोली कि उसने पिछली रात को उस मकान में कुछ दैवीय रोशनियाँ देखी थीं।

इस तरह लोग उस मकान के बारे नयी नयी बातें कर रहे थे। नये नये विचार रख रहे थे जिन्हें उन्होंने कभी देखा ही नहीं था।

हमारे अभागे मकान मालिक को अपने इस नये मकान में ताला लगाना पड़ा जो उसने इतना पैसा लगा कर इतना समय लगा कर बनवाया था। इस तरह से छह महीने बीत गये।

उसी शहर में एक गरीब ब्राह्मण भी रहता था। वह बहुत ही ज़्यादा गरीब था। उसके दिन का बहुत सारा हिस्सा तो घर घर से खाना कपड़ा माँगने में ही चला जाता था। उसके सात बच्चे थे। क्योंकि वह बहुत गरीब था इसलिये वह हमेशा ही दुखी और परेशान रहता था। उसके पास रहने के लिये ठीक से एक मकान भी नहीं था।

जाड़ा आने वाला था। उसकी झोंपड़ी की छत गिरने वाली हो रही थी। इन बढ़ती हुई परेशानियों से तंग आ कर उसने अपनी ज़िन्दगी खत्म करने की सोची। पर उसमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह खुद अपने हाथों से यह काम कर सके।

उसने उस भूतिया मकान के बारे में सुना था तो उसने तय किया कि वह अपने परिवार के साथ वहाँ जा कर रहेगा। वहाँ वे भूत ही उसे मार देंगे। यह उसकी गुप्त इच्छा थी। यह उसने कभी किसी से

कहा नहीं। अपने इस प्लान के साथ एक दिन वह उस अमीर ब्राह्मण के पास गया।

वहाँ पहुँच कर वह मकान मालिक से बोला — “ओ कुलीन मकान मालिक। जाड़ा आ रहा है और मेरी झोंपड़ी की छत गिर पड़ी है। अगर आप मेहरबानी कर के मुझे इजाज़त दें तो मैं ये कष्ट के दिन आपके बड़े घर में गुजार लूँ।”

जब अमीर ब्राह्मण ने यह सुना तो वह बहुत खुश हुआ कि उसकी छोटी सी दुनियाँ में कम से कम एक आदमी तो ऐसा है जो उसके घर को इस्तेमाल कर सकता था।

सो बिना किसी हिचकिचाहट के वह बोला — “ओ पवित्र ब्राह्मण। जब तक भी तुम वहाँ रहना चाहो तुम वहाँ उस सारे मकान में तब तक रह सकते हो। मेरे लिये तो वही काफी है कि तुम वहाँ कम से कम एक दिया जलाओ। मैंने उसे बनाया तो पर उसमें रहना शायद मेरी किस्मत में नहीं है। तुम वहाँ जा सकते हो और अपनी किस्मत आजमा सकते हो।”

इतना कह कर अमीर मकान मालिक ने उसे अपने भूतिया मकान की चाभियाँ दे दीं। गरीब ब्राह्मण ने उससे चाभियाँ ले लीं और उसी दिन वह अपने परिवार सहित उस मकान में चला गया।

उसी रात उसने भी वही आवाज सुनी “क्या मैं गिर जाऊँ? क्या मैं गिर जाऊँ?”

वह आवाज उसे डरा नहीं सकी कि वह उसे और उसके परिवार को मार देगी। सो वह चिल्लाया “गिर जाओ।” और लो घर की छत से सोने की मुहरें एक सुनहरी धारा की तरह नीचे कमरे के बीच में गिरने लगीं। वे बिना रुके हुए गिरती रहीं गिरती रहीं कि बेचारा गरीब ब्राह्मण आश्चर्य से बैठा उसे देखता रहा देखता रहा। फिर जब उसे कुछ होश सा आया तो उसे लगा कि अरे इन मुहरों में तो वह दब जायेगा।

जैसे ही उसने इतना सारा पैसा देखा तो उसने मरने का इरादा छोड़ दिया और चिल्लाया “रुक जाओ।” और यकायक मुहरें गिरनी बन्द हो गयीं। वह उस भूत या जिस किसी अच्छी आत्मा ने उस मकान को अपने कब्जे में कर रखा था उसके अच्छे स्वभाव से बहुत खुश हुआ। उसने वे सारी मुहरें एक कमरे में बन्द कर के उसमें ताला लगा दिया और उसकी चाभी अपने पास रख ली।

जब मुहरें नीचे गिर रही थीं तो उसकी पत्नी और बच्चे भी जाग गये थे। उनको भी सब बता दिया गया। गरीब ब्राह्मण ने अपने पत्नी और बच्चों से इस बात को गुप्त रखने के लिये कहा। और यह बहुत अच्छी बात थी कि उन्होंने उसे गुप्त ही रखा। पूरे परिवार ने अपनी इस खुशकिस्मती पर खूब खुशियाँ मनायीं।

जब सुबह हुई तो गरीब ब्राह्मण ने उन मुहरों को पैसे में बदल लिया। अपने और अपने परिवार के लिये अनाज और कपड़े खरीद लिये। ऐसा वह हर दिन करता रहा और एक दिन अफवाह फैल

गयी कि गरीब ब्राह्मण ने अमीर ब्राह्मण के घर में खजाना पा लिया है। अब यह अफवाह अमीर ब्राह्मण के पास भी पहुँची।

वह उस गरीब ब्राह्मण से मिलने के लिये अपने घर आया और उससे खजाने का राज़ पूछा। गरीब ब्राह्मण ने उसको मुहरों के गिरने के बारे में सब कुछ सच सच बता दिया। मकान मालिक तो यह सुन कर आश्चर्यचकित रह गया।

उसने गरीब ब्राह्मण के साथ उस कमरे में सोने की इच्छा प्रगट की। अपनी ज़िन्दगी में पहली बार मुहरों के लेने की प्यास ने उसे ऐसा करने के लिये बाध्य किया।

आधी रात को फिर आवाज आयी "क्या मैं गिर जाऊँ? क्या मैं गिर जाऊँ?"

गरीब ब्राह्मण बोला "गिर जाओ।" तो लो सोने की मुहरें फिर से नीचे गिरनी शुरू हो गयीं। पर यह क्या मकान मालिक को तो वह सब पीले बिच्छू दिखायी दे रहे थे। वह बेचारा चिल्लाया "रुक जाओ।" और मुहरें गिरनी बन्द हो गयीं।

गरीब ब्राह्मण ने मकान मालिक की तरफ देखते हुए कहा — "मालिक मुहरों का यह ढेर आप ले जाइये।"

मकान मालिक रोते हुए बोला — "ओ खुशकिस्मत। मैंने अपने बूढ़े पिता से सुना था वह एक कहावत दोहराया करते थे – खुशकिस्मती किस्मत वाले के पास ही आती है। आज मुझे उस कहावत का असली मतलब पता चला है।

मैंने मकान बनवाया और उसमें जब यह सुना कि "क्या मैं गिर जाऊँ?"तो मैंने अच्छा ही किया क्योंकि अगर मैं यह कहता कि "गिर जाओ।" और अगर मेरे ऊपर बिच्छुओं की बारिश हो जाती तो वह तो मुझे दूसरी दुनियाँ में ही भेज देती।

इसलिये मेरे भाग्यशाली दोस्त। तुमको पता हो कि तुम्हारी ये सारी मुहरें मुझे बिच्छुओं जैसी दिखायी दे रही हैं। मेरी ऐसी किस्मत नहीं है कि मैं इन्हें मुहर जैसी देख सकूँ।

लेकिन तुम्हारे पास तो यह भेंट है कि तुम इन्हें मुहर के रूप में देख सको। सो इस पल से यह मकान तुम्हारा ही है। जिन मुहरों का तुम पैसा बना कर मुझे दे दोगे मैं वह ले लूँगा और हमेशा तुम्हें दुआ दूँगा।"

ऐसा कह कर मकान मालिक बिच्छुओं के डर की वजह से उस कमरे से बाहर आ गया और उस गरीब ब्राह्मण की किस्मत जाग गयी। अब वह कोई गरीब आदमी नहीं था। वह तो गाँव का सबसे अमीर आदमी बन गया था।

पर वह यह कभी नहीं भूला कि वह इतना अमीर केवल उस अमीर ब्राह्मण की वजह से ही बना था वह अपने धन को उससे हर साल बाँटता था।

24 जैसे को तैसा[43]

तामिल में एक कहावत है जिसका मतलब है "जैसे को तैसा"। और यह कहानी मैंने उस कहावत का मतलब समझने के लिये अपनी सौतेली मॉ से तब सुनी थी जब मैं एक लड़का ही था। यह कहानी त्रिचनापल्ली जिले में भी पायी जाती है।

एक छोटे से गॉव में एक गरीब शूद्र[44] रहता था। उसने अपने गॉव की देवी सामने यह कसम खा रखी थी कि अगर उसका कोई काम पूरा हो गया तो वह उन्हें दो बकरे चढ़ायेगा।

उसका वह काम हो गया तो उसको खुशी भी बहुत हुई और उसका गॉव की देवी पर विश्वास भी बहुत बढ़ गया। अपने वायदों के अनुसार वह दो बकरे खरीद कर लाया और देवी को उनकी बलि चढ़ा दी।

इस तरह ये बकरे बलि चढ़ा दिये गये और शूद्र को कुछ ही दिनों में बुखार आ गया और वह मर गया। अपने भले और बुरे कर्मों का फल भोगने के लिये वह फिर से जन्मा।

वे दो बकरे जिनकी उसने देवी को बलि चढ़ायी थी वे एक बड़े से देश में राजा और मन्त्री बन कर पैदा हुए। शूद्र क्योंकि अपने

[43] Retaliation. Tale No 24.

[44] Menial job worker

पिछले जन्म में देवी का भक्त था सो वह एक ब्राह्मण के घर में पैदा हुआ।

अब उनमें से किसी को भी अपने पिछले जन्म के बारे में नहीं पता चल सकता था जब तक कि पुजारी जी की मृत्यु नहीं हो गयी जैसा कि हम आगे देखेंगे।

राजा का राज्य बहुत बड़ा था। वह अपने मन्त्री के साथ राज करने में बहुत सन्तुष्ट था। वहाँ एक जगह थी जो अक्सर सुनसान पड़ी रहती थी। उसमें उस देश की एक ताकतवर देवी का एक मन्दिर था। उस मन्दिर में एक पुजारी जी थे जो वहाँ रोज इनकी सेवा करते थे।

पुजारी जी बहुत ही शुद्धता और सफाई की ज़िन्दगी जी रहे थे। पर किस्मत इनको उनके पुराने कर्मों से तो माफ नहीं कर सकती थी।

राजा और उसके मन्त्री ने भी यह कसम खायी कि अगर वे अपने दुश्मन से लड़ने पर उससे जीत कर आयेंगे तो वे एक आदमी की बलि चढ़ायेंगे। वे दुश्मन से लड़ने गये और वहाँ से जीत कर लौटे। अब वे अपनी कसम पूरी करने के लिये साधारण आदमियों का वेश रख कर जंगल गये।

सारे रास्ते बलि के लिये वे किसी आदमी को ढूँढते रहे पर उन्हें कोई नहीं मिला। वे अभी भी इस विचार में थे कि देवी के लिये

बलि तो देनी ही है तो उन्होंने सोचा कि मन्दिर के पुजारी को ही पकड़ लेते हैं और उसी की बलि चढ़ा देंगे।

जब राजा और मन्त्री जैसे ताकतवर लोग यह सोच लें कि वे एक पुजारी की बलि देंगे तो बेचारे पुजारी की क्या बिसात कि वह कुछ कर सके। जब उन दोनों ने उसे बताया तो वह बेचारा तो कहीं भाग कर भी अपनी जान नहीं बचा सका।

वह बोला — "जनाब। आप लोग यहाँ देवी पर मेरी बलि चढ़ाने के लिये आये हैं इसलिये मैं आपकी पकड़ से बच तो नहीं सकता। पर अगर आप मुझे मेरी आज की सुबह की देवी की पूजा करने की इजाज़त दे दें तो में अपना काम करने के बाद खुशी से मर जाऊँगा।"

जब पुजारी ने ऐसा कहा तो राजा और मन्त्री दोनों ने उसे मन्दिर में अन्दर आने दिया। पुजारी देवी की मूर्ति के पास गया और अपनी रोज की देवी की पूजा की। जब उसकी पूजा खत्म हो गयी तो उसने देवी की मूर्ति की पीठ में मारा और बोला —

"ओ बेरहम देवी। मेरी इतने दिनों की पूजा आपने बेकार कर दी। इस अकेले जंगल में मैं तो केवल आप ही की पूजा करता रहा हूँ। मैं कई साल से आपकी सेवा करता रहा हूँ और उसके बदले में क्या मुझे राजा और मन्त्री के फन्दे में फँस जाना चाहिये जो इस समय मेरी बलि देने के लिये बाहर चाकू तेज़ कर रहे हैं? क्या मेरी पूजा का यही बदला है?"

जब पुजारी ने ऐसा कहा तो देवी बोली — "ओ मेरे सच्चे पुजारी। तुम्हारे पिछले जन्म के कर्म इसमें काम कर रहे हैं। इस जन्म के भले कर्म भी तुम्हें उन कर्मों के फल भोगने से नहीं रोक सकते। अपने पिछले जन्म में तुमने दो बकरों का खून किया था। अब वे राजा और मन्त्री के रूप में जन्मे हैं और तुम्हें मारने के लिये यहाँ खींच लाये हैं।

पर यह खून जिसमें से तुम अभी गुजरने वाले हो तुम्हें केवल एक खून के फल से छुटकारा दिलवायेगा। दूसरे खून के लिये तुम्हें फिर से जन्म लेना पड़ेगा और वे फिर से तुम्हारा खून करेंगे। इसलिये इससे तीसरी ज़िन्दगी में तुम इस भक्ति का फल प्राप्त कर सकोगे। क्योंकि अब तुम अपना इतिहास जान गये हो इसलिये तुम मुझे माफ करोगे।"

देवी के यह कहने के बाद पुजारी को अपनी पुरानी ज़िन्दगी की याद आ गयी। देवी की कृपा से अब उसने मरने का अपना मन बना लिया ताकि वह अपने पुराने पाप से मुक्त हो सके। पर यह विचार कि अगले जन्म में भी उसे इसी तरह से मरना पड़ेगा उसे दुखी कर गया।

वह देवी के पैरों पर गिर गया। उसने बहुत ही आदर सहित देवी से प्रार्थना की कि वह उसे अगले जन्म की ऐसी मौत से छुट्टी दिला दें। उसकी प्रार्थना सुन कर देवी का दिल उसकी इतनी बुरी किस्मत देख कर पिघल गया। सो उसने उसे यह प्लान सुझाया।

वह बोली — “ओ पुजारी। बुद्धि किस्मत को भी जीत लेती है। जब काली देवी ने राजा विक्रमदित्य को उसके अपने शहर में पॉच सौ साल की उम्र दी, तो भट्टी जो उसका मन्त्री था उसने अपने मालिक की उम्र बढ़ा कर एक हजार साल कर दी। कैसे? उसने राजा को छह महीने राज्य में रखा और छह महीने जंगल में रखा।

इस तरह अपनी अक्लमन्दी से हम अपनी किस्मत बदल सकते हैं। इसलिये अब तुम मेरी सलाह सुनो। जो राजा तुम्हें मारने आया है उससे कहना कि चाकू का एक सिरा वह अपने हाथ में पकड़े और दूसरा सिरा अपने मन्त्री को पकड़ने दे।

उनसे कहना कि वे एक साथ ही तुम्हारी गर्दन पर वार करें। यह तुम्हारे कर्म का बदला इसी जन्म में खत्म कर देगा। तुम्हारे दूसरे जन्म में अपना बदला लेने के लिये उनके पास कुछ नहीं रह जायेगा।”

यह कह कर देवी की आवाज रुक गयी। पुजारी खुशी खुशी मन्दिर से वापस आया और उनसे कहा कि अगर वे दोनों ही चाकू को पकड़ कर उसे मारें तो वह उनका बहुत आभारी रहेगा। उनको इसमें उसकी कोई चाल नहीं लगी सो वे मान गये और उन्होंने उसे उसी तरीके मार दिया।

अब अगले जन्म में वह एक राजा बन कर पैदा हुआ और समृद्ध रहा।

यहाँ यह कहानी ख़त्म हो जाती है और इसकी सीख यह है कि हम लोगों को केई बुरा काम नहीं करना चाहिये वरना हमें उसका फल अगले जन्म में भोगना ही पड़ता है।

25 भिखारी और पॉच मफ़िन[45]

एक गॉव में एक पति पत्नी रहते थे। सुबह ही पति खाली बर्तन ले कर निकल जाता और काफी चावल ले कर घर लौटता। वे उन दोनों के लिये काफी हो जाते सो इसी तरह गरीबी में मी उनके दिन अच्छे कट रहे थे।

एक दिन एक माधव ब्राह्मण ने उन दोनों को खाने के लिये बुलाया। माधवों में मफ़िन एक बहुत ही बढ़िया खाना माना जाता है और हर त्यौहार पर बनता है। उस दिन भी उस परिवार ने मफ़िन बनाये थे। मफ़िन बहुत अच्छे बने थे सो उस भिखारी परिवार ने खूब पेट भर कर खाये।

उसकी पत्नी को मफ़िन बहुत अच्छे लगे सो उसने उनको घर में बनाने की सोचा। उसके लिये उसने उसका पति जो चावल घर ले कर आता था उसमें से थोड़े थोड़े चावल रोज बचाने शुरू कर दिये। जब उसके पास काफी चावल इकट्ठा हो गये तो उसने पड़ोसन से थोड़ी सी काली दाल मॉगी जो उसने उसे तुरन्त ही दे दी। वह पड़ोसन उसकी बहुत सहायता करती थी।

भिखारी और उसकी पत्नी के चहरों पर चमक आयी हुई थी कि वे अब दोबारा मफ़िन खा सकेंगे। पत्नी ने वह चावल जो बचाये थे वह और वह दाल जो वह अपनी पड़ोसन से मॉग कर लायी थी

---
[45] The Beggar and the Five Muffins. Tale No 25.

दोनों को एक बर्तन में पलटा। उनको पीस कर एक गाढ़ा सा घोल बनाया। उसमें उसने नमक हरी मिर्च धनिया के बीज और दही डाला और एक कड़ाही में पलट कर आग पर रख दिया। उससे मुँह में पानी लाने वाले पाँच मफ़िन बने।

जब तक उसका पति चावल इकट्ठा कर के घर लौटा वह बस बर्तन में से पाँचवा मफ़िन निकाल रही थी। जब उसने वे पाँचों मफ़िन उसके सामने रखे तो उसके मुँह में भी पानी आ गया।

पति ने दो मफ़िन अपने सामने रखे और दो मफ़िन अपनी पत्नी के सामने रखे। पर उस पाँचवे मफ़िन का वह क्या करे यह उसकी समझ में नहीं आया।

वह इस परेशानी में से निकल पाने का कोई रास्ता नहीं निकाल पा रहा था। उसको यही पता नहीं था कि आधा और आधा मिल कर एक होता है। सो दोनों ढाई ढाई मफ़िन ले लेते पर वह यह पहेली सुलझा ही नहीं सका। अब वे इतने प्यारे प्यारे मफ़िन हैं उनको तोड़ना तो नहीं चाहिये न।

सो उसने अपनी पत्नी से कहा कि बचा हुआ मफ़िन या तो वह ले ले या फिर फिर वह खुद ले लेगा। पर यह कैसे तय हो कि वह खुशकिस्मत कौन है जो पाँचवाँ मफ़िन लेगा।

तब पति ने सुझाया कि हम लोग रसोईघर के दोनों तरफ लेट जाते हैं जैसे सोये हुए हों फिर हममें से जो कोई भी अपनी आँख पहले खोलेगा और पहले बोलेगा उसे दो मफ़िन मिलेंगे दूसरे को तीन

मफ़िन मिलेंगे। अब दोनों के मन में तीन मफ़िन लेने की इच्छा थी सो दोनों ने इस बात को मान लिया।

पत्नी ने पाँचों मफ़िन एक बर्तन में रखे और उन्हें ढक दिया। फिर उसने घर के अन्दर का दरवाजा बन्द किया और अपने पति से रसोईघर के पूर्व की तरफ सोने के लिये कहा और वह खुद पश्चिम की तरफ सो गयी।

उसे नींद ही नहीं आयी पर आँखें बन्द कर के वह अपने पति पर नजर रखे रही क्योंकि अगर वह पहले बोला तो उसे केवल दो ही मफ़िन मिलेंगे और बाकी बचे तीन मफ़िन उसके हो जायेंगे। ऐसे ही उसका पति भी उसके ऊपर पहरा दे रहा था।

इस तरह एक दिन बीता दो दिन बीते तीन दिन बीते। घर का दरवाजा नहीं खोला गया। कोई भिखारी सुबह सुबह कुछ माँगने भी नहीं आया। सारे गाँव ने भिखारी के बारे में जानने की कोशिश की। उसका क्या हुआ और उसकी पत्नी का क्या हुआ।

कुछ बूढ़े लोगों ने कहा — "चलो देखते हैं कि उसका घर सामने से बन्द है या नहीं। कहीं वह हम लोगों को छोड़ कर तो नहीं चला गया।"

सो गाँव का चौकीदार उसके घर आया और उसके घर के दरवाजे में धक्का मारा तो दरवाजा नहीं खुला। यकीनन यह अन्दर से बन्द है। लगता है कि उन पर कोई भारी मुसीबत आयी हुई है।

हो सकता है कि चोर अन्दर घुस गये हों और उनका सामान लूट कर उनको मार डाला हो।"

गाँव के दूसरे लोग बोले — "एक भिखारी के घर में लूटने के लिये क्या हो सकता है।"

बजाय इसके कि वे अन्दाजा लगाने में अपना समय बर्बाद करते उन्होंने दो चौकीदारों को उनके घर की दीवार फाँद कर अन्दर जा कर देखने के लिये और घर का दरवाजा खोलने के लिये कहा। इस बीच सारा गाँव भिखारी के घर के सामने यह देखने के लिये भीड़ लगाये खड़ा था कि अन्दर क्या हो रहा था।

चौकीदार जब भिखारी के मकान के अन्दर घुसे तो उन्होंने क्या देखा कि दोनों पति पत्नी आमने सामने के बरामदों में लाशों की तरह पड़े हैं। उन्होंने दरवाजा खोल दिया और बाहर खड़ी भीड़ सब अन्दर आ गयी। उन्होंने भी देखा कि पति पत्नी दोनों ऐसे पड़े हुए है जैसे दो लाशें पड़ी हों।

हालाँकि पति पत्नी दोनों को सुनायी पड़ रहा था कि बाहर क्या हो रहा है पर न तो कोई अपनी आँख ही खोल रहा था और न ही कोई जबान। क्योंकि जिसने भी पहले आँखें खोलीं और बोला उसे केवल दो ही मफ़िन मिलेंगे। जनता के खर्चे पर उन दोनों को शमशान ले जाने के लिये दो हरे बाँसों की काठियाँ तैयार की गयीं।

कुछ सफेद बालों वालों ने व्यंग्य कसा "ये लोग एक दूसरे को कितना प्यार करते होंगे कि दोनो एक साथ ही मर गये।"

समय पर शमशान पहुँच गये। गाँव के चौकीदार ने उनकी चिता जलाने के लिये हर घर से गोबर के कुछ कंडे और लकड़ी इकट्ठी कर ली। इस दान से दो चिताऐं तैयार की गयीं – एक पति के लिये दूसरी पत्नी के लिये।

चिता में आग लगायी गयी तो आग जब पति की टाँगों तक पहुँची तो पति ने सोचा कि बस अब और नहीं। वह केवल दो मफ़िन से ही सन्तुष्ट हो जायेगा।

सो गाँव वाले जब उनकी रस्में पूरी कर रहे थे तो अचानक उन्होंने एक आवाज सुनी "मैं दो मफ़िन से ही सन्तुष्ट हो जाऊँगा।"

तुरन्त ही दूसरी आवाज उसकी पत्नी की आयी "मैं जीत गयी। अब मुझे तीन मफ़िन मिलेंगे।"

गाँव वाले ये आवाजें सुन कर डर गये और वहाँ से भाग गये। केवल एक बहादुर आदमी उन लोगों से आमने सामने बात करने के लिये खड़ा रहा।

वह वाकई एक बहादुर आदमी था क्योंकि जब कोई मर जाता है तो वह तो बोलता नहीं और बोलती हुई लाशों के सामने बात करना तो बहादुरी का ही काम है। क्योंकि वह तो भूत समझा जाता।

इस बहादुर गाँव वाले ने तब उन लोगों से सारी कहानी सुनी और जा कर इन पाँच मफ़िन की कहानी सारे गाँव वालों को

सुनायी। पर अब उन दोनों के साथ क्या किया जाये जो मफ़िन खाने की इच्छा में अपनी इच्छा से मर गये।

अब जो उस चिता पर चढ़ गये थे उन्हें गॉव वापस नहीं लाया जा सका क्योंकि अगर वे आते तो सारा गॉव नष्ट हो जाता। सो बड़े लोगों ने उनके लिये बाहर वाले घास के मैदान में एक झोंपड़ी बनवा दी और उन दोनों को वहॉ रख दिया।

उस दिन के बाद से वे मफ़िन के भिखारी के नाम से प्रसिद्ध हो गये। बहुत सारी स्त्रियॉ और बच्चे अब उनके लिये सुबह शाम मफ़िन लाने लगे क्योंकि अगर उन्हें मफ़िन इतने अच्छे नहीं लगते तो वे उनके लिये मरने के लिये तैयार न होते।

26 ब्रह्मराक्षस और बाल[46]

एक गाँव में एक बहुत ही अमीर जमींदार रहता था जिसके पास कई गाँव थे। पर वह इतना कंजूस था कि कोई भी उसकी जमीन जोतना नहीं चाहता था और जिनके पास उसकी किसी जमीन का टुकड़ा था वह उसे किसी तरह भी परेशान नहीं करते थे।

वह उन लोगों से इतना नाराज रहता कि वह अपनी जमीन बिना जोती हुई भी छोड़ देता कि उसके तालाब और नहरें सूख जातीं। अब ऐसी हालत में उसे गरीब से गरीब तो होना ही था सो वह होता जा रहा था। फिर भी उसे यह विचार कभी अच्छा नहीं लगा कि वह खुले हाथों से अपने काम करने वालों को पैसा दे जिससे वे खुश रहें।

जब उसके साथ ऐसा हो रहा था तो एक अक्लमन्द सन्यासी उससे मिलने आया। उसने सन्यासी को अपने हाल बताये तो सन्यासी ने कहा — "मेरे बच्चे। मैं इसका एक मन्त्र जानता हूँ जो मैं तुम्हें बता सकता हूँ। अगर तुम उसका पाठ तीन महीने तक दिन रात करो तो चौथे महीने के पहले दिन ही एक ब्रह्मराक्षस तुम्हारे सामने प्रगट होगा।

उसे तुम अपना नौकर बना लेना। बस फिर तुम अपनी सारी छोटी छोटी समस्याऐं जो तुम्हारी तुम्हारे लोगों के साथ हैं वह उन्हें

[46] The Brahmarakshas and the Hair. Tale No 26.

सब सुलझा देगा। वह ब्रह्मराक्षस तुम्हारा कहना मानेगा और वह तुम्हारे लिये सौ आदमियों जितना काम करेगा।"

हमारा हीरो तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया। वह सन्यासी के पैरों पर गिर पड़ा और हाथ जोड़ कर उससे उस मन्त्र को माँगने लगा।

तब वह सन्यासी पूर्व की तरफ मुँह करके बैठ गया और उसका शिष्य जमींदार पश्चिम की तरफ मुँह कर के बैठ गया। इस तरह सन्यासी ने उसे मन्त्र के बारे में सब बता दिया। इसके बाद सन्यासी चला गया।

जमींदार ने सन्यासी से जो कुछ भी सीखा था उससे बहुत बहुत बहुत खुश हुआ और उस मन्त्र का जाप करने चला गया। वह तीन महीने तक जाप करता रहा और चौथे महीने के पहले दिन वह महान ब्रह्मराक्षस उसके सामने खड़ा हुआ था।

प्रगट होते ही उसने जमींदार से पूछा — "सर मैं आपके लिये क्या कर सकता हूँ। इन तीन महीनों में जो आपने मेरी पूजा की है उसका क्या उद्देश्य है।"

जमींदार तो उसका बड़ा सा साइज़ देख कर ही चकित रह गया। और इससे ज़्यादा तो वह उसकी कड़क आवाज सुन कर डरा। फिर भी उसने कहा — "मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे नौकर बन जाओ और मेरे सारे हुक्मों का पालन करो।"

ब्रह्मराक्षस ने विनम्रता से कहा "जी सरकार।"

क्योंकि जब किसी ने इतना तप कर के उसे खुश किया हो तो उसका यह फर्ज था कि वह अपने तरीके छोड़ कर अपने मालिक का नौकर बन जाये।

वह आगे बोला — "मालिक मैं तैयार हूँ पर मेरी एक शर्त है कि आप मुझे हर समय काम देंगे। जैसे ही मैं आपका एक काम खत्म कर लूँ तो आप कोई दूसरा काम मेरे लिये तैयार करके रखें। अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो मैं आपको मार दूँगा।"

जमींदार ने यह सोचते हुए कि उसके पास तो इतना काम है कि वह तो कई ब्रह्मराक्षसों के काम दे सकता है उससे हॉ कर दी। वह उसकी काम करने की इच्छा से बहुत खुश था।

वह तुरन्त ही उसे एक बड़े तालाब के पास ले गया जो कई साल से सूखा पड़ा हुआ था। उसकी तरफ इशारा कर के वह बोला — "तुम यह बड़ा तालाब देख रहे हो न। तुम इसे दो ताड़ के पेड़ों के लम्बा जितना गहरा कर दो जहॉ से भी तुम्हें इसके किनारे टूटे फूटे दिखायी दें उनकी मरम्मत कर दो।"

उसने नम्रता से जवाब दिया — "ठीक है मालिक। आपका काम हो जायेगा।" और अपना काम करने चला गया।

जमींदार ने सोचा था कि उसे यह काम करने में बहुत समय लगेगा। अगर साल नहीं तो कम से कम महीने तो लगेंगे ही क्योंकि वह तालाब दो कोस लम्बा और एक कोस चौड़ा था। सो वह उसे काम दे कर घर खाना खाने आ गया।

कुछ ही देर में ब्रह्मराक्षस उसे बताने आ गया कि उसका तालाब का काम खत्म हो गया। जमींदार के तो यह सुनते ही होश उड़ गये। उसे तो अब अपनी जान की चिन्ता होने लगी।

वह सोचने लगा कि "क्या। इसने तालाब का काम खत्म कर लिया। मुझे तो लग रहा था कि इसे उस काम को करने में सालों नहीं तो कम से कम महीनों तो लगेंगे ही। अगर यह इसी रफ्तार से काम करेगा तो मैं इसे नौकर कैसे रख सकता हूं। और जैसे ही मैं इसके लिये मैं कोई काम न ढूंढ पाया तो यह तो मुझे ही मार देगा।"

यह सोच कर वह रोने लगा। उसकी पत्नी ने जब देखा कि उसका पति रो रहा है तो वह उसके पास आयी और उसके ऑसू पोंछते हुए बोली — "प्रिय। तुम्हें हिम्मत नहीं खोनी चाहिये। तुम इस ब्रह्मराक्षस से अपना सारा काम करा लो तब तुम मुझे बताना। मैं उसे एक ऐसा काम दूंगी जो उसको बरसों तक उस काम में लगाये रखेगा। फिर वह हमको तंग नहीं करेगा।"

पर उसके पति को उसके शब्द बेमतलब लग रहे थे। वह ब्रह्मराक्षस के पीछे पीछे यह देखने के लिये चल दिया कि उसने तालाब में क्या किया है। यकीनन उसने तो उसे बिल्कुल पूरा कर दिया था।

फिर उसने उससे अपने सारे खेत जोतने के लिये कहा जो उसके बीस गॉवों में थे। यह काम उसने एक घंटे में ही कर दिया।

उसके बाद उसने उससे अपने सारे बागीचों की जमीन जोतने के लिये कहा। यह तो उसने पलक झपकते ही कर दिया। अब जमींदार के पास कोई काम नहीं था।

ब्रह्मराक्षस अपना काम खत्म कर के आ कर चिल्लाया — “अब और कौन सा काम है आपके पास मेरे लिये।” जब उसे लगा कि उसके मालिक के पास उसके लिये और कोई काम नहीं है तो उसे लगा कि अब उसका मालिक को खाने का समय आ गया है।

तभी जमींदार को अपनी पत्नी की याद आयी तो उसने उससे कहा — “मेरी पत्नी के पास कुछ काम है तुम्हारे लिये। तुम उसे अभी अभी करो। यह मेरा आखिरी काम है जो मैं तुम्हें इस समय दे सकता हूँ। इस काम के बाद तुम्हारी शर्त के अनुसार फिर मैं तुम्हारा शिकार बनने के लिये तैयार हूँ।”

उसी पल उसकी पत्नी वहाँ आयी। उसके हाथ में एक लम्बा बाल था जो उसने अपने सिर में से अभी अभी तोड़ा था। वह बोली — “ब्रह्मराक्षस। मेरे पास तुम्हारे लिये एक बहुत ही हल्का सा काम है। यह बाल लो और तुम इसे सीधा कर दो। जब यह सीधा हो जाये तब तुम इसे मेरे पास ले आना।”

ब्रह्मराक्षस ने उसे शान्ति से लिया और उसे सीधा करने के लिये एक पीपल के पेड़ के नीचे बैठ गया। उसने उसे अपनी जाँघ पर कई बार लपेटा ताकि वह सीधा हो जाये पर ऐसा नहीं हुआ वह बार बार मुड़ जाता।

तभी उसे ख्याल आया कि सुनार जब सोने के तार को सीधा करते हैं तो वे उसे आग में गर्म करते हैं तो मैं भी इसे उसी तरह से सीधा कर के देखता हूँ। सो वह एक आग की जगह गया और वह बाल उसके ऊपर रख दिया। पर यह क्या वह तो बजाय सीधा होने के एक बदबू के साथ उसमें जल गया।

"अगर मैंने उसका बाल जैसा था वैसा ही नहीं लौटाया तो मेरे मालिक की पत्नी क्या कहेगी।" यह सोच कर वह बहुत डर गया और वहॉ से भाग गया।

यह कहानी आजकल की रीति को समझाने के लिये कही जाती है जिसमें कुछ बाल उस पेड़ से बॉध दिये जाते हैं जिस पर शैतान रहता है ताकि वे वहॉ से चले जायें।

Indian Classic Books of Folktales Translated in Hindi
by Sushma Gupta

12th Cen **Shuk Saptati.**
No 29 By Unknown. 70 Tales. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — ।

c1323 **Tales of Four Darvesh**
No 24 By Amir Khusro. 5 Tales. Tr by Duncan Forbes.
किस्सये चहार दरवेश

1868 **Old Deccan Days or Hindoo Fairy Legends**
No 23 By Mary Frere. 24 Tales. (5th ed 1889).
पुराने दक्कन के दिन या हिन्दू परियों की कहानियॉ

1872 **Indian Antiquary 1872**
No 34 A collection of scattered folktales in this journal. 18 Tales.

1880 **Indian Fairy Tales**
No 30 By MSH Stokes. London, Ellis & White. 30 Tales.
हिन्दुस्तानी परियों की कहानियॉ

1884 **Wide-Awake Stories – Same as Tales of the Punjab**
By Flora Annie Steel and RC Temple. 43 Tales.

1887 **Folk-tales of Kashmir.**
No 11 By James Hinton Knowles. 64 Tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं

1889 **Folktales of Bengal.**
No 4 By Rev Lal Behari Dey. Delhi : National Book Trust. 22 Tales.
बंगाल की लोक कथाऐं

1890 **Tales of the Sun, OR Folklore of South India**
No 18 By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri.
London : WH Allen. 26 Tales
सूरज की कहानियॉ या दक्षिण भारत की लोक कथाऐं

1892 **Indian Nights' Entertainment**
No 32 By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन

1894 **Tales of the Punjab.**
No 10 By Flora Annie Steel. Macmillan and Co. 43 Tales.
पंजाब की लोक कथाऐं

1903 **Romantic Tales of the Panjab**
No 31 By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ

1912 **Indian Fairy Tales**
No 28 By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 29 Tales.
हिन्दुस्तानी परियों की कहानियाँ

1914 **Deccan Nursery Tales or Fairy Tales from Deccan.**
No 22 By Charles Augustus Kincaid. 20 Tales.
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

“Hero Tales and Legends of the Serbians”. By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of “Serbian Folklore: popular tales”

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न्। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारि डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela’s Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियाँ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियाँ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2022**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियाँ — थोमस फैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. c 12th century. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियॉ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

36. Cossack Fairy Tales and Folk Tales.
Translated in English By R Nisbet Bain. George G Harrp & Co. **c 1894**. 27 Tales.
कोज़ैक की परियों की कहानियॉ — अनुवादक आर निस्बत बैन। **2022**

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022
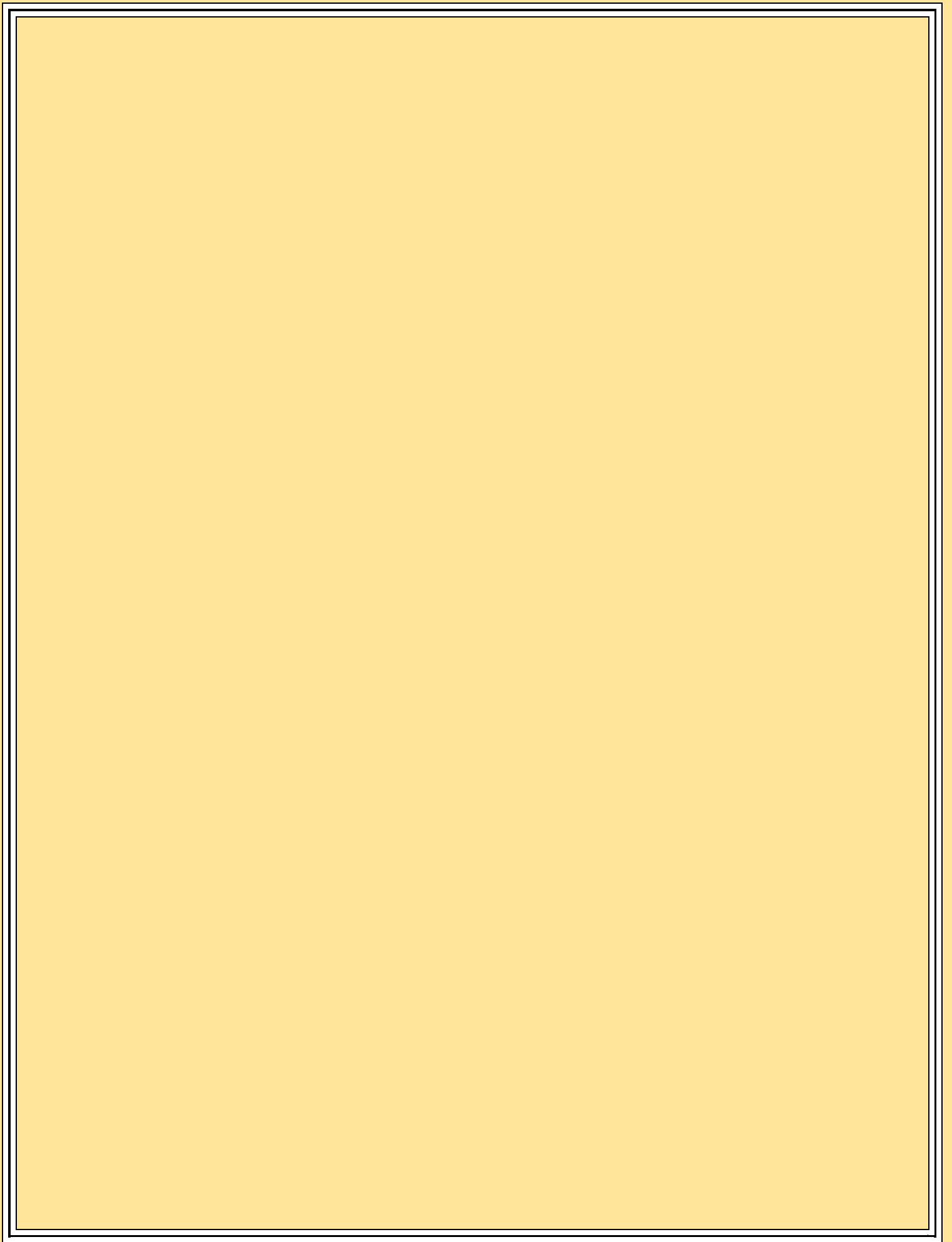
लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस करके एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स करके **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना पारम्भ किया। सन **2021** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से ये लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचायी जा सकेंगी।

विंडसर, कैनेडा
2022